रूस की पुनर्यात्रा

(Russia Revisited—By Louis Fischer)

मूल लेखक

लुई फिशर

अनुवादक

श्री श्याम

पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई १

मूल्य : ७५ नये पैसे

विषय-सूची

खण्ड १

रूस की पुनर्यात्रा

खण्ड २

पिछलग्गू देशों में संकट

रूस की पुनर्यात्रा

अध्याय १

सुपरिचित मास्को में

पत्रकारिता के सम्बन्ध में सबसे अधिक दुखद बात यह है कि घटनास्थल पर उपस्थित रहे बिना पत्रकार का काम चल ही नहीं सकता; अनुपस्थिति पत्रकार को इतिहासकार बनने के लिए विवश कर देती है। मै मास्को में बीस दिन रहा; केवल बीस दिन, किन्तु १९३८ में सोवियत यूनियन से प्रस्थान करने के बाद से उस देश के विषय में मैंने जो सामग्री एकत्र की थी, उसके निर्जीव शरीर में पुनः प्राण-प्रतिष्ठा करने के लिए वे बीस दिन पर्याप्त सिद्ध हुए। विशेषतः स्तालिन के बाद का रूस मेरे सम्मुख अपने वास्तविक रूप में प्रकट हो गया।

प्रवेश-पत्र के अनुसार मुझे केवल आठ दिनों की अनुमति प्रदान की गयी थी। अपने आगमन के पश्चात् मैंने इस अवधि में वृद्धि करने के लिए अनुरोध किया और मुझे और दस दिनों के लिए अनुमति मिल गयी; तत्पश्चात् दो दिनों की और वृद्धि हो गयी। मैंने इन सारे दिनों को मास्को में ही व्यतीत करने का निर्णय किया। चूँकि मैं १९२२ से १९३८ तक (बीच-बीच में की गयी अमरीका, यूरोप और मध्य पूर्व की यात्राओं की अवधि के अतिरिक्त) मास्को में रह चुका था, इसलिए यहाँ मुझे पुराने मित्रों से पुनः मिलने तथा नये सम्पर्क स्थापित करने की आशा थी।

रूस वापस लौटने से पूर्व मैंने संकल्प किया था कि मैं वहाँ खुले मस्तिष्क एवं खुले हृदय से जाऊंगा, न कि पहले व्यक्त किये गये अपने विचारों का समर्थन प्राप्त करने के लिए। यह एक नया पृष्ठ अथवा एक नयी पुस्तक होने वाली थी और मुझे इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं थी कि मैं जो कुछ सीखूंगा, उनसे मेरी पूर्व धारणाएं नष्ट हो जायेंगी अथवा उनमें संशोधन करना पड़ेगा। मैं सूचनाओं का संकलन करना चाहता था, विचारों की पुष्टि नहीं। मै अपनी प्रथम यात्रा के बाद के चौंतीस वर्षों की पृष्ठभूमि में रूस पर दृष्टिपात करना चाहता था।

यात्रा की योजना बनाते समय मेरा उद्देश्य मानव-प्राणियों तथा मानव-प्राणियों के सन्दर्भ में सोवियत-प्रणाली का अध्ययन करना था। प्रदर्शिनियों, भ्रमण, कारखानों,

दीर्घाओं तथा इसी प्रकार की अन्य चीजों के लिए कम ही समय देने का मेरा विचार था। वास्तव में, मैंने इन बातों के लिए कोई समय व्यय नहीं किया, किन्तु जिन सोवियत नागरिकों से, उनके घरों पर तथा अन्यत्र भी, मैंने स्पष्टतापूर्ण एवं संसूचक वार्तालाप किया, उनकी संख्या मेरी आशा की अपेक्षा बहुत अधिक हो गयी। व्यक्तिगत दृष्टि से यह समस्त अनुभव बड़ा ही हृदयस्पर्शी और व्यावसायिक दृष्टि से अत्यन्त लाभदायक था।

हेलसिंकी से प्रस्थान करने के बाद अविराम यात्रा करने वाले फिनिश विमान ने मास्को के ऊपर दो घण्टे पचीस मिनट तक चक्कर लगाया। आकाश में पूर्ण चन्द्र प्रकाशित था और प्रभात-तारा तीव्र गति से उदित हो रहा था। विमान से दिखायी देने वाले किसी अन्य पश्चिमी नगर की भाँति, मास्को नगर भी विद्युत्-प्रकाश से जगमगाते हुए एक क्षेत्र की भाँति दिखायी दे रहा था। एक ऊँची अट्टालिका के चारों ओर लाल बत्तियों की पंक्तियाँ प्रमुख रूप से प्रकाशित हो रही थीं। बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि वह नये विश्वविद्यालय का भवन था।

जमीन पर आते ही हमें रूस की परम्परागत और सुखद अव्यवस्था का सामना करना पड़ा। कई विदेशी तथा सोवियत नागरिक आगन्तुक यात्रियों का स्वागत करने के लिए पहले से ही प्रतीक्षा कर रहे थे। हमें विमान अन्त्य-स्थल (Air terminal) तक पहुँचाने के लिए कोई विमान-परिचारिका अथवा विमान-कम्पनी का कोई कर्मचारी नहीं आया। पृथक्-पृथक् भटकते हुए ही हम वहाँ पहुँचे।

पहले ही कमरे में स्तालिन का एक विशाल तैल-चित्र लटका हुआ था। इस चित्र में स्तालिन को एक नीली पृष्ठभूमि में, सफेद जैकेट पहने हुए, आदर्श रूप से, एक नये जोते गये विशाल भूरे सामूहिक खेत में अकेला खड़ा हुआ चित्रित किया गया है; यद्यपि, जैसा कि ख्रुश्चेव ने कम्यूनिस्ट पार्टी की बीसवीं काँग्रेस में किये गये अपने प्रसिद्ध गुप्त भाषण में कहा था, स्तालिन ने जनवरी १९२८ के बाद से किसी गाँव की यात्रा नहीं की थी और वह समय सामूहिकीकरण से पहले था।

चुंगी-विभाग के जांच-पड़ताल के कमरे में पहले के समान बड़े-बड़े 'काउण्टर' नहीं थे। सामान को फ़र्श पर एक-दूसरे के ऊपर रख दिया गया था। अन्ततोगत्वा कुछ कठिनाई से मैं एक अधिकारी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने में सफल हो गया। उसने मेरे पास की विदेशी मुद्रा को देखने की इच्छा व्यक्त की, किन्तु उसे गिना नहीं और मैंने जो संख्या बतायी, उसे ही लिख कर मुझे एक पुर्जा दे दिया। मेरे सामान की तीन गठरियों को खोला नहीं गया। इस शताब्दी के द्वितीय और तृतीय दशकों में सभी प्रकार के सामान का अत्यन्त

सावधानीपूर्वक निरीक्षण किया जाता था तथा प्रत्येक मुद्रित एवं लिखित सामग्री की विशेष रूपसे जाँच की जाती थी। मैंने एक पुराने चुंगी-अधिकारी से पूछा कि क्या भूतकाल की भाँति मेरे पासपोर्ट में मेरे टाइपराइटर और कैमरा का भी उल्लेख किया जायगा। (उस समय ऐसा करने से इन चीजों को कानूनी रूप से देश के बाहर ले जाया जा सकता था।) उसने कहा—"पहले हम ऐसा किया करते थे, किन्तु अब नहीं।"

सोवियत विदेशी भ्रमणार्थी अभिकरण (Intourist) की मोटर के आने में देर थी। छोटे-से प्रतीक्षालय में स्तालिन की एक मानवाकार से भी बड़ी कॉस्य-मूर्ति खड़ी थी। कुछ लोग लकड़ी की बेंचों पर सोये हुए थे। सिर में रूमाल बांधे, एक औरत पतली सींकों के पुराने ढग के एक झाड़ू से पत्थर के फर्श को झाड़ रही थी।

अन्त मे ड्राइवर आया और हम लोगों ने पार्श्व-पथों से सुसज्जित, चौड़ी कीव सड़क पर होते हुए मास्को तक की अठारह मील की मोटर-यात्रा प्रारम्भ की। समय लगभग मध्य रात्रि का था। मैंने ड्राइवर से उसके स्वयं के बारे में पूछा। उसकी उम्र ३१ वर्ष की थी; वह एक मजदूर का लड़का था तथा अपनी पत्नी और पाँच वर्ष की पुत्री के साथ एक छोटे-से कमरे में रहता था। घर में कोई स्नानागार न होने के कारण वे लोग सप्ताह में एक बार सार्वजनिक स्नानागार में जाते थे। फिर भी, नगर में हमारे प्रवेश करने पर, उसने विश्वविद्यालय के चारों ओर बने नये विशाल आवास-स्थानों की ओर दर्प के साथ संकेत किया। अन्य भवनों का निर्माण भी हो रहा था। "वे प्रोफसरों के लिए हैं।"—उसने हमें बताया। स्वयं विश्वविद्यालय की इमारत खास वर्षगांठ के अवसर पर बने एक ऐसे विशाल 'केक' के समान प्रतीत हो रही थी, जिस पर मानो लाल मोमबत्तियाँ, 'केक' के काटे जाने के पूर्व, बुझायी जाने की प्रतीक्षा करती हुई जगमगा रही थीं।

मास्को-निवासी अन्तिम मोटर-बस के लिए पंक्ति-बद्ध होकर खड़े हो रहे थे। हम 'संस्कृति तथा विश्राम उद्यान' (Park of Culture and Rest) से होकर गुजरे तथा मास्को नदी के पुल को पार कर 'रेड स्क्वेयर' में प्रविष्ट हुए, जो अपने आकार तथा निस्तब्धता के कारण अत्यन्त प्रभावोत्पादक लग रहा था। चौक के एक पार्श्व में, क्रेमलिन की प्राचीर के निकट लेनिन का मक़बरा है और चन्द्रमा के प्रकाश में मैं लेनिन के नाम के नीचे जोड़ा गया स्तालिन का नाम भी पढ़ सका। मैंने सोचा कि भीतर, लेनिन की बगल में ही, स्तालिन सोया हुआ है, जिसकी अविकृत

रूप से प्रवंचक और हत्यारा कह कर निन्दा की गयी थी । उसकी लाश को वहाँ क्यों रखा गया और उसे कब वहाँ से हटाया जायगा?

दूसरे दिन प्रातःकाल मैंने रूसियों के साथ वार्तालाप करने का अपना प्रयास प्रारम्भ कर दिया । चूँकि मुझे इस बात का पता नहीं था कि मेरे पुराने मित्र अपने पूर्व स्थानों को छोड़ कर चले गये हैं अथवा उनकी मृत्यु हो गयी है, मैंने टेलिफोन-पुस्तिका को देखने का इरादा किया । नेशनल होटल के मेरे कमरे में तथा होटल के कार्यालय में भी कोई टेलिफ़ोन-पुस्तिका नहीं थी और टेलिफ़ोन-आपरेटर ने बताया कि उसके पास भी कोई पुस्तिका नहीं है ।

मास्को की टेलिफोन-पुस्तिका एक राजनीतिक प्रकाशन था । एक पुस्तिका १९३७ में प्रकाशित हुई थी; दूसरी १९५१ तक नहीं प्रकाशित हुई, क्योंकि बीच के वर्षों में कई हजार व्यक्ति 'शुद्धीकरण' के शिकार हो गये थे और नयी टेलिफ़ोन-पुस्तिका से उनके नामों को हटा देने से सरकारी तौर पर उनकी मृत्यु की पुष्टि हो जाती । नवीनतम टेलिफ़ोन-पुस्तिका का प्रकाशन १९५४ में हुआ था । नेशनल होटल को सम्भवतः आशा थी कि टेलिफोन-पुस्तिका देने से मुकर कर वह रूसी भाषा न बोलने वाले विदेशी यात्रियों और सोवियत नागरिकों के मध्य एक अतिरिक्त अवरोध का निर्माण कर सकेगा, किन्तु गोर्की स्ट्रीट पर केवल छः मिनट चलने के बाद मैं केन्द्रीय डाक-घर में पहुँच सका, जहाँ १९५१ की एक फटी-पुरानी टेलिफ़ोन-पुस्तिका एक मेज पर सभी के उपयोग के लिए पड़ी हुई थी । १९५४ का नवीनतम संस्करण वहाँ भी उपलब्ध नहीं था ।

यह प्रसन्नता की बात थी कि मुझे अनेक मित्रों के नाम, पते तथा टेलिफ़ोन-नम्बर मिल गये । फिर भी, मैंने उनसे टेलिफ़ोन पर बात-चीत नहीं की । मुझे इस बात की याद आ गयी कि किस प्रकार १९३७ में हमारा एक सुपरिचित सोवियत अतिथि उस समय तुरन्त ही हमारा कमरा छोड़ कर बाहर चला गया था, जब टेलिफ़ोन की घण्टी बजी थी और मास्को के आपरेटर ने मुझे सूचित किया था कि टेलिफ़ोन पेरिस से आया है । उस अन्धकारमय युग में बाह्य विश्व के साथ अत्यन्त अप्रत्यक्ष सम्पर्क से भी सोवियत नागरिक भयाक्रान्त हो जाते थे और उनका यह भय उचित भी था । १९३८ में मुझसे मिलने आने वाले अथवा मुझे निमन्त्रित करने का साहस करने वाले व्यक्तियों की संख्या घट कर लगभग शून्य तक पहुँच गयी थी । इस बात का ज्ञान न होने के कारण कि यह स्थिति किस सीमा तक बनी हुई है, मैंने टेलिफ़ोन न करने का ही निर्णय किया । मैंने ख्याल किया कि मेरे टेलिफ़ोन-वार्तालाप को गुप्त रूप से सुन लिया जायगा ।

फिर उस स्थिति की कल्पना कीजिये, जब मैं बिना किसी पूर्व सूचना के एक मित्र के यहाँ पहुँचा और घण्टी बजा दी। द्वार खुलने पर एक ऐसा घनिष्ठ मित्र खड़ा दिखायी दिया, जिसे मैंने लगभग उन्नीस वर्षों से नहीं देखा था और जिसने मुझे पुनः देखने की कभी आशा नहीं की थी। मै अवश्य ही एक दूसरे लोक से आये हुए प्राणी की भाँति प्रतीत हुआ हूँगा। विस्मयसूचक सम्बोधनों, चुम्बनों और अश्रुओं का आदान-प्रदान हुआ। उसने, उसकी पत्नी ने तथा मैंने एक दूसरे को एक साथ ही आलिंगनबद्ध कर लिया और उन्होंने जोर देकर कहा—"सचमुच, यह एक चमत्कार है, चमत्कार!"

मेरा इतना हार्दिक स्वागत कहीं नही हुआ। पूरी शाम, साढ़े सात बजे से लगभग मध्य रात्रि तक, हम अपने परिवारों, मित्रों, अनुभवों, समस्याओं के सम्बन्ध में बात-चीत करते रहे—और निश्चय ही नीबू तथा 'स्ट्राबेरी' के मुरब्बे के साथ न जाने कितने प्याले गर्म चाय पी गये। यह मिलन घनिष्ठतापूर्ण, मर्मस्पर्शी एवं सूचनावर्द्धक था। द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व, युद्धकाल में तथा स्तालिन की मृत्यु के कई महीने बाद तक, उन्हें जिन कष्टों का सामना करना पड़ा, वे वर्णनातीत थे।

अपने बीस दिनों के प्रवास में मैंने पाँच संध्याएँ उनके यहाँ व्यतीत कीं। वे चाहते थे कि मैं उनके घर जाऊँ, किन्तु टेलिफोन न करूं। मेरे होटल में उनके आने की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। एक अन्य परिवार ने तीन बार तथा दो अन्य परिवारों ने दो-दो बार अपने-अपने यहाँ मेरा स्वागत किया। कुल मिला कर मैं चौदह घरों में गया और वहाँ मैंने अधेड़ उम्र के एवं नवयुवक, ३६ व्यक्तियों के साथ देर तक, स्पष्टतापूर्वक वार्तालाप किया। लगभग सभी नवयुवक व्यक्ति कम्यूनिस्ट युवक लीग (Komsomol) के सदस्य थे। एक वयोवृद्ध इंजीनियर वोरकुता के अर्किटिक-स्थित नजरबन्दी शिविर में अठराह वर्ष व्यतीत कर १९५४ में लौटे थे। ३६ व्यक्तियों में से केवल दो ने मुझे टेलिफ़ोन किया अथवा मुझे टेलिफ़ोन करने की अनुमति दी; दोनों महत्वपूर्ण व्यक्ति थे और राजनीतिक दृष्टि से अपने को सुरक्षित अनुभव करते थे। अन्य व्यक्तियों में से अधिकांश ने कहा कि एक वर्ष पूर्व वे मुझसे मिलने में भय का अनुभव करते, किन्तु फरवरी, १९५६ में हुई सोवियत कम्यूनिस्ट पार्टी की बीसवीं कॉंग्रेस के बाद स्तालिन-विमुखता (De-Stalinization) का जो क्रम प्रारम्भ हुआ, उससे थोड़ी-सी उदारता का प्रारम्भ हुआ। एक महिला ने भोजन के समय कहा—"यदि यही स्थिति बनी रही, तो शायद हम अब भी स्वतंत्रता का उपभोग कर सकेंगे।" सोवियत संघ की नीतियों की मेरी भयंकर आलोचना के बावजूद, वहाँ मेरी उप-

स्थिति उन्हें एक एक शुभ लक्षण तथा अधिक उदारता का संकेत प्रतीत हुई। कतिपय मित्रों को उन आलोचनाओं के सम्बन्ध में, हाल में ही पुनर्वासित साइबेरियाई निर्वासितों द्वारा ही ज्ञात हुआ था। स्पष्टतः नजरबन्दी शिविरों के निवासी मास्को के निवासियों की अपेक्षा अधिक जानकारी रखते थे।

मैं जिन सोवियत नागरिकों के घर पर गया, उनके अतिरिक्त मैंने सोवियत सरकार के उपप्रधान मंत्री तथा कम्यूनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष-मंडल (अथवा पोलिट ब्यूरो) के सदस्य अनस्तास आई० मिकोयान के साथ आधा घण्टे तक, आश्चर्यजनक स्पष्टता से बेरोक-टोक बात-चीत की। मैंने कम-से-कम साठ टैक्सी—ड्राइवरों, विदेशी भ्रमणार्थी अभिकरण के शोफ़रों, होटल-कर्मचारियों तथा अन्य व्यक्तियों से भी बात-चीत की। मैं सदा इन वार्तालापों को व्यक्तिगत और राजनीतिक विषयों की ओर मोड़ दिया करता था। इनके अतिरिक्त सड़क पर, दुकानों में, उपाहारगृहों में और अन्यत्र संयोगवश मिल जाने वाले व्यक्तियों के साथ विचार-विमर्श करना भी सरल कार्य था।

उदाहरणार्थ, एक दिन तीसरे पहर मै होटल के गलियारे से नीचे आया और प्रतीक्षा में खड़े 'लिफ्ट' में प्रवेश करने ही वाला था कि उस मंजिल की देख-रेख करने वाली महिला ने, जिसकी मेज उतरने के स्थान के निकट ही थी, मुझसे विनम्रतापूर्वक पूछा कि क्या मैं कपड़ों की इस्त्री, ड्राइ क्लीनिंग और धुलाई के इकट्ठा हो गये बिलों की रक़म का भुगतान कर सकूँगा। चिट्ठियाँ इत्यादि पहुँचाने के लिए यह महिला कमरों की चाभियाँ रखने, धुलाई के कपड़े, अखबार, चिट्ठियाँ इत्यादि पहुँचाने के लिए जिम्मेदार थी और मुझ पर २८ रूबल बकाया थे। मैंने अपनी जेबों को तलाश किया, जिनमें मुझे बीस रूबल मिले। मैंने क्षमा-याचना करते हुए उक्त रक़म उस महिला को दे दी और शेष रक़म का भुगतान भी शीघ्र ही कर देने का वचन दिया। एक खूबसूरत रूसी महिला 'लिफ्ट' के भीतर से इस सारे दृश्य को मुस्कराते हुए देख रही थी और जब मैं अन्दर गया, तब उसने कहा—"हममें से तो प्रत्येक व्यक्ति के पास रुपये रहते हैं।"

"सुनिये"—मैंने अपनी ओर से उत्तर दिया—"कृपया परियों की कहानियाँ मत सुनाइये। निश्चय ही, कुछ रूसी लोग बहुत अधिक धन कमाते हैं, किन्तु दूसरे नहीं कमाते, और जो कमाते हैं, वे भी अपनी आवश्यकता के अनुसार वस्त्र नहीं खरीद सकते अथवा सख्त जरूरत रहने पर भी किराये पर कमरे नहीं ले सकते।"

इस समय तक हम लोग होटल के प्रकोष्ठ मे पहुँच गये थे। उसने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा—" फिर भी हम लोग शिकायत नहीं करते।" यही तो इस देश की मुश्किल है"—मैने अपने भाव प्रकट किये—" आप लोग शिकायत नहीं करते। यदि आपने शिकायत की होती, यदि आप में विरोध करने की क्षमता होती, तो आपको पच्चीस वर्षों तक स्तालिन के आतंक से पीड़ित न होता पड़ता।" मै मास्को में सदा उतनी ही स्वतंत्रता से बोलता था, जितनी स्वतंत्रता से लन्दन, पेरिस, न्यूयार्क में अथवा अन्य किसी स्थान पर भी बोलता। " ऐसा कभी था।"—उसने कहा।

इस समय हम गोर्की और मोखोवाया सड़क के चौराहे पर खड़े थे, जो सम्भवतः नगर का सर्वाधिक व्यस्त चौराहा है। " लाखों व्यक्ति स्तालिन के शासन के शिकार हो गये "—मैंने जोर से बोलते हुए तर्क उपस्थित किया—"और आप इन सारी बातों को केवल ऐसा कभी था कह कर मजाक में टाले दे रही है।"

" मैं कर ही क्या सकती थी ? आलोचना के एक शब्द का भी अर्थ मृत्यु अथवा कम से कम निर्वासन होता था, किन्तु अब वैसी बात नही रही गयी है।"—उसने दलील दी। " जरा ख़ुश्चेव की आलोचना करने का प्रयत्न कीजिये!"—मैंने मजाक में कहा।

वह हँस पड़ी और मै भी मुस्करा कर उससे विदा हो गया। यह महिला सोवियत-प्रणाली की कोई पक्षपातिनी नहीं थी। वह एक देशभक्त थी और अपने देश की प्रशंसा करना तथा उसके ऊपर गर्व करना चाहती थी; विशेषतः विदेशियों के साथ वार्तालाप करते समय। यह कोई असामान्य दृष्टिकोण नहीं था। मेरे मास्को-प्रवास के दूसरे दिन धूप काफ़ी तेज थी और मैं चित्र खींचने के लिए दौड़ा-दौड़ा 'रेड स्क्वेयर' में पहुँचा। इस उद्यान का यह नाम क्रान्ति के पूर्व से ही हैं; रूसी भाषा में 'लाल' का अर्थ सुन्दर भी होता है। वास्तव में यह सुन्दर नहीं है, इसमें रोम के पिआज़ा नवोना का लालित्य अथवा कलात्मकता अथवा पेरिस के प्लेस-द-ला-कान्कार्ड का वैभव नहीं है; किन्तु उसमें एक भव्यता, प्राचीन रूस की भाँति एक विशाल रिक्तता है और उसके समस्त अंग (सेण्ट बैसिल का विचित्र गिर्जाघर, जिसके विभिन्न रंगों के बुर्ज और गुम्बद अनन्नास, प्याज़ और चुकन्दर की शक्ल के बने हुए हैं; मोटे, काले संगमरमर पत्थर के मक़बरे; क्रेमलिन की प्राचीर और जी० यू० एम० डिपार्टमेण्ट-स्टोर) एक दूसरे से दूरस्थ एवं असम्बद्ध प्रतीत होते हैं।

मैंने अभी इस चौक में प्रवेश किया ही था और एक ऐसे स्थान पर खड़ा हुआ था, जहाँ से मैं सारे चौक का एक-साथ, एक उच्च कोटि का छाया-चित्र ले सकने की आशा रखता था, कि दो सोवियत नागरिक मेरे निकट पहुँचे। उनमें से एक ने, जिसके पास एक एफ० ई० डी० कैमरा था, मुझसे पूछा कि मैं किस 'लाइट एक्सपोज़र' का उपयोग कर रहा हूँ। मैंने उसे बता दिया, किन्तु इतना और भी जोड़ दिया कि मेरी फ़िल्म अमरीका में खरीदी गयी थी। उसने मेरे नये ब्रिटेन-निर्मित प्रकाश-मापक-यंत्र (Light metre) की सराहना की और स्वेच्छापूर्वक ही बताया कि, सोवियत मीटर अपूर्ण होते है। प्रश्नों के उत्तर में उसने बताया कि उसके कैमरे का मूल्य पाँच सौ रूबल था, वह तथा उसका मित्र वोरोनेज़ में टेलिविज़न का निर्माण करने वाले एक कारखाने में काम करते थे। वे फैक्टरी की टेकनिकल कठिनाइयों को दूर करने के सम्बन्ध में मास्को आये थे। उनकी टेलिविजन मशीन पूर्वी जर्मन मशीन के समान ही बढ़िया थी, किन्तु उसे अमरीकी मशीनों के बारे मे जानकारी नहीं थी। उसने पूछा—"वहाँ पर्दा कितना बड़ा होता है?" मैंने पर्दे के विभिन्न आकार बता दिये। "और अमरीका में सामान्य स्थिति क्या है तथा हमारे साथ सम्बन्ध कैसे हैं?"—उसने प्रश्न किया। मैंने यथार्थ उत्तर दिया और इन्हीं प्रश्नों को उलट कर उससे पूछा।

"स्थिति में सुधार हुआ है" —उसने कहा—"हमारे पास पहले से ही पर्याप्त भोजन-सामग्री है। फिर भी, वस्त्र की स्थिति, विशेषतः वोरोनेज़ जैसे छोटे-छोटे नगरों में, खराब है।" वह तथा उसके मित्र बहुत पुराने सूट पहने हुए थे, जिनके कालर फट कर तार-तार हो गये थे और उनके जूते टूटे हुए थे।

"बीसवीं पार्टी-काँग्रेस के बाद राजनीतिक स्थिति कैसी है?"—मैंने प्रश्न किया।

"अपेक्षाकृत बहुत अधिक सुधर गयी है। १९४९ में मैंने 'रेड स्क्वेयर' का फ़ोटो लेने का प्रयास किया था और एक सैनिक ने मुझे भगा दिया। फ़ोटोग्राफरों को बहुधा गिरफ्तार कर लिया जाता था। अब कोई भी व्यक्ति मक़बरे, प्राचीर, क्रेमलिन के भीतरी भाग, नदी के तट-बन्ध आदि के चित्र ले सकता है।"—उसने कहा। वास्तव में वहाँ सोवियत तथा विदेशी शौकिया और पेशेवर फोटोग्राफरों की भीड़ लग रही थी।

मैंने पूछा—"क्या आपने स्तालिन के कुकृत्यों के सम्बन्ध में ख्रुश्चेव का भाषण पढ़ा है?"

"हां"—उसने उत्तर दिया—"ख्रुश्चेव का पत्र! फैक्टरी में उसे हमारे समक्ष पढ़ कर सुनाया गया था तथा पार्टी के सदस्यों ने और जो लोग सदस्य नहीं थे, उन्होंने भी उसे सुना।"

मैंने कहा—"फिर भी, आप अनेक स्थानों पर स्तालिन के चित्र एवं मूर्तियाँ देखते है और उसका शव (Mummy) वहाँ प्रदर्शनार्थ रखा हुआ है।"

"सच है"—उसने स्वीकार किया—"किन्तु जैसा कि कामरेड ख्रुश्चेव ने स्पष्टीकरण किया, परिवर्त्तन क्रमिक रूप से ही होना चाहिए। हमारे यहाँ वोरोनेज में बिजली के औजार बनाने की एक फैक्टरी है, जिसका नाम स्तालिन के नाम पर रखा गया था; किन्तु अब उसका वह नाम नहीं रह गया है। अभी हाल तक मै यहाँ खड़ा हो कर किसी विदेशी से बात नहीं कर सकता था। हमें बाहरी संसार के सम्बन्ध में और अधिक जानने की आवश्यकता है। सर्वोपरि बात यह है कि युद्ध कदापि नहीं होना चाहिए।" इस प्रार्थना पर हमने हृदय से हाथ मिलाये और के फ़ोटाग्राफ़ लेने के लिए अपने अलग-अलग मार्गों पर चल दिये।

मास्को में मैंने २५२ फोटोग्राफ लिये। पुराने ज़माने में उन्हें रूस मे ही विकसित और मुद्रित करना आवश्यक होता, जिससे अधिकारी यह देख सकें कि कहीं किसी निषिद्ध वस्तु का चित्र तो नहीं लिया गया है। इस बार मैंने अपनी इच्छा के अनुसार प्रत्येक वस्तु के, जिनमें सैनिक कर्मचारी भी थे, जिनका फोटो खींचना किसी समय निषिद्ध था, सम्मिलित थे, चित्र लिये और लन्दन पहुँचने तक अविकसित फिल्मो को अपने पास ही रखा। लगभग एक दर्जन अपवादों को छोड़ कर शेष सभी चित्र विभिन्न व्यक्तियों के है; उनमें मेरी रुचि सर्वाधिक थी और मैंने उन सभी के चित्र शहर के बीचोबीच खींचे, जहाँ निर्धन बाहरी जिलों की अपेक्षा सुसज्जित नागरिकों की संख्या अधिक होने की सम्भावना रहती है। परिचित व्यक्तियों के घर जाने अथवा पदयात्रियों तथा यातायात का निरीक्षण करने और विक्रयार्थ रखी गयी वस्तुओं की क़िस्म तथा क़ीमतें देखने के लिए मैंने नगर की चारों सीमाओं पर स्थित स्थानों की भूमिगत रेलवे (Metro), ट्राली बस, मोटर बस, टैक्सी, ट्राम द्वारा अथवा पैदल भी यात्रा की। ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे ऊपर नजर रखी गयी हो अथवा मेरा पीछा किया गया हो और वास्तव में जो बात महत्वपूर्ण है, वह यह है कि मैं जिन मित्रों के पास गया उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं थी कि मेरा पीछा किया गया था अथवा नहीं।

१९३८ की तुलना में अब की जीवन-स्थिति कैसी है?

राष्ट्रीय प्रदर्शन-स्थल और सत्ता के केन्द्र के रूप में मास्को को सदा ही विशेषाधिकार प्राप्त रहे हैं। उसके पदाधिकारी अपने लिए तथा अपने नगर के लिए सर्वोत्तम वस्तुएँ प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं और सामान्यतः अपनी दुकानों में अधिक सामग्रियाँ तथा म्युनिसिपल-कोष में अधिक रूबल भेजने की व्यवस्था कर सकते हैं। यह एक विदित बात है कि लेनिनग्राद, कीव और तिफलिस जैसे बड़े प्रान्तीय नगरों का जीवन–स्तर मास्को के स्तर से कम-से-कम बीस से तीस प्रतिशत तक कम है; छोटे–छोटे नगरीय केन्द्रों का जीवन-स्तर तो और भी कम है।

फोटोग्राफों का अध्ययन करने, दिन में अनेक बार लिखी गयी डायरियों के पृष्ठों को पुनः पढ़ने और अब समस्त अनुभव पर पुनर्विचार करने के पश्चात् मुझे इस बात में सन्देह नहीं रह गया है कि अठारह वर्ष पहले की अपेक्षा अथवा १९१७ की क्रान्ति के बाद किसी भी समय की अपेक्षा मास्को-वासियों के वस्त्र अधिक अच्छे है। वस्त्र-सज्जा के लिए सर्वाधिक अंक सैनिक अधिकारियों और उनके घर की स्त्रियों को देने होंगे, किन्तु अधिकांश पुरुषों के सूट यद्यपि बुरी तरह से सिले होते हैं, तथापि सामान्यतः पुरुष वर्ग की बाह्य वेश-भूषा बुरी नहीं होती और बुल्गानिन, मालेन्कोव तथा अन्य नेताओं का, जो प्रत्यक्षतः फ़ैशन में भी आवश्यक रूप से नेतृत्व करते हैं, अनुकरण करते हुए अनेक व्यक्ति सर्वत्र दिखायी देने वाली सर्वहारा टोपी के स्थान पर नेकटाई और फेल्ट अथवा 'स्ट्रा' हैट पहनते हैं। पहले खराब कपड़े उचित—अर्थात् निम्नतर—वर्ग में उत्पन्न होने के संकेत माने जाते थे और इसीलिए उन्हें राजनीतिक दृष्टि से एक विशेष स्थान दिया जाता था। सम्भवतः वे एक भौतिक अक्षमता को आदर्शवादी गुण का रूप प्रदान करने का प्रयास मात्र कर रहे थे। फिर भी, उसके बाद किसी उच्च पदस्थ व्यक्ति ने अवश्य ही यह निर्णय किया होगा कि पूँजीवादी वेश-भूषा पूँजीवादी मनोवृत्ति को जन्म नहीं देती। (अथवा क्या वह ऐसा करती है?)

शैली की दृष्टि से महिलाएँ निश्चय ही पुरुष वर्ग से आगे हैं, उन्हें ऐसा करना ही पड़ेगा, क्योंकि यद्यपि कानून की दृष्टि से वे स्वतंत्र और समान हैं तथापि इनमें से अधिकांश अपने कार्यों, पतियों, सन्तानों और घरों की दासियां ही हैं और सामान्यतः वैषम्य के इस बोझ के संकेत प्रकट करती हैं। फिर भी, ओठों पर लगाने की लाली दुर्लभ है और कम मूल्य तथा काफी अच्छी किस्म के बावजूद शृंगार-प्रसाधन और भी कम दिखायी देते हैं। विश्वविद्यालय की एक छात्रा

ने मुझसे कहा कि कक्षा में ओठों पर लगाने की लाली की बात मेरे मस्तिष्क में कभी नहीं आयेगी।

(पुनश्च—जिस क्षण मै मास्को से प्राग पहुँचा, मैने अनुभव किया कि विरोधाभास में मास्को-निवासी कितने शुष्क और फूहड़ दिखायी देते है। सोवियत वस्त्र निम्न कोटि के है, उनका रंग फीका होता है तथा कपड़ों की सिलाई की शैली कम-से-कम दस वर्ष पुरानी है। और रोम, पेरिस अथवा लन्दन की तुलना में स्वय प्राग भी वेश-भूषा की दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ है।)

सोवियत खाद्य-स्थिति में भी सुधार हुआ है। रोटी और केक, वाइन और वोडका शराब, शक्कर, कैण्डी, आइसक्रीम, स्वदेशी और आयात किये हुए मक्खन, पनीर और मार्गेरिन तथा ताजी और सुखायी हुई, विशेषतः सुखायी हुई, मछली की आपूर्ति मौसमी परिवर्त्तनों के साथ मास्को में अत्यधिक और अन्यत्र पर्याप्त है। फिर भी, सरकारी पत्र मांस और दूध के अभाव को स्वीकार करते है। (३ अगस्त १९५६ को 'प्रवदा' ने लिखा था—"अनेक नगर पहले से ही दूध अथवा दूध से निर्मित होने वाली वस्तुओं के किसी प्रकार के अभाव का अनुभव नहीं करते।) न इस तथ्य को देखते हुए अभाव उल्लेखनीय ही है कि द्वितीय दशाब्दी के अन्त तथा तृतीय दशाब्दी के प्रारम्भ में सामूहिक कृषि में सम्मिलित होने के लिए बाध्य किये जाने से पूर्व कृषकों ने अपने मवेशियों को मार कर खा डाला अथवा बेच डाला था। इसके अतिरिक्त सामूहिकीकरण के बाद से मवेशियों की उपेक्षा ही की गयी है। कोई कृषक स्वयं अपने बछड़े की देख-भाल तो लाड़-प्यार से करेगा, किन्तु क्या वह बर्फ जैसी सर्द रात में उठ कर सामूहिक खेत के किसी बीमार पशु की सेवा-सुश्रूषा करेगा? परिणामस्वरूप लगने वाले आघात की आश्चर्यजनक रूप से तथा अपने स्वभावानुसार उपेक्षा करते हुए, निकिता एस. ख्रुश्चेव ने १९२८ की तुलना में, जब सामूहिक कृषि का आरम्भ हुआ था, और १९१६ के जार के युद्धकालीन रूस की तुलना में, मवेशियों की संख्या में कमी के जो आंकड़े सितम्बर १९५३ में प्रकाशित किये, उनका स्पष्ट अर्थ यह है कि आज प्रति व्यक्ति पशु-उत्पादन कम हो गया है। इस निष्कर्ष की पुष्टि मास्को के मांस-भण्डारों की खिड़कियो में रखे गोमांस के टुकड़ों, मृत बत्तखों और मुर्गियों की काष्ठ प्रतिकृतियों से, जो आश्चर्यजनक रूप से जीवित के सदृश्य प्रतीत होती हैं और १९३० में मैं जिनकी सराहना किया करता था, तथा भीतर की खूंटियों, ताखो और रेफ्रिजेरेटरों में व्याप्त अभाव से होती है।

मास्को के कुजनेत्स्की मोस्ट में टहलते हुए मैंने पार्श्व-मार्ग पर एक भीड़ देखी तथा लोगों के सिरों के ऊपर से झाक कर देखने पर मुझे एक मेज दिखायी

पड़ी, जिस पर सूखे हुए छोटे-छोटे सेवों का एक ढेर पड़ा हुआ था। "वे क्या बेच रहे हैं ?"—एक राहगीर औरत ने पूछा। "सेब"—मैंने उत्तर दिया। वह पंक्ति में सम्मिलित हो गयी। अनेक स्त्रियाँ तथा पुरुष जब कभी घूमने के लिए बाहर जाते हैं अथवा काम पर जाते हैं, तब वे खरीदी के लिए अपने साथ थैले लेकर निकलते हैं। पता नहीं कब क्या मिल जाय! अधिकांश खाद्यान्न-भण्डार पुराने और छोटे हैं तथा बड़े-से-बड़े भण्डार भी, जो सभी पुराने हैं, बहुत ही छोटे हैं और खरीदारों से ठसाठस भरे रहते हैं। खाद्यान्न, वस्त्र और घरेलू उपयोग की सामग्रियों की उपलब्धता मे वैषम्य होने के कारण, जिसके अनुसार नगर के एक भाग को अन्य भागों की अपेक्षा, एक नगर को दूसरे नगर की अपेक्षा तथा कस्बों को गाँवों की अपेक्षा अधिक सामान मिलता है, खरीदी के लिए बहुत अधिक यात्रा करनी पड़ती है। मैंने एक ऐसी महिला के सम्बन्ध में सुना, जो फर्नीचर खरीदने के लिए वोल्गा-तट पर स्थित सारातोब से सैकड़ों मील की यात्रा कर मास्को आयी थी। मास्को में किरोव स्ट्रीट में कपड़ों की एक दूकान में प्रतीक्षा-रत ग्राहकों में से कम-से-कम आधे ग्राहक सिर पर रूमाल बांधे हुए कृषक स्त्रियाँ थीं, जो सम्भवतः प्रातःकाल पीठ पर दूध लाद कर लायी थीं। किसान नगर में खाद्यान्न भी खरीदते हैं। स्टोरों में अत्यधिक भीड़ होने का एक और कारण वस्तुओं की खराब किस्म भी है। एक महिला, जो जूतों का एक ऐसा जोड़ा खरीदती है, जो चार महीने में ही फट जाता है, शीघ्र ही मोची की दुकान पर पुनः पंक्ति में प्रकट होती है। खराब किस्म के कारण परिमाण-सम्बन्धी समस्त सोवियत आंकड़ों में अत्यधिक कटौती कर दी जानी चाहिए।

१९२०—३० की दशाब्दी के अन्तिम भाग में, जब राजनीतिक आलोचना के लिए अभी तक अनुमति प्राप्त थी और उसे प्रकाशित भी किया जाता था, त्रात्स्की-वादी पार्टी-सम्मेलनों में पंक्तियों के सम्बन्ध में शिकायत किया करते थे और उसे उच्च नीति का परिणाम बताते थे। स्तालिनवादी यह कह कर इसका उत्तर देते कि यह तो एक अस्थायी दृश्य है, लेकिन अब ऐसा प्रतीत होता है कि पंक्तियाँ स्थायी बन गयी हैं। सोवियत संघ अनन्त पंक्तियों—खाद्यान्न, वस्त्र, वाहन आदि के लिए लगने वाली पंक्तियों का देश है। इस स्थिति का कारण विस्तारशील उद्योग और नौकरशाहों की संख्या में वृद्धि के परिणामस्वरूप नगरों की जन-संख्या में हुई अत्यधिक वृद्धि, अक्षमतापूर्ण वितरण-प्रणाली और व्यापार पर राज्यीय आधिपत्य के अन्तर्गत फलने-फूलने वाली पुरानी बिक्री-पद्धति तथा समय-समय पर उत्पन्न होने वाला सामग्रियों का अभाव है। इन समस्त कारणों का एक मूल कारण है :

व्यक्ति की आवश्यकताओं की उपेक्षा, जो परम्परागत रूप से रूसी तथा विशिष्टरूप से अधिनायकवादी, दोनों है। इन्हीं परिस्थितियों से इस बात का भी स्पष्टीकरण हो जाता है कि समस्त नगरों में, जिनमें मास्को भी सम्मिलित है, निवास-स्थान की स्थिति असह्य क्यों है।

मैं मास्को में एक मुद्रक की सहायिका के घर गया। वह अपने पति के साथ एक छोटे-से कमरे में रहती है। उसने मुझसे कहा—"मै प्रतिदिन आठ घण्टे काम करती हूँ और हमारी दूकान एकदम नीचे के तल्ले में है, जब कि ऊपरी मंजिलों पर मोटे नौकरशाहों ने अधिकार जमा रखा है। दोपहर के भोजन के लिए मुझे एक घण्टे का अवकाश मिलता है। मुझे काम पर पहुँचने में एक घण्टा और घर लौटने में एक घण्टा लग जाता है। इस प्रकार ग्यारह घण्टों का दिन हो जाता है। खाद्य-सामग्रियाँ खरीदने के लिए उसमें दो घण्टे और जोड़ दीजिये। तत्पश्चात्, जब मै थकावट से एकदम चकनाचूर हो कर, अन्त में घर पहुँचती हूँ, तब मुझे एक सामुदायिक पाकशाला में पाँच अन्य गृहिणियों के साथ रात के लिए भोजन पकाना पड़ता है।"

मास्को का सर्वाधिक निराशाजनक और दुखदायी पहलू, वहाँ की जनता के चेहरे प्रस्तुत करते है। उन चेहरों में मैं सोवियत संघ का इतिहास स्पष्ट रूप से पढ़ सकता था—पुरानी पीढ़ी के लोगों के लिए लगभग चालीस वर्षों के कष्टों और पीड़ाओं का इतिहास। निश्चय ही नवयुवकों और नवयुवतियों को अपेक्षाकृत कम वर्षों तक इन कष्टों और पीड़ाओं का अनुभव करना पड़ा, किन्तु किशोर वय के व्यक्ति और बालक भी, अधिकृत रूप से स्वीकृत और निन्दित शैक्षणिक द्रुतगामिता और, बहुधा, कठिनाइयों से भरी हुई घरेलू स्थितियों द्वारा संत्रस्त तथा उनके बोझ से अत्यधिक दबे हुए है। पागल हिटलर की सेनाओं को पीछे खदेड़ने तथा स्तालिन की पागलपन से भरी हुई इच्छाओं की पूर्ति के लिए सोवियत जनता को जो मूल्य चुकाना पड़ा, वह हिमालय के एवरेस्ट शिखर के समान ऊँचा है। सम्भवतः इतिहास में किसी भी महान राष्ट्र को अपनी ही सरकार के हाथों इतना अधिक और इतने दिनों तक कष्ट-पीड़ित नहीं होना पड़ा। इसे विश्राम की आवश्यकता है और यह सुख एवं विश्रान्ति की न्यूनतम मात्रा की भी सराहना करता है।

अध्याय २

रूप पुराना, रंग नया

सोवियत संघ में मुझे जो सर्वोत्तम समाचार सुनने को मिला, वह यह है कि अब वहाँ राजनीतिक गिरफ्तारियाँ नहीं होतीं। मैंने अपने समस्त सोवियत मित्रों तथा परिचितों से एवं अनेक विदेशी कूटनीतिज्ञों और पत्रकारों से भी पूछा कि क्या आप गुप्त पुलिस द्वारा गिरफ्तार किये गये किन्हीं व्यक्तियों को जानते है। उन्होंने उत्तर दिया—"नहीं, गत वर्ष तो कोई नहीं गिरफ्तार हुआ।"—मार्च, १९५६ में हुए छात्रों के दंगों के बाद तिफलिस मे की गयी गिरफ्तारियों को छोड़ कर।

मास्को विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक ने कहा कि उस भयानक दुस्स्वप्न का अब अन्त हो गया है, लेकिन यह भयानक दुस्स्वप्न कोई स्वप्न नहीं था; १९१७ से लेकर १९५४ तक और १९५५ में भी यह एक भयंकर वास्तविकता थी। १९३० से १९४० तक की अवधि में शायद ही किसी दिन प्रातःकाल हमारी नौकरानी ने, जो उषा काल में दूध लाने के लिए नीचे जाती थी और पंक्ति में दूसरी नौकरानियों से मिलती थी, वापस लौट कर यह अशुभ समाचार न सुनाया हो कि कल रात को कमरा नम्बर १७ से अमुक व्यक्ति को गुप्त पुलिस (NKVD) पकड़ ले गयी, अथवा हमारे ऊपर रहने वाले पड़ोसी को पकड़ने के लिए वे दो बजे रात को आये थे। इस प्रकार के समाचार सदैव शीघ्र प्रसारित हो जाते थे और उनसे भय का प्रसार होता था। यह एक सुनियोजित परिणाम था। गुप्त पुलिस अपने शिकारों पर अचानक और अप्रत्याशित रूपसे प्रहार करती थी और उनके साथ बाद में जो कुछ वह करती थी, वह बहुत दिनों तक रहस्य ही बना रहता था, किन्तु प्रत्येक गिरफ्तारी के परिणामस्वरूप नागरिकों के मनों में जिन लहरों की सृष्टि होती थी, उन्हें सीमित करने का कोई प्रयास नहीं किया जाता था। उनसे आतंक की गहराई और भी अधिक हो जाती थी।

मेरी हाल की मास्को-यात्रा के समय एक सोवियत पत्रकार ने मुझे स्पष्टीकरण करते हुए बताया कि प्रत्येक नगर और क्षेत्र में गुप्त पुलिस के लिए गिरफ्तारियों की संख्या निर्धारित कर दी जाती थी। तत्पश्चात् नगर को सम्भागों में विभक्त कर दिया जाता था और प्रत्येक सम्भाग के लिए भी संख्या निश्चित कर दी जाती थी।

इसके अतिरिक्त, गलियों और घरों के लिए भी संख्याएँ निर्धारित रहती थीं। इस भयंकर प्रभाव से कोई भी व्यक्ति नहीं बच सकता था।

उस युग में विदेशी यात्री कभी-कभी पूछा करते थे कि अमुक व्यक्ति को क्यों गिरफ्तार किया गया? किन्तु यह प्रश्न अर्थहीन था। गुप्त पुलिस राजनीतिक अपराधों से बहुत कम सरोकार रखती थी। उसके पास अपराध का प्रमाण शायद ही कभी रहता हो। गिरफ्तारियों का कारण उनसे उत्पन्न होने वाला मनोवैज्ञानिक प्रभाव हुआ करता था। एक बार सीखचों के पीछे बंद हो जाने पर बन्दी सामान्यतः जॉच-कर्त्ता द्वारा बतायी गयी स्वीकारोक्ति को लिख देते थे और उस पर अपने हस्ताक्षर कर दूसरों को भी फँसा दिया करते थे, जिन्हें उनके बाद गिरफ्तार कर लिया जाता था।

१९३७ में एक पड़ोसी, जो एक सरकारी अधिकारी भी था, गिरफ्तार किये जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके मन में अपराधी होने का कोई डर नहीं था, फिर भी उसने अपना छोटा-सा पुलिन्दा, जिसमें एक कमीज, दो चड्डियॉ, साबुन का एक 'बार' और दाँत साफ करने का एक ब्रश था, तैयार कर रखा था। वह गुप्त पुलिस के एजेण्टों की प्रतीक्षा बड़ी परेशानी और एक प्रकार की अधीरता के साथ करता रहा। एक रात वे उसे उठा कर ब्लैक मेरिया ले गये और इस प्रकार उसके मानसिक तनाव का अन्त हुआ। प्रत्येक सोवियत नागरिक आपने आसपास होने वाले परिवर्तनों को पहले ही समझ जाया करता था। यदि कार्यालय का कोई सहयोगी गिरफ्तार किया जाता, तो वह जान लेता कि उसे किस बात की आशा करनी चाहिए: सहयोगी सम्भवतः अपराध स्वीकार कर लेगा और फिर उसकी बारी आयेगी।

वे अपराधों को स्वीकार क्यों करते थे? इस पहेली को सुलझाने में स्वयं ख्रुश्चेव ने सहायता प्रदान की है। उसने २४ फरवारी १९५६ के अपने भाषण में बलपूर्वक कहा—"वास्तव में अपराध का एक मात्र प्रमाण मुख्यतः स्वयं अपने विरुद्ध अभियुक्त द्वारा की गयी 'स्वीकारोक्ति' को माना जाता था और जैसा कि बाद में जाँच करने से सिद्ध हो गया, 'स्वीकारोक्तियां' अभियुक्त को शारीरिक यातना देकर प्राप्त की जाती थीं... बर्बरतापूर्ण यातनाओं को और अधिक सहन कर सकने में असमर्थ हो जाने पर वे (जॉच-कर्त्ता न्यायाधीशों — असत्य-प्रचारकों के आदेश से) अपने ही विरुद्ध सभी प्रकार के गम्भीर और असम्भव अपराध लगाते थे।"

कारागार में केवल साधारण नागरिकों और सामान्य कम्यूनिस्टों को ही यातनाएँ नहीं दी जाती थीं। पार्टी के उच्चतम अधिकारियों की भी वही दशा होती थी। इस प्रकार ख्रुश्चेव ने रहस्योद्घाटन किया कि सर्वोच्च 'पोलिट ब्यूरो' के एक उपसदस्य राबर्ट आई० ईखे को "२९ अप्रैल १९३८ को निन्दात्मक सामग्री के आधार पर गिरफ्तार किया गया ... ईखे की एक दूसरी घोषणा को, जिसे उसने २७ अक्तूबर १९३९ को स्तालिन के पास भेजा था, सुरक्षित रखा गया है। इसमें उसने लिखा था—'मामला इस प्रकार है: उशाकोन और निकोलायेव द्वारा—विशेषतः प्रथम उल्लिखित व्यक्ति द्वारा, जिसने इस ज्ञान का उपयोग किया कि मेरी टूटी हुई पसलियां (पहले दी गयी यातनाओं में टूटी हुई) अभीतक पूर्ण रूप से ठीक नहीं हुई हैं और जिनके कारण मुझे अत्यधिक पीड़ा पहुंची है—दी गयी यातनाओं को सहन न कर सकने के कारण मै स्वयं अपने विरुद्ध तथा दूसरे व्यक्तियों के विरुद्ध अभियोग लगाने के लिए विवश कर दिया गया...' ४ फ़रवरी को ईखे को गोली मार दी गयी। अब यह बात निश्चित रूपसे प्रमाणित हो चुकी है कि ईखे का मामला जाली था।"

ख्रुश्चेव ने बताया कि सोवियत गुप्त पुलिस द्वारा दी जाने वाली "निर्मम एवं अमानवीय यातनाओं" तथा उसके द्वारा किये जाने वाले "भयंकर दुर्व्यवहार" का निरीक्षण स्तालिन स्वयं करता था। ख्रुश्चेव ने बताया कि स्तालिन ने "कहा कि अकादमी के सदस्य विनोग्रादोव को जंजीरों में जकड़ दिया जाना चाहिए, एक दूसरे व्यक्ति की पिटाई की जानी चाहिए। इस कॉंग्रेस में भूतपूर्व राज्य-सुरक्षा-मंत्री कामरेड इगनातीव एक प्रतिनिधि की हैसियत से उपस्थित हैं। स्तालिन ने उनसे रूक्षतापूर्वक कहा था—'यदि आप डाक्टरों से स्वीकारोक्तियां नहीं प्राप्त करते, तो हम आपका सिर उड़ा देंगे।' स्तालिन व्यक्तिगत रूप से जाँच-कर्ता न्यायाधीश को बुलाता था, उसे आदेश देता था, उसे इस सम्बन्धमें परामर्श देता था कि जाँच के लिए किन तरीकों से काम लिया जाना चाहिए; ये तरीके सीधे-सादे होते थे—पीटो, पीटो और एक बार फिर, पीटो।"

फिर भी, कभी-कभी डण्डे (अथवा सीसे के पाइप) और गाजर का प्रयोग किया जाता था। उदाहरणस्वरूप ख्रुश्चेव ने "कामरेड रोज़ेन ब्लुम का, जो १९०६ से बराबर पार्टी के सदस्य रहे थे और जिन्हें १९३७ में लेनिनग्राद की खुफ़िया पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया था", नाम लिया। "भयंकर यातनाओं

के बाद, जब उन्हें स्वयं अपने सम्बन्धमें तथा अन्य व्यक्तियों के सम्बन्ध में झूठी सूचनाओं को स्वीकार करने का आदेश दिया गया था", उन्हें खुफिया पुलिस के प्रधान, ल्योनिद जाकोवस्की के कार्यालय में बुलाया गया तथा उनसे कहा गया कि न्यायालय में एक गवाह की हैसियत से तुम्हारी सेवाओं की आवश्यकता है। खुश्चेव ने जाकोवस्की द्वारा कहे गये ये शब्द उद्धृत किये—"तुम्हें स्वयं किसी बात को गढ़ने की आवश्यकता नहीं है। खुफिया पुलिस तुम्हारे लिए एक रूपरेखा तैयार करेगी...तुम्हे सावधानीपूर्वक उसका अध्ययन करना होगा तथा न्यायालय द्वारा पूछे जाने वाले समस्त प्रश्नों और उनके उत्तरो को याद कर लेना होगा। तुम्हारा भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि, मुकदमा किस प्रकार चलता है और उसका परिणाम क्या होता है...यदि तुम्हें यह मंजूर हो, तो तुम्हारी जान बच सकती है; हम तुम्हें आजीवन सरकारी भोजन और वस्त्र भी देते रहेंगे।"

अब मास्को में कोई भी व्यक्ति इस बात में सन्देह नही करता कि गिरफ्तारियों, निर्वासनों और फाँसियों की संख्या करोड़ों तक पहुँच गयी थी; खुश्चेव के भाषण में व्यापक रूप से स्वीकृत इस अनुमान का आधार निहित है। प्रत्येक व्यक्ति के सिर के ऊपर कच्चे धागे से बँधी हुई भारी तलवार लटकती रहती थी और वह किसी के मस्तिष्क को चकनाचूर कर देने के लिए गिरती थी अथवा नहीं, यह भाग्य, मन की मौज अथवा व्यक्तिगत सम्बन्ध पर निर्भर करता था। १९५६ में मास्को में प्रमुख सोवियत प्रचारक तथा उपन्यासकार एलिया एहरेनबुर्ग ने मुझे बताया कि वह रूस के एक प्रतिभाशाली लेखक आइजक बेबल की साहित्यिक कृतियों का सम्पादन कर रहा था। एहरेनबुर्ग ने कहा—"बेबल येजहोव की पत्नी का मित्र था और इसीसे उसकी रक्षा हो गयी। (१९३७-३८ के हत्याकाड की अवधि में येजहोव सोवियत गुप्त पुलिस का सर्वेसर्वा था।) जब १९३९ में येजहोव के स्थान पर बेरिया आया, तब बेबल लापता हो गया; उसकी मृत्यु एक नजरबन्दी शिविर में हुई।"

दिसम्बर १९५६ में एक सुप्रसिद्ध सोवियत लेखक से, जो एक कम्यूनिस्ट देश की राजधानी की यात्रा कर रहा था, पूछा गया कि १९३० में प्रमुख उपन्यासकार बोरिस पिलन्याक को क्यों फाँसी पर लटका दिया गया था। उसने उत्तर दिया—"दुर्घटनावश! यदि ऐसा न होता, तो शायद बोरिस पिलन्याक यहाँ बैठा होता और आप यह पूछते कि मुझे क्यों गोली मार दी गयी थी।"

इत्तफ़ाक़ से बड़ी-बड़ी बातें हो जाया करती थीं। गुप्त पुलिस इस कार्य को सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिए इतनी अधिक व्यस्त रहती थी और चूँकि स्वयं उसका भी निरन्तर शुद्धीकरण हुआ करता था, इसलिए कभी-कभी पुलिस एजेण्टों की कार्य-क्षमता तानाशाही की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं सिद्ध हो पाती थी। इसीसे इस बात का स्पष्टीकरण हो जाता है कि आज एक सैनिक अधिकारी क्यों जीवित है। तृतीय दशाब्दी में ग्रीष्म ऋतु का समय था और परिवार के शेष सदस्य देहात में चले गये थे। एक रात को दरवाजे पर खटखट होने से वह जाग पड़ा। इसका अर्थ वह बखूबी जानता था। इसीलिए वह आत्म-समर्पण करने से इनकार न कर सका, किन्तु जब वह दरवाजे की ओर बढ़ा तब अकस्मात् भय के मारे सुन्न हो गया। उसका पिछला सारा जीवन उसके मस्तिष्क में चमक उठा और वह निश्चल, निस्पन्द होकर वहीं खड़ा रहा। उसने दरवाजे की दूसरी ओर एक आवाज़ को यह कहते हुए सुना—"अवश्य ही हमारे साथी हमसे पहले ही यहाँ पहुँच गये होंगे और उसे लेकर चल दिये होंगे।" तत्पश्चात् दो व्यक्ति सीढ़ियों से नीचे उतरे। दूसरे दिन प्रातः काल अधिकारी यथापूर्व काम पर गया। कोई बात नहीं हुई। वास्तव में शीघ्र ही उसकी पदोन्नति कर दी गयी।

एक महिला लेखिका ने कहा—"आप जानते हैं, यह बात अत्यन्त निर्मम प्रतीत होती है, किन्तु यह सत्य है; युद्ध से हमें वास्तव में एक प्रकार से सहायता ही मिली। यद्यपि रक्त की नदियाँ बह गयीं, हम उसका कारण समझ सकते थे। शुद्धीकरण का कारण कभी किसी की समझ में नहीं आया। धन्यवाद है परमात्मा को, अब वह समाप्त हो गया है।"

मुझे मास्को में ज्ञात हुआ कि शिकागो के भूतपूर्व रूसी माइकेल बोरोडिन को, जिसने द्वितीय दशाब्दी के मध्यमें दक्षिण चीन में क्रान्ति का नेतृत्व किया था, स्तलिन के आदेश से फाँसी दे दी गयी थी; लाजार कागानोविच के दो भाइयों को "समाप्त" कर दिया गया था, जब कि वह पोलिट ब्यूरो का सदस्य था; भूतपूर्व उपविदेश-मंत्री (Deputy Commissar of Foreign Affairs) सोलोमन लोज़ोवस्की को गोली से उड़ा दिया गया था; द्वितीय विश्व-युद्ध के पूर्व और उसके दर्म्यान लन्दन में योग्य सोवियत राजदूत आइवन मैस्की को, जो एक नज़रबन्दी शिविर में दो वर्षों तक रहा, पुनर्वासित कर दिया गया था; बेल्जियम-स्थित भूतपूर्व राजदूत यूजिनी रुबिनिन एक शिविर में दस वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् पुनः मास्को आ गया था; जनरल स्टर्न (ग्रिगोरोविच) और जैनेस्क

श्मुश्केविच, जो स्पेन मे सरकार-समर्थकों (Loyalists) की सहायता करने वाले वीर एवं निष्ठावान सोवियत सैनिक और कूटनीतिक अधिकारियों के दल में से बच रहने वाले प्रायः दो ही प्राणी थे, हाल में ही साइबेरियाई निर्वासन से लौटे है। उत्तरी ध्रुव के निर्जन प्रदेश में कठोर श्रम करने के पश्चात् अन्य हजारों व्यक्ति पुनः घर लौटे थे। ऐसा प्रतीत होता है कि धीरे-धीरे स्वयं शिविरों को समाप्त किया जा रहा है। फांसी पर चढ़ाये गये अनेक सोवियत लेखकों की रचनाओं को, जो किसी समय जब्त थीं, प्रकाशित किया जा रहा था। शरलाक होम्स की कहानियां रूस में पुनः उपलब्ध होने लगी है। नही, कॉनन डॉयल सोवियत नागरिक कभी नहीं बना, किन्तु स्तालिनवादी 'गुप्तचर'-प्रहारों के पागलपन से भरे हुए युग मे, यह आदेश जारी कर दिया गया था कि, जासूसी कहानियॉ "हानिप्रद" होती है; उनसे गुप्त पुलिस के कार्य में बाधा उत्पन्न हो सकती है। अनेक वर्षों तक स्तालिन ने जॉन रीड की पुस्तक "टेन डेज दैट शुक द वर्ल्ड" को इसलिए जब्त कर रखा था कि, १९१७ की बोल्शेविक क्रान्ति से सम्बन्धित इस पुस्तक में स्तालिन का कोई उल्लेख नहीं किया गया था— यद्यपि लेनिन ने उसके रूसी अनुवाद की प्रशंसात्मक भूमिका लिखी थी, जिसमें उसने कहा था कि, उसने उसे दो बार पढ़ा था। अब रूसी पत्रिकाओं ने उसके उद्धरणों को मुद्रित करना प्रारम्भ कर दिया है।

तो "भयंकर दुस्स्वप्न समाप्त हो गया है।" सोवियत नागरिक यह नहीं बता सकते कि गिरफ्तारियों का क्रम कितने समय तक बन्द रहेगा। वे सतर्कता से काम लेते है, किन्तु आशान्वित हैं। कोई व्यक्ति यह सोच सकता है कि उन्हें हत्या-काण्डों तथा सामूहिक आतंक के लिए उत्तरदायी राजनीतिक पद्धति से घृणा करनी चाहिए। कुछ व्यक्ति घृणा करते भी हैं। अधिकांश उसकी नयी नम्रता के लिए कृतज्ञता व्यक्त करते है।

मास्को की यात्रा कर लेने के बाद मै स्तालिनोत्तर युग के सम्बन्ध में विश्व-जनमत के तीव्र अन्तर को समझता हूँ। मार्च, १९५३ में स्तालिन की मृत्यु होने के बाद से, विदेशी विशेषज्ञ इस सम्बन्ध में तर्क-वितर्क करते रहे हैं कि, सोवियत संघ में परिवर्तन हुआ है अथवा नहीं और यदि परिवर्तन हुआ है, तो किस सीमा तक। कुछ लोग कहते हैं कि सब कुछ वही है; कुछ लोग कहते हैं कि बहुत अन्तर हो गया है और कुछ लोगों का कहना है कि, उसमें जितना ही अधिक परिवर्तन होता जाता है, वह उतना ही अधिक पहले के समान होता जाता है। (Plus ça change, plus c'est la même chose) स्वयं मेरे निष्कर्ष को

एक विरोधाभास के रूपमें व्यक्त किया जा सकता है: सोवियत संघ में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं हुए हैं, किन्तु सारभूत रूप से स्थितियों में अन्तर आ गया है।

सोवियत प्रणाली के बाह्य रूप अपरिवर्तित बने हुए हैं और बाहर से अथवा अयथार्थ रूप से भीतर से किसी व्यक्ति को बाह्य स्वरूप ही दिखायी देते हैं। सोवियत संघ का बाह्य स्वरूप एकदलीय अभिनायकवाद का है, जिसके शासकों के हाथों में असीमित अधिकार है। प्रजातांत्रिक संस्थाओं का प्रारम्भ नहीं किया गया है। कोई भी सांविधानिक प्रावधान ऐसा नहीं है, जो दल के अध्यक्ष-मण्डल अथवा संघीय मंत्रिमंडल को एक दूसरे स्तालिनवादी हत्याकाण्ड का आदेश जारी करने से रोक सके। व्यक्तियों को कोई जन्मसिद्ध अधिकार नहीं प्राप्त है; शासकों के लिए कोई कानूनी प्रतिबन्ध और सन्तुलन नहीं है।

फिर भी, खुफिया पुलिस की ज्यादतियों में दृश्य, संस्पृश्य कमी, राजनीतिक गिरफ्तारियों का स्थगित किया जाना, पुलिस-राज्य के शिकार हुए अनेक व्यक्तियों का मृत्यूपरान्त अथवा जीवितावस्था म पुनर्वासित किया जाना, सोवियत मानव-प्राणियों के लिए एक निश्चयात्मक सुधार का परिचायक है। उनके साथ स्वतंत्र विचार-विमर्श में भीतर इसी बात का अनुभव होता है। नागरिकों के ऋतु-सूचक यंत्र में पढ़ा जाता है: साफ अथवा सुहावना। वह सूर्य के प्रकाश के लिए प्रार्थना कर रहा है। फिर भी, वह जानता है कि, बहुधा मौसम के बारे में भविष्य-वाणी नहीं की जा सकती और तदनुसार वह राजनीतिक मुक्त वायु में गलत कदम उठाने में संकोच करता है। केवल असाधारण व्यक्ति ही—विशेषतः छात्र—अपनी निराशा अथवा कटुता अथवा द्वेष को सार्वजनिक रूपसे व्यक्त करता है। अधिकांश व्यक्ति सोच-समझ कर कदम उठाते हैं। असन्तोष विद्यमान है क्योंकि भूतकालीन बुराई के सम्बन्ध में क्रेमलिन की प्रत्येक स्वीकारोक्ति आक्रोश को जन्म देती है। ब्रुनो यासेन्स्की का एक उत्कृष्ट उपन्यास अथवा मिखैल कोल्तसीव के विद्वत्तापूर्ण निबन्धों का संग्रह हाथ में लेने पर सोवियत नागरिक, जो जानता है कि उक्त साहित्यकारों को निर्दोष होते हुए भी फांसी दे दी गयी थी, क्या अनुभव कर सकता है? उसकी चेतना में केवल अन्याय और अपूरणीय क्षति की ही बात आ सकती है। इस सीमा तक ख्रुश्चेव के रहस्योद्घाटनों तथा उसके गुप्त भाषण के पश्चात् की गयी पुनर्नियुक्तियों और पुनर्वासों ने अत्यन्त निष्क्रिय, वफ़ादार कम्यूनिस्ट के लिए भी मामले को बहुत अधिक खराब बना दिया है; शासन के अत्याचार आज लिपिबद्ध और प्रमाणित हो चुके हैं।

किन्तु वह कर क्या सकता है ? स्तालिन ने दशाब्दियों तक जो आतंक फैला रखा था, उन्हें सरलतापूर्वक नहीं भुलाया जा सकता। उन आतकों के कारण जनता भीरु बन गयी। अतः वर्त्तमान शासकों को विश्वास है। जब अशान्ति का कोई लक्षण दृष्टिगोचर होता है, तब वे लगाम खींच देते हैं। वे कुछ व्यक्तियों को आलोचना करने की भी अनुमति दे देते हैं। नेता आज भी चालक की कुर्सी पर हैं और जनता अभी तक जुए में जुती हुई है। जब तक देश आर्थिक विपत्ति में नहीं फँसता और विदेश में कोई प्रलयकारी घटना नही होती, तब तक क्रेमलिन में सब कुछ ठीक ही रहेगा, किन्तु स्तालिन के उत्तराधिकारियों के कथनों एवं कार्यों के आधार पर यह निर्णय दिया जा सकता है कि वे राष्ट्र की आज्ञा-पालकता को उत्साह अथवा उसके विचारपूर्ण मौन को प्रसन्नता समझने की भूल नहीं करते।

अध्याय ३

मास्को और मैडिसन एवेन्यू

जो सोवियत नागरिक अपने घर पर किसी विदेशी का स्वागत करते हैं, वे भी उसे पत्र अथवा कोई विदेशी उपहार न भेजने की ताकीद कर देते है, चाहे उसके लिए वे कितने ही उत्कंठित क्यों न हों। भय की मात्रा में थोड़ी-सी कमी का अर्थ बहुत अधिक स्वतंत्रता नहीं होता। निश्चय ही राष्ट्र को प्रचार से कोई स्वतंत्रता नहीं प्राप्त है। गुप्त पुलिस का "चमकता हुआ खड्ग" म्यान में बन्द कर दिया गया है, किन्तु सर्वशक्तिमान राज्य की आवाज़ और हाथ सर्वत्र विद्यमान हैं।

प्रायः चालीस वर्षों तक सोवियत व्यक्ति के मस्तिष्क पर तानाशाही द्वारा प्रहार किया जाता रहा है, उसे चकनाचूर किया जाता रहा है, धक्का दिया जाता रहा है तथा उसे निचोड़ कर एक रूप से दूसरे रूप में परिणत किया जाता रहा है। यदि इसके परिणामस्वरूप नमनीयता और ग्रहणशीलता का अन्त हो गया है, तो किसी भी व्यक्ति को आश्चर्य नहीं होगा। मास्को के एक निवासी ने कहा—"मै जिस चीज़ की सबसे अधिक कामना करता हूँ, वह यह है कि काम और खरीददारी के बाद घर लौटने पर अपने आपको किसी कमरे में बन्द कर लूँ और कोई बढ़िया पुस्तक, विशेषतः कोई प्राचीन ग्रन्थ पढ़ूँ।" ऐसे स्थान कम हैं, जहाँ सरकार की नज़र से बच कर रहा जा सके।

निश्चय ही प्रचार प्रत्येक देश द्वारा किया जाता है तथा निजी व्यावसायिक प्रतिष्ठान भी प्रचार करते हैं, किन्तु मैडिसन एवेन्यू और मास्को के बीच एक भारी और जानने योग्य अन्तर है। न्यूयार्क का मैडिसन एवेन्यू—जो उच्च सत्ताक प्रचार तथा विशाल पैमाने के विज्ञापन का प्रतीक है, दूसरे व्यक्तियों के अहम् को सन्तुष्ट करता है तथा दूसरे लोगों की सामग्रियों को बेचता है। उसके कुशल संचालक कभी-कभी स्वयं अपने ही द्वारा निर्मित चक्रों और अपनी ही अतिशयोक्तियों पर अवश्य हँसते होंगे, किन्तु सोवियत विक्रय-कला-कुशलता कोई वाह्य अथवा गौण वस्तु नहीं है, वह सारभूत तत्वों से ही बनी है। मास्को का प्रचार वहां की प्रणाली का हृदय-स्पन्दन है। जनश्रुति-कथाओं मे उल्लिखित पोतेमकिन ग्रामों का निर्माण एक यात्रा के समय एक साम्राज्ञी को मूर्ख बनाने के लिए किया गया था। सोवियत "पोतेमकिन ग्राम" अपने निर्माताओं को ही (अथवा कम-से-कम उनमे से कुछ को), जो अपने साथी नागरिकों तथा विदेशियों को चकाचौंध कर देने के लिए विशाल धन-राशि व्यय करते हैं और मनुष्यों को क्षति पहुँचा कर राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था तक को भी विकल बना देते हैं, मूर्ख बनाते हुए प्रतीत होते हैं। "मैडिसन एवेन्यू" कृति-सम्बन्धी प्रचार है। मास्को कभी-कभी प्रचार के लिए कृतियों को नष्ट कर देता है।

१९५६ के अन्तिम चरण में जब मास्को का सुप्रसिद्ध बोल्शोई नाट्य-दल (Ballret) लन्दन आया, तब 'मैनचेस्टर गार्डियन' के विशेष संवाददाता ने उसकी टेकनीक की सराहना की, फिर भी उसने "पट-सज्जा के विषय में उसकी उल्लेखनीय सुरुचिहीनता एवं कल्पनाहीनता" पर बल दिया। उसने लिखा "शैली में एक साथ ही समयानुपयुक्तता तथा निकृष्टता, दोनों पायी जाती हैं, किन्तु सुरुचि एवं कल्पना-शीलता के अभाव की क्षतिपूर्ति उत्पादनों के व्यापक पैमाने तथा यंत्रों के अत्यधिक प्रयोग द्वारा अत्यधिक मात्रा में कर दी जाती है।" यहा उसने अनजाने ही जीवन के अनेक पहलुओं के प्रति सोवियत दृष्टिकोण को व्यक्त कर दिया।

सौन्दर्य के साथ विशालता का संयोग कर सकने में असमर्थ होने के कारण सोवियत निवासियों ने सौन्दर्य का स्थान विशालता को प्रदान कर दिया। जिस वस्तु को वे कौशल द्वारा नहीं प्राप्त कर सकते, उसे वे समूह द्वारा प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। मात्रा के लिए गुण का बलिदान कर दिया जाता है। यदि सौन्दर्य और कला प्रभावित नहीं कर सकते, तो भार और विस्तार को तो प्रभावित करना ही चाहिए। आंशिक रूप से, यह सम्भवतः देश के व्यापक विस्तार एवं स्वस्थ विदेशी प्रभावों से उसे सुनियोजित रूप से पृथक् रखने के

कार्य को प्रतिबिम्बित करता है; अंशतः, उसके विस्तृत प्राकृतिक साधन-स्रोतों को प्रतिबिम्बित करता है, किन्तु अन्य किसी भी वस्तु से अधिक यह दरिद्रता के मध्य व्यय-साध्य आडम्बर का प्रदर्शन करने के सरकार के असीमित, सार्वजनिक नियंत्रण अथवा विरोध से अप्रतिबन्धित, अधिकार की देन है। बताया जाता है कि जब मेरी एण्टायनेटी से कहा गया कि जनता रोटियों के लिए शोर मचा रही है, तब उसने कहा था—"उन्हें केक खाने दो।" रोटी का अर्थ सुख और यहां तक कि आवश्यकताएँ मान कर, जिसकी आपूर्ति शासन नहीं कर सकता था, स्तालिन ने जनता को विवाह के केक-सदृश गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ और विशाल प्रयोजनाएँ—रोटी के बदले सर्कस—प्रदान की।

आकार की विशालता के प्रति कम्यूनिस्ट प्रेम, जो महानता के प्रति प्रेम न होकर विशालता के प्रति प्रेम है, जो कार्यात्मक वस्तु के प्रति प्रेम न होकर अबौद्धिक वस्तु के प्रति प्रेम है, प्रभावोत्पादन की एक आवश्यकता की सृष्टि है। प्रत्येक अधिनायकवादी राज्य विशिष्ट निर्माण के लोभ के वशीभूत हो जाता है। उसकी रुचि स्तालिनालीज (Stalinallees) प्रदर्शनो, परेडों और बाह्याडम्बरों की ओर दौड़ लगाती है।

रूस में रंगमंच की समृद्धिमय साज-सज्जा तथा नाटकों को समृद्धि के प्रदर्शन के साथ प्रस्तुत करना परम्परागत था। बोल्शेविकों ने उन्हें रंगमंच पर बनाये रखा तथा राजनिति एवं अर्थशास्त्र में उन्हें लागू किया। जारशाही में तथा अब भी झोंपड़ियों के साथ-साथ राजमहल भी विद्यमान हैं।

सोवियत-सरकार मास्को के लेनिन हिल्स क्षेत्र मे एक सोवियत-प्रासाद (Palace of Soviets) का निर्माण करने की तैयारी कर रही है। इसका इतिहास दो दशाब्दियों से अधिक समय पूर्व से प्रारम्भ होता है, जव स्तालिन ने नगर के ऊपर गगनस्पर्शी, रक्षक ईसा मसीह (Christ the Saviour) के महान श्वेत भित्तियों एवं स्वर्ण-कलशों वाले आर्थोडाक्स कैथेड्रल (गिरजाघर) को भूमिसात कर देने का आदेश दिया। इसके स्थान पर वह एक बृहदाकार सम्मेलन-कक्ष का निर्माण करना चाहता था, जिसके ऊपर लेनिन की एक मूर्ति होती और जो विश्व का उच्चतम भवन होता। मास्को के अन्तर्धरातलीय दलदल में इस भवन की नींव डालने में दुर्गम कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और अन्तत. १९४१ में काम को स्थगित कर दिया गया, किन्तु २५ अगस्त १९५६ को सोवियत संघ की मंत्रि परिषद ने महल की एक नयी स्थापत्य-कला विषयक आकृति (Architectural design) के लिए एक प्रतियोगिता

की घोषणा की। सरकारी वक्तव्य के अनुसार सोवियत प्रासाद में ४६ हजार वर्गफुट का एक हाल होगा, जिसमें ४६ सौ स्थान होंगे; संघीय परिषद् तथा राष्ट्रीय परिषद (Council of Nationalities) के लिए, जो सर्वोच्च सोवियत का निर्माण करती हैं तथा सोवियत सरकार के कार्यों को स्वीकृत करती हैं, १५–१५ हजार वर्गफुट के दो सदन होंगे, राजकीय भोजों और स्वागत-समारोहों के लिए ४१ हजार वर्गफुट क्षेत्रफल का एक विशाल कक्ष होगा तथा ६४ हजार वर्गफुट में कार्यालय, समिति-कक्ष, और स्नानागार आदि होंगे। प्रासाद में जो कमरे होंगे, उनके फर्श का कुल क्षेत्रफल ३ लाख ६० हजार वर्गफुट से अधिक नहीं होगा। बाहर पार्किंग-स्थल, कारों और जुलूसों के लिए विस्तृत मार्ग तथा खुले आकाश के नीचे एकत्र होने वाले जन-समूहो के लिए एक विशाल 'प्लाजा' होगा।

नया विदेश-कार्यालय २९ मंजिल ऊँचा है; नये विश्वविद्यालय का गुम्बज ३४ मंजिल ऊँचा है; मास्को के चार अन्य भवन भी इतने ही कुरूप, "गगन चुम्बी" और विशाल हैं। उनकी ऊँचाई पानी के दबाव की एक नयी समस्या की सृष्टि करती है तथा उनके लिए विशेष अग्नि-शमन यंत्रों की आवश्यकता है। स्तालिन की मृत्यु के बाद सरकार ने इस प्रकार के अनुकरणात्मक दैत्याकार भवनों के निर्माण को निषिद्ध कर दिया।

किन्तु सोवियत प्रासाद, उसका स्वरूप चाहे कुछ भी हो, एक व्यय-साध्य विशाल भवन होगा। १९५६ में मास्को ने एक ऐसे 'स्टेडियम' का निर्माण-कार्य पूरा किया, जिसमें १ लाख ६ हजार व्यक्तियों के बैठने का स्थान होगा। स्तालिन तो चला गया, किन्तु विशालता के प्रति प्रेम आगे ही बढ़ता जा रहा है।

सोवियत नागरिकों के मूल्य पर इन दर्शनीय एवं विशाल भवनों का जो निर्माण किया जाता है, उसे वे मुश्किल से ही पसन्द करते हैं। मास्को के इंजिनियर ने अनुमान लगाया कि सोवियत प्रासाद के चारों ओर खुली जगह एवं वहाँ तक पहुँचने के मार्गों का निर्माण करने के लिए ९० हजार व्यक्तियों के निवास-स्थानों को नष्ट कर दिया जायगा। उसने बहुत धीरे से पुनः कहा—"और प्रासाद के निर्माण में जितनी सामग्री एवं श्रम का व्यय होगा, उससे अत्यन्त बुरी तरह जीवन-यापन करने वाले लाखों व्यक्तियों के लिए निवास-स्थानों का निर्माण किया जा सकता है।"

"इतनी जगह के होते हुए भी वे गगन-चुम्बी भवनों का निर्माण क्यों करते हैं?"—हमारे विदेश कार्यालय से होकर गुजरने पर एक टैक्सी ड्राइवर ने विस्मय के

साथ कहा। मैंने पूछा कि तुम किस प्रकार रहते हो। उसने उत्तर दिया—"एक कमरा, चौदह वर्ग मीटर।" (१४० वर्गफुट)

"और परिवार में सदस्य कितने है?"

"मै, मेरी पत्नी, तेरह वर्ष की एक लड़की और सात वर्ष का एक लड़का।"

"क्षमा कीजियेगा"—मैने कहा—"हम दोनों सयाने है। क्या आपको यह बताने में कोई आपत्ति होगी कि इस प्रकार की परिस्थितियों में आप अपने दाम्पत्य जीवन की व्यवस्था कैसे करते है?"

उसने दुखपूर्वक सिर हिलाया। "हॉ"—उसने आह भर कर कहा—"यह एक समस्या है। चारपाई को जरा भी चरमराना नहीं चाहिए और हमें तनिक भी बातचीत अथवा आवाज नहीं करनी चाहिए।"

मै एक विदेशी राजदूतावास द्वारा नियुक्त एक सोवियत ड्राइवर के साथ एक बन्द कार में जा रहा था। मैने उससे भी वही नियमित प्रश्न किया—

"कितने वर्ग-मीटर?"

"पांच"। (पचास वर्गफुट)

मैंने पीछे की ओर देखा। "अर्थात् इस कार के आकार के बराबर"—मैने कहा।

"आप ठीक कहते है।" उसने मेरी बात की पुष्टि की। उसके बाल-बच्चे नहीं थे। उसकी पत्नी काम करती थी। वे एक बड़ा घर रख सकते थे, किन्तु उन्हें बड़ा घर नहीं मिल सकता।

मेरे मास्को-प्रवास के समय पुस्तकों की दूकानों पर "यू. एस. एस. आर. की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था" नामक एक नयी पुस्तिका की, जिसका प्रकाशन कई वर्षों बाद प्रथम बार हुआ था, बड़ी मांग थी। इस सरकारी प्रकाशन के पृष्ठ २४३ पर एक उल्लेखनीय बात लिखी हुई थी। वह बात जन्म-संख्या में अत्यधिक कमी होने की थी। १९१३ में उत्पन्न हुए बालकों की संख्या ४७ प्रति हजार थी, १९२६ में ४४, १९४० में ३१·७, १९५० में २६·५, १९५१ में २६·८, १९५२ में २६·४, १९५३ में २४·९, १९५४ में २६·५ और १९५५ में २५·६ प्रति हजार थी। यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। एक कमरे वाले किसी भी निवास-स्थान में अधिक से अधिक दो माता-पिता और दो बालक ही रह सकते है।

मैं एक ऐसे कमरे में गया, जिसमें एक बीस वर्षीय बालक, एक दस वर्षीय बालक तथा उनके पिता और माता रहते थे। बड़ा लड़का लकड़ी के एक पर्दे के

पीछे तथा छोटा लड़का कोच पर सोता था। एक संकरी-सी चारपाई दो किवाड़ों वाले प्रवेश-द्वार का आधा भाग घेरे हुई थी। चौथा व्यक्ति कहां सोता था, इसकी कल्पना मैं नहीं कर सका क्योंकि थालियां, भोजन-सामग्री और धुले हुए कपड़े आदि रखने की दो आलमारियों, एक खाने की मेज, एक डेस्क और चार कुर्सियों के रखने के बाद कमरे में कोई जगह ही नहीं बची रह गयी थी। स्नानागार, शौचालय और रसोईघर में उक्त परिवार के साथ पांच अन्य परिवार भी भागीदार थे, जिनमें से प्रत्येक के पास एक कमरा था।

मास्को के ठीक बीचोबीच और उसके बाहरी क्षेत्रों में १९१७ से पहले के बने हुए और दो मंजिल वाले असंख्य मकान दिखायी देते हैं, जिनका बाहरी पलस्तर जवाब दे चुका है, जिससे दीवारों मे लगे हुए लकड़ी के पटरे दिखायी देने लगे हैं। कुछ बाहरी दीवारों को लकड़ी के बड़े-बड़े टुकड़ों से ढंक दिया गया है, जिससे उन्हें और अधिक जोड़ना न पड़े। ब्रिटिश दूतावास से एक मिनट की दूरी पर ईंट से बने एक छोटे तीन-मंजिले मकान की दीवार पर लकड़ी की एक तख्ती लगी हुई है, जिस पर मकान के चौबीस किरायेदारों के जाति-सूचक नाम लिखे हुए हैं। मकान के आकार को देखने से मालूम होता है कि उसमे चौबीस से अधिक कमरे नहीं हो सकते। उसकी खिड़कियाँ टूटी-फूटी हैं, उसकी संकरी सीढ़ियोंसे भयंकर दुर्गन्ध आती है तथा शीतकालीन हिमपात और उसके बाद आनेवाले तूफान के कारण जगह-जगह पर ईंटों का काम नष्ट हो गया है। मित्रों की तलाश करते-करते मैं इस प्रकार के अनेक मकानों में गया। उनमें से अधिकांश में स्नान करने की सुविधा नहीं है। मैंने जिन कामगारों से बात-चीत की, उनमें से प्रायः सभी ने, किन्तु सतर्कता की दृष्टि से मैं कहूँगा कि अधिकांश ने, मुझे बताया कि वे सार्वजनिक स्नानागारों का उपयोग करते हैं। एक दिन प्रातःकाल नेशनल होटल के खण्ड-सेवक (Floor waiter) की आवाज इतनी मोटी हो गयी कि, वह नाश्ते के समय होने वाली हमारी नियमित बातचीत में भाग नहीं ले सका। वह पूर्व संध्या को स्नानागारमें गया था और उसे जुकाम ने पकड़ लिया था। मास्को के बाहरी भाग में महिलाएं सड़कों पर स्थित कुओं से पानी खींचती हैं।

मास्को की बड़ी सड़कों में से एक सड़क पर मित्रों का एक निवास-स्थान है। मैं सर्वप्रथम २९ वर्ष पूर्व वहां गया था। अपनी हाल की यात्रा में मैं उनसे वहां मिला। किसी भी वस्तु में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। युगानुयुग से पड़ी हुई गन्दगी की दुर्गन्ध से भरे हुए वे ही जीने हैं, वे ही टूटी हुई सीढ़ियां हैं, चौथी

मंजिल पर वही टूटा हुआ दरवाजा हैं, चपत करके रखे हुए बिस्तरों तथा बेमौसमी वस्त्रों को रखने की लम्बी टोकरियों से भरा हुआ वही गलियारा है, शौचालय में वही अलग पड़ी हुई सीट तथा चूहों का गहरा बिल है; सामुदायिक निवासस्थान के एक कमरे वाले पांच तथा मेरे मित्र के दो कमरोंवाले (पांच वयस्क व्यक्तियों के लिए) उपनिवास स्थानों से प्रत्येक वही पहले जैसी भीड़ की स्थिति है। लड़के गलियारे में दौड़ते रहते है, जहाँ महिलाएँ रसोईघर से अपनी मेजो तक बर्त्तन और केटलियां लेकर आती-जाती रहती है; एक पड़ोसी ग्रामोफोन बजाता है; एक दूसरे ने रेडियो चालू कर रखा है और तीसरा गाना गा रहा है। स्थिति में जो एक मात्र सुधार हुआ है, वह यह है कि सामूहिक रसोईघर में वे गैस से भोजन पकाते हैं।

यह क्रान्ति से पहले का एक मकान है, जो इतने वर्षों तक अच्छी तरह से खड़ा रहा है। कभी-कभी इसकी रंगाई हो जाती रही है, किन्तु मरम्मत बहुत कम हुई है। एक दूसरे मकान में मरम्मत करनेवाले आये; काम शुरू किया, ६ सप्ताह के लिए वे चले गये, एक महीने के लिए वापस आये; फिर चले गये और अब पुनः एक दूसरी अनिश्चित अवधि के लिए आ गये हैं। आठ महीनों तक मकान के निवासियों ने शिविर-जैसा जीवन व्यतीत किया। जाड़े का मौसम प्रारम्भ हो रहा था, यदि मरम्मत का काम जाड़े से पहले ही समाप्त न हो गया, तो वसन्त ऋतु तक वह रुका ही रहेगा।

भावनात्मक कारणों से और तुलनाएँ करने के लिए मै १५ सिव्त जेव व्राजहेक गया — यह निवास-स्थानों का एक आठ-मंजिला समूह है, जिसमें कई विभाग है और प्रत्येक विभाग के लिए निजी प्रवेश-मार्ग है। १९३६ में जब इस मकान का निर्माण-कार्य पूरा हुआ, तब हमारा परिवार निवासस्थान ६८ में चला गया। हमारे पास तीन कमरे, रसोइघर, शौचालय, स्नानागार और बालकनी थी। मै उसे ही देखना चाहता था। एक दिन सांझ होते ही मैं प्रवेश-द्वार में, जिसमें छत में लगे हुए बिजली के एक कमजोर बल्ब का धुँधला प्रकाश हो रहा था, प्रविष्ट हुआ। मैने लिफ्ट की कुंजी को, जो एक रस्सी से लटकी हुई थी, दरवाजे के छेद में डाला, दरवाजा खोला, ३ नम्बर का बटन दबाया और ऊपर चढ़ गया। हमारे निवास-स्थान की घण्टी लापता हो चुकी थी, अतः मैंने द्वार खटखटाया, कोई उत्तर नहीं मिला। चूँकि मेरी यह यात्रा एक प्रकार से विचित्र यात्रा थी (मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि एक समय मैं यहाँ रहा करता था और इस स्थान को पुनः देखना चाहता था) इसलिए मैने कई मिनटों तक प्रतीक्षा की और पुनः दरवाजा खटखटाया। कोई उत्तर नहीं। मैंने तीसरी

बार दरवाजा खटखटाया। पिछले भाग से एक व्यक्ति प्रकट हुआ और बोला—"अन्दर कोई नहीं है। इस विभाग के सोलह किरायेदारों को हटा दिया गया है। यहाँ प्रत्येक वस्तु सड़ गयी है।" निचली मंजिल पर मुझे एक निवास-स्थान का द्वार खुला हुआ मिला। भीतर की दीवारों, फर्श और छतों को तोड़ दिया गया था। पूरे निवास-स्थान का पुनर्निर्माण किया जा रहा था—और मकान केवल बीस वर्ष पुराना था! यह इस बात का एक उल्लेखनीय उदाहरण था कि किस प्रकार संख्या-बाहुल्य गुणात्मकता को समाप्त कर देता है।

दो वर्ष पूर्व मास्को-स्थित अमरीकी राजदूतावास ने कार्यालयों तथा कर्मचारियों के रहने के लिए नव-निर्मित मकान लिया। भीतर की कई दीवारों में पहले ही दरारें पड़ चुकी है। छत से पानी टपकता है और वर्षा के पानी से नवीं मंजिल की छत पर तरह-तरह के चित्र बन गये है। मकान ऐसा दिखायी देता है, मानो उसका उपयोग कम-से-कम दस वर्षों से किया जा रहा हो।

दस मंजिलों वाले निवास-स्थानों का निर्माण क्यों किया जाता है, जब कि कम-से-कम सोवियत स्थितियों में उनका निर्माण, देख-रेख तथा मरम्मत का कार्य अधिक व्यय-साध्य और कठिन है? क्योंकि उनका उद्देश्य एक प्रभाव उत्पन्न करना, जीर्ण-शीर्ण निवास-स्थानों की बहुलता की ओर से ध्यान दूसरी ओर ले जाना था।

मास्को की जन-संख्या का अधिकांश भाग १९१७ से पहले निर्मित निवास-स्थानों में रहता है। ये निवास-स्थान असाधारण रूप से क्षतिग्रस्त होते जा रहे हैं क्योंकि अनेक निजी निवास-स्थानों को, जिनमें पहले एक ही परिवार रहा करता था, अब सामुदायिक निवास-स्थानों के रूप में परिणत कर दिया गया है, जिनमें चार, पांच अथवा छै परिवार रहते हैं। बहुत ही थोड़े प्रतिशत मास्कोवासी द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले सोवियत शासन द्वारा निर्मित घरों में रहते हैं; इनमें से कुछ अभी तक अच्छे हैं, अन्य गन्दी बस्तियों के समान दिखायी देते हैं। १९४५ के बाद से रूसियों ने भवन-निर्माण के अपने तरीकों का आधुनिकीकरण कर दिया है (१९५६ में मैंने धातु के पाइपों के जो ढांचे और सामान ऊपर उठाने के जो विशालकाय क्रेन देखे, वे १९३८ से पहले अज्ञात थे) और नदी-तटों पर, नगर के बाहरी छोरों पर तथा नगर के मध्य में बहुत बड़ी संख्या में बड़े-बड़े मकानों का निर्माण किया है। मैं ऐसे कई मकानों में अतिथि बन कर गया, जो एक अत्युत्तम प्रभाव उत्पन्न करते हैं। मेरे मेजबानों के पास, जो नये उच्चतर वर्ग के सदस्य हैं, समस्त आवश्यक सुविधाओं

से पूर्ण चार से पांच कमरों तक के निवास-स्थान हैं, किन्तु इन नये निवास-स्थानों में रहने वाले विशेषाधिकार-प्राप्त व्यक्तियों की संख्या पाच लाख बताना अत्यन्त अतिशयोक्तिपूर्ण होगा। मास्को के सत्तर लाख निवासियों की शेष संख्या की निवास-स्थान विषयक स्थिति दयनीय अथवा अपर्याप्त ही है।

निवास-स्थानों की समस्या पर मत व्यक्त करते हुए एक राजदूत ने कहा—"यथापूर्ण स्थिति बनाये रखने के लिए मास्को को अत्यन्त तीव्र गति से दौड़ लगानी होगी।" क्योंकि यह बात सन्देहास्पद ही है कि नये मकानों के निर्माण से जनसंख्या में होने वाली स्वाभाविक वृद्धि, सरकार द्वारा किये जाने वाले वास्तविक प्रयासों के बावजूद राजधानी में लोगों के आगमन और सार्वजनिक भवनों और उद्यानो की योजना बनायी जाने अथवा सड़कों के चौड़ी की जाने अथवा विभागों के विस्तार एवं संख्या-वृद्धि होने पर अपने निवास-स्थानों से बेदखल किये जाने वाले लोगों के लिए स्थान की व्यवस्था हो जायगी।

घरों में भीड़ होने का प्रभाव परिवारिक सम्बंधो, सेक्स, अध्ययन—प्रत्येक वस्तु पर पड़ता है। ऐसा बहुधा होता है कि सम्बद्ध विच्छेद किये हुए सोवियत दम्पति को एक ही कमरे में रहने के लिए विवश हो जाना पड़ता है और कभी-कभी एक तीसरा व्यक्ति—नयी पत्नी—भी उनके साथ रहने के लिए आ जाता है, क्योंकि रहने के लिए कोई वैकल्पिक स्थान उपलब्ध नहीं हो पाता। गोर्की स्ट्रीट पर स्थित केन्द्रीय मास्को डाकघर में और किरोव स्टीट पर स्थित शाखा डाकघर में दिन के किसी भी समय अथवा शाम को सैकड़ों व्यक्ति लम्बी मेजों पर बैठ कर पत्र लिखते हुए दिखायी देते है; सम्भवतः उन्हें वहाँ घर की अपेक्षा अधिक एकान्त एवं शांति का अनुभव होता है।

१९२८ के बाद से सोवियत-संघ का जो निरन्तर औद्योगिक विकास हुआ है, उसको देखते हुए नगरों की जनसंख्या में वृद्धि अपरिहार्य थी। यूरोप और अमरीका में पूंजीवाद के विकास ने इसी प्रकार के प्रभाव उत्पन्न किये, किन्तु यदि कम्यूनिस्ट राज्य की शक्ति के समान ही व्यक्तियों की सुख-सुविधा में भी रुचि रखते, तो कष्टों और पीड़ाओं को बहुत-कुछ रोका जा सकता था।

फिर भी, चूँकि तानाशाही का मूलभूत सिद्धान्त वास्तव में राज्य की शक्ति है, न कि व्यक्तिगत सुख-सुविधा, इसलिए मास्को एक सोवियत प्रासाद का निर्माण करता है (जब कि उसके पास ऐसे भवन हैं, जहाँ भोजों, सभाओं और सार्वजनिक सभाओं का आयोजन होता रहा है) और वह १ लाख ६ हजार दर्शकों के लिए नये लेनिन 'स्टेडियम' का निर्माण करता है (जब कि सत्तर हजार दर्शकों के लिए एक 'स्टेडियम'

पहले से ही विद्यमान है), यद्यपि एक-एक कमरे में छः-छः प्राणी सफाई और जल की समुचित व्यवस्था के बिना निवास करते है।

न यह स्थिति मास्को तक ही सीमित है। फ्रूनजे नामक नगर में मकानों के निर्माण के लिए १९५५ की योजना का केवल उन्नीस प्रतिशत भाग पूरा किया गया था। मास्को के 'ईजवेस्तिया' के १ सितम्बर १९५६ के अंक में स्तालिनग्राड से प्रेषित तथा दो लेखकों के हस्ताक्षर से प्रकाशित एक लेख में आसपास के कई कस्बो की स्थिति का वर्णन किया गया है। एक में केवल एक चायघर है, जो काफी बदनाम है; इसमें कूड़ा-करकट, गन्दगी और रद्दी भोजन भरा रहता है। आनन्दहीन सिनेमा में गर्मी में दम घुटता है और जाड़े में सर्दी लगती है।

"दोषी कौन है? स्वभावतः स्थानीय अधिकारी। वे बड़े-बड़े नगरों की भाँति विशाल सोवियत प्रासादों और 'स्टेडियमों' का स्वप्न देखते है और बेघर व्यक्तियों के क्लब अथवा सार्वजनिक स्नानागार की मरम्मत करना नहीं चाहते"... निश्चय ही, देश मास्को का अनुकरण करता है, जहाँ सभी बुद्धिमान व्यक्ति रहते हैं।

"एक नये मकान में रहना कष्टकारक क्यों है?"—शीर्षक से 'इजवेस्तिया' में प्रकाशित एक दूसरे लेख का प्रारम्भ इस प्रकार किया गया है—"खारकोवा १९ डैनीलेवस्की स्ट्रीट। एक व्यक्ति गली को पार करता है और एक सुन्दर, नये आठ मंजिले मकान में प्रवेश करता है। 'लिफ्ट' पुनः काम नहीं कर रहा है। उसे पुरानी जीर्ण-शीर्ण सीढ़ियों पर छठी मंजिल तक चढ़ना पड़ता है।" निवास—स्थान में रहने वाले व्यक्ति को चाभी घुमाने और अपने अतिथि के लिए द्वार खोलने के लिए हथौड़े का प्रयोग करना पड़ता है। भीतर छत से पलस्तर गिरता है। "वहां पानी नहीं है। वह ऊपर की मंजिलों तक बहुत कम पहुँच पाता है।" तदनुसार निवासियों और निर्माताओं की बैठक का आयोजन किया गया। 'इजवेस्तिया' का पत्रकार लिखता है—"इससे प्रकट होता है कि निर्माण-प्रक्रिया के तकनीकी और वास्तु-कला-सम्बन्धी निरीक्षण के अभाव, जल्दबाजी, ठेकेदारों और उपठेकेदारों के मध्य समन्वय के अभाव, निम्न कोटि की निर्माण-सामग्रियों तथा तैयार मकान को सहमति प्रदान करने के सम्बन्ध में अनुत्तरदायित्वपूर्ण रुख अख्तियार करने के भी क्या परिणाम होते हैं। किसी-न-किसी प्रकार के अवकाश-दिवस के लिए मकान को शीघ्र स्वीकृति प्रदान करने के प्रयास में स्वीकृति प्रदान करने वाला आयोग तथा भवन-निर्माण अधीक्षक बहुधा बड़ी-बड़ी अपूर्णताओं को स्वीकार कर लेते हैं। यह सच है कि वे मकान-निर्माताओं से वचन ले लेते हैं

कि इन अपूर्णताओं को एक निश्चित अवधि तक दूर कर दिया जायगा, किन्तु इस प्रकार के वचन, नियमतः, अपूर्ण ही रहते है।"

"किसी-न-किसी प्रकारके अवकाश-दिनके लिए", सामान्यत. ७ नवम्बर अथवा १ मई के लिए किसी मकान के उद्घाटन के लिए शीघ्रता करना प्रचलित सोवियत पद्धति है। "१९१७ की महान् क्रान्ति की वर्षगांठ पर कीव में एक सौ नये मकान पूर्ण किये गये"—मैडिसन एवेन्यू का अनुकरण करने वाला मास्को जन-संख्या के मूल्य पर आत्म-प्रचार करता है। विगत वर्षों में समाचार-पत्रों ने इस पद्धति की हजारो बार शिकायत की है, किन्तु कोई मनोवैज्ञानिक दुर्बलता कम्युनिस्टों को अपने आप को विश्वास दिलाने के लिए बारम्बार प्रेरित करती रहती है। कोई आन्तरिक अविश्वास सोवियत पद्धति को अपनी अपूर्ण सफलताओं का ढिंढोरा पीटने के लिए बारम्बार विवश कर देता है। 'इजवेस्तिया' १९ डैनीलेविस्की स्ट्रीट के सम्बन्ध में और अधिक विवरण प्रस्तुत करता है—एक टपकती हुई छत, "पहले से ही मोरचा लगा हुआ" धातु-कार्य, संकरी बालकनियां, "खिड़कियों के ढांचों पर से उखड़ता हुआ रंग, दीवारो में दरारें...तथा और भी बहुत कुछ।" जिस सभा में निवासियों की शिकायतों को व्यक्त किया गया, उसमें मुख्य ईजीनियर ने स्पष्टीकरण किया, कि: "हम हजारों मकानो का निर्माण करते है और उनमे से प्रत्येक की परीक्षा और जांच नहीं कर सकते।"

'इजवेस्तिया' के लेखक के कथनानुसार खारकोव में २७ स्तालिन एवेन्यू के निवासियों ने भी इसी प्रकार की एक बैठक का आयोजन किया और शिकायत की कि, उनके नये मकान की दीवारें इतनी खोखली थीं कि, उन पर कोई चित्र अथवा दीवार-घड़ी नहीं टांगी जा सकती। "एक रहने के कमरे को एक संग्रहालय में परिणत करने में कोई तुक नहीं है"—ठेकेदार ने उत्तर दिया।

लेख में आगे कहा गया है—"नलवाले बढ़इयों के काम को नष्ट कर देते हैं, बिजली वाले पलस्तर करने वालों के काम को चौपट कर देते हैं।" संवाददाता लिखता है कि इस गड़बड़ी का एक कारण भवन-निर्माण मजदूरों को सामग्रियों के उपयोग में मितव्ययिता के लिए अतिरिक्त क्षतिपूर्ति देने की प्रथा है। इस प्रकार, वह कहता है, सीमेण्ट में "अधिक बालू मिला दी जाती है। मितव्ययिता निश्चित रूप से आवश्यक है, किन्तु गुणात्मकता को हानि पहुँचा कर नहीं।" दूसरी और तीसरी दशाब्दियो में मैंने सोवियत पत्रों में इस प्रकार के अनेक लेख पढ़े थे और उन्हें उद्धृत किया था।

२५ अगस्त १९५६ का 'मास्को लिटरेरी गजट' मास्को की मैडिसन-एवेन्यू-मनोवृत्ति के एक अन्य पहलू पर प्रकाश डालता है। डोनेत्ज कोयला-खान से एक पत्रकार लिखता है—एक खान का मैनेजर शिकायत करता है कि "हम योजना को पूर्ण नहीं कर रहे हैं, क्योंकि हमारे पास पर्याप्त व्यक्ति नहीं है, निवास-स्थानों की समस्या जटिल है।" एक दूसरा मैनेजर पत्रकार को बताता है—"हमारे पास लोगों को रखने के लिए जगह नहीं है..." एक तीसरा कहता है—"खान-मजदूर काम छोड़कर जा रहे है। मैं एक विवाहित दम्पति के लिए भी एक कमरे की व्यवस्था नहीं कर सकता।" किन्तु 'गजट' के संवाददाता को ज्ञात होता है कि खान-मजदूरों के लिए अनेक नये मकानों का निर्माण किया गया था। फिर हो क्या गया? नये निवास-स्थानो में कमरों के लिए उच्चतम अधिकारियों के "आदेशों" से सज्जित होकर पड़ोस के स्तालिनो नामक नगर के निवासी आ गये। खान के व्यवस्थापक मण्डल ने इन अनधिकृत प्रवेश कर्त्ताओं के समक्ष विरोध किया और यह तर्क उपस्थित किया कि उन्हें अपने पहले के घरो में ही रहना चाहिए था।

"आह, हां"—वे उत्तर देते हैं—"हम जहां थे, वहीं रहते, किन्तु वे फूल..."

"कैसे फूल"—खान-मजदूर विस्मयपूर्वक पूछते हैं।

"वही, जिला पार्टी के प्रधान कार्यालय के सामने के उद्यान के फूल।"

"किन्तु ऐसा कोई उद्यान तो वहाँ नहीं था।"

"पहले नहीं था। अब है।"

पार्टी-भवन के लिए एक उद्यान। एक दूसरा बाह्याडम्बर। इसके पीछे खान-मजदूर और अन्य व्यक्ति भीड़-भरे गन्दे मकानों में निवास करते हैं। नाजी जर्मनी के ऊपर अपनी महान विजय तथा स्तालिनवाद के अत्याचारों के लिए सोवियत राष्ट्र ने जो अपरिमित मूल्य चुकाया है, उसमें बाह्याडम्बरवाद की मूर्खताओं के अनवरत क्रम के अत्यधिक मूल्य और निश्चय ही सब कुछ करने वाली सरकार के अत्यधिक व्यय को अवश्य जोड़ना चाहिए।

रूस में और बाहर कम्यूनिस्ट सरकारें निरन्तर एक सिद्धान्त को प्रमाणित करने का प्रयास करती हुई प्रतीत होती हैं; वे अपने सिद्धान्त की श्रेष्ठता का प्रदर्शन करने, किसी को परास्त करने अथवा पीछे छोड़ देने का प्रयास करती हुई प्रतीत होती हैं। व्यवहारतः साम्यवाद सर्वाधिक प्रतिद्वन्द्वितापूर्ण, प्रदर्शनपूर्ण प्रणाली है, जैसी प्रणाली का आविष्कार पहले कभी नहीं किया गया था। सोवियत रूस और उसके पिछलग्गू देश अपनी सफलताओं के सम्बन्ध में, जो कई-स्थानों पर

अत्यधिक हुई हैं, ऐसे उत्तेजनदायक, आश्चर्य और अत्यन्त आत्म-स्तुति के स्वर में बातें करते है, मानो अन्य किसी ने कभी नगरों, फैक्टरियो और बांधों का निर्माण किया ही न हो, अथवा सड़कों को चौड़ा न किया हो, उत्पादन मे वृद्धि न की हो और अच्छी फ़सल न काटी हो और मानो ये ही बातें उनके बिना तथा अपेक्षाकृत कम मानव-बलिदान के स्वयं उनके ही देशों में ही न हुई होतीं।

सोवियत नेताओं के लिए अच्छा होगा कि, वे थोड़ी-सी यथार्थवादिता और विनम्रता के साथ अज्ञात रूप से विदेशों की यात्रा करें और सड़कों पर घूमें तथा उदाहरण के लिए देखें कि, किस प्रकार छोटे एवं अल्प भूमि तथा प्राकृतिक साधन-स्रोतो वाले हालैण्ड ने युद्ध के बाद अपनी अर्थ व्यवस्था का पुनर्निर्माण किया है, जिससे समृद्ध हिन्देशिया के हाथ से निकल जाने के बावजूद उसकी स्थिति पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी है, अथवा उन्हें पश्चिमी जर्मनी की यात्रा करनी चाहिए, जिसने कठोर परिश्रम और सुयोग्य प्रबन्ध द्वारा अपना उत्थान किया है, अथवा उन्हें इसराइल के उद्यान में जाना चाहिए, जहाॅ इच्छा-शक्ति और आदर्शों ने पर्वतों को हिला दिया है और बालू को भी फलदायक बना दिया है, अथवा उन्हें समृद्धिशाली, छोटे आस्ट्रिया, अथवा धनी स्विट्जर-लैण्ड अथवा उत्तरी इटली अथवा अमरीका की यात्रा करनी चाहिए। यह अनुभव सोवियत प्रचारकों को थोड़ी-सी सन्तुलन-भावना प्रदान कर सकता है और उन्हें यह सिखा सकता है कि उनकी जनता के श्रम के एक बड़े भाग को अयोग्यतापूर्ण औद्योगिक एवं कृषि-प्रणाली के भारी बोझ को वहन करने में व्यर्थ नष्ट कर दिया गया है। भ्रान्ति दूर करनेवाले इस प्रकार के अनुसन्धानों को रोकने के लिए ही बहुत कम सोवियत नागरिकों को विदेशों की यात्रा करने की अनुमति प्रदान की जाती है।

अध्याय ४

विद्रोह

सोवियत जीवन में प्रचार की जो प्रचण्ड ध्वनि होती रहती है, वह सत्य, निष्ठा एवं कला की ध्वनि को, जो अभी तक मन्द है, दबा देती है तथा जनता को प्रेरणा-विहीन बना देती है और उसमें घुटन उत्पन्न कर देती है।

स्तालिन ने कहा था—"प्रेस हमारी पार्टी का प्रखरतम एवं प्रबलतम अस्त्र है।" समाचारपत्रों के विक्रय-स्थलों पर प्रदर्शित इस नारे को देखकर यह आलोचना की जाती है कि प्रखरतम अस्त्र निश्चय ही अत्यन्त कुण्ठित हो गया है। दिन-प्रतिदिन मास्को का 'प्रवदा' और उसका अनुकरण करते हुए अन्य प्रत्येक दैनिक पत्र पाठकों को क्रियाशील होने के लिए प्रेरित करता है। उदाहरणार्थ, फसल-कटाई के समय मुख-पृष्ठ पर प्रकाशित किये जानेवाले अग्रलेख बारम्बार आग्रह करते हैं कि फसलों को समय पर एकत्र किया जाय, किन्तु आफ़िस, स्टोर, अथवा फ़ैक्टरी जाने की जल्दी में रहने वाले लाखों मास्कोवासी फ़सल की कटाई के सम्बन्धमें क्या कर सकते हैं? वे अग्रलेख को पढ़ने से इनकार कर सकते हैं। निश्चिय ही किसान 'प्रवदा' नहीं पढ़ते। इसमें सन्देह नहीं कि फसल की कटाई रूस का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अकेला आर्थिक कार्य है, किन्तु यह सोचने की बात है कि कृषि से सर्वथा विलग रहने वाले व्यक्तियों के ऊपर, प्रतिदिन प्रातःकाल शब्दों की बौछार करने की अपेक्षा, खेतों में काम करने वाले व्यक्ति को भौतिक प्रोत्साहन प्रदान करना अधिक प्रभावशाली हो सकता है।

एक दूसरे दिन 'प्रवदा' का अग्रलेख चिल्ला-चिल्ला कर कहता है कि वोल्गा में मछली पकड़ने का मौसमी कार्य सन्तोषजनक नहीं हुआ है और मछुओं को योजना को पूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित करता है। सुदूर उत्तर और साइबेरिया में लकड़ी काटने का काम पिछड़ा हुआ है; पार्टी की केन्द्रीय समिति ने एक प्रस्ताव स्वीकृत कर लकड़ी काटने के उद्योग को और अच्छा काम करने के लिए फटकार बतायी है। मास्को के पत्रों में प्रकाशित अग्रलेख अपने शहरी पाठकों को वास्तविक स्थिति का ज्ञान कराते हैं।

सोवियत समाचार-पत्र थाली में उगले हुए पानी के समान अनाकर्षक तथा किसी फैक्टरी के निर्देशक-मण्डल की विगत महीने की बैठक के विवरण के समान

अनुत्तेजक होते है। मैने अपने मित्रों से पूछा कि वे कितने पत्र पढते है। वे एक या दो दैनिक पत्र लेते है तथा शीर्षकों पर दृष्टिपात कर लेते है, जिससे वे किसी महत्वपूर्ण घटना से अनभिज्ञ न रह जायं, किन्तु वे आग्रहों, योजना से अधिक कार्य करने के सम्बन्ध मे औद्योगिक अध्यवसायों की नीरस, कृत्रिम उत्साहपूर्ण, घिसी-पिटी शब्दावली में की गयी घोषणाओं और तुला की उस ग्वालिन के सम्बंध में आये हुए तारों को छोड़ देते है जिसने विगत वर्ष की अपेक्षा प्रति गाय ३५ प्रतिशत अधिक दूध निकाला।

मास्को से प्राग तक जाते हुए विमान विलना में (जिसे अब विलिनियस कहा जाता है) ईधन लेने के लिए रुका। मेरे पड़ोसी ने एक पत्र खरीदा और बाद में उसे मुझे दे दिया। पढते समय मुझे यह आभास हुआ कि, गलियारे के पार बैठी हुई महिला उसे देखने के लिए उत्सुक थी। मैने अखबार उसे दे दिया और देखने लगा। उसकी आख एक भी समाचार पर रुके बिना प्रथम पृष्ठ पर दौड़ गयी। तत्पश्चात् उसने चार पृष्ठों वाले पत्र का भीतरी भाग खोला और "मंगल ग्रह की यात्रा" शीर्षक एक लेख पर, जो पृष्ठ २ के निचले आधे भाग में था, काफी समय व्यतीत किया। अगला पृष्ठ स्पष्टतः उसमें कोई रुचि नहीं उत्पन्न कर सका। पृष्ठ ४ पर, जो सामान्यत विदेशी समाचारों के लिए सुरक्षित होता है, उसने लगभग पॉच मिनट लगाये।

लोग पत्रों में प्रकाशित समाचारों पर विश्वास नहीं करते है। एक मास्को-वासी ने कहा—"यदि मै यह जानना चाहता हूँ कि सोवियत संघ के किसी भाग में क्या हो रहा है, तो मैं किसी ऐसे व्यक्ति से बात करने का प्रयत्न करता हूँ, जो वहाँ हो आया हो। विदेशी मामलों के सम्बन्ध में भी मै ऐसा ही करना पसन्द करता, किन्तु विदेशियों से मै बहुत कम मिल पाता हूँ।"

जब संयुक्त-राष्ट्र-संघ अथवा चार बड़े विदेश-मंत्रियों के किसी सम्मेलन से सम्बन्धित समाचार मे पांच-षष्ठांश स्थान सोवियत प्रवक्ता के भाषण को दिया जाता है और शेष स्थान अन्य समस्त वक्ताओं के भाषणों के सारांश को "उसने आरोप लगाया" और "उसने यह प्रभाव उत्पन्न करने का निरर्थक प्रयास किया कि ..." जैसे वाक्यांशों की भरभार के साथ दिया जाता है, तब कम से कम कुछ पाठक तो चयन द्वारा विकृति की प्रत्यक्ष तकनीक को पहचान ही जाते है। बेईमानी की छोटी-छोटी चालें चली जाती है—जैसे "इण्टरनेशनल लाइफ" नामक मासिक पत्र किसी तर्क की पुष्टि "प्रमुख ब्रिटिश धार्मिक नेता एच० जानसन" के एक उद्धरण से करता है, जो कैण्टरबरी के डीन श्री हेवलेट जानसन के लिए,

जिन्हें कुछ लोग "कम्यूनिस्ट डीन" कहते हैं, एक चतुरतापूर्ण आवरण है। अथवा यह प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कि विदेशों का जनमत रूस के पक्ष में है, सोवियत पत्र अल्प-प्रसिद्ध विदेशी कम्यूनिस्ट दैनिक पत्रों के अग्रलेखों को यह संकेत दिये बिना ही उद्धृत करेंगे कि वे कम्यूनिस्ट पत्र है।

पत्रों में प्रकाशित वक्तव्य बहुधा पाठक के निजी अनुभव के विपरीत होते हैं। उस समय 'प्रवदा' की (जिसका अर्थ 'सत्य' है) प्रामाणिकता के प्रति तनिक भी विश्वास नहीं उत्पन्न होता, जिस समय, उदाहरणार्थ, उसका एक-एक लेखक यह आरोप लगाता है कि, विदेशों के "प्रतिक्रियावादी" लेखक 'समाजवादी राज्य में यहूदियों के प्रति किये जानेवाले अत्याचार के सम्बन्ध में कहानियाँ गढते हैं।? सोवियत रूस के यहूदी उस अत्याचार से अत्यधिक एवं तीव्र रूप से पीड़ित हुए तथा उनके सह-नागरिक इस बात से अवगत थे। यदि 'प्रवदा' प्रमाण चाहता है, तो यह प्रमाण वारसा के एक कम्यूनिस्ट पत्र में मिल सकता है, जिसने सोवियत संघ में गोली से उड़ा दिये गये यहूदी कवियों, उपन्यासकारों, सम्पादकों, नाटक–उत्पादकों और अन्यों के नाम प्रकाशित किये थे; 'प्रवदा'ने स्वयं इस विषय पर अतिरिक्त आंकड़े प्रकाशित किये। सौभाग्यवश स्तालिन की मृत्यु के कई महीने बाद यह आतंक समाप्त हो गया, किन्तु उसके घाव एवं स्मृतियां (यहूदी-विरोधी अन्यायोचित नौकरी–विषयक व्यवहार) बनी हुई हैं।

जिन पाठकों का विश्वास समाप्त हो जाता है, उनकी रुचि भी समाप्त हो जाती है।

सोवियत विद्यालयों में इतिहास के अध्यापन तथा सोविएत पत्रों में उसे प्रस्तुत करने के ढंग के सम्बन्ध में नितान्त गड़बड़ी फैली हुई है। जिन विद्वानों ने कुछ वर्ष पूर्व एक चीज लिखी थी, आज वे स्वयं अपना खण्डन कर रहे हैं। स्तालिन–काल का इतिहास अब पूर्णतः नये सिरे से लिखा जाना चाहिए और विद्यार्थियों ने जो कुछ पढ़ा था, उसे भूलकर अब उन्हें नये सिरे से प्रारम्भ करना होगा। जारों के समय के रूस के भूतकाल में भी संशोधन किया जा रहा है। "भयंकर आइवन" स्तालिन के समय में "आइवन चतुर्थ" बन गया था। अब वह पुनः "भयंकर आइवन" बन गया है। उसे "पुनर्वासित" कर दिया गया है और अब वह पुनः अपने पूर्व रूप में आ गया है। ऊपर से संकेत मिलने पर शिक्षक यह पढ़ाते थे कि कैथेराइन महान रूसी साम्राज्य की महानतम सफलताओं के लिए उत्तरदायी थी। कम्यूनिस्ट साम्राज्य–निर्माता की मृत्यु के बाद मास्को को उसकी त्रुटियों का पता चला। पीटर महान, जिसकी प्रतिष्ठा इसलिए

बढ गयी थी कि स्तालिन अपने को पीटर के आधुनिक अवतार के रूप में देखता था, हाल में ही बन्धन-मुक्त हुए इतिहासकारों द्वारा पुनः सामन्तवादी कूड़े के ढेर में फेंक दिया गया है। बेचारे विद्यार्थी यह नहीं जानते कि क्या सोचना चाहिए। उनके शिक्षक किंकर्त्तव्यविमूढ़ है और पाठ्यपुस्तकों के लेखक लेखनी उठाने से डरते है।

सोवियत संघ में समस्त सर्जनात्मक प्रक्रियाओं के मार्ग में एक प्रबल अवरोध विद्यमान है। "प्रवदा" लिखता है कि "बीसवीं पार्टी–कॉंग्रेस ने साहित्य की अवरुद्ध गति के सम्बन्ध में एक गम्भीर चेतावनी दी।" उसी लेख में "अनेक पुस्तकों की अरोचकता, शुष्कता और अनाकर्षकता" पर पश्चाताप किया गया है।

साहित्य से प्रेम रखने वाली मास्को की एक महिला ने स्वीकार किया कि, कभी–कभी वह समारोह (नाटक) के समाप्त होने से पहले ही मास्को आर्ट थिएटर को छोड़ कर चल देती है। १९२० और १९३० में उसका ऐसा करना मात्र अशोभनीय कार्य होता; मास्को आर्ट थिएटर सम्भवतः संसार की महानतम नाव्यशाला थी। फिर भी, सोवियत 'लिटरेरी गजट' (एक साहित्यक पत्र) शोक प्रकट करते हुए लिखता है–"अब उसकी 'बाक्स आफिस' लोकप्रिय पंक्तियाँ, जो दशाब्दियों तक समाप्त नहीं हुईं, चली गयी है।" सामान्यतः मास्को की नाव्यशाला कहीं भी सर्वोत्तम थी। रूसी इससे प्रसन्नता का अनुभव करते थे क्योंकि रंगमंच पर अभिनीत किया जाने वाला नाटक उन्हें दैनिक जीवन की रुक्षताओं से ऊपर उठाता था। अब उत्थान नहीं रह गया है और वे उसके अभाव का अनुभव करते है। १४ जून १९५६ के 'लिटरेरी गजट' में एक लेखक आह भर कर लिखता है–"पिछले वर्षों में हमारी नाव्यशाला में वास्तविक नाटकों की संख्या तथा प्रबल भावनाओं की मात्रा कितनी कम रही है"। वह घोषित करता है कि सोवियत नाटक "असह्य रूप से नीरस हो गया है"।

व्यंग्य एवं हास्य की, जिनके लिए बहुत कम कम्यूनिस्टों को ख्याति प्राप्त है, किस्म इतनी निकृष्ट हो गयी है कि मास्को का लिटरेरी गजट कहता है कि "हमारी मोटी (मासिक) पत्रिकाओं के पृष्ठों से व्यंग्य और हास्य के विभागों का लोप हो गया है।"

इसी प्रकार सोवियत सिनेमा का भी, जो किसी समय समस्त देशों के अच्छे उत्पादकों के लिए ईर्ष्या की वस्तु थी, स्तर नीचे गिर गया है और क्रेमलिन इस बात को जानता एवं कहता है।

स्तालिन के शासन-काल में सोवियत कला की प्रशंसा करना अनिवार्य था। निश्चय ही कभी-कभी छोटी-छोटी त्रुटियों को स्वीकार किया जाता था, किन्तु अधिनायक के इस सिद्धान्त ने कि सोवियत संघ की निकृष्टतम वस्तु भी पूँजीवादी राष्ट्रों की सर्वोत्तम वस्तु की अपेक्षा श्रेष्ठतर होती है सोवियत प्रवंचना को पंख दे दिये; रूस को पश्चिम से शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं थी।

यह मूर्खता तिरोहित हो गयी है। सोवियत कला की दयनीय स्थिति को न केवल स्पष्टतापूर्वक स्वीकार किया जाता है, प्रत्युत 'प्रवदा' का लेखक लिखता है कि उसके सम्बन्ध में "गरमागरम, उत्तेजनात्मक विवाद होते हैं।" वह पुनः लिखता है—"कला-जगत ने इस प्रकार की सामाजिक सजीवता के दर्शन बहुत दिनों से नहीं किये थे।"

कला और साहित्य के सम्बन्ध में विरोधी मतों को सहन किया जाता है। उपन्यासकार वैलेण्टिन कातायेव मैटिसी से शिक्षा ग्रहण करने वाले एक सोवियत चित्रकार की सराहना करता है। 'प्रवदा' इस आधार पर उसकी भर्त्सना करता है कि मैटिसी एक "सज्जावादी"—एक ऐसा प्रभाववादी था, जिसने "यथार्थवादी रूपों को विशेष रूप से अस्वीकृत" करने का अपराध किया। कुछ वर्षों पूर्व कम्यूनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय मुखपत्र द्वारा की गयी इस प्रकार की आलोचना ने कातायेव को मौन कर दिया होता और उसे क्षति पहुंचायी होती। आज यह विवाद जोरों से जारी है।

अब सोवियत पत्र-पत्रिकाएँ स्तालिन के अधिनायकवादी शासन की २५ वर्षों की अवधि में सोवियत कला और साहित्य के क्रमिक एवं तत्पश्चात् तीव्र गति से हुए ह्रास को स्वीकार करने के लिए अपने को स्वतंत्र अनुभव करती हैं, किन्तु उसके कारण की विवेचना करने तथा एक नया मार्ग निर्धारित करने के प्रयास में वे सोवियत संघ के विकास की वर्तमान स्थिति के वास्तविक संकट को प्रकट करती हैं; इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सरकारी प्रमुखों द्वारा प्रदत्त अल्प स्वतंत्रता, परतंत्रता से उत्पन्न समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती। यह संस्कृति और राजनीति के भी सम्बन्ध में सत्य है।

कलात्मक प्रयास के समस्त क्षेत्रों में उपस्थित संकट का स्पष्टीकरण करने के लिए सोवियत लेखक स्तालिन की व्यक्तिगत निरंकुशता अथवा "व्यक्तित्व के सिद्धान्त" का, जैसा कि उसे सरकारी तौर पर सम्बोधित किया जाता है, आश्रय लेते हैं। 'प्रवदा' लिखता है—"व्यक्तित्व के सिद्धान्त ने हमारे साहित्य और कला के विकास को गम्भीर क्षति पहुंचायी और सर्जनात्मक क्षेत्र में समर्पण, लीपा-पोती

(सत्य की) और आडम्बर-प्रदर्शन जैसे भावनात्मक दृश्यों की सृष्टि की। एक दूसरे अवसर पर उसी ध्वनि में 'प्रवदा' ने लिखा—"व्यक्तित्व के सिद्धान्त ने सर्जनात्मक गतिविधि मे ऐसी प्रवृत्तियो को प्रचलित किया, जो समाजवादी यथार्थवाद की कला के लिए विदेशी है.. (उसके परिणामस्वरूप ऐसी कृतियों का उत्पादन हुआ, जिन्होने इतिहास में जन-समुदाय के कार्य को मिथ्या एवं विकृत रूप प्रदान किया।"

किन्तु क्या यही कारण है? अथवा क्या यह कारण को छिपाता है? सोवियत घोषणाएं अनजाने ही एक स्पष्ट उत्तर प्रदान करती है। उदाहरणार्थ 'प्रवदा' का एक नियमित लेखक डेविड जासलावस्की इग्लैड के प्रसिद्ध हास्य-पत्र 'पच' तथा अमरीकी पत्रिकाओं के, जो उसे और भी बुरी प्रतीत होती है, हास्य की निन्दा करता है क्योकि, उनका उद्देश्य केवल जनता को हॅसाना है। तत्पश्चात् वह घोषित करता है—"हमारे व्यंग्य का कार्य पूर्णतया भिन्न है। यह समाजवादी निर्माण और समाजवादी सस्कृति के मार्ग में बाधा उपस्थित करने वाली प्रत्येक वस्तु के विरुद्ध पार्टी और सोवियत राष्ट्र का एक प्रभावशाली अस्त्र है।"

१९५६ की शिशिर ऋतु में नाक-लि-जूट, बेल्जियम में बियेन्नेल डि पोयसी मे एक सोवियत कवि तथा मुख्य रूसी प्रतिनिधि पावेल एण्टोकोल्स्की ने कहा कि कविता को "राष्ट्रों के मध्य शाति की स्थापना में" योग प्रदान करना चाहिए। "शाति" का अर्थ है सोवियत विदेश-नीति। कविता राजनीति है। यही कारण है कि महानतम सोवियत कवि बोरिस पैस्टरनाक ने पद्य-रचना बंद कर दी और अनेक वर्षों तक गेटे और शेक्सपियर की कृतियों का अनुवाद कर जीविकोपार्जन करता रहा।

हाल में ही 'प्रवदा' ने घोषित किया—"हमारी कला आवश्यक रूप से साम्यवाद के लिए संघर्ष की भावना से ओतप्रोत होनी चाहिए, उसे जनता के हृदयों को उत्साह से भर देना चाहिए तथा समाजवादी विश्वासों का विकास करना चाहिए। यह कार्य मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विचारों से सुसज्जित सोवियत कलाकार की शक्ति से परे नहीं है ..."

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि सोवियत जनता को इस प्रकार की कला शुष्क एवं नीरस प्रतीत होती है। यह कला हास्योद्रेक अथवा आनंद अथवा मनुष्य की महत्तर पूर्णता के लिए नहीं, प्रत्युत एक दूसरी पंचवर्षीय योजना की पूर्णता एवं दल-राज्य के गौरव मे वृद्धि करने लिए है। क्रेमलिन स्वीकार करता है कि स्वयं स्तालिन के आदेश से शब्द, रग, प्रस्तर-मूर्तियों और धातु-प्रतिमाओं द्वारा उसकी व्यक्तिगत महिमा में वृद्धि करना एक घृणित कार्य था। फिर भी वह अभीतक

लेखकों को उनकी रचना के उद्देश्य एवं शैली के सम्बन्ध में आदेश देता है। यदि रचनात्मक कलाकारों को "व्यक्तित्व के सिद्धान्त" की दासता करने के लिए विवश करना अनुचित था, तो उनसे पार्टी के सिद्धान्त, रूढ़ि, संस्था अथवा कार्यक्रम की दासता करने के लिए कहना तनिक भी कम विध्वंसात्मक कार्य नहीं है।

परिणाम नीरसता के रूप में प्रकट हुआ है। मैंने सोवियत संघ में प्रायः सबसे बुरी जो बात देखी, वह यह थी कि वहाँ का जीवन नीरस हो गया है।

चूंकि सोवियत समाज-व्यवस्था अब क्रान्तिकारी नहीं रह गयी है, इसलिए वह अनुदार हो गयी है। स्तालिन ने क्रांतिवादियों की हत्या कर क्रान्ति की हत्या की, किन्तु विचार और कार्य में आज्ञापालन और रूढ़िवादिता के लिए तानाशाही की जिद से भी इसी परिणाम की प्राप्ति होती। कम्यूनिज्म एकरूपता है। सोवियत सभ्यता एक पिपीलिका-सभ्यता है, जिसमें चींटी समूह के आकार के अतिरिक्त कोई नयी बात नहीं है। अधिकारी का—चाहे वह स्तालिन हो, लेनिन हो अथवा मार्क्स हो—उद्धरण देना तर्क, विचार, प्रयोग अथवा उत्तेजन के लिए लाभदायक नहीं है।

नीरसता और एकरूपता विरोध को, विशेषतः युवकों में—किन्तु एकमात्र उन्हीं में नहीं—जन्म देतीं हैं। इसी प्रकार विषमता भी विरोध को जन्म देती है।

एक दिन संध्या समय जब मैं नेशनल होटल के रेस्तराँ में भोजन के लिए आदेश दे चुका था, तभी एक व्यक्ति भीतर आया और मेरी मेज से अलग, एक मेज पर बैठ गया। वह प्रकटतः एक सोवियत नागरिक था, अपने कपड़ों से वह नाविक-जैसा लगता था जो स्पष्टतः भूखा तथा खिन्न था, किन्तु सेविका नहीं आयी। उसने घूम कर मेरी ओर देखा, कन्धे हिलाये, अधीरतापूर्ण रोष की मुद्रा में अपनी भौंहों को उठाया और कहा—"क्या वह कभी प्रकट भी होगी?"

मैंने उसे आश्वासन दिया कि वह आयेगी और सुझाव दिया कि वह इस बीच मेरे पास आकार मुझे साथ दे। वह सामने की कुर्सी पर बैठ गया और अत्यधिक विलम्ब की शिकायत करने लगा।

मैंने कहा—"अमरीका में हम लोग समय को महत्व देते हैं; यहाँ आप लोग नहीं देते।" मैंने यह बात इसलिए नहीं कही कि यह कोई बहुत ही गम्भीर अथवा सोलहो आने सही बात थी; मैं उसे केवल यह बताना चाहता था कि मैं एक विदेशी हूँ। यदि वह सम्पर्क से भयभीत होता, तो आसानी के साथ क्षमा-याचना कर लेता और पुनः अपनी मेज पर चला जाता। स्तालिन-युग के उत्तर

काल में और सम्भवतः १९५५ तक उसने ऐसा ही किया होता। इसके बदले वह भोजन के पूरे समय तक बैठा रहा।

मैंने उससे सोवियत नगरों और ग्रामों में गुण्डागीरी और बाल-अपराध के सम्बन्ध में प्रातःकालीन पत्र में पढ़े गये एक लेख की चर्चा की। "यह वास्तव में अपराध नहीं है"—उसने स्वेच्छापूर्वक कहा—"हम अपने बालकों को बिगाड़ते हैं। पुरानी पीढ़ी को इतनी अधिक पीड़ा इतने अधिक समय तक सहन करनी पड़ी कि हम अपने पुत्रों और पुत्रियों को प्रत्येक सम्भव सुख प्रदान करते हैं और वे निश्चय ही बिगड़ जाते है।"

सोवियत अपराध दो वर्गों मे निवास करता है : सम्पन्न युवक और असन्तुष्ट निर्धन। मेरे सहभोजी ने "स्वर्णिम युवक-समुदाय" का उल्लेख किया; अन्य व्यक्ति उन्हें "जेट-समुदाय" कहते है, जिससे उनका तात्पर्य तीव्र गति से जीवन-यापन करने वालों से होता है। मास्को की सड़कों पर और रेस्तराओं में उन्हें ब्रिटिश 'टेड्डी ब्वाय' अथवा अमरीकी 'जूट-सूट" शैली के तंग सुन्दर वस्त्रों द्वारा और पुरुष किशोरों के 'क्रिव कट' अथवा 'टार्जन' किस्म के केश-विन्यास द्वारा तथा लड़कियों के अत्यन्त रंगीन और भड़कीले वस्त्रों द्वारा पहचाना जाता है; स्पष्टतः यह सर्वत्र व्याप्त शुष्कता से बचने का एक प्रयास है। वे विदेशी तौर-तरीकों का अनुकरण करते है, यहां तक कि एक दूसरे से अंग्रेजी अथवा लैटिन में बात करते है और उन्होंने 'जाज' नृत्य के सम्बन्ध में विश्वकोष में वर्णित ज्ञान प्राप्त कर लिया है। अमरीका के किसी संगीत-दल के नेता (Band Leader) के नवीनतम प्रसिद्ध सगीत में रुचि रखने वाले "जेट-समुदाय" के किसी सदस्य द्वारा प्रश्न किये जाने पर अनेक अमरीकी यात्रियों को यह उत्तर देना पड़ा—"मुझे खेद है, मैंने उसके सम्बन्ध में कभी नहीं सुना।" यह भी एक पलायन है—सोवियत सीमा के पार, पश्चिम की दिशा में एक कदम।

सोवियत संघ में उच्च वर्गीय तीव्र गति वाले युवक-समुदाय का व्यवहार विचित्र और अति व्ययपूर्ण हो सकता है, किन्तु वह न तो हिंसात्मक है, न अनाचारपूर्ण। फिर भी, अधिकारी उससे इतना अधिक चिन्तित हैं कि वे उसके अत्यन्त चिन्ताजनक लक्षणों पर सार्वजनिक रूप से विचार-विमर्श कर रहे हैं। इस प्रकार १५ अगस्त १९५६ के 'कोमसोमोल्सकाया प्रवदा' ने इस आशय का समाचार प्रकाशित किया कि विदेशी व्यापार-मंत्री काबानोब के पुत्र तथा भारी इंजीनियरिंग विभाग के मंत्री पेतूखोव के एक पुत्र को, वायुसेना के एक लेफ्टिनेण्ट-कर्नल, सेना के एक मेजर-जनरल और गुप्त पुलिस के एक कर्नल की लड़कियों के साथ "मदोन्मत्त असंयमित

व्यवहार" करने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया था। समाचार के अनुसार शक्तिशाली व्यक्तियों की इन सन्तानों ने "निषिद्ध आनन्द" के उपभोग का मूल्य चुकाने के लिए अपने माता-पिता और मित्रों के यहां से चोरी की थी। बाद में तीनों लड़कियों को चोरी के अपराध में एक-एक वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया।

जब मैंने इस प्रसंग की चर्चा की, तब मेरे सहभोजी ने विनम्रतापूर्वक संकेत किया कि सम्भवतः यह घटना सोवियत शिखर पर जीवन-यापन की अत्यन्त व्ययपूर्ण पद्धति का युवकों द्वारा किया गया अनुकरण था। राजप्रासादों जैसे निवास-स्थान, आखेट के लिए निवास-स्थान, निजी रेलवे ट्रेनें तथा सुन्दर मोटरें और बड़ी-बड़ी दावतें उन लोगों को मितव्ययी बनाने में सहायक नहीं होतीं, जो लोग उचित अथवा अनुचित साधनों से उससे बचने की व्यवस्था कर सकते है। न पिताओं द्वारा विशेष अधिकारों की स्वीकृति तथा सत्ता-ग्रहण से पुत्रों में, अत्यन्त असाधारण पुत्रों के अतिरिक्त, आदर्शवाद का विकास होता है।

"निश्चय ही आप जानते है"---मैंने रूसी से कहा---"कि अमरीका में बाल-अपराध काफी होता है। मुख्यतः हमारे युवक स्वस्थ हैं, निश्चय ही यह बात सोवियत युवकों के संबन्ध में भी सत्य है, किन्तु एकरूपकता के लिए डाला जानेवाला दबाव सदा विद्रोहियों को जन्म देता है।"

"हां"—उसने स्वीकार किया—"मैंने अपने पत्रों में अमरीका में बाल-अपराध के सम्बन्ध में पढ़ा है। फिर भी, हमारे लेखक इसका कारण पूंजीवादी पतन-शीलता को ही बताते हैं। फिर भी, अब यह एक समाजवादी देश में भी विद्यमान है।"

मैंने साहस करके कहा-"हो सकता है कि इससे यह सिद्ध होता हो कि आपका देश समाजवादी नहीं है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात, जैसा कि इसे मैं देखता हूं, यह है कि कतिपय जागतिक सामाजिक जलवायु अथवा वायुमण्डलीय दबाव, वादों अथवा आदर्शों की परवाह किये बिना, इसी प्रकार के परिणामों की सृष्टि करते हैं। पिताओं और माताओं के विरुद्ध पुत्रों का विद्रोह एक विश्वव्यापी दृश्य है, जिसे कोई भी लौहावरण नहीं रोक सकता। इसके अतिरिक्त युवक भी, बछेड़ों के समान जुए और कोड़े से संत्रस्त होते हैं और मेरा अनुमान है कि यहां जुआ अधिक भारी तथा कोड़े का प्रहार अधिक तीव्र है।"

उसने कुछ नहीं कहा।

(मौन की अवधि में मैं दो सूचनाओं के सम्बन्ध में, जो मुझे मास्को में प्राप्त हुई थीं, विचार करता रहाः एक सुप्रसिद्ध सोवियत संगीतकार जीविकोपार्जन के लिए

स्वर-रचानाओं के मध्य फिल्मो के लिए गीत लिखता है। व्यवस्था-विभाग की निष्क्रियता तथा नवीनता के प्रति विरोध भावना के कारण रूस मे अनेक आविष्कार वर्षों तक अप्रयुक्त पड़े रहते हैं। अपराध ही एकमात्र ऐसा दृश्य नहीं है, जो लौहावरण का सम्मान नहीं करता।)

सोवियत अपराधी जितने ही अधिक समृद्ध होते है, उनके आचरण और दुर्व्यवहार उनके पश्चिमी समसामयिकों के व्यवहार और दुर्व्यवहार के साथ उतने ही अधिक मेल खाते है, किन्तु बुराई के बीज-वपन के बाद भी — और वृद्धावस्था तक — कठोर श्रम, सर्वव्यापिनी नीरसता, राजनीतिक निर्वासन का भय अपने निजी कमरे का अभाव, और प्रचार का अपरिहार्य शोर-गुल अनेक सोवियत व्यक्तियों को पलायन कर मद्यपान, द्यूत-क्रीड़ा निष्क्रियता और मानसिक रोग की शरण में जाने के लिए विवश कर देते है। मेरे एक कम्यूनिस्ट मित्र की, जो उत्तरी ध्रुव के एक नजरबन्दी शिविर में अठारह वर्षों तक लकड़ी काटता रहा, मॉसपेशियॉ लोहे के समान कठोर हो गयी हैं तथा उसके स्नायु टूट गये है; नजरबन्दी से मुक्त होने के बाद वह मद्यपान तथा मादक द्रव्यों का सेवन करता है और पूर्णतया छिन्न-भिन्न हो जाने से बचने के लिए वह तीन दशाब्दी पहले के, जब मै उससे पहली बार मिला था, पुराने नारों और सिद्धान्तों से चिपका रहता है।

"तुम लोग पाल राब्सन को पासपोर्ट क्यो नहीं देते?" — उसने मॉग की।

"चुप रहो, मूर्ख कहीं के!" — उसकी पत्नी ने चिल्ला कर कहा।

"अठारह वर्षों की नजरबन्दी के बाद तुम्हारा यह प्रश्न पूछना विचित्र लगता है।" — मैंने उत्तर दिया — "सम्भवतः तुम्हारे लिए एक सोवियत पासपोर्ट प्राप्त करने के लिए हमें न्यूयार्क अथवा लन्दन में एक समिति का सगठन करना चाहिए।" — मैंने मजाक करते हुए सुझाव दिया।

"परमात्मा न करे।" — उसने विस्मयपूर्वक कहा।

"वह शीघ्र ही अपने आपको यह विश्वास दिला लेगा कि वह कभी किसी शिविर में था ही नहीं!" — एक नवयुवक कम्यूनिस्ट ने मेरे कानों में फुसफुसा कर कहा।

वह भूतपूर्व लकड़हारा एक विचार-शून्य रूढ़िवादिता द्वारा, जो दशाब्दियों की समाप्ति को विलुप्त कर देगी, अपने मस्तिष्क की रक्षा करने का प्रयास करता हुआ पतीत हुआ।

सोवियत समाज में इन दबावों के अतिरिक्त वृत्तिक अपराध भी विद्यमान है, किन्तु यह बात ज्ञात नहीं है कि वह किस सीमा तक विद्यमान है क्योंकि सरकार एतद्विषयक सूचना को प्रकट नहीं करती। फिर भी, इधर हाल में पत्रों और रेडियो ने शौकिया अपराधवृत्ति अथवा उच्छृंखलता को प्रमुखता प्रदान की है; रूसी इसे गुण्डागीरी कहते हैं। १० अक्तूबर १९५६ को मास्को की एक सभा में इसकी परिभाषा और निन्दा की गयी थी। सभा के सम्बन्ध में रेडियो द्वारा दिये गये विवरण में कहा गया था – "गुण्डगीरी सार्वजनिक व्यवस्था और सार्वजनिक सुरक्षा के विरुद्ध एक अपराध है। महिलाओं के प्रति सूअरों जैसे दृष्टिकोण और पड़ोसियोंके प्रति असम्मान की भावना का अन्त होना ही चाहिए और उसका अन्त हो कर रहेगा।"

सभा में भाषण करते हुए सहायक प्रासिक्यूटर-जनरल वोल्डीरेव ने गुण्डों का दमन करने के कार्य में 'मिलिशिया' (नागरिक पुलिस) का समर्थन करने के लिए मास्को-वासियों से अनुरोध किया। उनकी अपील का समर्थन स्वराष्ट्र-मंत्रालय के, जो नागरिक पुलिस का निरीक्षण करता है, एक अधिकारी द्वारा किया गया। उन्होंने कहा –"हमारा अनुभव बताता है कि एक छोटा अपराध सदा एक बड़े अपराध को जन्म देता है। यह सब इस प्रकार आरम्भ होता है कि कोई व्यक्ति आता है, पहले ताश के निर्दोष खेल होते हैं, तत्पश्चात् 'ओचको' (इक्कीस) का खेल पैसे के लिए प्रारम्भ होता है, फिर धूम्रपान होता है और अन्त में मद्यपान होने लगता है। कतिपय मातापिताओं का अन्धा प्रेम, इस अशोभनीय आचरण के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को पूर्वाग्रहपूर्ण बना देता है और उन्हें प्रकाश का दर्शन केवल उस समय होता है, जब वे अपनी सन्तानों को सीखचों के पीछे देखते हैं।" उसने अन्त में नागरिकों से "मास्कोके सम्मान को सुरक्षित रखने" का अनुरोध किया।

बायलोरूस की राजधानी मिन्स्क उन अनेक नगरों में से एक है, जिन्होंने मास्को की स्थिति के समान स्थिति का सामना करने के लिए पहले ही कार्रवाई की है। मिन्स्क में गुण्डागीरी किस हद तक है, इसका अनुमान 'प्रवदा' को एक पुलिस अधिकारी द्वारा दिये गये इस वक्तव्य से किया जा सकता है कि मजदूरों, छात्रों और क्लर्कों को सहायक मिलिशिया ब्रिगेडों के रूप में संगठित किया गया है, जो "पार्कों, सार्वजनिक उद्यानों, क्लबों, सिनेमा घरों, मजदूरों की बस्तियों और निवासस्थानीय जिलों में व्यवस्था बनाये रखने के कार्य में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं।" उसने पुनः कहा कि ब्रिगेड के सदस्य बसों और ट्रामों के ठहरने के स्थानों पर सारी संध्या और रात को पहरा देते हैं। इसके बावजूद, उसने शिकायत की

कि, अभी तक गुण्डगीरी का मूलोच्छेद नही किया जा सका है; कभी कभी नागरिक "अव्यवस्था-प्रिय तत्वों की रक्षा करते है।"

स्पष्ट है कि कभी-कभी पुलिस भी ऐसा करती है। 'प्रवदा' ने सम्पादक के नाम ऐसे अनेक पत्रों की प्राप्ति का समाचार प्रकाशित किया है, जिनमें "बदमाशों के प्रति उदारता" दिखाने के कारण न्यायालयों और नागरिक पुलिस की आलोचना की गयी थी। 'प्रवदा' ने यह भी कहा है कि सामूहिक फार्मों पर गुण्डागीरी का जोर है।

सामाजिक रुग्णताओंका इस प्रकार का प्रकटीकरण न तो समस्त विश्व में और न सोवियत संघ में कोई नयी बात है। रूस में जो बात नयी है, वह है उनका विस्तार, गहराई और विकास तथा जिस प्रकार वे प्रतिरोधात्मक कार्रवाइयों का विरोध करती है। स्पष्ट है कि कम्यूनिस्ट प्रणाली जिन परिस्थितियों की सृष्टि और उनका पोषण करती है, उनको छोड़ कर वह सर्वशक्तिमान है। स्वतत्रता का अभाव तथा यह भयंकर भावना कि जीवन की स्थितियों पर (अथवा उन पर नियंत्रण एवं प्रभाव रखने वाले नश्वर प्राणियों पर) किसी का कोई नियंत्रण अथवा प्रभाव नहीं है, निराशा, उन्मत्तता तथा सुख एवं अधिकार—आधिपत्य और प्रहार करने के अधिकार—की आकाक्षा को प्रोत्साहन प्रदान करती है। कपट का राष्ट्रीय वातावरण कपटियों को जन्म देता है। जो समाज सुविधानुसार व्यक्ति की काट-छाट करता है, उसमें व्यक्ति इस 'आपरेशन' का प्रतिशोध लेता हुआ दिखायी देता है।

यह सब कुछ विद्रोह है, क्रान्ति नहीं; एक व्यक्तिगत विरोध है, कोई राजनीतिक कार्यक्रम नहीं। सोवियत नागरिकों से यह पूछना मूर्खतापूर्ण होता कि क्या वे अपनी सरकार को उलटने की कामना करते है, अथवा इसका इरादा रखते हैं। इसका विचार मात्र ही भयानक एवं अवास्तविक होगा।

ढाई दशाब्दियों तक स्तालिन के अत्याचार ने दिखा दिया कि पार्टी और पोलिट ब्यूरो, सेना और मजदूर वर्ग शक्तिहीन थे, क्योंकि सत्ता पर उसका एकाधिपत्य था। उसकी मृत्यु से उच्चतर स्तर पर अधिकार का वितरण हो गया, किन्तु जनता को अधिकार की प्राप्ति नहीं हुई। और जिन लोगों के हाथ में सत्ता होती है, केवल वे ही राजनीति को प्रत्यक्ष रूप से तथा अल्पकाल में प्रभावित कर सकते हैं। ऐसी बात नहीं है कि सोवियत राष्ट्र जनतंत्र के प्रति प्रेम नहीं रखता; उसके पास उसे प्राप्त करने के साधन नहीं है। निर्वाचन नियंत्रित होते हैं, वहा केवल एक दल है और अन्य समस्त संगठन, चाहे वे राजनीतिक, शैक्षणिक,

आर्थिक, सामाजिक, वृत्तिक अथवा खेल-कूद के लिए हों, राज्य के आधिपत्य के अन्तर्गत है।

किसी दिन भौतिक सुख-सुविधा के क्रमिक विकास अथवा नेता-वर्ग में सर्वोपरिता के लिए संघर्ष अथवा अन्तरराष्ट्रीय स्थिति मे परिवर्त्तन द्वारा परिवर्त्तन हो सकता है। यह एक व्यापक क्षेत्र है, जिसमें मनमानी कल्पनाएँ की जा सकती है।

सोवियत प्रणाली का स्वरूप ऐसा है कि उसमें मौलिक परिवर्त्तन से गम्भीर और दीर्घकालीन विघटन उत्पन्न हो जायँगे, जो विवेकशील रूसियों को भयाक्रान्त कर देते है। मै एक सुप्रसिद्ध सोवियत लेखक के घर पर, जिसे मै १९३० में जानता था, भोजन कर रहा था; हम लोग अकेले थे और वह स्थितियों के सम्बन्ध में स्पष्टतापूर्वक तथा आलोचनात्मक रूप से बातें कर रहा था: वह यूरोप में रह चुका था और कई पश्चिमी भाषाओं पर उसका अधिकार था; रूस में स्वतंत्रता के अभाव से उसके कार्य में बाधा पड़ती थी। वह पार्टी का सदस्य नहीं है। फिर भी, जब मैंने कहा कि अवशिष्ट स्तालिनवाद के प्रतिकार का एक मात्र उपाय स्वतंत्रता है, तब उसने हाथ फैला कर चीखते हुए कहा—"परमात्मा के लिए, और कुछ भी हो, किन्तु स्वतंत्रता नहीं।" एक प्रोफेसर ने एक अन्य अवसर पर प्रायः उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया। दोनों ने यह तर्क उपस्थित किया कि यदि कृषकों को स्वतंत्रता मिल गयी, तो वे सामूहिक कृषि-फार्मों का विघटन कर देंगे और नगर में खाद्याभाव हो जायगा; फैक्टरियों में काम करने वाले मजदूर हड़ताल करने तथा व्यवस्था में भाग लेने के अधिकार की माँग करेंगे। लेखक और प्रोफेसर को कम्यूनिज्म में अपने देश का भविष्य अथवा अराजकता दिखायी पड़ी। वे कम्यूनिज्म को पसन्द नहीं करते, किन्तु अराजकता से डरते हैं। चालीस वर्षों के बोल्शेविक शासन ने अन्य विकल्पों और उनके लिए प्रयास करने के लिए पर्याप्त साहस रखने वाले व्यक्तियों को समाप्त कर दिया है। सम्भवतः यही स्तालिन का चेतन लक्ष्य था। परिणामस्वरूप उसके उत्तराधिकारियों का कार्य अपेक्षाकृत सरल हो गया है। अतः उसके प्रति उनके दृष्टिकोण में कृतज्ञता और सराहना तथा अरुचि और घृणा के भाव का सम्मिश्रण प्रतीत होता है।

अध्याय ५

तीन नवयुवक कम्यूनिस्ट

जोसेफ स्तालिन को सिंहासन-च्युत करने के कार्य में एक अपूर्णता है, जो क्रेमलिन के भय, सन्देहों और मतभेदों को प्रतिविम्बित करती है।

नेशनल होटल की चौथी मंजिल पर 'लिफ्ट' से उतरने के स्थान पर लेनिन का एक चित्र है और सामने मार्शल की वर्दी में स्तालिन का एक चित्र है; तीसरी मजिल पर पुनः लेनिन और स्तालिन तथा स्वर्गीय राष्ट्रपति कालिनिन के चित्र हैं; दूसरी मंजिल पर केवल लेनिन का चित्र है; पहली मजिल पर केवल स्तालिन का चित्र है—प्रकोष्ठ में केवल स्तालिन का चित्र है—गम्भीर मुद्रा में। गोर्की स्ट्रीट पर स्थित मास्को के केन्द्रीय डाकघर के महान कक्ष में लेनिन और स्तालिन के विशाल चित्रों का बाहुल्य है। मुख्य तिफ़लिस रेलवे स्टेशन को 'महान स्तालिन की विजय हो' का विशाल अक्षरों में लिखा हुआ पट्ट सुशोभित करता है। इस प्रकार के अनन्त उदाहरण दिये जा सकते हैं। अनेक नगरों, फैक्टरियों, फार्मों और संस्थाओं का नामकरण अब भी उसके नाम पर किया जाता है।

निश्चय ही समस्त रूसियों के दिवंगत मुकुटहीन स्वेच्छाचारी शासक के असंख्य चित्रों को सार्वजनिक स्थानों से हटा दिया गया है, किन्तु न तो उसकी प्रतिच्छवि को और न उसकी प्रतिष्ठा को नियमित तानाशाही पूर्णता के साथ 'समाप्त' किया गया है। और चूंकि इस प्रकार के मामलों का, विशेषतः मृत्यु के उपरान्त स्तालिन के कार्य जैसे सर्वोच्च महत्व वाले मामले का निर्देशन कुशलतापूर्वक किया जाता है, इसलिए उसे अस्वीकृत कर देने के साथ उसे कायम भी रखने के तथ्य से यह सकेत मिलता है कि स्तालिन के उत्तराधिकारियों के मस्तिष्कों में उसके कुरूप उत्तराधिकार को समाप्त करने के सम्बन्ध में हिचकिचाहट बनी हुई है।

नेता-वृन्द के खण्डित दृष्टिकोण के समान ही जनता में भी मतैक्य नहीं है। मास्को में मुझे जो अनुभव हुआ, उसमें 'कामसोमोल' अथवा युवक कम्यूनिस्ट सभा के तीन सदस्यों साचा, आइवन और सोन्या के साथ लम्बी बातचीत के सिलसिले में इसका उदाहरण मिला।

इक्कीस वर्षीय, लम्बा, दुबला और सुन्दर साचा गणित का अध्ययन कर रहा जब मैं उससे मिलने के लिए उसके परिवार के छोटे-से एक कमरे वाले

निवास-स्थान पर गया, तब उसका पिता एक सरकारी कार्यालय में काम पर गया हुआ था, मां बाजार करने गयी थी और छोटी बहन स्कूल में थी। नये विश्वविद्यालय, पुरुष और स्त्री छात्रों के सम्बन्धों तथा शिक्षा एवं पुस्तकों के व्यय के सम्बन्ध में पूछने के पश्चात् मैंने नियमित प्रश्न किया। क्या उसने फरवरी १९५६ में बीसवीं पार्टी कांग्रेस में किये गये ख्रुश्चेव के उस गुप्त भाषण को पढ़ा था, जिसके द्वारा स्तालिन की निन्दा की गयी थी? "ख्रुश्चेव का पत्र!" उसने कहा—"हां, वह हमें पढ़ कर सुनाया गया था।" "आप जानते है"—मैंने कहा—"यह एक भाषण था, पत्र नहीं और मेरी दृष्टि में उसे पत्र कहने का जो सर्वोत्तम कारण हो सकता है, वह यह है कि भाषण को कांग्रेस के प्रकाशित विवरण में सम्मिलित करना पड़ता, जब कि पत्र को कांग्रेस से असम्बद्ध वस्तु कहा जा सकता है और इस लिए उसका प्रकाशन आवश्यक नहीं है।'

"हुं"—साचा ने फुसफुसाते हुए कहा—"एक अन्य कारण भी हो सकता है, जिसका हमें ज्ञान नहीं है।"

मैंने बातचीत को जारी रखते हुए कहा—"अच्छा, ख्रुश्चेव ने स्तालिन के विरुद्ध जो कुछ कहा, उसे सुनने के बाद आप उसके सम्बन्ध में कैसा अनुभव करते हैं।"

"मै स्तालिन से प्रेम करता हूं"—साचा ने आक्रामक रूप से बल दे कर कहा।

मैंने कहा—"आप उस व्यक्ति से प्रेम करते हैं जिसने युद्ध के पूर्व और बाद में लाखों व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया, जिन्दगियों को छिन्न-भिन्न कर दिया तथा हिटलर के साथ युद्ध में लाशों के पहाड़ खड़े कर दिये।"

"स्तालिन"—साचा ने हठपूर्वक कहा—"एक महान राजनेता था और उसने हमारे देश का निर्माण किया।"

"और जिन लाखों व्यक्तियों को उसने गोली से उड़ा देने का आदेश दिया, उनके सम्बन्ध में आपका का क्या कहना है?"

"चूंकि वे त्रात्स्कीवादी थे, इसलिए उन्हें गोली से उड़ा ही देना चाहिए था"।

"और बुखारिन, जो कम्यूनिज्म का दर्शनकार, लोकप्रिय नेता, लेनिन और युवकों का प्यारा था?"

"यदि वह राज्य के लिए हानिकारक था, तो उसे भी गोली मार दी जानी चाहिए थी।"

"मेरा अनुमान है कि आपने महात्मा गांधी के सम्बन्ध में सुना है।"—मैंने प्रश्न किया।

"हां,"—साचा ने उत्तर दिया—"हम गांधी के सम्बन्ध में बहुत ही ऊंचे विचार रखते हैं।"

"१९५५ तक आप गांधी के सम्बन्ध में बुरे विचार रखते थे, क्योंकि आपसे उनके सम्बन्ध में अच्छे विचार रखने के लिए नहीं कहा गया था, किन्तु इस क्षण वह मेरा विषय नहीं है। आप जानते है कि गांधी और नेहरू भारत में ब्रिटिश शासन के लिए बहुत ही हानिकारक थे और अन्ततोगत्वा उन्होंने उसे निष्कासित कर दिया। आपके तर्क के अनुसार गाधी, नेहरू और उनके भारतीय राष्ट्रवादी सहयोगियों को गोली मार दी जानी चाहिए थी!"

"उन्हें बहुधा कारावास का दण्ड दिया गया।"—साचा ने तर्क उपस्थित किया।

"सही बात है, किन्तु वे विजयी होने के लिए जीवित रहे—जो निर्णायक बात है। उन्हें गोली न मारने का कारण यह है कि ब्रिटिश भारतीय विरोध से, जिसे साम्राज्यवाद के अन्तर्गत भी व्यक्त किया जा सकता था, भयभीत थे और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण कारण यह है कि इंग्लैण्ड एक जनतांत्रिक देश है।"

"मुझे उन्मत्त होकर हँसने की अनुमति दीजिये।"—साचा ने कहा।

"क्या आपका विचार है कि पश्चिम में जनतंत्र नहीं है?"

"सम्पत्ति-स्वामियों के लिए है।"—साचा ने घोषित किया।

"क्या आपने संयुक्त राज्य अमरीका, फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन, स्वीडेन और अन्य अनेक देशों में स्वतंत्र निर्वाचनों के सम्बन्ध में सुना है?"

"हाँ, किन्तु हम धोखे में नहीं आते।"—साचा ने मुझे आश्वासन दिया—"वे निर्वाचन पूँजीवादियों द्वारा नियंत्रित होते हैं। समाजवादी देश के अतिरिक्त अन्यत्र मजदूरों को अधिकार नहीं प्राप्त होते।"

इसके बाद जो वाद-विवाद प्रारम्भ हुआ, वह प्रातःकाल एक घण्टे तक जारी रहा और तीसरे पहर, जब मैं उसकी माँ से मिलने के लिए वापस लौटा, पुनः प्रारम्भ हुआ। मैं यह सोचना पसन्द करूँगा कि मैने एक प्रभाव उत्पन्न किया अथवा कम से कम एक बीज-वपन किया; मैं बिल्कुल निश्चय के साथ नहीं कह सकता कि मैंने ऐसा किया।

दूसरे दिन मैंने आइवन को साचा की "मैं स्तालिन से प्रेम करता हूँ" और अन्य घोषणाओं के सम्बन्धमें बताया। "आप का साचा मूर्ख है"—आइवन ने कहा।

आइवन की आयु तेईस वर्ष की है, वह युवक कम्यूनिस्ट सभा की एक इकाई का सचिव और भौतिक विज्ञान-वेत्ता है। उसका बड़ा भाई दिसम्बर १९४१ में नाजी आक्रमण के विरुद्ध मास्को की रक्षा करते हुए मारा गया था तथा

उनके पिता-माता, जो मेरे घनिष्ठ मित्र थे, साइबेरिया में, जहाँ उन्हें नाजियों के मास्को के निकट पहुँचने पर भेज दिया गया था, मर गये थे । मेरे सम्बन्ध में आइवन की स्मृति आवश्यक रूप से अस्पष्ट थी, किन्तु उसके पिता और माता मेरे सम्बन्ध में बातें करते रहते थे और जब मैं बिना पूर्व सूचना के उनके निवास-स्थान के द्वार पर प्रकट हुआ, तब मेरा हार्दिक स्वागत किया गया । वह अपनी नवयुवती पत्नी सोन्या, जो स्वयं भी 'कामसोमोल' की एक सदस्या है तथा एक वर्ष की आयु के एक प्यारे बच्चे के साथ १६० वर्गफुट के एक कमरे में रहता है । जब मै बच्चे के साथ थोड़ा-सा खेल चुका, तब उसे कमरे के त्रिभुजात्मक कोने को पृथक् करनेवाले एक तार से लटके हुए पर्दे के पीछे बिस्तर पर सुला दिया गया । तत्पश्चात् आइवन ने एक धुंधली बत्ती छोड़ कर सभी बत्तियों को बुझा दिया । हवा को ताजा रखने के लिए उसने तथा सोन्या ने धूम्रपान नहीं किया (यद्यपि सोन्या जब-जब चाय के लिए ताजा उबाला हुआ पानी केतली में भर कर लाने रसोईघर में जाती थी, तब-तब वह एक सिगरेट सुलगा लेती थी ।) हम धीमे स्वर मे बातें करते थे ।

उन्होंने मेरे प्रश्नों का और मैंने उनके प्रश्नों का उत्तर दिया और हमारे मध्य मैत्रीपूर्ण स्नेह बढ़ता गया । एक प्रकार से मैं आइवन के स्वर्गवासी पिता-माता को जोड़ने वाली एक कड़ी था । वार्तालाप सुख और आराम के साथ होता रहा । वे इस बात के लिए लालायित थे कि मैं पुनः आऊं और मैं दो बार पुनः उनके यहाँ गया ।

उन तीन संध्याओं में हम सारे संसार का चक्कर लगा आये । उनके लिए सबसे बड़ी चिन्ता का विषय युद्ध था । मैंने उन्हें समझाया कि मैं ऐसा क्यों सोचता हूँ कि विश्व-युद्ध अत्यन्त असम्भव हो गया है; यह एक आणविक-उदजनीय युद्ध होगा, जो दोनों योद्धा पक्षों को विनष्ट कर देगा, उससे किस लाभ की सम्भावना हो सकती है ? फिर भी, मैंने पुनः कहा, साम्राज्यवाद कायम है और इससे तनाव की सृष्टि होती है । अवशिष्ट पश्चिमी साम्राज्यवाद पलायन कर रहा है, भारत, बर्मा, लंका, हिन्देशिया, सूडान, मोरक्को, ट्यूनिस—जो अब स्वतंत्र हो चुके हैं—और गोल्ड कोस्ट, नाइजीरिया तथा अन्य उपनिवेशों को देखो, जो स्वतंत्रता के निकट पहुँच गये हैं । "फिर भी, सोवियत साम्राज्यवाद का यूरोप के एक बड़े भाग पर आधिपत्य है ।"

"एक समाजवादी राज्य साम्राज्यवादी किस प्रकार हो सकता है ?"—आइवन ने विरोध किया ।

मैने उत्तर दिया – "तुम्हारा दृष्टिकोण रूढ़ि और सिद्धान्त से प्रभावित है। मेरा दृष्टिकोण तथ्यो पर आधारित है। क्या सोवियत सरकार ने १९३९ में फिनलैण्ड पर आक्रमण किया था ?"

"वह एक अत्यन्त लोक-अप्रिय युद्ध था।" – उसने कहा।

"यह सुन कर मुझे प्रसन्नता हुई" – मैने मत व्यक्त किया – "क्या रूस ने इस्थोनिया, लैटविया और लिथुआनिया को, जिन्हें लेनिन ने स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में स्वीकार किया था और जिनके साथ सोवियत सघ ने दो दशाब्दियो तक कूटनीतिक सम्बन्ध रखा, मिला लिया था ? मान लो कि अमरीका, फ्रास अथवा ब्रिटेन ने इसी प्रकार का कोई कार्य किया होता ? क्या तुम इसे साम्राज्यवाद नहीं कहते ?"

"हॉ, निश्चित रूप से।" – सोन्या ने बीच मे ही कहा।

"क्या मै अपनी बात जारी रखूं ?" — मैने पूछा – "रूस ने १९३९ में पोलैण्ड का आधा भाग हड़प लिया। स्तालिन ने पोलैण्ड के अवशिष्ट भाग तथा अन्य समस्त पूर्व यूरोपीय राष्ट्रो पर बलात् कम्यूनिस्ट सरकारें लाद दीं। यही सोवियत साम्राज्य है और जब तक वह तुम्हारे हाथ से निकल नहीं जायगा, तब तक वह तुम्हें संत्रस्त करता रहेगा।"

सोन्या ने और अधिक चाय उड़ेल दी और मैने पूछा कि क्या मै कुछ सचित्र विदेशी पत्रिकाएं ला सकता हूँ। उसने कहा – "मुझे बताइये कि अमरीका में बाल-पक्षाघात का रोग इतना अधिक क्यों है ?"

मैंने अज्ञान प्रकट किया। वह मेरा क्षेत्र नहीं था।

"हम बहुधा अमरीका में हड़तालों के सम्बन्ध में सुनते रहते हैं" — आइवन ने कहा — "क्या इससे प्रमाणित नहीं होता कि आपके मजदूर निर्धन हैं ?"

मैंने कहना प्रारम्भ किया – "मास्को में आने के बाद से यह प्रश्न मुझसे अनेक बार पूछा जा चुका है। इसका अर्थ आवश्यक रूप से यह है कि चूंकि यहॉ हड़तालें गैर-कानूनी हैं, इसलिए सोवियत जनता किसी हड़ताल के स्वरूप को नहीं समझती। वह हड़ताल को क्रान्ति से पूर्व की निराशा का अन्तिम कार्य समझती है। सम्भवतः रूसी इतिहास यही बताता है, किन्तु अमरीका में लाखों मजदूर धरना देने की पंक्ति तक अपनी निजी मोटरों में बैठ कर जाते है, उनके अपने घर हैं और वे अपने बालकों को कालेज में भेजते हैं। पश्चिमी देशों में मजदूर सामान्यतः इसलिए हड़ताल करते हैं कि वे सोचते हैं कि वे अपने में सुधार कर सकते हैं अथवा उनकी कोई शिकायत होती है। अब तुम जिसे समाजवादी देश कहते हो, उसमें क्षुधा-पीड़ा के कारण हड़ताल हो सकती है। पोजनान में यही हुआ था।"

आइवन ने कहा—"हमें बताइये कि पोजनान में वास्तव में क्या हुआ।"

"तुम्हारा 'वास्तवमें क्या हुआ' से तात्पर्य क्या है?"—मैंने व्यंग्य किया।

"क्या तुम 'प्रवदा' अथवा 'कोमसोमोल्स्काया प्रवदा' को नहीं पढ़ते?"

हम सभी हँस पड़े। "अब आइये,"—सोन्याने कहा—"आप जानते हैं कि हमारे समाचार-पत्र हमें पूर्ण सत्य नहीं बताते।"

"बस उतना ही?"—मैंने पूछा।

आइवन ने स्वीकार किया—"हम अनुभव करते हैं कि वे तथ्य को विकृत करते हैं, किन्तु इस अनुभूति से तथ्य को जानने में हमें कोई सहायता नहीं मिलती।"

मैंने २८ और २९ जून को पोजनान में हुई आम हड़ताल का, जिसके पश्चात् एक विद्रोह हुआ था, विस्तृत अध्ययन किया था और उन्हें उसका संक्षिप्त विवरण दिया। मैंने इस बात पर बल दिया कि मेरी अधिकांश सूचना पोलिश पत्रों से प्राप्त हुई थी, जो कम्यूनिस्ट-नियंत्रित होते हुए भी उल्लेखनीय रूप से स्पष्टवादी थे।

"हाँ"—आइवन ने स्वीकार किया—"हमारे पत्र नीरस और शुष्क होते हैं। इसका आरम्भ स्तालिन के साथ हुआ था और उसकी मृत्यु के बाद स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। पिताजी हमें १९२० के सम्बन्ध में बताया करते थे, जब समाचार-पत्र त्रात्स्कीवादियों के स्तालिन-विरोधी भाषणों के विवरण प्रकाशित किया करते थे।"

तीन दिन बाद जब मैं दोपहर के भोजन के लिए आया, तब मैं उनके लिए कई बड़ी-बड़ी पत्रिकाएँ, एक बाल प्वाइण्ट पेन और रेजर ब्लेडों का एक पैकेट लाया। सोन्या ने कलम पर कब्जा कर लिया। वह स्कूल में पढ़ाती थी और उसने इसी शर्त पर माँ बनना स्वीकार किया था कि वह पढ़ाना जारी रख सकेगी। उसे धन कमाने के लिए काम करने की इतनी अधिक आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उन्होंने दिन में काम करने के लिए एक नौकरानी रखी थी (जो स्वयं अपने कमरे को साफ रखने तथा भोजन बनाने के लिए चार बजे घर चली जाया करती थी)। अंशतः सोन्या गृहिणी बनना नहीं चाहती थी, किन्तु बात इससे भी अधिक थी। जर्मनों के समान ही रूसियों पर भी काम की धुन सदा सवार रहती है। यह पलायन का एक दूसरा रूप, अवकाश का भय, आलस्य के प्रति घृणा अथवा देशभक्ति, देश की प्रगति में योगदान करने की इच्छा, या यह भावना हो सकती है कि जब प्रत्येक व्यक्ति—विशेषतः तुम्हारा पति—काम करता है, तब तुम घर पर नहीं बैठी रह सकती। काम एक हैसियत प्रदान करता है। इसी कारण से नौकरानियाँ दुर्लभ हैं; वे फैक्टरियों में काम करना अधिक पसन्द करती हैं तथा उन्हें अच्छा वेतन देकर

और उनकी पारिवारिक समय-तालिका को स्वीकृत कर घरेलू सेवा के लिए आकृष्ट करना पड़ता है। सोन्या की नौकरानी अपनी मालकिन के लिए सामान खरीदते समय अपने लिए भी सामान खरीदा करती थी।

भोजन के समय बच्चे का पालना मेज के निकट पड़ा रहा और प्रत्येक वस्तु में एक आकर्षक अव्यवस्था थी, सोन्या बर्त्तन और थालियाँ लेकर कमरे से रसोई-घर में और रसोई घर से कमरे में आ-जा रही थी, हम सभी बालक को थोड़ा-थोड़ा खिलाते थे और बारी-बारी से उसे पकड़ते थे। बच्चा खड़ा होना शुरू कर रहा था और मैंने कहा कि पालने की दीवार नीची प्रतीत होता है। "क्या तुम लोगों के पास 'हार्नेस' (Harness) नहीं है?"—मैंने पूछा।

उन्होंने समझा नहीं। मैंने स्पष्टीकरण किया—बालक को उसके पालने अथवा गाड़ी में बाँधने के पट्टे। कितना सुन्दर विचार है, किन्तु सोवियत संघ में इस प्रकार की कोई वस्तु उपलब्ध नहीं थी। (प्राग में बालकों की प्रत्येक गाड़ी में इस प्रकार के पट्टे लगे रहते हैं।)

भोजन के बाद सोन्या ने बच्चे को उसके पालने में सुला दिया, जब कि आइवन धूम्रपान करने के लिए गलियारे में चला गया। मैंने पार्टी की वैचारिक मासिक पत्रिका "कम्यूनिस्ट" के हाल के अंक में प्रकाशित चार लेखकों के "गृह-युद्ध के इतिहास से सम्बन्धित कतिपय प्रश्नों के सम्बन्ध में" शीर्षक के उन्तीस पृष्ठों के एक लेख के कतिपय और अनुच्छेदों को पढ़ डाला। जब आइवन लौटा, तब उसने मेरे कन्धे के ऊपर से देखा और पूछा कि वह क्या था। "यह स्तालिन के सम्बन्ध में है। क्या तुम 'कम्यूनिस्ट' नहीं पढ़ते?"—मैंने धीमे से कहा।

सोन्या पर्दे के पीछे से बाहर आयी और अनुमतिसूचक मुद्रा में सिर हिलाया। "वह सो गया है,"—उसने घोषित किया।

"नहीं"—आइवन ने उत्तर दिया—"मै नहीं पढ़ता। मुझे अनेक तकनीकी पत्र पढ़ने पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त इन पार्टी-पत्रिकाओं की भाषा बहुत ही शुष्क होती है।"

मैंने कहा—"मैं मानता हूँ, किन्तु वे सामूहिक नेतृत्व के विचारों को प्रतिबिम्बित करती हैं और यह लेख विशेष रूपसे रोचक है।"

"अच्छा, दीजिये, दीजिये!"—सोन्याने अधीरतापूर्वक कहा।

मैंने कहना प्रारम्भ किया—"पहले मुझे यह बता लेने दो कि यह लेख स्तालिन के सम्बन्ध में उन तथ्यों को प्रस्तुत करता है, जिन्हें विदेशों के लोग गत २७ वर्षों से जानते रहे हैं। यह १९१८ से १९२० तक घरेलू और विदेशी शत्रु-सेनाओं के

साथ सोवियत रूस के युद्ध और विशेषतः १९२० के रूस-पोलैण्ड युद्ध के सम्बन्ध में है। उस युद्ध का प्रारम्भ सोवियत क्षेत्र में पोलिश सेना के बहुत दूर तक प्रविष्ट हो जाने पर हुआ था। फिर भी, बाद में, जैसा कि तुम जानते हो, लाल सेना ने पोलों को सीमा के पार मार भगाया।

"इस समय सोवियत नेतृ-वृन्द में एक तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गया। लेनिन पोलैण्ड पर आक्रमण करने के पक्ष में था। क्रान्तिकारी सैनिक परिषद् का अध्यक्ष, वास्तव में लाल सेना का प्रमुख त्रात्स्की इसके विरुद्ध था। उसका तर्क यह था कि लेनिन की आशा के अनुसार पोलिश मजदूरों और किसानों की क्रान्ति को जन्म देने के बदले रूसी आक्रमण पोलिश राष्ट्रवाद को प्रज्ज्वलित कर देगा और स्वयं अपनी पराजय का कारण बन जायगा।

"त्रात्स्की की बात अमान्य कर दी गयी। जनरल मिखाइल तुखाचेव्स्की ने, जो एक सैनिक प्रतिभा-सम्पन्न नवयुवक था, पश्चिम की दिशा में वारसा की ओर मुख्य सोवियत अभियान का निर्देश किया और यातायात के साधनों के आदियुगीन अवस्था में होने के बावजूद लगभग अठारह मील प्रति दिन की गति से तब तक आगे बढ़ता गया, जब तक उसे पोलिश राजधानी न दिखायी देने लगी। वहाँ मार्शल पिलसुद्स्की के अन्तर्गत और फ्रांसीसी जनरल वेगां की सहायता से पोलों ने प्रबलतर प्रतिरोध करना प्रारम्भ किया।

"तुखाचेव्स्की ने सहायता के लिए अनुरोध किया। तदनुसार सोवियत जनरल स्टाफ ने बुदैनी की तोपखाना सेना को, जो गेलिशिया में तुखाचेव्स्की के दक्षिण में कार्य-रत थी, शीघ्रतापूर्वक वारसा की दिशा में बढ़ने का आदेश दिया। तुखाचेव्स्की के तार तथा स्टाफ के सन्देश विदेशों में प्रकाशित हो चुके हैं।

"फिर भी, बुदैनी ने कई संकटपूर्ण दिनों तक इन सन्देशों का उत्तर नहीं दिया। इसके स्थान पर वह वह 'कम्यूनिस्ट' में प्रकाशित लेख के शब्दों में एक स्वतंत्र मार्ग पर चलता रहा। वह ल्वोव (लेम्बर्ग) पर अधिकार करने के उद्देश्य से दक्षिण-पश्चिम की दिशा में बढ़ता रहा। लेख में इस बात का रहस्योद्घाटन किया गया है कि बुदैनी के स्टाफ ने, जिस पर स्तालिन का प्रभुत्व था, स्वेच्छा-पूर्वक इस लक्ष्य को चुना था। जैसा कि अब हम उसे जानते हैं, मुझे यह कहने में तनिक संकोच नहीं होगा कि स्तालिन ने अपनी प्रतिष्ठा और राजनीतिक शक्ति में वृद्धि करने के लिए ही ऐसा किया।

"लेख में बताया गया है कि इसका परिणाम यह हुआ कि 'पश्चिमी मोर्चा, जिसने वारसा की दिशा में श्वेत-पोलों पर मुख्य, निर्णायक प्रहार किया था, बिना

सहायता के ही रह गया । ' इस संकट-काल में कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समति ने हस्तक्षेप किया और बुदैनी को अपनी सेनाओं की कमान तुखाचेव्स्की को सौप देने का आदेश दिया, किन्तु लेख में कहा गया है कि बुदैनी के स्टाफ ने "हस्तान्तरण न होने दिया"। परिणामस्वरूप तुखाचेव्स्की को वारसा से मार भगाया गया और रूस को युद्ध में पराजित होना पड़ा । लेख से स्पष्ट है कि सोवियत विदेश-नीति पर हुए इस बड़े प्रहार के लिए स्तालिन उत्तरदायी है । बाद में अपनी पराजय की विवेचना करते हुए तुखाचेव्स्की ने उसके लिए स्तालिन को उत्तरदायी ठहराया; १९३७ में स्तालिन ने उसे फाँसी देने का जो निर्णय किया, उसका एक कारण सम्भवतः यह भी था ।

"अब, आइवन और सोन्या, 'कम्यूनिस्ट' में प्रकाशित लेख का विस्तारपूर्वक वर्णन करने और उसके साथ अपने विचारों को भी जोड़ देने में मेरा उद्देश्य सोवियत संघ में स्तालिनवाद के परित्याग (De-Stalinization) की संपूर्ण प्रक्रिया का स्पष्टीकरण करना है । लेख में १९२० के इस प्रकरण में स्तालिन के कार्य पर प्रकाश डाला गया है, किन्तु इसका उद्देश्य सत्यानुसंधान करना नहीं है। यह कल्पना की जा सकती थी कि इतने वर्षों तक स्तालिन के पक्ष में झूठ बोलते रह कर अपनी प्रतिष्ठा को क्षति पहुँचाने के बाद पार्टी झूठ बोलना एकदम बन्द कर देगी और एक नया मार्ग ग्रहण करेगी तथा इतिहास को तोड़ना मरोड़ना बन्द कर देगी । फिर भी, लेख में त्रात्स्की और तुखाचेव्स्की के सम्बन्ध में स्तालिन-युग की झूठी बातों को शाश्वत बना दिया गया है और इसके अतिरिक्त पथ-प्रदर्शक सैनिक प्रतिभा के रूप में स्तालिन का स्थान लेनिन को प्रदान कर दिया गया है ।"

"अच्छा, बहुत ठीक!" –सोन्या ने आदेश दिया–"आइये, अब चाय पी लें।"

कुछ समय तक हम लोग मौसम के नाटकों और वे जो पुस्तकें पढ़ते थे, उनके सम्बन्ध में गपशप करते रहे । अनेक सह-नागरिकों के समान वे भी सोवियत जीवन के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त करने के लिए सामान्यतः उपन्यास पढ़ते थे; चूँकि लेखकों से 'यथार्थवादी' होने और आर्थिक प्रगति का चित्रण करने की आशा की जाती है, इसलिए वे बहुधा फैक्टरियों अथवा सामूहिक फार्मों अथवा निर्माण-परियोजनाओं में रहने के लिए जाते हैं और उन्हें अपने उपन्यासों के विषय बनाते हैं; लेखक का पूर्वाग्रह चाहे कुछ भी हो, पाठक देश के सम्बन्ध में कुछ जान जाता है ।

"क्या आपने समाजवादी यथार्थवाद से सम्बन्धित कहानी सुनी है?"–सोन्या ने पूछा । मैंने उससे बताने का अनुरोध किया ।

सोन्या ने कहा–"यह स्तालिन के समय की बात है। एक चित्रकार को एक उच्चपदस्थ कम्यूनिस्ट का, जो अपनी दायीं आँख और दायीं बाँह खो चुका था चित्र तैयार करने का आदेश दिया गया। चित्रकार ने एक ऐसा चित्र तैयार किया, जिसमें उसकी दोनों आँखें तथा दोनों बाँहें दिखायी गयी थीं। उसके विरुद्ध औपचारिकतावाद (Formalism) का अभियोग लगाया गया और उसे गोली से उड़ा दिया गया। एक दूसरे चित्रकार को यही काम सौंपा गया और उसने नेता को उसके वास्तविक रूप में चित्रित किया। उन्होंने उसके विरुद्ध प्रकृतिवादी होने का आरोप लगाया और उसे गोली से उड़ा दिया गया। तत्पश्चात् उन्होंने एक तीसरे चित्रकार को बुलाया। उसने नेता के बायें भाग को चित्रित किया। उसे समाजवादी यथार्थवाद के लिए एक लाख रूबल का स्तालिन पुरस्कार प्राप्त हुआ। अच्छे पहलुओं का चयन और बुरे का लोप समाजवादी यथार्थवाद है।"

"क्या तुमने यह कहानी सुनी है?–आइवन ने उसके बाद पूछा—"एक सभा में एक कम्यूनिस्ट वक्ता ने सोवियत आर्थिक सफलताओं का जाज्वल्यमान विवरण प्रस्तुत किया। जब उसने प्रश्न पूछने के लिए कहा, तब श्रोताओं में से एक व्यक्ति ने खड़ा होकर पूछा–'क्या कम्यूनिज्म आ चुका है अथवा स्थिति और भी बुरी होती जायगी?'"

अब उन्हें पोलैण्ड में प्रचलित एक कहानी सुनाने की मेरी बारी थी। एक पोल एक डाक्टर के पास गया और बहुत अधिक बीमार होने की शिकायत की। चिकित्सक ने उसकी परीक्षा की और बताया कि उसे कोई बीमारी नहीं मालूम पड़ी। उस व्यक्ति ने विरोध प्रकट करते हुए कहा–"किन्तु डाक्टर मैं अवश्य बीमार हूँ। मैं सुनता कुछ और हूँ तथा देखता कुछ और हूँ।" "हाँ"—सोन्या ने मत व्यक्त किया–"बहुधा प्रचार और वास्तविकता में अन्तर दिखायी देता है।"

आइवन ने गम्भीर स्वर अपना लिया। उसने मार्क्सवाद के सम्बन्ध में मेरे विचार जानने की इच्छा व्यक्त की। संक्षेप में मेरा मत यह था कि जब कि मार्क्स की विवेचना-पद्धति ने सामाजिक अध्ययनों में योग प्रदान किया, उसने समस्त ध्यान मनोवैज्ञानिक समीकरणों से वस्तुवादी अथवा भौतिकवादी समीकरणों की ओर आकृष्ट कर बहुत अधिक हानि पहुँचायी। इसके अतिरिक्त, मार्क्स ने एक शताब्दी पूर्व लिखा था, जब ब्रिटिश मजदूरों को मताधिकार नहीं प्राप्त था और उनके पास ट्रेड-यूनियन अथवा राजनीतिक सत्ता नहीं थी। अतः वह एक ऐसी मजदूर दलीय सरकार की पूर्व कल्पना नहीं कर सकता था, जो संसदीय अधिनियम द्वारा शांतिपूर्वक पूँजीवादी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर देगी। विगत एक सौ वर्षों में

पूँजीवाद में इतना अधिक परिवर्त्तन हो गया है कि उसके रहस्यों की कुंजी मार्क्स के पास मुश्किल से मिल सकती है। कम्यूनिस्ट उसको अपना एकमात्र पथ-प्रदर्शक मान कर सबसे बड़ी भूल करते है।

किन्तु मैं इस तथ्य में अधिक रुचि रखता था कि, मेरे आलोचनात्मक दृष्टिकोण को जानते हुए भी आइवन ने मुझसे उक्त प्रश्न पूछा। यह स्वयं उसके मस्तिष्क में कुछ संशय होने का अथवा कम से कम कम्यूनिस्ट आदर्श के सर्वप्रमुख पहलू के सम्बन्ध में एक दूसरे मत को सुनने की तत्परता को प्रतिबिम्बित करता था।

मैने आइवन से कहा—"तुम अपनी युवक कम्यूनिस्ट सभा की इकाई के सचिव हो। मुझे बताओ कि सभा अपने लाखों सदस्यों को किस प्रकार अपने घरों का परित्याग करने तथा कजकस्तान और साइबेरिया के सुदूर निर्जन प्रदेशो में जाकर कृषक बनने के लिए प्रेरित करती है?"

"हम सूचियाँ तैयार करते हैं"—आइवन ने सीधे-सादे ढंग से उत्तर दिया।

"कोई दबाव नहीं?"

"कोई दबाव आवश्यक नहीं है"——उसने स्पष्टीकरण किया—"केवल कभी-कभी कोई लड़की यह तर्क उपस्थित करती है कि उसका विवाह होने वाला है अथवा बच्चा होने वाला है और हम उसे क्षमा कर देते हैं।"

अब सोने का समय हो गया था।

मास्को से प्रस्थान करने से ४८ घण्टे पूर्व मै पुनः आइवन और सोन्या से मिलने गया। यह हमारी तीसरी और अन्तिम मुलाकात थी और हम थोड़ा भावुक हो गये थे। मैं उनके यहाँ जो दो अमरीकी पत्रिकाएँ छोड़ आया था, उनका काफी भाग वे पढ़ चुके थे। एक में सोवियत युवकों के सम्बंध में डोरोथी थाम्पसन का एक लेख था और आइवन ने एक समृद्ध पूँजीवादी प्रकाशन द्वारा सोवियतों के सम्बंध में इतना मैत्रीपूर्ण लेख प्रकाशित किये जाने पर विस्मय प्रकट किया। मैंने कहा कि लेखक और सम्पादक ने जिस रूप में सत्य के दर्शन किये थे, उसे वे उसी रूप में प्रस्तुत कर रहे थे। उसी पत्रिका के दूसरे अंक में डोरोथी थाम्पसन का सोवियत महिलाओं के सम्बंध में एक लेख था; सोन्या ने कहा कि इस लेख में एक अपेक्षाकृत अन्धाकारमय चित्रण प्रस्तुत किया गया था, किन्तु वह चित्रण सही था।

"सुनो, फिशर!"—सोन्या ने पुनः कहा (उस परिवार ने मुझे सदा इसी नाम से सम्बोधित किया था)—"कृपा कर के हमारे देश के सम्बन्ध में कोई बुरी बात मत लिखना। हम चाहते है कि तुम वापस आओ।"

मैं भावनाभिभूत हो गया। "तुम चाहती हो कि मैं एक समाजवादी यथार्थवादी हो जाऊं"—मैंने मजाक के साथ कहा। वास्तव में मै कल्पना करता हूँ कि उसके कथन में कोमलता के साथ देशभक्ति का सम्मिश्रण था।

मैंने प्रातःकाल के अनुभवों में से एक का वर्णन किया। मै मोखोवाया स्ट्रीट में मास्को विश्वविद्यालय के कला-विभाग में गया था, सीढ़ियाँ चढ़ कर विशाल वाचनालय में पहुँचा था और छात्रों के तल्लीन, ध्यानमग्न चेहरों को देखा था। तत्पश्चात् मैं पुस्तकालय के केटलाग (सूचीपत्र) के अनेक दराजों में रखे हुए कार्डों का निरीक्षण करने के लिए 'एण्टिचेम्बर' में गया। मै पुस्तकों के प्रचारात्मक स्वरूप को देख कर दंग रह गया। पर्याप्त उदाहरणों के रूप में मैंने संयुक्त राज्य अमरीका-विषयक फाइल में से तीन कार्डों की नकल की: अमरीकी न्यायालय: प्रतिक्रिया और आतक के साधन (The U. S. Courts, Instruments of Reaction and Terror), लेखक वोलिकोव, १९५०; अमरीकी साम्राज्यवाद की फासिस्ट नीति (The Facist Policy of American Imperialism), लेखक गेयेवस्की, १९५४; अमरीकी पूँजीवादी जनतन्त्र का मिथ्यात्व और ढोंग (The Lie and Hypocrisy of Amcerican Bourgeois Democracy), लेखक आइवानोव और तोवारस्की (तिथि नहीं)...मैं एक अच्छा दिखायी देनेवाले छात्र की ओर, जो एक दूसरे दराज से नोट तैयार कर रहा था, मुड़ा। "देखिये"—मैंने धीरे से कहा—"यह एक विश्वविद्यालय का पुस्तकालय है और मुझे यहाँ केवल एकपक्षीय प्रचार ही दिखायी देता है, वैज्ञानिक रचना एक भी नहीं।" मैंने कुछ और कार्ड निकाले और हमने उन्हें साथ-साथ पढ़ा।

"सच बात है"—उसने कहा—"किन्तु क्या किसी अमरीकी विश्वविद्यालय का पुस्तकालय सोवियत-पक्षीय पुस्तकें रखेगा?"

"अवश्य"—मैंने उत्तर दिया—"और सम्भवतः लेनिन और स्तालिन द्वारा लिखित पुस्तकें भी।"

"क्या किसी छात्र को इस प्रकार की पुस्तकें घर ले जाने की अनुमति दी जायगी?"

"अवश्य।"—मैंने उसे आश्वासन दिया।

वह पुनः अपने काम में लग गया।

"आप हमें यह विश्वास दिलाने का प्रयास नहीं कर रहे हैं कि पश्चिम जनतंत्र पूर्ण है?"—आइवन ने मत व्यक्त किया।

"कदापि नहीं"--मैने उत्तर दिया । "वास्तव में मै स्वय प्रचार का अपराधी हो सकता था । मुझे सन्देह है कि अनेक अमरीकी स्कूल ऐसे है, जहॉ सोवियत-पक्षीय पुस्तकों के लिए अनुमति नहीं दी जायगी । सामान्यत', यह कोई रहस्य की बात नहीं है कि जनतान्त्रिक पद्धति बुराई को सहन करती है । निश्चय ही, समग्रवादी अधिनायकवाद जनतंत्र की अपेक्षा बहुत अधिक बुराई को जन्म देता है, किन्तु बुराई का परिणाम दोनो के मध्य बुनियादी अन्तर का द्योतक नहीं है । वास्तविक अन्तर यह है कि जनतंत्र में नागरिक बुराई से संघर्ष कर सकते हैं, तानाशाही में वे ऐसा नहीं कर सकते ।"

अब उन्होंने ब्रिटिश राजनीतिक प्रणाली, स्वीडेन में समाजवाद, स्विट्जरलैण्ड में स्वतंत्रता के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछे और जब मैंने यह कहा कि रूस अथवा किसी भी कम्यूनिस्ट पार्टी मे कम्यूनिज्म नही है, कम्यूनिस्ट नहीं है, विश्व में एक मात्र कम्यूनिज्म इसराइल और भारत की उन थोड़ी-सी कृषि-बस्तियों में मिलता है, जहॉ कई दस हजार आदर्शवादी स्वेच्छापूर्वक समान कार्य, समान पारिश्रमिक, और सम्पत्ति-हीनता का जीवन व्यतीत करते हैं, तब उनकी उत्सुकता शीघ्रता-पूर्वक सन्तुष्ट नहीं हुई ।

अन्त में वे स्वयं अपने सम्बन्ध में बातें करने लगे । मैंने सुझाव दिया-"हम ठोस बातें करें । तुम एक दूसरा कमरा चाहते हो । पश्चिम में तुम्हारी जितनी आमदनी वाले व्यक्तियों को वह मिल जाता । तुम अच्छे कपड़े चाहते हो । तुम वह वस्तु चाहते हो, जिसे पश्चिम पहले ही प्राप्त कर चुका है ।"

"किन्तु पश्चिम में"—आइवन ने आपत्ति की—"उत्पादन के साधनों पर पूँजीवादियों का स्वामित्व है, यहाँ उन पर राज्य का स्वामित्व है ।"

"फिर भी" मैंने उत्तर दिया—"तीन संध्याओं को हमारी मुलाकात के समय तुमने मुझे जो कुछ बताया है तथा अपने वर्षों के अध्ययन में मैंने सोवियत संघ के सम्बन्ध में जो कुछ सीखा है, उससे यही निष्कर्ष निकलता है कि अमरीकी, ब्रिटिश अथवा कोई भी पश्चिमी मजदूर पूँजीपतियो को जितना देता है, उसकी अपेक्षा यहां की जनता को राज्य को उत्पादन के साधनों के उपयोग के लिए बहुत अधिक देना पड़ता है । तुम भौतिक दृष्टि से अधिक मूल्य अदा करते हो । इसके अतिरिक्त तुम अपनी स्वतंत्रता और अपनी आत्मा से मूल्य चुकाते हो ।"

सोन्या ने कहा—"वर्षों तक हम शांतिपूर्वक रहे । अब फ़िशर ने आकर हमें उद्वेलित कर दिया है ।" मैं इस बात का अनुमान नहीं लगा सका कि उसके शब्द में कितना दुःख और कितना हर्ष था ।

आइवन और सोन्या ने मेरा चुम्बन लिया और मुझे विदा करते हुए कहा—"फिर आना, फिर आना !"

एक ओर आइवन और सोन्या के साथ साचा के विरोधों पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि साचा सुरक्षित रूप से स्तालिनवादी है; उसने स्तालिन का परित्याग नहीं किया है: उसका मानसिक कवच संशय एवं जिज्ञासा की भावना के बाणों के विरुद्ध सुरक्षित है; वह स्वयं अपने नेताओं द्वारा किये गये स्तालिन-विरोधी रहस्योद्घाटनों के क्षयकारक प्रभावों से भी मुक्त है।

वह "स्तालिन से प्रेम करता है" और वह अपने प्रेम में, कम से कम वर्तमान समय में, सुखी रहेगा तथा प्रभावशाली रीति से राज्य की सेवा करेगा।

किन्तु १९५६ की अपूर्ण स्तालिन-विमुखता (De-Stalinization) ने भी आइवन और सोन्या को आघात पहुँचा कर सोचने-विचारने के लिए प्रेरित किया। आइवन के चाचा ने, जो दूसरी संध्या को, जब मै वहां था, आया, कहा—"हमारी विचारशक्ति को सुपुप्त बना दिया गया है।" स्पष्टतः यह बात उसके सम्बन्ध में अथवा उसके दो नवयुवक कम्यूनिस्ट सम्बन्धियों के सम्बन्ध में सत्य नहीं थी।

मैं सोवियत संघ से मन पर यह छाप लेकर, जो आवश्यक रूप से प्रयोगात्मक है, रवाना हुआ कि वहां विचारशील नागरिकों की संख्या अन्य स्थानों के समान ही कम है। कुछ भी हो, आइवन, सोन्या और उनके चाचा क्या कर सकते थे? पोलैण्ड और हंगरी में स्थिति भिन्न थी, जहां लेखकों ने, जिन्होंने अभी तक आत्म-समर्पण नहीं किया था, मास्को की स्तालिन—विमुखता द्वारा प्रदत्त अवसर से लाभ उठा कर तथा रूस से राष्ट्रीय स्वतंत्रता की आकांक्षा से प्रेरित होकर, कम्यूनिस्ट—विरोधी अभियान प्रारम्भ किया। सोवियत संघ में प्रत्येक वस्तु, सम्भवतः अननुमेय भविष्य को छोड़ कर प्रत्येक वस्तु, क्रेमलिन के नियंत्रण के अन्तर्गत है। भविष्य पर अधिकार करने के लिए अपने संघर्ष में स्तालिन के उत्तराधिकारियों को दो मूल्यवान वस्तुएं उपलब्ध हैं——देश के प्रति सोवियत जनता का प्रेम (जो अधीनस्थ देशों में मास्को के विरुद्ध कार्यरत रहता है) और कृषि का शत प्रतिशत स्तालिनीकरण——जो अभीतक सोवियत उपनिवेशों में नहीं हो पाया है। इसके अतिरिक्त मजदूरों की नयी पीढ़ी कभी जान ही नहीं पायी और पुरानी पीढ़ी सम्भवतः भूल चुकी है कि मालिक के विरुद्ध किस प्रकार संगठन किया जाता है। पोजनान में पोलिश मजदूर जानते थे कि अपने राज्य-पूँजीवादी मालिक का विरोध किस प्रकार किया जाना चाहिए। उन्हें उनकी १९३९ से पहले की ट्रेड यूनियनें याद थीं। रूसी मजदूर की स्मरण-शक्ति को १९१४ से पहले के समय तक जाना

होगा और निश्चय ही उस समय भी तात्कालिक सामाजिक स्थितियों के प्रति संगठित विरोध अत्यन्त निर्बल था।

आइवन और सोन्या से विदा लेने के पश्चात् मैं पैदल चलकर मायाकोवस्की सर्किल पहुंचा और वहां मैंने एक टैक्सी की। मै ड्राइवर की बगल में बैठा, जिसकी उम्र तीस और चालीस वर्ष के बीच प्रतीत होती थी। "तुम्हें टैक्सी चलाना कैसा लगता है?"——मैंने प्रश्न किया।

"मै इससे घृणा करता हूँ।"

"तुम कौन-सा काम करना अधिक पसन्द करोगे?"——मैंने प्रश्न करना जारी रखा।

"डाका डालना और हत्या करना।"

"अब ठीक से बताओ, तुम मजाक कर रहे हो"——मैंने दलील दी——

"क्या तुम किसी फ़ैक्टरी का डायरेक्टर होना नहीं पसन्द करोगे?"

"क्या?"——उसने चिल्ला कर कहा——"और मजदूरों का शोषण करूं!"

"बहुत अच्छा, मैं एक विदेशी पत्रकार हूँ। क्या तुम एक पत्रकार अथवा लेखक होना पसन्द करोगे?"

"और झूठ बोलूँ?"

"तुम कह रहे हो कि रूस एक स्वतंत्र देश नहीं है।"

"और सम्भवतः कभी नहीं होगा"——उसने निवेदन किया।

नेशनल होटल पहुँचने पर मैंने उसे बख्शीश दी। अधिकाश ड्राइवर इसकी आशा करते हैं। उसने उसे अस्वीकृत कर दिया। वह स्पष्टतः एक चरित-नायक था।

अध्याय ६

मिकोयान के साथ वार्तालाप

अपने मास्को-प्रवास के छठें दिन हिन्देशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण के लिए आयोजित किये गये स्वागत-समारोह में मैंने अनस्तास आई० मिकोयान के साथ आधा घण्टे तक वार्तालाप किया। मिकोयान के कतिपय वक्तव्य इतने विस्मयकारी थे कि मै प्रथमतः यह निर्णय नहीं कर सका कि उन्हे प्रकाशित किया जाना चाहिए अथवा नहीं, किन्तु वे जानते थे कि वे एक पत्रकार से बातचीत कर रहे हैं और फिर भी उन्होंने मुझे इस सम्बंध मे सतर्क नहीं किया कि हमारी बातचीत "अप्रकाशनीय" अथवा "पृष्ठभूमि" के लिए थी। अपनी परेशानी में मैंने मिकोयान के विचारों का सारांश एक अत्यंत प्रतिभाशाली सोवियत नागरिक को बताया। "हो सकता है कि वे चाहते हों कि आप उन्हें प्रकाशित करें" — मेरे मित्र ने सुझाव दिया।

१८९५ में उत्पन्न, अब सोवियत संघ के उपप्रधान मंत्री तथा कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थायी समिति (पोलिट ब्यूरो) के सदस्य, मिकोयान १९२६ में पोलिट ब्यूरो के उपसदस्य और १९३५ में पूर्ण सदस्य बने और इसलिए वे अनेक वर्षों तक स्तालिन के घनिष्ठ सहयोगी थे। १९३०—४० के बीच मैंने अनेक बार उनसे लम्बी मुलाकातें की थीं और कूटनीतिक समारोहों में भी उनसे मिल चुका था। १९५६ में मास्को में पहुंचने के दूसरे दिन मैंने उन्हें पत्र लिख कर मुलाकात के लिए अनुरोध किया।

सुकर्ण के स्वागत के बाद मैंने अपनी डायरी में लिखा—

आज संध्या समय हिन्देशिया के राजदूत पालर ने सुकर्ण के लिए एक शानदार उद्यान-भोज दिया, जिसमें क्रेमलिन के समस्त नेता तथा मार्शलों, जनरलों, सोवियत अधिकारियों, विदेशी कूटनीतिज्ञों, पत्रकारों आदि के समूह उपस्थित थे। राजदूतावास के उद्यान में मुलायम लाल चमड़े की कुर्सियों की एक लम्बी पंक्ति थी, जिसका अन्त एक कोने में जाकर हुआ था, जहाँ और अधिक मुलायम और बड़ी कुर्सियाँ तथा फूलदार छींट से आवेष्ठित एक सोफ़ा रखा हुआ था। इन कुर्सियों और भोजन-सामग्रियों से आच्छादित एक मेज के बीच का स्थान, हाथ मिलाने और स्वागत का क्षेत्र था। आने वाले नेताओं में कागानोविच और मालेनकोव सर्वप्रथम थे, तत्पश्चात् सुकर्ण आये, जो दोनों के बीच सोफ़ा पर बैठ गये और

सोफ़ा के पीछे खड़े और उनकी ओर झुके हुए एक दुभाषिये के माध्यम से उनसे बातें करने लगे। कागानोविच ने एक सुन्दर नीला सूट पहन रखा था और यद्यपि उनकी तोंद थोड़ी निकली हुई थी तथापि वे अपेक्षाकृत नवयुवक एवं भले दिखायी दे रहे थे। चित्रों से मालेनकोव के सम्बन्ध में जो यह सन्देह होता है कि उनमें विरोधी गुणों का सम्मिश्रण है, वैसे वे नहीं हैं। उनकी तोंद थोड़ी-सी निकली हुई है, किन्तु उनमें अत्यधिक चर्बी नही है; वे खूब सज-धज कर रहते है; उनके काले बाल साफ़ और चमकीले है; जब उनसे राजदूतों की पत्नियों और पुत्रियों का परिचय कराया गया, तब उनके ओठों पर विशेष मैत्रीपूर्ण मुस्कान थी। उन्होंने अपने सीने को भी फैलाया तथा सोवियत एवं विदेशी सिनेमा और स्टिल फोटोग्राफरों की ओर मुड़कर विशेष रूप से देखने लगे। बाद में प्रधान मंत्री बुल्गानिन (सुन्दर नीली ऑखों वाले) खुश्चेव के साथ आये। उनका चेहरा गुलाबी था, सिर गंजा और त्वचा के रंग का था और चारों ओर सफेद बाल थे। उनकी मुस्कान में शरारत झलकती थी।

मैं भोजन-सामग्रियों से आच्छादित मेज के इस ओर निरीक्षण करता हुआ खड़ा था। मिकोयान देर से आये——उन्होंने फैशनेबल कपड़े पहन रखे थे, उनका गहरे रंग का आर्मीनियन चेहरा टूटी हुई नाक के बावजूद सुन्दर दिखायी दे रहा था। अब हाथ मिलाने का क्षेत्र खचाखच भर गया था तथा उच्च श्रेणी के विदेशी व्यक्ति आ-जा रहे थे और रूसी एक छोटे-से वृत्त से दूसरे वृत्त की ओर जा रहे थे। मैंने मिकोयान को भोजन वाली मेज के सॅकरे किनारे पर अकेले, कुछ न करते हुए देखा। मैं उनके पास पहुँचा, उन्हें अपना नाम बताया तथा पूछा कि उन्हें क्या मेरी याद थी। उन्होंने कहा——"हाँ, मुझे याद है, हम युद्ध के पहले मिले थे।"

"क्या आपको मेरा पत्र मिला?"

"हाँ,' उन्होंने उत्तर दिया——"किन्तु मुलाकात के लिए कोई समय नहीं है और इसके अतिरिक्त आपने हमारे बारे में बुरी बाते लिखीं।"

"मैंने स्तालिन के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा, वह खुश्चेव के भाषण में कही गयी बातों से बुरा नहीं है'——मैंने व्यंग्यपूर्वक कहा।

"प्रश्न स्तालिन का नहीं है"——मिकोयान ने बलपूर्वक कहा।

"किन्तु स्तालिन ने नीति का निर्माण किया और मैंने आलोचना की——जैसा कि आपने बीसवीं पार्टी कॉंग्रेस में अपने भाषण मे किया।"

मिकोयान ने उत्तर दिया—"आपने जो कुछ लिखा, उस पर ध्यान न देते हुए हमने प्रत्येक व्यक्ति को आने देने का निर्णय किया है, चाहे वह मित्र हो अथवा शत्रु हो। हम एक बड़ा काम कर रहे हैं और आप स्वयं देखने के लिए स्वतंत्र हैं।"

"मैं स्वयं कैसे देख सकता हूँ"—मैंने पूछा—"जब कि मेरा प्रवेश-पत्र (Visa) केवल आठ दिनों के लिए है।"

"आपको और कितना समय चाहिए?"—उन्होंने उत्तर दिया।

"कम से कम तीन सप्ताह।" मुझे एक भ्रमणार्थी के रूप में सोवियत संघ में प्रवेश की अनुमति प्राप्त हुई थी और एक भ्रमणार्थी को अधिक से अधिक एक महीना रहने की अनुमति मिल सकती है।

"यह सम्भव है"—मिकोयान ने कहा।

इसी समय विदेश-कार्यालय का प्रेस-प्रमुख लियोनिड एफ० इल्यिचेव आ गया। (मुझे इस बात का विश्वास था कि मुझे मिकोयान के साथ बातचीत करते हुए देख कर तथा यह समझकर कि मिकोयान मुझे नहीं जानते थे इल्यिचेव उन्हें सावधान करने आया था।)

"क्या मैं साफ़-साफ़ कह दूं?"—इल्यिचेव ने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा।

"मैं साफ़-साफ़ बातें ही पसन्द करता हूं"—मैंने उसे बताया।

"यह एक खराब आदमी है"—इल्यिचेव ने मिकोयान से कहा।

"मैं इस बात की सराहना करता हूं कि आप जो कुछ सोचते है, उसे कह देते हैं"—मैंने इल्यिचेव से कहा—"किन्तु आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि अनेक राजनीतिक प्रश्नों पर दो मत हो सकते हैं।"

"तुमने बातें बनायीं और झूठ कहा।"—इल्यिचेव ने आरोप लगाया।

"क्षमा कीजिये"—मैंने विरोध करते हुए कहा—"मैंने वही लिखा, जिसे मैं सत्य होने का विश्वास करता था। मैं एक गम्भीर लेखक हूँ और झूठी बातें नहीं बनाया करता। आप यह प्रमाणित नहीं कर सकते कि मैंने मनगढ़न्त बातें लिखीं। मैंने आपकी सरकार की अनेक नीतियों और कार्यों की निन्दा अवश्य की। अब मैं यह देखना चाहता हूँ कि क्या किसी वस्तु में परिवर्तन हुआ है। स्पष्टतः मैं उसे आठ दिनों में, जो परसों समाप्त हो जायेंगे, नहीं देख सकता।"

मिकोयान इल्यिचेव से—"अच्छा, इन्हें और तीन सप्ताह का समय दे दीजिये। हम भयभीत नहीं हैं। आइये, अब हम टोस्ट-पान करें। वोडका कहां है?"

अपनी बात पूरी हो जाने पर इल्यिचेव चला गया। मैंने मिकोयान को बताया कि मैं शराब नहीं पीता।

"कभी नहीं?"—उन्होंने आश्चर्य के साथ कहा।

"कभी नहीं"—मैंने उन्हे आश्वासन दिया—"आइये, हम लोग नारजान के साथ टोस्ट-पान करें" और मैंने काकेशश के सुप्रसिद्ध खनिज जल के लिए अपने हाथ बढ़ाये, किन्तु केवल बोर्जेहोम की बोतलें ही खोली गयी थीं। (बोर्जेहोम एक दूसरा खनिज जल है।) मिकोयान ने बोर्जेहोम की एक बोतल ली और अपने तथा मेरे लिए थोड़ा-सा उँडेला; हमने गिलास टकराये। "आइये, हम सत्य के लिए पान करे"—मैंने कहा। "बहुत अच्छा!"—उन्होंने स्वीकार किया।

मैंने कहा—"आज प्रातःकाल मैंने एक नवयुवक कम्यूनिस्ट से बात-चीत की, जिसने घोषित किया कि वह स्तालिन से प्रेम करता है। एक ऐसे व्यक्ति से प्रेम करना किस प्रकार सम्भव है, जिसने अपने देश को इतना अधिक आतंकित कर दिया था?"

मिकोयान—"हाँ, अनेक व्यक्ति अब भी उनसे प्रेम करते हैं; उन्होंने देश के लिए बहुत कुछ किया था। इस दृष्टिकोण के बदलने मे समय लगेगा।

"आप खुश्चेव के भाषण को प्रकाशित क्यों नहीं करते?"

मिकोयान—"यह अत्यन्त असामयिक है, किन्तु लाखों व्यक्ति उसे पढ़ चुके हैं।"

"भाषण में बहुत अधिक बातें नहीं बतायी गयीं। क्या आप वास्तव में विश्वास करते हैं कि बुखारिन एक विध्वंसक और गुप्तचर था?"

मिकोयान—"नहीं, मैं ऐसा विश्वास नहीं करता।"

"आप उन व्यक्तियों में से एक थे, जो नियमित रूप से स्तालिन के साथ रात को भोजन किया करते थे।" (मिकोयान, पोलिट ब्यूरो के सदस्य सर्जी ओर्दजोनेकिद्ज़े, सोवियत सरकार के सचिव अबेल येनूकिद्ज़े और एक आर्मीनियन तथा सहायक विदेश-मंत्री लियो काराखान सहित साथी काकेशियनों का एक समूह बहुधा स्तालिन के क्रेमलिन-स्थित निवासस्थान में अर्द्धरात्रि का भोजन करने के लिए एकत्र हुआ करता था।)

मिकोयान—"मैं उनके साथ केवल रात का भोजन ही नहीं किया करता था। उनके साथ मेरी अत्यधिक घनिष्ठता थी, किन्तु समय-समय पर मैं पोलिट ब्यूरो की बैठकों में अपने दिल की बात कह दिया करता था और उसके कारण हमारी मित्रता समाप्त हो गयी। मैंने स्वयं कितने व्यक्तियों को फाँसी से बचाया।"

"येनू किव्जे ने भी अनेक व्यक्तियों को बचाया और तत्पश्चात् उसे स्वयं गोली मार दी गयी। मै काराखान को जानता था और उसे चाहता था। उसे गोली से मार दिया गया।"

मिकोयान—"हां।"

"क्या आपको मालूम नहीं था कि यह हो रहा था? क्या आपको मालूम नहीं था कि लोगों को पीटा जाता था और उन्हें यातनाएं दी जाती थीं?"

मिकोयान—"बुखारिन तथा मास्को-मुकदमे के अन्य प्रतिवादियों को यातनाएँ नहीं दी गयीं।"

"किन्तु अन्य हजारों व्यक्तियों को यातनाएँ दी गयीं।"

मिकोयान—"हमें इस बात का पता नहीं था। हमें केवल बाद में इसका पता चला। स्तालिन अनेक बातें हमारे जाने बिना ही किया करते थे।"

"इस बात को समझना मुश्किल है। मास्को-स्थित विदेशी जानते थे और १९३४ के बाद ये कार्य बढ़ते गये। मेरा विश्वास है कि यह सन् १९३५ में था, जब कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रथम सदस्यों को फॉसी पर चढ़ाया गया।"

मिकोयान—"हां, यह बात सही है, किन्तु आप जानते हैं, स्तालिन हम लोगों को अपने हाथ में रखते थे। हमारे बचाव का केवल एक उपाय—आत्महत्या—रह गया था और ओर्दजोने किद्ज ने वही किया। मैं भी उसी निर्णय के सामने खड़ा था, और स्तालिन के जीवन के अन्त के समय मुझे फाँसी दी जाने वाली थी। अब हमने इन सारी बातों को बदल दिया है। फिर भी, उन वर्षों में हमने जो नहीं किया, उसके लिए पश्चिम में हम पर प्रहार किया जाता है।" उनके स्वर में कटुता थी।

"अब"—मिकोयान ने कहना जारी रखा—"हम चाहते हैं कि हमें निर्माण करने के लिए अकेला छोड़ दिया जाय।"

मैंने यह विश्वास व्यक्त किया कि रूस और पश्चिमी शक्तियों के बीच किसी महायुद्ध की सम्भावना नहीं हैं; बड़े-बड़े बम हमारी सुरक्षा-सन्धि के तुल्य हैं।

मिकोयान—"मैं स्वीकार करता हूँ कि अणु और उद्जन बम अवरोधकारक हैं। हमारी जनता निश्चय ही युद्ध नहीं चाहती।"

"न अमरीकी राष्ट्र चाहता है।"

मिकोयान—"न अमरीकी बुद्धिजीवी चाहते हैं।"

"और क्या आप सोचते हैं कि आइसनहावर युद्ध चाहते हैं?"

मिकोयान—"नहीं, हम उनके सम्बंध में अच्छे विचार रखते हैं, किन्तु वहाँ युद्धाभिलाषी व्यक्ति है। स्वेज की स्थिति पर दृष्टिपात कीजिये। पश्चिम की नैतिकता

बर्बरतापूर्ण है। दर्रेदानियाल पर राष्ट्रीय नियंत्रण है। पनामा पर राष्ट्रीय नियंत्रण है, इसी प्रकार जर्मन जलडमरूमध्य (कील) पर भी राष्ट्रीय नियंत्रण है। फिर भी, वे स्वेज का अन्तरराष्ट्रीयकरण चाहते हैं। मै इसे बर्बरतापूर्ण नैतिकता कहता हूँ।"

"१९४५ में पोट्सडम में ट्रूमेन ने इस प्रकार के समस्त जलमार्गों के अन्तरराष्ट्रीयकरण के लिए स्तालिन के समक्ष प्रस्ताव रखा था।"

मिकोयान—"क्या अमरीका पनामा का अन्तरराष्ट्रीयकरण स्वीकार करेगा?"

"आप इसके लिए प्रस्तव क्यों नहीं रखते?"

मिकोयान—"क्या आप चीनी जहाजों को गुजरने देंगे?"

"मै नहीं जानता।"

मिकोयान—"अन्तरराष्ट्रीयकरण साम्राज्यवाद के लिए एक आवरण मात्र है, वह छोटे राष्ट्रों पर प्रभुत्व स्थापित करने का षड्यंत्र है।"

"मैं ऐसा नहीं सोचता। विश्व राष्ट्रवाद से आगे बढ़ चुका है। हमें राष्ट्रीय सार्वभौमता में कमी करनी ही होगी तथा अन्तरराष्ट्रीय संगठनों के व्यावहारिक कार्यों का विस्तार करना होगा।"

मिकोयान—"हम इस बात को कभी स्वीकार नहीं करेंगे। देखिये तो बड़ी शक्तियाँ किस प्रकार मिस्र को धमकियाँ दे रही है।"

"और आप देखते हैं कि ब्रिटिश जनता किस प्रकार उसका विरोध करती है। मैनचेस्टर गार्जियन ..."

मिकोयान—"मैनचेस्टर गार्जियन, हाँ..."

"और मजदूर दल..."

मिकोयान—"दल, हाँ; किन्तु नेतागण नहीं।"

"मैं सोचता हूँ कि यहाँ आप गलती पर है। मैने गेटस्केल और अन्य नेताओं से बातचीत की है।"

मिकोयान—"फ्रांसीसी समाजवादियों को साम्राज्यवादियों जैसा आचरण करते हुए तो देखिये।"

"आप कम्यूनिस्ट लोग सदा से समाजवादियों के विरुद्ध रहे हैं।"

मिकोयान—"सभी के नहीं। हम फिनलैण्ड, स्वीडेन और नार्वे के समाजवादियों का सम्मान करते है।"

"मुख्य बात यह है कि स्वेज नहर विश्व-व्यापार की एक अभूतपूर्व धमनी है, वह यूरेशिया का गला है और नासिर जैसे व्यक्ति पर नहर को खुली रखने के लिए

विश्वास नहीं किया जा सकता। नासिर ने इसराइली जहाजों को रोक दिया है। वे अन्य देशों के जहाजों को भी रोक सकते है।"

मिकोयान—"हॉं, किन्तु जब नासिर ने इसराइली जहाजों को रोक दिया, तब पश्चिम ने विरोध क्यों नही किया?"

"आपका यह कहना ठीक है।" (जब मै घर पहुॅचा, तब मेरे दिमाग में यह बात आयी कि मुझे उनसे कहना चाहिए था—सोवियत सरकार ने क्यों नहीं विरोध किया?)

कनाडा के राजदूत उधर से होकर गुजरे और मिकोयान से बोले—"नमस्कार, हम लोग हनोई में मिले थे।"

"वे क्या कह रहे हैं?"—मिकोयान ने मुझसे पूछा—"कृपया अनुवाद कीजिये।"

मैंने अनुवाद किया। मिकोयान ने "डा, डा" कहा और राजदूत आगे चले गये।

"इधर हाल में आप बहुत अधिक यात्राऍ करते रहे है"—मैंने कहा—"भारत की और सामान्यत. एशिया की।"

मिकोयान—"हॉं, भारत। कितना परिश्रमी और बुद्धिमान राष्ट्र है! मुझे उनके भविष्य में विश्वास है। मै एक एशियाई हूॅं।"

मैंने सोचा कि मैंने उनका काफी समय ले लिया है और विदा हो गया। विदा होते समय उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि मैं सोवियत संघ के सम्बंध में जो कुछ भी लिखूॅं, वह उनके पास भेज दूॅं।

(बाद में उत्तरी वियतनाम के एक स्वागत-समारोह में, जिसमें मुझे नहीं निमंत्रित किया गया था, एक एशियाई राजदूत ने मिकोयान को इल्यिचेव से यह कहते हुए सुना था—"फिशर के बारे में क्या किया? क्या तुमने उसे और तीन सप्ताह तक रहने की अनुमति दे दी है?" इल्यिचेव ने उत्तर दिया—"प्रश्न की जॉंच-पड़ताल की जा रही है। हम उसे कुछ और समय दे देंगे।" मुझे और बारह दिन दिये गये, तीन सप्ताह नहीं। राजदूत ने मत व्यक्त किया—"पोलिट ब्यूरो का सदस्य प्रस्ताव करता है, नौकरशाह उसे समाप्त कर देता है।"

अध्याय ७

स्तालिन से विमुखता क्यों ?

मिकोयान एक उत्साही व्यक्ति है और वे प्रत्यक्षतः स्तालिन से, जिसने उन्हें आत्म-हत्या के निकट पहुँचा दिया था और उन्हें गोली से उड़ा देने की योजना बनायी थी, घृणा करते है। यहाँ तक कि एक कमिसार भी मानवीय भावनाओं से परे नहीं होता है। २४ फरवरी १९५६ को खुश्चेव ने जब तक मृत तानाशाह की रक्त-सिक्त 'ममी' में अपनी छोटी-सी कटार नहीं घुसेड़ दी, तब तक बीसवी पार्टी कॉंग्रेस में मिकोयान का भाषण जोसेफ स्तालिन पर किया गया भयंकरतम एव सर्वाधिक विषपूर्ण प्रहार था।

किन्तु मिकोयान के कतिपय सहयोगियों को भी स्वेच्छाचारी स्तालिन के पार्श्व में वे ही अपमान और खतरनाक अनुभव प्राप्त हुए थे, जो मिकोयान को प्राप्त हुए थे। एक बार स्तालिन ने वास्तव में व्याचेस्लाव मोलोतोव का नाम उन व्यक्तियों की सूची में लिख दिया था, जिन्हें फॉसी दी जाने वाली थी और तत्पश्चात् उसने उसे हटा दिया। कागानोविच के दो भाई लापता हो गये, यद्यपि उनकी बहन रोजा या तो स्तालिन के साथ रहती थी या उसके साथ विवाहित थी। फिर भी, पार्टी कॉंग्रेस में मोलोतोव और कागानोविच के भाषणों से तथा उनके दृष्टिकोणों से, जहाँ तक हम उन्हें जानते है, यही पता चलता है कि वे स्तालिनवादी ही बने हुए हैं। उनमें व्यक्तिगत आक्रोश तथा मृत्यु के उपरान्त प्रतिशोध लेने की आकांक्षा नियंत्रण के अन्तर्गत प्रतीत होती है।

सर्वोपरि बात यह है कि रूस के राजनीतिक प्रमुख राजनीतिज्ञ हैं और इस बात का कारण राजनीति के क्षेत्र में ही ढूँढ़ना होगा कि उन्होंने क्यों राजा के शव को सुरक्षित बना कर उसे मकबरे में वश-संस्थापक लेनिन के शव के पार्श्व में रखा, जिससे उसे लाखों भयभीत और उत्सुक नागरिक देख सकें, तत्पश्चात् घोषित किया कि उसकी मृत्यु हो गयी, उसके सिंहासन को हिलने दिया, उस पर रखी हुई मूर्ति को गिर जाने दिया तथा उसे कीचड़ एवं रक्त से सान दिया, किन्तु फिर भी उसका शिरच्छेद नहीं किया।

मिकोयान का यह आर्त्तनाद कि स्तालिन "हमें अपनी मुट्ठी में रखते थे" एक प्रामाणिक कारण है। खुश्चेव के गुप्त भाषण में बुल्गानिन के एक वक्तव्य का

उल्लेख है, जो उन्होंने ख्रुश्चेव के समक्ष दिया था। "कभी-कभी ऐसा हुआ है" —बुल्गानिन ने कहा था—"कि एक व्यक्ति स्तालिन के निमंत्रण पर उसके पास एक मित्र के रूप में जाता है और जब वह स्तालिन के साथ बैठता है, उसे इस बात का पता नहीं होता कि उसे कहाँ भेजा जायगा, घर पर या जेल में।" उसी भाषण मे और आगे चल कर ख्रुश्चेव ने घोषित किया था—"यह बात असम्भव नही है कि यदि स्तालिन कई महीनों तक सर्वेसर्वा बने रहते तो सम्भवत: कामरेड मोलोतोव और कामरेड मिकोयान ने इस कॉंग्रेस में कोई भाषण नहीं किया होता।"

इस प्रकार की स्थिति में सूरमाओं की संख्या अधिक नहीं होगी। स्तालिन का विरोध आत्महत्या के तुल्य था, किसी अधीनस्थ व्यक्ति द्वारा संशय का लेशमात्र भी अथवा भौंहों का ऊपर उठाया जाना मृत्यु-दण्ड ला सकता था।

ख्रुश्चेव ने रहस्योद्घाटन किया—"स्तालिन ने स्पष्टतः पोलिट ब्यूरो के पुराने सदस्यों को समाप्त कर डालने की योजना बना रखी थी।" जब तक स्तालिन की मृत्यु की पूरी कहानी रोक रखी जायगी, तब तक केवल यह वाक्य ही इस सन्देह को उचित सिद्ध करता रहेगा कि, पुराने सदस्यों ने उसे समाप्त कर दिया।

फिर भी, अत्याचारी के अन्त के सम्बन्ध में सच बात चाहे कुछ भी हो और उसके रक्तिम शासन-काल को कम न करने के लिए स्तालिन के उत्तराधिकारियों की पश्चिम में की गयी आलोचना पर मिकोयान के क्रोध के बावजूद एक प्रश्न ऐसा है, जो समाप्त नहीं होता: उन्होंने १९५३ से बहुत पहले ही उसकी हत्या क्यों नहीं कर दी? (जर्मन जनरलों ने हिटलर की हत्या क्यों नहीं की?)

स्तालिन कड़े पहरे में रहता था, किन्तु कोई बहादुर व्यक्ति उसे गोली मार सकता था अथवा अन्य प्रकार से उसकी हत्या कर सकता था। यह वकालत नहीं है, यह विश्लेषण नहीं है। विरोध के कानूनी साधनों को समाप्त कर अत्याचारियों ने सदा ही शस्त्राधारित साधनों को प्रोत्साहित किया है और इसलिए आश्चर्य की बात यह है कि किसी भी सोवियत जनरल, मार्शल अथवा पोलिट ब्यूरो के सदस्य ने हत्या का प्रयास नहीं किया।

यहाँ हम अनुमानों के क्षेत्र में पहुँच जाते है। तीन सम्भाव्य स्पष्टीकरण सामने आते हैं—(१) स्तालिन के सहयोगी उसके बिना शासन करने से भयभीत थे। वह कुशल, दूरदर्शी, शीघ्रतापूर्वक गोली चलाने वाला और सफल इसलिए था कि वह पूर्ण रूपसे निर्मम था और विजय के लिए कोई भी मूल्य चुकाने के लिए तत्पर रहता था। वे स्वयं भी लड़कियाँ नहीं थे, किन्तु वे अवश्य आश्चर्य

करते रहे होंगे कि कौन व्यक्ति काम को अच्छी तरह सम्पन्न कर सकता है। (२) स्तालिन की हत्या से नेतृ-वृन्द, पार्टी और देश में फूट पड़ जाती और गृह-युद्ध अथवा कम से कम दीर्घकालीन भ्रम की स्थिति प्रारम्भ हो सकती थी। आतंक और मिथ्यावाद से उसने अपने को एकता का एक प्रत्यक्ष रूप से अपरिहार्य अभिकर्त्ता बना लिया था और एकता अथवा "एकरूपतावाद" कम्यूनिस्ट का सारभूत धर्म होता है। वह प्रतिरोध के विनाश को उचित सिद्ध करता है। तदनुसार सच्चा कम्यूनिस्ट वही है, जो उस पद्धति में ही विश्वास करे, जिससे उसका विनाश हो सकता है। एकता के इस आडम्बर ने हत्यारे के हाथ को रोक रखा। (३) स्तालिन के सहकर्मियों ने देखा कि वह एक विशालकाय गेंद को एक गहरे गर्त्त से खींच कर उनकी इच्छाओं के महल, सर्वशक्तिमान राज्य, तक ला रहा है। वे सम्भवत: उसके कतिपय उग्रवादी साधनों से दुखित होते थे, किन्तु वे लक्ष्य का समर्थन करते थे और बोल्शेविक होने के नाते, वे साधनों के सम्बन्ध में विवेकवान नहीं हो सकते थे। तथ्य तो यह है कि उन्होंने उसके प्रयासों का अनुमोदन किया, उसके कठोर विचारो को प्रतिध्वनित किया, उसके द्वारा सौंपे गये अत्यन्त पाशविक कार्यों को सम्पन्न किया और इस प्रकार अपने-आप को समर्पित कर दिया। वे उसके साथ एक लम्बी शाखा पर बहुत दूर बाहर बैठे हुए थे और उसे चीरना न केवल एक बहुत बड़े साहस का काम होता, प्रत्युत इस प्रकार वे स्वयं भी गर्त्त में गिर जाते। सैम्सन ने कुछ-कुछ इसी प्रकार का कार्य किया था, किन्तु वह एक दैत्य और अन्धा था और वह शत्रु-शिविर में था।

हो सकता है कि इस विचार-विमर्श के परिणाम-स्वरूप राजनीतिक झाड़-झंखाड़ से होकर खुले मैदान में ले जाने वाला एक मार्ग प्रशस्त हो गया हो, जहाँ सोवियत स्थिति को एक अधिक अच्छी पृष्ठभूमि में देखा जा सकता है। मिकोयान ने कहा कि अभी खुश्चेव के गुप्त भाषण को प्रकाशित करना अत्यन्त असामयिक है। इसका अर्थ केवल यह हो सकता है कि एक सीमित श्रोता-समुदाय को एक बार भाषण सुनने देना एक बात है तथा उसे रूस के भीतर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध करना, उसे पढ़े जाने, पुनः पढ़े जाने, उस पर विचार किये जाने तथा वाद-विवाद किये जाने की अनुमति देना बिल्कुल दूसरी बात है। परिभाषा के अनुसार तानाशाही एक बड़े अल्पमत के समर्थन तथा बहुमत के अनिच्छापूर्ण आत्मसमर्पण से एक छोटे अल्पमत के शासन का नाम है। इस प्रकार की स्थिति में ज्ञान विस्फोटक होता है। यही कारण है कि सोवियत समाचार पत्रों में सूचना का इतना अधिक अभाव होता है। तथ्य विचारों को प्रेरित कर सकते है। जब खुश्चेव, मिकोयान, मोलोतोव और

कागानोविच अक्तूबर १९५६ में आकाशमार्ग से वारसा में उतरे, तब पोलों ने प्रकट किया कि उन्होंने भयंकर रूसी दबाव का प्रतिरोध किया था; समस्त संसार इस बात को जानता था तथा वह और अधिक सूत्र प्राप्त करने के लिए भटक रहा था, किन्तु सोवियत जनता को एक साथ प्रकाशित की गयी इस आशय की दो सरकारी बुलेटिनों के अतिरिक्त कुछ भी नही प्रदान किया गया कि चारों व्यक्ति गये और वे वापस आ गये। यहाँ कोई जानकारी नही थी, व्याख्या के लिए कोई आधार नहीं था। कुछ दिनों बाद हंगरी में एक राष्ट्रीय विद्रोह का विस्फोट हुआ। सोवियत सरकार ने तत्काल बी. बी. सी. को, जिसे अवरुद्ध न करना उसने कई महीने पहले स्वीकार कर लिया था, पुन. अवरुद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। मास्को-निवासियों ने मुझे बताया कि पहले के उस मध्यान्तर में वे ब्रिटेन से प्रसारित स्पष्ट, प्रचार-मुक्त विश्व-समाचारों को सुन कर आनन्दित होते थे, किन्तु हंगरी की रूस-विरोधी, कम्यूनिस्ट-विरोधी क्रान्ति और विशालकाय टैंकों से उसके दमन के लिए मास्को द्वारा किये गये प्रयत्न ऐसी बाते थीं, जिनसे क्रेमलिन के निर्देशनालय को जनता को अनभिज्ञ ही रखना चाहिए। सूचना का नियंत्रित वितरण, उसे तोडना-मरोड़ना तथा उसे छान कर प्रस्तुत करना तानाशाही का प्रथम कार्य होता है, जो अपने प्रचार-बुद्बुदो को फोड़ा जाना अथवा अपने राष्ट्रीय मस्तिष्क-प्रक्षालन (Brain-washing) के कार्य का चौपट किया जाना नहीं चाहती। इसी भावना से सोवियत नेताओं ने ख्रुश्चेव के भाषण को तब तक गुप्त ही रखने का निर्णय किया, जब तक वे स्तालिन-विमुखता की प्रथम सीढ़ी के पार जाने के लिए तैयार न हो।

ख्रुश्चेव के भाषण और उसके पूर्व १५ फरवरी को मिकोयान द्वारा किये गये भाषण से जनतान्त्रिक जगत आश्चर्य और हर्ष से भर गया था क्योंकि ऐसा प्रतीत हुआ था कि वे एक मूर्ति का भजन कर रहे थे और सत्य को जो क्षति पहुँचायी गयी थी, उसकी कुछ पूर्ति कर रहे थे; किन्तु उन्होंने जो कुछ कहा, उसके साथ ही, जो कुछ नहीं कहा, उसको रख देना यह पता लगाने के लिए पर्याप्त होगा कि मास्को ने उदारवाद को स्वीकार नही किया है अथवा उसने सत्यता को ग्रहण नहीं किया है। इसके अतिरिक्त कही और न कही गयी बातों को इस प्रकार साथ-साथ रखने से वर्तमान नीति का पता लगाने में सहायता मिलती है। बात ऐसी है कि 'व्यक्तित्व के सिद्धान्त' की—जो स्तालिन के अत्याचार के लिए स्वीकृत विशेषण है—निन्दा द्वारा आज का सामूहिक नेतृत्व व्यक्तित्वविरोध के लिए नये सिद्धान्त की सृष्टि कर रहा है। वे सोवियत प्रणाली की नही, स्तालिन की व्यक्तिगत

रूप से निन्दा कर रहे है । माक्र्सवादी यथार्थ परिस्थितियो की मार्क्सवादी विश्लेषण-पद्धति द्वारा स्तालिनवाद का विश्लेषण करने से इन्कार कर रहे है ।

ख्रुश्चेव द्वारा स्तालिन के विरुद्ध किया गया दोषारोपण, लेनिन की अन्तिम वसीयत और घोषणा के एक उद्धरण से प्रारम्भ किया गया था, जिसे उसके बाद एक सोवियत मासिक पत्रिका मे प्रकाशित कर दिया गया है । लेनिन ने अक्तूबर १९२२ में लिखा था—"स्तालिन अत्यन्त कठोर है, जो एक ऐसा दोष है, जिसे महामंत्री के पद पर आसीन, किसी व्यक्ति मे सहन नहीं किया जा सकता । इस कारण, मै यह प्रस्ताव करता हूँ कि कामरेड लोग स्तालिन को इस पद से हटाने और उसके स्थान पर एक ऐसे व्यक्ति को नियुक्त करने के तरीके पर विचार करें, जो, सर्वोपरि, स्तालिन से केवल एक गुण में भिन्न होना चाहिए अर्थात् उसमे कामरेडों के प्रति अधिक सहिष्णुता, अधिक वफादारी, अधिक उदारता और अधिक विवेकपूर्ण रुख होना चाहिए, उसका व्यवहार कम स्वेच्छाचारितापूर्ण होना चाहिए, आदि ।"

अपनी ओर से तथा अपने सहयोगियों की ओर से ख्रुश्चेव ने और अधिक आरोप जोड़ दिये—"स्तालिन तर्क, स्पष्टीकरण और जनता के साथ धैर्यपूर्ण सहयोग द्वारा नहीं कार्य करता था, प्रत्युत वह लोगों पर अपनी धारणाओं को बलात् लाद देता था और अपने मत के समक्ष पूर्ण आत्म-समर्पण की माँग करता था"... १९३५ से १९३८ तक स्तालिन ने "सरकारी यंत्र द्वारा सामूहिक दमन का कार्य किया...प्रथमतः उसने लेनिनवाद के विरोधियों, त्रात्स्कीवादियों, जिनोवीववादियों, बुखारिनवादियों के विरुद्ध, जिन्हें उसके बाद पार्टी द्वारा बहुत पहले राजनीतिक दृष्टि से पराजित कर दिया गया और तत्पश्चात् अनेक ईमानदार कम्यूनिस्टों के विरुद्ध ऐसा किया ... क्या इस प्रकार के व्यक्तियों को विनष्ट कर देना आवश्यक था ? हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि लेनिन जीवित होते, तो उनमें से अनेक के विरुद्ध इस प्रकार के उग्र उपाय का उपयोग नही किया गया होता ... स्तालिन ने अपने असीम अधिकारों का उपयोग करते हुए अनेक अनुचित कार्य किये, उसने केन्द्रीय समिति के नाम पर, समिति का अथवा केन्द्रीय समिति के पोलिट ब्यूरो के सदस्यों का मत पूछे बिना ही, कार्य किये ... सत्रहवीं कॉंग्रेस (१९३४) में पार्टी की केन्द्रीय समति के जो १३९ सदस्य और उम्मीदवार निर्वाचित किये गये थे, उनमें से ९८ व्यक्ति अर्थात् ७० प्रतिशत, अधिकांशतः १९३७–३८ में गिरफ्तार कर लिये गये और गोली से उड़ा दिये गये ।" स्तालिन ने हजारों निर्दोष व्यक्तियों को गिरफ्तार करने, यातनाएँ देने और

गोली मार देने का आदेश दिया।..." स्तालिन ने आर्दजोनेकिद्ज़े के भाई को समाप्त कर देने की अनुमति दी और आर्दजोनेकिद्ज़े को इस स्थिति में ला दिया कि, वह स्वयं को गोली मार लेने के लिए विवश हो गया।" (१९३७ में ५१ वर्ष की उम्र में उसकी मृत्यु के समय सरकारी तौर पर उसका कारण "हृदय रोग का आक्रमण" बताया गया था।) स्तालिन ने "स्वयं अपने व्यक्तित्व को महिमा-मण्डित किये जाने का समर्थन किया"......उसने "प्राथमिक शिष्टाचार के भी अभाव" का प्रदर्शन किया। स्वयं अपने "संक्षिप्त जीवन-चरित्र" का सम्पादन करने में "उसने उन स्थलों को ही चिह्नित किया, जहाँ उसके विचारानुसार उसकी पर्याप्त प्रशंसा नहीं की गयी थी" और स्वयं अपने हाथ से आत्म-स्तुति का एक अंश जोड़ने के बाद स्तालिन ने पुनः लिखा–" स्तालिन ने कभी अपने कार्य को न्यूनतम अहंकार, प्रवंचना अथवा आत्मस्तुति से दूषित नहीं होने दिया।" उसी पुस्तक में स्तालिन ने लिखा–" कामरेड स्तालिन अपनी सैनिक प्रतिभा के कारण शत्रु की योजनाओं का पता लगाने और उसे परास्त करने में सफल हो गये।" फिर भी, वास्तविक बात यह है कि स्तालिन ने चर्चिल, सर स्टैफोर्ड क्रिप्स और विदेशों में स्थित रूसी एजेण्टों की इस आशय की चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया कि, शीघ्र ही नाजी आक्रमण होने वाला है और इसीलिए वह उसके लिए पूर्णरूप से तैयारी करने में विफल रहा; द्वितीय विश्व-युद्ध में उसकी त्रुटिपूर्ण व्यूह-रचना के कारण हताहतों की संख्या अनावश्यक रूप से अत्यधिक हो गयी; उसने युद्धकाल में "कम्यूनिस्टों" और "कोमसोमोलों" के साथ बिना किसी अपवाद के पूरे के पूरे राष्ट्रों को उनकी जन्मभूमियों से सामूहिक रूप से निर्वासित कर दिया।"

बीसवीं पार्टी कॉंग्रेस में ख़ुश्चेव के गुप्त भाषण में लगाये गये उपर्युक्त आरोपों के अतिरिक्त मिकोयान ने १८ फरवरी को उसी सभा में भाषण करते हुए घोषित किया कि, स्तालिन की अन्तिम प्रकाशित कृति "समाजवादी सोवियत गणराज्य-संघ में समाजवाद की आर्थिक समस्याएँ" (Economic Problems of Socialism in the U. S. S. R.) "समसामयिक पूँजीवाद की अर्थ-व्यवस्था का विश्लेषण करने में मुश्किल से हमारी सहायता कर सकती है और वह मुश्किल से सही है।"

उसके बाद अन्य व्यक्तियों ने कॉंग्रेस द्वारा निर्धारित नीति के प्रति वफ़ादारी प्रकट करते हुए इन निन्दनीय रहस्योद्घाटनों और मूल्यांकनों का और अधिक विस्तार एवं उनमें और अधिक वृद्धि की है। उन सभी को गलतियों और रुग्ण मानसिक प्रकटीकरणों के शीर्षकों के अन्तर्गत श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। इस

बात में तो तनिक भी सन्देह नहीं है कि, स्तालिन का मस्तिष्क रुग्ण था, किन्तु उस पर किये गये प्रहारों में सारभूत बात को प्रकट नही किया जाता; वह यह है कि अपने पूर्ण नियंत्रण के अन्तर्गत एक पुलिस राज्य न होने पर उसने अपने अहंकार, उन्माद और सत्ता-लोलुपता का प्रदर्शन कभी नही किया होता। न किसी कम्यूनिस्ट नेता ने, किसी अधीनस्थ व्यक्ति की तो बात ही जाने दीजिये, यह स्पष्टीकरण ही किया है कि यद्यपि व्यक्तिगत रूप से संचालित यह पुलिस राज्य स्तालिन की आन्तरिक लालसाओं को सन्तुष्ट करता था, तथापि वह सामूहिकीकृत कृषि और सरकारी स्वामित्व के उद्योग की वर्त्तमान आर्थिक प्रणाली की, जिसमें उसके उत्तराधिकारी अत्यधिक आनन्द एवं विजय-भावना का अनुभव करते है, स्थापना के लिए अनिवार्य था।

अब ख्रुश्चेव सुझाव देते है कि त्रात्स्कीवादियों, जिनोवीववादियों और बुखारिन-वादियों को गोली से उड़ाने की आवश्यकता नही थी, किन्तु वे यह नही कहते कि उन्हें राजनीति से बाहर भगा देने की आवश्यकता नहीं थी। इसके विपरीत वे स्तालिन की सराहना करते है—"यहाँ स्तालिन ने एक निश्चयात्मक कार्य सम्पन्न किया।" ख्रुश्चेव घोषित करते हैं कि इन विरोधवादियों के विरुद्ध संघर्ष "एक कठिन, किन्तु आवश्यक संघर्ष था, क्योंकि उनका राजनीतिक मार्ग... वास्तव में पूँजीवाद की पुनः स्थापना और विश्व-पूँजीवाद के समक्ष आत्म-समर्पण की दिशा में, ले जाने वाला था।" यह स्तालिन के प्रमुख राजनीतिक अपराधों के लिए, स्तालिनवादी शब्दावली में, एक क्षमा-याचना के तुल्य है।

इसके अतिरिक्त, क्या ख्रुश्चेव का यह कथन पूर्णतया शुद्ध है कि संघर्ष कठिन था? निश्चय ही वह तब तक कठिन था, जब तक स्तालिन और उसके पिछलग्गू, जिनमें आज के कतिपय नेता भी सम्मिलित थे, विरोधियों के साथ राजनीतिक वाद-विवाद में लगे रहे, किन्तु जब तर्क विफल हो गये, तब स्तालिन ने सर्वोच्च बौद्धिक निर्णायकों के रूप में रिवाल्वरों और एन० के० वी० डी० की चाबुकों का प्रयोग प्रारम्भ किया और तत्पश्चात् वे वाद-विवाद में सरलतापूर्वक विजयी हो गये। इस हस्तक्षेप का परिणाम यह हुआ कि, विचार सिंहासन-च्युत हो गये और उनके स्थान पर शक्ति सिंहासनारूढ़ हो गयी। इससे स्तालिन राजा बन गया और सर्वसत्तासम्पन्न राजा के रूप में प्रत्येक नागरिक पर, जिसके अपवाद मिकोयान ओर्दजोनेकिद्जे और अन्य व्यक्ति भी नहीं थे, उसका पूर्ण प्रभुत्व था। स्तालिन के उत्तराधिकारियों के हाथों में यह सत्ता कायम है और एक मात्र अन्तर यह है कि समझदार और सामान्य व्यक्ति होने के नाते उन्हें इसका उपयोग बहुधा करने की आवश्यकता नहीं है।

स्तालिन का प्रतिष्ठा-भंजन इन अन्तर्विरोधों से भरा हुआ है। ख्रुश्चेव व्यक्तिगत कम्यूनिस्टों के विरुद्ध किये गये अपराधों के लिए स्तालिन की खाल उधेड़ते है। क्या यह मानवतावाद की ओर आकस्मिक झुकाव है? वे उन लाखों कृषकों की चर्चा नहीं करते, जिन्हें ग्रामों के सामूहिकीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मार डाला गया था और निर्वासित कर दिया गया था। वे उनकी चर्चा नहीं कर सकते थे, क्योंकि सामूहिकीकरण सोवियत प्रणाली की आधारशिला है और उसे यथास्नान रखने के लिए कतिपय किसानों को नष्ट कर देना आवश्यक था, जिससे दूसरों को विवश किया जा सके। यदि क्रेमलिन का नया "सामूहिक निर्देशक मंडल", जैसा कि ख्रुश्चेव ने अपने छोटे-से समुदाय को बताया था, वास्तव में मार्ग-परिवर्त्तन कर रहा है, तो वह सामूहिक फ़ार्मों की सदस्यता को ऐच्छिक बना देगा। फिर भी, उनमें ऐसा करने का साहस नहीं है, कृषक सामूहिक फार्मों को छोड़ देंगे। अत: स्पष्टतः आठ करोड़ कृषकों के विरुद्ध अब भी सोवियत सरकार का मुख्य अस्त्र जोर-जबरदस्ती ही है।

इसी प्रकार जोर-ज़बरदस्ती वह साधन है, जिसके द्वारा सरकार सोवियत संघ के उद्योगों का संचालन करती है। मजदूरों को हड़ताल करने की अनुमति नहीं है; उनके ट्रेड यूनियन शीघ्र कार्य करने के तरीकों को प्रोत्साहित करने तथा मजदूरी को कम रखने में राज्य के पुछल्ले है, वे सब कुछ करनेवाली एक शक्तिशालिनी नौकरशाही की समस्त बुराइयों के शिकार है।

स्तालिनवाद के चार स्तम्भ निम्नलिखित है; कृषि का सामूहिकीकरण, उद्योग का राज्य द्वारा प्रबन्ध, एकदलीय, एकाधिपत्यवादी राजनीतिक नियंत्रण और साम्राज्यवाद। मास्को का सामूहिक निर्देशक-मडल अब भी इन्हें सोवियत पद्धति के अपरिवर्तनीय स्तम्भ मानता है (यद्यपि स्वभावत: अपने साम्राज्यवाद को उस नाम से सम्बोधित नही करते)। स्तालिन मर चुका है। उसके कार्य जीवित है।

रूस एक स्तालिनवादी देश ही बना हुआ है। स्तालिन-विमुखता की कठिनाइयों का यही कारण है।

तब उन्होंने स्तालिन की आलोचना की ही क्यों?

मैंने यह प्रश्न मास्को-निवासियों से पूछा। न केवल मुझे कोई सन्तोषजनक उत्तर ही मिला, प्रत्युत इस प्रश्न में कोई रुचि नहीं प्रदर्शित की गयी; राजनीतिक दृष्टि से सोचने की उनकी आदत समाप्त हो गयी थी। वे अपने नेताओं को नहीं जानते। मैंने जितने व्यक्तियों से बात की, उनमें से केवल एक ने ख्रुश्चेव का नाम लिया। तीन ने मालेन्कोव का नाम लिया: दो ने कहा कि, वे लेनिन के सम्बन्धी हैं, जो

प्रायः निश्चित रूप से असत्य है, किन्तु महत्त्वपूर्ण है क्योंकि किसी सोवियत राजनीतिज्ञ के सम्बन्ध मे इस से अधिक आदरसूचक एवं प्रशंसात्मक वक्तव्य नहीं दिया जा सकता; तीसरे व्यक्ति ने कहा कि वे फ्रांसीसी भाषा बोलते है—यह बात भी आदराभिव्यक्ति है और यदि यह सच हो, तो वह उन्हें एक ऐसे शीर्षस्थ समूह मे, जिसमें विदेशी संस्कृति दुर्लभ है, एक अभूतपूर्व व्यक्ति बना देगी। मेरे मास्को-निवासी मित्रों के लिए नेतृत्व एक दूरस्थ, गोपनीय विश्व के समान था, जिसमें झॉकने की वे आशा नहीं कर सकते। कई व्यक्तियों ने घोषित किया : विदेशों में लोग इसके सम्बन्ध में हमारी अपेक्षा अधिक जानते है।" अतएव वे स्तालिन-विमुखता के कारणों की विवेचना नही कर सकते थे। वे केवल इसके प्रभावों में रुचि रखते थे।

क्रेमलिन द्वारा स्तालिन की निन्दा की जाने के अनेक कारण है।

(१) स्तालिन के उत्तराधिकारी पार्टी और जनता को यह बताना चाहते थे कि उनका प्रशासन नया तथा स्तालिन के प्रशासन से भिन्न एवं उसकी अपेक्षा अधिक अच्छा था। स्तालिन की मृत्यु के ६ महीने बाद ३ सितम्बर १९५५ को ख्रुश्चेव ने पार्टी की केन्द्रीय समिति के महाधिवेशन में भाषण किया और प्रतिशतों के प्रतिशतों में आर्थिक परिवर्त्तनों का वर्णन करने की प्रथा को भग करते हुए सामूहिकीकरण से पूर्व की सोवियत अवधि और ज़ार-युग के साथ तुलना करते हुए मवेशियों की संख्या में कमी के ठीक-ठीक आंकड़े बताये। उन्होंने ऐसा क्यों किया? इसका कारण न केवल यह है कि सीधी, खरी-खरी बातें कहने में आनन्द आता है, बल्कि अनुमानतः मुख्य कारण यह है कि यदि जब स्थिति में और सुधार हो, जैसी कि उन्हें आशा है, तो वे यह कहने में समर्थ हो सकें कि इसका श्रेय नये नेताओं को है। उन्होंने नवम्बर १९५६ में वास्तव में ऐसा कहा भी था। स्तालिन के उत्तराधिकारियों के लिए स्वयं को अधिक अच्छा घोषित करना स्वाभाविक था और वे उसकी प्रतिष्ठा में छिद्र करने से अधिक अच्छा कौन-सा तरीका ग्रहण कर सकते थे? जनतांत्रिक देशों में राजनीतिक दल भी ऐसा ही करते हैं।

"नये" प्रशासन की एक विशेष बात यह थी कि बोल्शेविक सिद्धान्त को मुख्य स्रोत के रूप में पुनः प्रतिष्ठित किया गया। हो सकता है कि वर्तमान नेता-समुदाय ने यह आशा की हो कि मूल सिन्द्धात को इस प्रकार पुन. ग्रहण करने से सोवियत प्रणाली के प्रारम्भिक आदर्शवाद की पुनः प्रतिष्ठा हो जायगी और इसलिए वह स्तालिन के भण्डाफोड़ और उसकी सिंहासन-च्युति के आघात को आत्मसात् कर लेगा।

(२) १९५६ में अपने गुप्त भाषण में "व्यक्तित्व के सिद्धान्त" की बुराइयों पर विचार-विमर्श करते हुए ख्रुश्चेव ने घोषित किया कि " इस विषय से सम्बन्धित सामग्री को बीसवीं कॉंग्रेस को उपलब्ध कराना पार्टी की केन्द्रीय समिति ने नितान्त आवश्यक समझा...... हमें इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना है, और उसका सही-सही विश्लेशण करना है, जिससे स्तालिन के जीवन-काल में जो कुछ हुआ, उसकी पुनरावृत्ति किसी भी रूप में न हो सके।"......इस स्पष्टीकरण में सन्देह करने का कोई प्रबल कारण नही है। स्तालिन के समस्त जीवित बच रहे सहयोगियों ने वर्षों तक अपमान, लज्जा और उसके हाथों मृत्यु के अनवरत भय का जीवन व्यतीत किया। वे पुनः उसी अनुभव से होकर गुजरना नही चाहते थे। यही कारण है कि उन्होंने १९५३ में पुलिस-प्रमुख बेरिया को गिरफ्तार करके फॉसी दे दी; उसने अपने साथी जार्जियन स्तालिन का पदानुसरण करने तथा एक व्यक्ति के अत्याचारों का एक दूसरा युग प्रारम्भ करने का खतरा उत्पन्न कर दिया था। बेरिया के बाद, इस बात की सर्वाधिक सम्भावना प्रतीत होती थी कि स्तालिन को जो प्रमुखता प्राप्त थी, उसके उत्तराधिकारी ख्रुश्चेव ही होंगे। पार्टी के सचिव होने के नाते वे स्तालिन की प्रतिष्ठा को नीचे गिराने में मुख्य भूमिका करेंगे, किन्तु उनका ऐसा करना उन्हें बहुत अधिक ऊंचे चढ़ने से रोक सकता है।

(३) स्तालिन की सामूहिक हत्याओं और गलतियों के वर्षों में उसके शिकार हुए व्यक्तियों के पुनर्वास के लिए अनेक दबावों का निर्माण किया गया था। इन दबावों में से सोवियत सेना का दबाव निस्सन्देह सबसे बड़ा था और अब भी वह सबसे बड़ा है। द्वितीय विश्व-युद्ध में रूसी सशस्त्र सेनाओं के कई लाख सैनिक हताहत हुए और बन्दी बनाये गये तथा हिटलर रूसी इतिहास में किसी भी आक्रमणकारी की अपेक्षा रूसी राज्यक्षेत्र में अधिक दूर तक प्रविष्ट हो गया था। सेना चाहती थी कि इसका दोष स्तालिन के सिर पर मढ़ा जाय। ख्रुश्चेव ने अपने गुप्त भाषण में वह कर दिया। इसके अतिरिक्त सोवियत सैनिक नेता युद्ध-विजय के लिए श्रेय चाहते थे। अतः ख्रुश्चेव ने बीसवीं कांग्रेस में बताया कि "१९४१ में मोर्चे पर हुई प्रथम भयंकर विभीषिकाओं और पराजयों के बाद स्तालिन सोचता था कि बस सब कुछ समाप्त हो गया है...... बहुत दिनों तक स्तालिन ने वास्तव में सैनिक अभियानों का निर्देशन नहीं किया और उसने कुछ भी करना बन्द कर दिया......स्तालिन ने वास्तविक सैनिक अभियानों में हस्तक्षेप करते हुए, जिस उद्विग्नता और उन्माद का प्रदर्शन किया, उसके कारण हमारी सेना को भयंकर क्षति उठानी पड़ी...... राष्ट्रीय युद्ध (१९४१–४५) की समस्त अवधि में उसने कभी मोर्चे के किसी

भाग अथवा किसी स्वतंत्र किये नये नगर की यात्रा नहीं की।......सर्वाधिक लज्जा-जनक तथ्य तो यह था कि शत्रु के ऊपर हमारी महान विजय के बाद, जिसके लिए हमें इतना अधिक मूल्य चुकाना पड़ा, स्तालिन ने अनेक सेनापतियों की पदावनति प्रारम्भ कर दी......क्योंकि स्तालिन मोर्चे पर की गयी सेवाओं का श्रेय स्वयं अपने अतिरिक्त अन्य किसी को भी दिये जाने की प्रत्येक सम्भावना को समाप्त कर देना चाहता था।"

इसके अतिरिक्त, खुश्चेव ने घोषित किया कि १९३७ और १९४१ के बीच 'जिन प्रशिक्षार्थी नेताओं ने स्पेन और सुदूर पूर्व में सैनिक अनुभव प्राप्त किये थे, उन्हें प्रायः पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया गया।" उन्होंने द्वितीय महासमर में इस पागलपन से भरे कार्य के "अत्यन्त हानिकारक परिणामों" पर बल दिया, यह कहने के लिए सेना ने अवश्य ही अनुरोध किया होगा।

मार्शल झुकोव द्वितीय विश्व-युद्ध के रूस के महानतम नेता थे और खुश्चेव कहते है कि, स्तालिन उन्हें पसन्द नहीं करता था। वास्तव में एक बार स्तालिन ने खुश्चेव से झुकोव के सम्बन्ध में उनके विचार पूछे और खुश्चेव ने स्वभावत. उत्तर दिया कि झुकोव एक सुयोग्य जनरल है, किन्तु खुश्चेव प्रतिवेदित करते है कि स्तालिन ने झुकोव के युद्ध-कौशल का उपहास किया। यह एक दोहरी चाल थी; स्तालिन का प्रतिष्ठा-भंजन करने मे खुश्चेव ने झुकोव के प्रति प्रेम-प्रदर्शन किया, जिनकी युद्ध समाप्त होने पर पदावनति कर दी गयी थी, किन्तु जो स्तालिन की मृत्यु होने पर सर्वप्रथम सहायक प्रतिरक्षा-मत्री के रूप में और अब प्रतिरक्षामंत्री और पोलिट ब्युरो के उपसदस्य के रूप में वापस लौट आये हैं। अभी तक कोई पेशेवर सोवियत सैनिक दल में इतने अधिक उच्च पर नहीं पहुंच पाया था। प्रतिद्वन्द्वी सत्ता से सदा भयभीत रहने वाले स्तालिन ने सेना को राजनीति से बाहर और दूर ही रखा। आज सेना एक प्रमुख राजनीतिक पार्ट अदा करती है।

स्तालिन के साथ उसका एक झगड़ा अभी तक बना हुआ है, जिसका निपटार नहीं हुआ है: १९३७ में मार्शल तुखाचेवस्की तथा अनेक अन्य मार्शलों, जनरलों और अफसरों का (उनकी संख्या का अनुमान हजारों में लगाया जाता है) शुद्धी-करण, जिसने लाल सेना को पंगु बना दिया और जिसके परिणामस्वरूप १९३९-४० में फिनलैण्ड में तथा १९४२ में हिटलर के विरुद्ध उसकी दुर्गति हुई। सोवि-यत सेना अवश्य ही निश्चित रूप से चाहेगी कि उसके रेकार्ड से इस बड़े काले धब्बे को हटा दिया जाय।

स्तालिन के दुर्व्यवहार से पीड़ित एक दूसरा तत्व उन चार करोड़ सोवियत यूक्रेन-वासियों का है, जो सोवियत संघका सबसे बड़ा राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदाय है। १९२० और १९३० में स्तालिन ने "पूँजीवादी राष्ट्रवाद" और रूस से पृथक् होने की आकांक्षा के लिए उसके कम्यूनिस्ट नेताओं और प्रमुख गैर-कम्यूनिस्टों का बारम्बार शुद्धीकरण किया। स्वतन्त्रता के लिए यूक्रेन-वासियों की बची हुई अथवा पुनर्जीवित होने वाली आकांक्षा के लक्षण के लेशमात्र भी दृष्टिगोचर होने से मास्को सदा चौकन्ना हो जाता रहा है। स्तालिन ने निर्ममतापूर्वक उसका दमन किया। उसके उत्तराधिकारी कोमलता का प्रदर्शन करते है। जब ख्रुश्चेव ने इस बात का वर्णन किया कि किस प्रकार स्तालिन ने राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों को साइबेरिया और कजकस्तान में निर्वासित किया, तब उन्होंने इतना और जोड़ दिया—"यूक्रेन-वासी केवल इस कारण इस स्थिति से बच गये कि उनकी संख्या बहुत अधिक थी और कोई ऐसा स्थान नहीं था, जहां उन्हें निर्वासित किया जा सके।" यह पुनः एक दोहरी चाल थी : स्तालिन पर प्रहार करने की और यूक्रेनवासियों की मनुहार करने की। मिकोयान ने कांग्रेस में किये गये अपने भाषण में यूक्रेन के दो प्रमुख कम्यूनिस्टों स्टैनीस्लाव कोस्सिओर, जो १९३० से पोलिट ब्यूरो का सदस्य था, और ऐन्तोनोव-आवसेयेन्को को—केवल उनके नामों का उच्चारण कर—पुनर्वासित किया। ख्रुश्चेव ने एक तीसरे यूक्रेनियन कम्यूनिस्ट पावेल पोस्तीशेव को पुनर्वासित किया।

शुद्धीकृत व्यक्तियों को कारागारों और शिविरों से मुक्त करने तथा अन्य व्यक्तियों को मृत्यूपरान्त पुनर्वासित करने के लिए और अधिक दबाव प्रभावशाली सम्बन्धियों तथा पुराने सहयोगियों द्वारा डाला गया। इस प्रकार के लिए तर्क-संगत प्रारम्भिक कारवाई यह थी कि स्तालिन के शासन की सार्वजनिक रूप से आलोचना की जाय तथा उसके कार्य की निन्दा की जाय।

(४) सम्भवतः स्तालिन-विमुखता में सर्वाधिक योगदान, जिसका समुचित अनुमान नहीं लगाया गया है, नये सोवियत उच्चतर वर्ग द्वारा, जिसमें ऊंचे सरकारी और दलीय अधिकारी, सेना और गुप्त पुलिस के उच्च अफसर, लेखक, कलाकार और अभिनेता, प्रमुख आर्थिक व्यवस्थापक, महत्त्वपूर्ण तकनीकी कर्मचारी, वैज्ञानिक और उच्च पदस्थ पेशेवर व्यक्ति सम्मिलित हैं, किया गया; आश्रितों सहित उनकी संख्या एक करोड़ और दो करोड़ व्यक्तियों के बीच है। एक सोवियत मित्र ने, जो उनमें से एक है, कहा—"हमें एक वर्ग मत कहिए; 'स्तर' अधिक अच्छा शब्द होगा।" उसका विनम्र विरोध इस सरकारी तर्क को प्रतिध्वनित करता था

कि सोवियत संघ "एव वर्गविहीन समाज है", किन्तु एक साठवर्षीय भाव-प्रवण, प्रतिभाशालिनी महिला ने, जो स्वयं अपनी जीवन पद्धति तथा जन-साधारण की जीवन-पद्धति के मध्य विद्यमान गहरे अन्तर को देखे बिना नहीं रह सकती, सोवियत समाज की वर्ग-व्यवस्था के सम्बन्ध में मेरे विचार पूछे। इस उच्चतर वर्ग अथवा स्तर के व्यक्ति (जब यह वस्तु इतनी प्रत्यक्ष है, तब नाम का कोई महत्त्व नहीं है) अपने माता-पिताओं के मान-दण्ड से सुखद जीवन व्यतीत करते है और उनके बालक उन विशेषाधिकारों का सुखोपभोग करते हैं, जो धनिकों की सन्तानों को प्राप्त होते है, किन्तु उस सुख-सुविधा और भोग-विलास का क्या उपयोग था, जब, स्तालिन के समय में, रात के दो बजे द्वार पर एक खटखटाहट होने से इन सबके बदले किसी उत्तर ध्रुव प्रदेशीय शिविर में लकड़ी के एक तख्ते पर सोना पड़ता—अथवा किसी अज्ञात कब्र में दफना दिया जाता? मिकोयान, बुल्गानिन, ख्रुश्चेव, मालेन्कोव और उनके सहयोगियों के साथ उच्चतर वर्ग राजनीतिक प्रपीड़न से व्यक्तिगत सुरक्षा प्राप्त करने के लिए लालायित था। चूँकि वर्तमान नेता मृत्यु की शाश्वत छाया में जीवन की भयंकरता को पूर्ण रूप से समझते थे और इस बात का अनुभव करते थे कि इससे कार्यक्षमता में कितनी अधिक कमी हो जाती है, इसलिए उन्होंने एक दूसरे को और अपने वर्ग अथवा स्तर के व्यक्तियों को राजनीतिक गिरफ्तारी से सुरक्षा का वह प्रच्छन्न वचन दिया, जिसके सम्बन्ध में वे जानते थे कि वह राजनीतिक एवं आर्थिक यंत्र के सुगम संचालन के लिए अनिवार्य है। उक्त वचन ने स्तालिन के स्वेच्छाचारी, कानून-विहीन-शुद्धीकरण से पूर्ण आतंक-शासन की निन्दा का रूप धारण किया। यही फरवरी १८५६ की बीसवीं पार्टी कांग्रेस का अन्तर्निहित सन्देश है।

(५) क्रेमलिन के नेताओं की मृत्यु से तथा उच्चतर वर्ग की शाश्वत प्रपीड़न से रक्षा करने के लिए गुप्त पुलिस की भयंकर शक्ति को नियंत्रण के अन्तर्गत करना आवश्यक था। स्तालिन की मृत्यु के तत्काल उपरान्त पुलिस-प्रमुख बेरिया की शक्ति में जिस तीव्र गति से वृद्धि हुई, उससे उसके समस्त कामरेडों को विश्वास हो गया कि पंख काटने की यह प्रक्रिया कितनी आवश्यक और महत्त्वपूर्ण थी। सोवियत सेना ने, जो अपने भीतर जासूसों की भरमार कर देने तथा राजनीतिक प्रभाव में अपने से आगे बढ़ जाने के कारण, गुप्त पुलिस से घृणा करती थी, २६ जून १९५३ को बेरिया की गिरफ्तारी और उसकी पुलिस-प्रणाली की पदावनति करने में प्रसन्नतापूर्वक सहयोग प्रदान किया, जिससे समस्त स्तरों के लोगों ने सुख की सांस ली। मास्को में मेरे सर्वश्रेष्ठ मित्र ने कहा—"मै नही जानता

कि अब गुप्त पुलिस क्या करती है। वह अवश्य ही पुराने अभिलेखों का अध्ययन कर रही होगी।"

स्तालिन के समय में गुप्त पुलिस सोवियत संघ में सबसे बड़ा औद्योगिक अध्यवसाय था। वह आर्थिक विकास की विभिन्न प्रायोजनाओं पर लाखों दास श्रमिकों को काम पर रखती थी, किन्तु रूस में नगरों में तथा ग्रामों में भी श्रमिकों का तीव्र अभाव है और नगरीय तथा ग्रामीण, दोनों क्षेत्रों में जन्मसंख्या में कमी को देखते हुए जनशक्ति के अभाव के बने रहने की ही सम्भावना है। इन परिस्थितियों में नजरबन्दी शिविरों में, जहां के निवासी या तो कामचोरी करते थे अथवा असमय ही काल-कवलित हो जाते थे, श्रम की बरबादी वास्तव में एक देशद्रोहपूर्ण कार्य था और गिरफ्तारियों की संख्या में कटौती तथा पुलिस के आर्थिक कार्यों में कमी कर उसे रोकना आवश्यक था।

(६) सोवियत नेताओं को आशा थी कि स्तालिन के अपराधों के लिए उसकी निन्दा करने से वे स्वयं अपराध-मुक्त हो जायेंगे। उन्होंने अभियोग लगाया कि, स्तालिन उनसे परामर्श किये बिना ही कार्य करता था। तदनुसार, स्तालिन-विमुखता का उद्देश स्तालिन के उत्तराधिकारियों के नाम को दोष-मुक्त करना था।

(७) स्तालिन-विमुखता क्रेमलिन में एक नये अन्तरराष्ट्रीय दृष्टिकोण का अंग थी। सोवियत निर्देशक-मंडल ने अनुभव किया कि स्तालिन ने अनावश्यक रूप से टिटो, तुर्की और सामान्यतः एशिया को तथा पश्चिम के प्रजातांत्रिक देशों को विरोधी बना दिया था। मुस्कानें तथा गैर-सोवियत देशों को आर्थिक और सैनिक सहायता मित्रों पर विजय प्राप्त करने, शत्रुओं को भ्रम में डालने एवं तटस्थों की संख्या में वृद्धि करने के लिए अधिक उपयुक्त थीं।

जब निकिता एस० ख्रुश्चेव ने अपना सुप्रसिद्ध गुप्त भाषण किया, उससे बहुत पहले से ये सात समीकरण सोवियत स्थिति में विद्यमान थे। स्तालिन के विरुद्ध लगाने जाने वाले आरोपों पर क्रेमलिन में काफी समय से विचार-विमर्श हो रहा था और उनके समर्थन के लिए आवश्यक सामग्री का संग्रह कर लिया गया था, किन्तु नेता-वृन्द युवकों तथा अन्यों को लगने वाले आघात के भय से स्तालिन के शासन का पर्दाफाश करने से हिचकिचा रहे थे। फिर भी, बीसवीं पार्टी कांग्रेस में शीघ्र ही यह बात प्रत्यक्ष हो गयी कि अब समय आ गया है। स्तालिन "व्यक्तित्व-सिद्धान्त" के सम्बन्ध में किये गये प्रत्येक शत्रुतापूर्ण उल्लेख का प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक समर्थन किया। मिकोयान ने तानाशाह की जो सीधी निन्दा की, उस पर प्रचण्ड हर्ष-ध्वनि की गयी। कांग्रेस के शीघ्रलिपि में लिखे गये विवरणों से यह बात स्पष्ट रूप से

मालूम होती है कि मोलोतोव, बुल्गानिन और कागानोविच जैसे कतिपय नेताओं के मन में अब भी सन्देह बना हुआ था। फिर भी, स्तालिन विमुखता का निर्णय कर लिया गया। ख्याल है कि ख्रुश्चेव के भाषण को जो प्रकाशित नहीं किया गया, वह संशयवादियों को दी गयी एक सुविधा थी—वह चीनी कम्यूनिस्टों को भी एक सुविधा थी, जो चीनी पद्धति से चीन का स्तालिनीकरण कर रहे हैं।

सोवियत घटनाक्रम के कतिपय विदेशी विवेचकों ने स्तालिन-विमुखता को जनतंत्रीकरण और नम्रता के समान समझकर स्वयं को भ्रम में डाल दिया; तब उन्होंने आधे मन से किये गये उदारवादी सुधारों के लिए मास्को की निन्दा की, किन्तु स्तालिन-विमुखता के समस्त कारण राजनीतिक और वैयक्तिक थे। उसका उद्देश्य उदारीकरण अथवा जनतंत्र की स्थापना करना नहीं था। उसका उद्देश्य राजनीतिक लाभ तथा व्यक्तिगत सुरक्षा प्राप्त करना था। सीमित उदारीकरण तो एक वस्तु मात्र है और वह इस बात का संकेत भी है कि स्तालिन के आतंकवादी तरीके अनावश्यक होने के कारण अवांछनीय हैं। ५ मार्च १९५३ को रात के ९ बजकर ५० मिनट पर अत्याचारी की मृत्यु होने के बाद कुछ घण्टों के भीतर ही सरकार और दल के नेता गम्भीर विचार-विमर्श के लिए मिले और उन्होंने एक घोषणा-पत्र को स्वीकार किया, जो सोवियत पत्रों में ७ मार्च को प्रकाशित हुआ। उक्त घोषणा-पत्र में जनता से "अव्यवस्था और आतंक" से दूर रहने का अनुरोध किया गया था। यदि क्रैमलिन के व्यक्ति चिन्ताग्रस्त न होते, तो उन्होंने इस प्रकार के रहस्योद्घाटन करने वाले शब्दों का प्रयोग कभी नहीं किया होता। अब वे चिन्ताग्रस्त नहीं हैं, अतः वे अपेक्षाकृत कम कठोरता से शासन करते हैं।

तदनुसार, ऐसा प्रतीत होगा कि सोवियत संघ के भीतर स्तालिन-विमुखता के (जो एक व्यक्ति के शासन के स्थान पर सामूहिक शासन की स्थापना के तुल्य है) धन प्रत्यक्ष दिखायी देने वाले ऋणों से बहुत अधिक है। प्रशासन की दृष्टि से सोवियत संघ एक विकट देश है क्योंकि समस्त आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यों का संचालन, राज्य का संचालन करने वाले थोड़े-से व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। स्तालिन की प्रकाशित आलोचना उत्तरदायित्व के वितरण की अच्छाइयाँ सिखा कर सरकार के जटिल कार्य को सुविधाजनक बनाती है। ६ सितम्बर १९५६ को 'प्रवदा' ने लिखा—"सामूहिक नेतृत्व की शक्ति इस तथ्य में निहित है कि वह जनता के एक व्यापक क्षेत्र के ज्ञान और अनुभव पर आश्रित है। दल, सरकार और आर्थिक गतिविधियों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्नों पर सामूहिक रूप से विचार-विमर्श करने से सब प्रकार की गलतियों और समस्याओं के प्रति एक-

पक्षीय दृष्टिकोण से बचते हुए अत्यन्त सही-सही निर्णय करना सम्भव होता है। अतः समस्त स्तरों पर दलीय नेतृत्व के सामूहिक स्वरूपों और तरीकों को लागू करने के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहना आवश्यक है।" निश्चय ही, उत्तरदायित्व का वितरण अभी तक अत्यन्त सीमित है, किन्तु कम से कम उच्चतर दलीय क्षेत्रों में, स्तालिन-युग की यंत्रवत् आज्ञाकारिता के बाद, निर्णय करने के कार्य में काल्पनिक योगदान भी अवश्य ही आनन्द और आत्म-महत्व की भावना की सृष्टि करेगा।

स्तालिन-विमुखता उच्च वर्ग तथा नेताओं के लिए एक वरदान सिद्ध हुई है, किन्तु वे स्तालिन-प्रणाली से विमुख नहीं हुए है। अतएव यह प्रश्न प्रासंगिक नही है कि उन्होने उसे पुनः स्वीकार कर लिया है अथवा नहीं। यद्यपि स्तालिन के अत्यन्त पाशविक तरीकों का परित्याग कर दिया गया है, तथापि उसने जिस आर्थिक एवं राजनीतिक प्रासाद का निर्माण किया, वह समस्त कम्यूनिस्टों का लक्ष्य है। वह ज्यों का त्यों बना हुआ है और उसे सुदृढ बनाया जा रहा है। तदनुसार जब ख्रुश्चेव 'एक अच्छे कम्यूनिस्ट के उदाहरण' के रूप में स्तालिन का अभिनन्दन करते हैं, जैसा कि उन्होंने १७ जनवरी १९५७ को तथा अन्य अवसरो पर किया था, तब वे बीसवीं पार्टी कांग्रेस में किये गये अपने प्रख्यात भाषण की किसी भी बात का खण्डन नहीं करते। उस ऐतिहासिक कार्य ने अपने सातो राजनीतिक एवं व्यक्तिगत उद्देश्यों को पूर्ण कर दिया। शेष बातें—स्तालिन प्रणाली की समाप्ति और उसके ध्वंसावशेषों पर जनतंत्र की स्थापना—रूस में एक मन्द प्रक्रिया होगी। अशांति, हां। असन्तोष, निश्चयपूर्वक। समय-समय पर विरोध की अभिव्यक्तियाँ, अनिवार्य। उच्चस्तर पर; जैसे कि सेना द्वारा प्रासाद-क्रान्ति, कल्पनीय। उपभोक्ताओं की आवश्यकताओ का शनैः शनैः सन्तुष्ट किया जाना, अपरिहार्य, किन्तु सोवियत सरकार को उलटने के लिए एक जनक्रान्ति का होना बिल्कुल असम्भाव्य प्रतीत होता है।

रूस के भविष्य के सम्बन्ध मे की जानेवाली किसी भी अटकलबाजी में—और यह केवल अटकलबाजी ही हो सकती है—आत्मसमर्पण की उस भावना का कम मूल्यांकन नहीं किया जाना चाहिए, जिसकी शिक्षा जारों की निर्मम-निरंकुश, अत्यन्त केन्द्रीकृत सरकार और उसकी अपेक्षा बहुत अधिक निर्मम एवं केन्द्रीकृत बोल्शेविक शासन द्वारा दी गयी है। निश्चय ही, आज्ञापालकता में क्रोध असम्भव नहीं होता। वास्तव में, वे साथ-साथ विद्यमान रहते है, किन्तु सरकारी दासता की राष्ट्रीय स्मृति एक कठोर अवरोधक तत्व होती है।

अध्याय ८

अफीम

युगोस्लाव कम्यूनिस्ट पार्टी के पोलिट ब्यूरो के बुद्धिमान वृद्ध सदस्य स्वर्गीय मोशे पियादे ने ३१ अक्तूबर १९५६ को एक मुलाकात में कहा कि, मास्को ने इस धारणा के साथ स्तालिन से मुंह मोड़ा कि पिछलग्गू देशों में उपद्रवों को जन्म दिये बिना ही सोवियत संघ में इस प्रक्रिया को प्रारम्भ किया जा सकता है। पियादे के सराहनीय मत से यह सुझाव मिलता है कि क्रेमलिन विदेशी देशों को कितनी बुरी तरह से समझता है और रूस को वह कितनी अच्छी तरह से समझता है।

कम्यूनिस्ट शासन पिछलग्गू देशों पर १९४४ और १९४८ के बीच लादा गया, रूस पर वह १९१७ मे लादा गया; यह अन्तर निर्णायक है।

राजनीति में समय एक महत्वपूर्ण तत्व होता है। १९२२–३८ की अवधि की तुलना में, जब मैं मास्को में निवास करता था, अब विश्वासियों की संख्या कम हो गयी है तथा संशयवादियों की संख्या बढ़ गयी है। दल के जो सदस्य किसी समय आदर्शवादी थे, वे अब समय काट रहे हैं।

फिर भी, गैर-कम्यूनिस्टों के मध्य आदर्शवादियों के दर्शन होते हैं। वे बाह्य जगत के सम्बन्ध में प्रश्न पूछते हैं; वे सोवियत प्रकाशनों में विदेशों से सम्बन्धित सूचना के अभाव पर आक्रोश व्यक्त करते हैं; वे शासन की भौतिकता की निन्दा करते है। विजयी पक्ष के आकर्षणों का प्रतिरोध करने के लिए आन्तरिक शक्ति एवं मानव-जाति में निष्ठा की आवश्यकता होती है। एक नवयुवती सोवियत महिला ने मुझे बताया कि युद्ध के बाद दमन के सारे वर्षों में उसने तथा उसके सात मित्रों ने, जो सभी शासन के आलोचक थे–और स्तालिन-विमुखता के बावजूद आलोचक बने हुए है–एक पुनीत पारस्परिक विश्वास के साथ, जिसे भंग नहीं किया गया, स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचारों का आदान-प्रदान किया। एक तानाशाही देश में जहा नागरिकों से आशा की जाती है कि वे राजनीतिक एकरूपता से लेशमात्र विमुखता की भी सूचना देंगे, इसे अवश्य ही शिष्टाचार की विजय माना जायगा, किन्तु उस नवयुवती महिला के अठारह वर्षीय युवक कम्यूनिस्ट पुत्र के साथ उसके सम्बन्ध तनावपूर्ण थे।

किसी कम्यूनिस्ट देश में राजनीति पारिवारिक जीवन को गम्भीर रूप से जटिल बना देती है। दो किशोर वय के बालकों ने भोजन के समय अपनी दल की अनुयायिनी माता को एक घण्टे तक खूब संत्रस्त किया और उसके दुर्बल, क्रैमलिन-निर्मित विचारों के विरुद्ध जोरदार तर्क उपस्थित किये। इसके विपरीत, साचा की, जिसने कहा था कि 'मैं स्तालिन से प्रेम करता हूं' मां ने उसके कट्टर विचारों का पूर्ण रूप से समर्थन किया और जब वह ऐसा कर रही थी, तब मैंने महसूस किया कि वह वास्तव में अपने पुत्र को पकड़े रहने का प्रयास कर रही थी। उसकी अन्ध-निष्ठा उसे उन्मादपूर्ण सन्देह से दूर रखती थी और उसकी माता की सहमति उसे रखने का एक साधन थी।

सोवियत माता-पिताओं के अपने बालकों के साथ सहमत होने की सम्भावना बालकों के अपने माता-पिताओं के साथ सहमत होने की सम्भावना की अपेक्षा अधिक रहती है। जब कि बालक अभी तक राजनीतिक अज्ञान की अवस्था में रहते हैं, माता-पिता अपने बच्चों के विचारों में हस्तक्षेप करने में हिचकिचाते हैं। बात यह है कि कोई बालक अथवा बालिका अपने क्रीड़ा-सहयोगियों के साथ वाद-विवाद में कह सकती है—'किन्तु मेरे पिता कहते है कि...' और यह बात अधिकारियों तक पहुंच सकती है। इसी प्रकार अनेक सोवियत माताएं और पिता बालक के अपरिपक्व मस्तिष्क को उस पीड़ादायक मनोवैज्ञानिक संघर्ष से बचाना चाहते है, जो स्कूल और पायनियर (स्काउट) दल में एक ओर घर में उसके विरुद्ध राजनीतिक शिक्षा प्राप्त करने पर उत्पन्न होगा। इस प्रकार के मामलों में ज्येष्ठ व्यक्ति सामान्यतः बाह्य प्रभावों का तब तक सम्मान करते जब तक बालक-बालिकाएं विश्वविद्यालय में पहुंच जाती है अथवा स्नातक-स्नातिकाएं बन जाती है और माता-पिता सम्भवतः निर्णय करते है कि अब पुत्र अथवा पुत्री में इतना पर्याप्त विवेक और अनुभव आ गया है कि वह परिवार में एक विरोधी मत को सुनकर लाभान्वित हो सकता है अथवा हो सकती है। बालकों की युवावस्था में राजनीति द्वारा उत्पन्न पारिवारिक फूट उनके काम पर लग जाने पर दूर हो सकती है। उन्नीस वर्ष पूर्व निवृत्ति का जीवन व्यतीत करने वाले एक निराश पुराने बोल्शेविक का प्रौढ़ पुत्र अपने पिता के निराशावाद की निन्दा करता था, किन्तु अब वह 'वैज्ञानिक कार्य के बोझ के कारण' चुपके से पार्टी की सदस्यता से अलग हो गया है।

युवकोपयोगी रूसी पत्रिकाओं के प्रस्तावित सोवियत प्रासाद जितने बड़े अम्बार में भी किसी नये विचार के दर्शन नहीं होंगे। थोड़े-से अपवादों को छोड़ कर वे

बीसवीं पार्टी कांग्रेस की कार्रवाइयों को उद्धृत करने में—यह कार्य अबसे कुछ वर्षों बाद होने वाली अगली कांग्रेस तक चलता रहेगा—प्रौढ़ प्रकाशनों का अनुकरण करती है तथा समस्त तर्कों को समाप्त कर देने के लिए, लेनिन के ग्रन्थों में से कोई उद्धरण प्रस्तुत कर देती है। अत्यन्त प्रारम्भिक बालोपयोगी पत्रिकाएं जो मानसिक खाद्य प्रदान करती है, वह पूर्णतया बेकाम होता है। बालक और बालिका स्काउटों के पत्र 'पायनियर प्रवदा' के दो सम्पादक जब एक लेखक के पास लेख मांगने के लिए पहुंचे तब लेखक ने सम्पादकों को लेख देने से इनकार कर दिया। उसने कहा कि "आपके पत्र का प्रत्येक अंक अन्य अकों के समान ही होता है। ..." रूस की सर्वश्रेष्ठ 'डिस्कस'—प्रक्षेपिका नीना पोनोमारेवा जब लन्दन में चोरी करने के अभियोग में गिरफ्तार की गयी, तब 'प्रवदा' ने उक्त संवाद को 'गन्दी उत्तेजना' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किया और उसे सोवियत संघ के विरुद्ध एक सुनियोजित षड्यंत्र के रूप में प्रस्तुत किया। 'प्रवदा' का एकपक्षीय समाचार समस्त कक्षाओं में पढ़ा गया। वह केवल बालकों को पश्चिम से घृणा करने तथा ब्रिटिश न्यायिक प्रक्रिया को घृणाभरी दृष्टि से देखने की शिक्षा दे सकता था।

स्कूलों और विश्वविद्यालयों के छात्रों से बातचीत करने के मुझे जो अवसरप्राप्त हुए, जो आवश्यक रूप से सीमित थे, उनसे सोवियत सूत्रों को पढ़ने से निर्मित मेरी इस धारणा की पुष्टि ही हुई कि सोवियत शिक्षा का उद्देश्य मस्तिष्क का विकास करना होता है, किन्तु विचार-शक्ति का विकास नहीं, उसका उद्देश्य विशेषज्ञ उत्पन्न करना होता है, विचारशील व्यक्ति नहीं।

एक दिन तीसरे पहर मास्को के मित्रों की, जिन्हें मैंने इन उन्नीस वर्षों में नहीं देखा था, तलाश करते-करते मैंने उस कमरे के द्वार की घण्टी बजायी, जिसमें वे एक समय रहते थे। घण्टी का जबाब देने के लिए बाहर आने वाली नवयुवती महिला ने कहा—"नहीं, मुझे खेद है। यह अमुक व्यक्ति का घर है।"

मैंने अपनी परेशानी बतायी: मै अमरीका से आया था; मै अपने मित्रों से किस प्रकार मिल सकता था? उसने नयी टेलिफोन-पुस्तिका में देखने का सुझाव दिया और जब मैंने स्पष्टीकरण किया कि यह एक अत्यन्त कठिन कार्य है क्योंकि मेरे होटल में कोई टेलिफोन-पुस्तिका उपलब्ध नहीं है, तथा डाकघर में भी कोई नयी पुस्तिका नहीं है, तब उसने मुझे अपनी पुस्तिका देखने के लिए निमंत्रित किया। हमने विनम्रतापूर्वक थोड़ी-सी बातचीत की, जिसके सिलसिले में मुझे ज्ञात हुआ कि उक्त महिला की उम्र साढ़े उन्नीस वर्ष की थी और वह एक मेडिकल छात्रा थी। मैने कहा आपसे मेरी बहुत अधिक दिलचस्पी हो गयी है। क्या

आपके पास बात चीत करने के लिए समय है? उसने कहा कि मेरे परिवार के लोग बाहर गये हुए है, मै नीरसता का अनुभव कर रही हूं तथा मेरे पास बातचीत करने के लिए पर्याप्त समय है। हमारा वार्तालाप एक घण्टे तक चलता रहा।

कतिपय प्रारम्भिक प्रश्नों के पश्चात् मैंने ख्रुश्चेव के 'पत्र' के सम्बन्ध में सामान्य प्रश्न पूछा। हॉ, उसको उन छात्रों ने उसके सम्बन्ध में बताया था, जिन्होंने उसे पढ़े जाते हुए सुना था। क्या उसे उसका कोई अंश, उदाहरणार्थ वोरोशिलोव-सम्बन्धी अंश, विशेष रूपसे याद था? हॉ, स्तालिन को सन्देह था कि वे एक ब्रिटिश जासूस है, वह उन्हें पोलिट ब्यूरो के अधिवेशनों में भाग लेने की अनुमति नहीं देता था तथा उनके निवास-स्थान को तार से घिरा दिया था।

मैंने कहा—"कुछ वर्षों पूर्व आपको बताया गया था कि स्तालिन एक आश्चर्य-जनक व्यक्ति था, जो केवल अच्छे कार्य ही करता था। आज आप जानती है कि उसने बहुत अधिक कष्ट दिया तथा आवश्यक रूप से अनेक व्यक्तियों की हत्या कर दी। दूसरे शब्दों में, उन्होंने आपको झूठी बातें बतायीं।"

"हॉ।"

"अब यदि सरकार और पार्टी अपनी प्रशसा स्वय करें, तो क्या आप उस पर विश्वास करेंगी?

"हॉ।"—उसने उत्तर दिया।

"किन्तु चूंकि पहले वे आपसे झूठ बोले, इसलिए क्या वे पुनः आपसे झूठ नहीं बोल सकते?"

"वर्त्तमान नेता नहीं।"—उसने हठपूर्वक कहा।

"क्या आपको कम-से-कम आलोचनात्मक दृष्टिकोण नहीं रखना चाहिए?"

"मै समझ नहीं पा रही हूँ।"— उसने दलील दी।

"आप लैटिन पढ़ रही है। डेस्कार्टी नामक एक फ्रॉसीसी दार्शनिक ने कहा था—"मै सोचता हूं, इसलिए मै हूं!" हम मानव इसलिए है कि हम सोच सकते हैं और सोचने का अर्थ होता है, निर्णय करना। आप प्रमाणों को तौलती हैं, आप स्वयं निर्णय करती है कि आप जो कुछ सुनती है, वह सही है अथवा नहीं। कोई व्यक्ति आपको जो कुछ बताता है उस प्रत्येक बात पर आप विश्वास नहीं कर लेतीं, क्या कर लेती है?"

"नहीं ... किन्तु सरकार की बात भिन्न है।"

"किन्तु सरकार ने आपको स्तालिन के सम्बन्ध में झूठी बातें बतायीं थीं।"—मैंने स्मरण कराया।

"वह था।" – उसने पार्टी-नीति को प्रतिध्वनित करते हुए तर्क प्रस्तुत किया।

"आप दो पुस्तको में से एक का चुनाव करती है। आप दो फिल्मों मे से एक का चुनाव करती है। आप उस वस्त्र को नहीं, इस वस्त्र को पहनने का निर्णय करती है। क्या यह बात वांछनीय नही होगी कि आप अपने निजी राजनीतिक विचारों का चुनाव करें, तुलनाए करें, एक बात को अस्वीकृत कर दें और दूसरी बात में विश्वास करें?"

"वस्त्रों के सम्बन्ध में यह बात बिल्कुल ठीक है, राजनीति के सम्बन्ध में नहीं।" – उसने घोषित किया।

मैने कितना ही प्रयत्न किया, किन्तु मै उसके विश्वास के इस कवच का भेदन नहीं कर सका।

कुछ दिन बाद मै चौड़े सादोवाया मार्ग पर जा रहा था कि मैने अपने आगे स्कूली वर्दी — भूरा ड्रेस, सफेद कालर और काला गाऊन — पहनी हुई दो लड़कियों को देखा। मैने निर्णय किया कि उनकी उम्र चौदह या पन्द्रह वर्ष की होगी। मैं उनके पास पहुंच गया और पूछा कि क्या मै विदेशों में अपने मित्रों को दिखाने के लिए आप लोगों के फोटो खींच सकता हूँ। "नही" — एक लड़की ने उत्तर दिया — "मेरे कपड़े इतने सीधे-सादे है, किसी अधिक अच्छी दिखायी देने-वाली लड़की को चुनिये।" मैने कहा कि आपका चेहरा आकर्षक है और आप दोनों का चित्र बहुत अच्छा दिखायी देगा। "नहीं" — उसने हठपूर्वक कहा — "आपको कही अन्यत्र ही देखना चाहिए।" सुन्दर लड़की मौन बनी रही। मैने क्षमा मांगी और उन्हें छोड़कर वोरोव्की स्ट्रीट की ओर चल दिया।

एक मिनट में ही वे मेरी बगल में पहुँच गयीं और कहा कि उन्होंने अपना विचार बदल दिया है। मैंने उनसे एक मकान के सामने खड़ा होने के लिए कहा और कई फोटो खींचे। सीधे-सादे कपड़ों वाली लडकी एक शोफर की लड़की थी और सुन्दर लड़की का पिता एक सरकारी कार्यालय में काम करता था। उसकी उम्र सत्रह वर्ष की थी।

क्या उन्होंने ख़ुश्चेव के 'पत्र' को सुना था?

उद्धरणों को।

उसे प्रकाशित क्यों नहीं किया गया था?

किया जायगा।

किन्तु कई महीने व्यतीत हो चुके हैं। किसी जनतांत्रिक देश में उसे तत्काल प्रकाशित कर दिया गया होता।

वे इस बात का स्पष्टीकरण नहीं कर सकीं कि, उसे क्यों नहीं प्रकाशित किया गया था।

"भूत काल में आपको स्तालिन के सम्बन्ध में झूठी बातें बतायी गयी थीं।"

"हां।"

"आप कैसे जानती है कि अब वे आपसे झूठ नहीं बोल रहे है।"

"हमें विश्वास है।"

सुन्दर लड़की ने प्रहार किया—"यदि आप धनी और स्वतंत्र है, तो इतने लोग अमरीका में भूख से क्यों मरते है?'

"अमरीकी केवल 'प्रवदा' में भूखों मरते है।"

"अमरीकी उद्‌जन बमों का विस्फोट क्यों करते है? क्या वे युद्ध चाहते है?"

"कई दिन पूर्व सोवियत सरकार ने साइबेरिया में एक बम का विस्फोट किया, किन्तु आपके समाचार पत्रों ने इसके सम्बन्ध में कुछ भी नहीं प्रकाशित किया है। आपके पत्र स्वतंत्र नहीं है। इससे स्तालिनवाद की भयंकरताओं का स्पष्टीकरण हो जाता है। खुली आलोचना द्वारा उनसे आपकी रक्षा हो जाती।"

"क्या आप अपनी सरकार की आलोचना कर सकते है?"

"अवश्य"—मैने उन्हें आश्वासन दिया—"मै राष्ट्रपति आइसनहावर के विरुद्ध लेख लिख सकता हूँ।"

"हॉं, किन्तु क्या वह प्रकाशित भी होगा?"—साधारण वस्त्रों वाली लड़की ने विजयसूचक मुद्रा से प्रश्न किया।

"दोनों लड़कियॉं अंग्रेजी पढ़ रही थीं और साधारण लड़की के पायनियर दल ने उससे कैलिफोर्निया के एक लड़के द्वारा, जो पत्र व्यवहार के लिए एक मित्र की खोज कर रहा था, भेजे गये पत्र का उत्तर देने के लिए कहा था। सड़क से आरबत स्क्वेयर जाते हुए हम बीच में तर्क करने और उत्तर तैयार करने के लिए रुकते जाते थे।

"अपने स्वदेशवासियों से कहिये कि हम शांति चाहते हैं।"—विदा होते समय उन्होंने मुझे आदेश दिया।

ये तीनों नवयुवतियॉं सोच नहीं रही थीं, प्रतिध्वनि कर रही थीं।

जब मैं १९२२ में प्रथम बार सोवियत रूस में आया था, तब 'रेडस्क्वेयर' तक जाने वाली सड़क के मध्य में एक गिर्जाघर दिखायी देता था, जिसमें 'आइबेरियन वार्जिन' की एक पवित्र मूर्ति रखी हुई थी और उसके सामने एक लाल दीवार पर यह नारा लिखा हुआ था—"धर्म जनता के लिए अफीम के

तुल्य है।" अब न तो गिर्जाघर रह गया है और न नारा । इन अनेक वर्षों से अफीम देने का काम क्रेमलिन ही करता रहा है। असंख्य मस्तिष्क सुषुप्त पड़े हुए है।

"हम अभी ईथर से बाहर ही निकल रहे है।"—एक महिला पत्रिका-सम्पादिका ने मुझसे मास्को में कहा ।

वह सचमुच ईथर से बाहर निकाल रही थी और उसके समान अनेक व्यक्ति हैं, किन्तु पत्रों और रेडियो द्वारा अभी तक मुक्त रूप से अफीम का वितरण देख कर आश्चर्य होता है कि क्या स्तालिन-विमुखता की अल्प मात्रा क्लान्त, रुचिहीन और अहंकारी भौतिकवादी को, जो वेशभूषा, गृह-सज्जा, कला, साहित्य और नैतिकता में विक्टोरिया-युगीन और निम्न पूँजीवादी रुचि और मानदण्ड रखता है जागृत करने के लिए पर्याप्त है ।

सोवियत समाज एक अत्यन्त लोभी प्रतिद्वन्द्वात्मक समाज है, जो आत्मस्वार्थ, अस्तित्व-रक्षा के लिए संघर्ष, सफलता के लिए प्रयास और अनियंत्रित सामाजिक संगठन के समस्त स्वरूपों के सरकारी तौर पर निरुत्साहित किये जाने से विखण्डित है। जनतंत्र में मानवीय सम्पर्क होता है; तानाशाही मनुष्यों को एक दूसरे से पृथक् कर देती है। एक चौथाई शताब्दी तक स्तालिन की निरंकुशता ने मित्रता, विश्वास और व्यक्तिगत निष्ठा को निश्चय ही दुर्लभ वस्तुएँ बना दिया । व्यक्ति को स्वोन्मुख और परिवारोन्मुख बना दिया गया । इस मनोवृत्ति में शीघ्र परिवर्त्तन नहीं होगा ।

मैं ५८—वर्षीय इंजीनियर श्री आर. से मिलने गया, जो कम्यूनिस्ट पार्टी के एक सदस्य हैं। उन्होंने क्या कहा? "मैं प्रति महीने चार हजार रूबल कमाता हूँ, चौबीस सौ रूबल मुझे पेन्शन के रूप में मिलते हैं यह एक पुस्तक है, जिसमें मेरा एक लेख छपा हुआ है, जिससे मुझे २५ हजार रूबल प्राप्त हुए । नीचे मेरी पोबेडा (चार स्थानों वाली सोवियत-निर्मित कार) है। यदि गैरेज बड़ा होता, तो मैं एक बड़ी 'जिस' कार खरीद लेता। हाल में ही मै काकेशश रिवेरा पर दो महीनों की छुट्टी व्यतीत कर आया हूँ । ऊपर आइये और मेरा निवास-स्थान देखिये, मेरे तथा मेरी पत्नी के लिए पॉच कमरे, पियानो, रेडियो, टेलिविज़न ।"

मैंने न्यूयार्क के नये पूँजीपतियों से इस प्रकार की बातचीत सुनी है। कम्यूनिस्ट इंजीनियर ने किसी आदर्श की कभी चर्चा नहीं की। उच्चतर वर्ग के लिए भोग-विलास के साधन अफीम के ही अग हैं।

मैंने इस कम्यूनिस्ट से एक पारस्परिक मित्र, एक भूतपूर्व उच्च सोवियत अधिकारी और पार्टी के सदस्य के सम्बन्ध में बताया, जो १९३९ में भाग कर स्टाकहोम चला गया था, जहाँ वह एक स्वीडिश इंजीनियरिंग प्रतिष्ठान में शामिल हो कर धनी बन गया था, किन्तु, मैंने बात चीत को जारी रखते हुए कहा कि उसने सार्वजनिक रूप से सोवियत संघ के विरुद्ध कभी कुछ नहीं कहा अथवा लिखा। "तो उसने हमारे देश की निन्दा नही की!"—कम्यूनिस्ट ने मत व्यक्त किया— "बहुत अच्छा। १९३९ में मैंने उसके कार्य की निन्दा की होती, अब मैं उसे समझता हूँ। उसने अपने तथा अपनी पत्नी और बच्चों के जीवन की रक्षा की।"

ख्रुश्चेव के गुप्त भाषण ने श्री आर० को सिखा दिया था और उन्हें कम्यूनिज्म के विरोध के प्रति, बशर्तें कि वह रूस-विरोधी न हो, अधिक सहिष्णु बना दिया था। वास्तव में वे कम्यूनिस्ट पार्टी के एक सदस्य मात्र थे, कम्यूनिज्म में वास्तविक विश्वास करने वाले नहीं। आदर्श का लोप हो गया था। वे रूस पर शासन करने वाले महायंत्र के एक पुर्जे के रूप में कार्य कर रहे थे।

१९२० में मास्को सोवियत (टाउनहाल) के सामने के उद्यान में स्वतंत्रता का प्रतिनिधित्व करने वाली सीमेण्ट की एक छोटी-सी प्रतिमा खड़ी थी और उसके आसन पर यह पुराना वाक्य लिखा हुआ था—"जो काम नहीं करता, उसे भोजन नहीं मिलेगा", जो सोवियत संविधान की एक धारा भी है। अब उसके स्थान पर संगमरमर के एक विशाल आधार का निर्माण किया गया है, जिस पर एक सामन्त-वादी शासक राजकुमार यूरी दोलोगोरुकी की, जिसने, अस्पष्ट इतिहास के अनुसार आठ शताब्दियों पूर्व, मास्को नगर की स्थापना की थी, अश्वारोही मूर्ति की स्थापना की गयी है। मुझे यह परिवर्तन पूर्व आदर्शों का परित्याग कर स्वेच्छाचारी सत्ता पर वर्त्तमान समय में दिये जाने वाले बल का, महत्वाकाक्षा का परित्याग कर परम्परा को ग्रहण किये जाने का, सभी के लिए संयम और मितव्ययिता का परित्याग कर थोड़े से व्यक्तियों के लिए भोग-विलास का प्रतीक प्रतीत हुआ।

स्तालिन ने जनसंख्या के अधिकांश भाग के कल्याण का बलिदान कर इस्पात लोहा, कोयला, तेल, (शस्त्रास्त्रों के लिए) मशीनों के पुर्जों का उत्पादन करने वाले भारी उद्योगों के विस्तार, यंत्रीकृत कृषि, अधिक फैक्टरियों, यातायात की सुविधाओं आदि द्वारा राष्ट्रीय शक्ति की दिशा में जो मार्ग निर्धारित किया था, उसका अनुसरण स्तालिन के उत्तराधिकारी भी स्तालिन के समान ही कर रहे है। क्रेमलिन अपने उद्देश्य को गुप्त नहीं रखता। कुजनेत्स्की मोस्ट में पुस्तकों की एक दूकान की खिड़की पर तथा अन्य स्थानों पर मैंने एक सरकारी पोस्टर देखा, जिसका शीर्षक

था—" यह छठीं पंचवर्षीय योजना होगी।" उसके नीचे, पोस्टर में ६ सोवियत पंचवर्षीय योजनाओं में किये गये पूजी-विनियोजन के आंकड़े दिये गये थे। अक्तूबर १९२८ से प्रारम्भ होने वाली प्रथम योजना में ५८ अरब रूबल का पूंजी-विनियोजन किया गया था; द्वितीय में १३२½ अरब रूबल का, तृतीय में १३१ अरब का; चतुर्थ में ३११ अरब का; पंचम में ५९४ अरब का; षष्ठम में—१९५६ से १९६० तक—९९० अरब की पूँजी लगायी गयी थी। इस प्रकार के विशाल व्यय से मुद्रा-स्फीति की उत्पत्ति तथा जीवन-स्तर में कमी का होना आवश्यक है।

एक निर्मम, साहसपूर्ण, निरन्तर, खुले रूप से घोषित की जानेवाली नीति के इन अपरिहार्य प्रभावों का प्रतिकार करने के लिए सोवियत शासन ने विभिन्न प्रकार के साधनों का उपयोग किया है; जैसे—स्तालिन के अन्तर्गत आतंक का और उसके उत्तराधिकारियों के अन्तर्गत उस आतंक की स्मृति का; राष्ट्रीय शक्ति के प्रति देशभक्तिपूर्ण गर्व; सभी के लिए अधिक अच्छे भविष्य का वचन; विचार-क्षमता आलोचनात्मक दृष्टिकोणों और संशयों को समाप्त करने के लिए मस्तिष्क-प्रक्षालन; सही-सही तुलनाओं को रोकने लिए बाह्य जगत से सम्पर्क-विच्छेद; और, सम्भवतः वर्तमान समय में जो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात है, वह है अच्छे जीवन-यापन और राजनीतिक सुरक्षा के लिए उच्चतर वर्ग की इच्छाओं की पूर्ति। इस वर्ग के एक करोड़ से दो करोड़ तक व्यक्ति जन साधारण के असन्तोष और नेतावृन्द के मध्य एक तटस्थ, पृथक स्तर का काम करते है। उच्चतर वर्ग अर्थ-व्यवस्था की देख-भाल करता है, सरकार का संचालन करता है, 'अफीम' का वितरण करता है। जब तक यह वर्ग अनुदार, वफादार और इच्छुक बना रहेगा, तब तक क्रेमलिन के सामूहिक नेतृत्व को सोवियत संघ में प्रारम्भ की गयी सीमित, नियंत्रित स्तालिन-विमुखता के परिणामों से भयभीत होने की आवश्यकता नही है।

पोलैण्ड और हंगरी में रूस-विरोधी आन्दोलन बुद्धिवादियों और छात्रों द्वारा, जो अपने देशों से प्रेम करते है, तथा जिन्हें स्वतंत्रता की याद है, प्रज्ज्वलित किये गये थे। सोवियत संघ में क्रान्ति की प्रेरणा देशप्रेम और अत्यधिक स्वतंत्रता के भय के कारण मद्धिम पड़ गयी है। उच्चतर वर्ग उस स्वतंत्रता को चाहता है, जो गुप्त पुलिस के दुर्व्यवहारों से संरक्षण का रूप धारण करती है, किन्तु वह उस पूर्ण स्वतंत्रता को नहीं चाहता, जो कृषकों और श्रमिकों को विवशता एवं शोषण से मुक्त होने की अनुमति प्रदान कर वर्त्तमान आर्थिक व्यवस्था को विध्वस्त कर देगी।

भयंकर दुस्स्वप्न समाप्त हो गया है, कुछ व्यक्ति तन्द्रा से जागृत हो रहे है, हंगरी और पोलैण्ड ने ताजे, सुखद वायु का काम किया है, किन्तु अफीम का नशा अब भी प्रबल बना हुआ है।

मैंने मास्को में जो सबसे बुरी बातें सुनीं, उनमें से एक यह बात थी कि १९३८–१९३९ में राज्यीय अधिकारियों और बुद्धिजीवियों की येजहोव द्वारा की गयी हत्याओं के समय उपन्यासकारों ने अपनी पाण्डुलिपियों को नष्ट कर दिया, जिससे कहीं उन्हें आपत्तिजनक न मान लिया जाय। लोगों ने अत्यन्त निर्दोष पत्रों को भी जला दिया। शैथिल्य की वर्तमान मनःस्थिति में इस बात के घटित होने की सम्भावना नहीं है। इसके अतिरिक्त साहित्यिक पत्रिकाओं के सम्पादकीय कार्यालयों से बाहरी सेंसर को, जो वास्तव में गुप्त पुलिस का एजेण्ट था, हटा दिया गया है और अब पत्रिका में जो कुछ प्रकाशित होता है, उसके लिए सम्पादक उत्तरदायी होता है। किसी लेख को प्रकाशित करने अथवा अस्वीकृत करने की वांछनीयता पर विचार करते समय वह अपने आपसे कह सकता है :

सेंसर ने इसे निषिद्ध कर दिया होता; यदि मैं इसका उपयोग करूँ, तो मुझे फटकार बतायी जा सकती है, मुझे बर्खास्त भी किया जा सकता है, किन्तु मैं गिरफ्तार नहीं किया जाऊँगा। समय आने पर यह विचार सम्पादकों को कुछ अधिक साहसी बना सकता है। जब कि एक पीढ़ी से कोई राहत नहीं मिलती रही है, तब अल्प मात्रा में मिलनेवाली इस प्रकार की राहत भी सन्तोष ही प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त, लेखकों की आमदनी अत्यन्त अधिक होती है; मैंने एक ऐसे लेखक से बातचीत की, जो प्रतिवर्ष दस लाख रूबल कमाता है। यह भी अफीम निर्माताओं के लिए अफीम है।

मैं सोवियत प्रणाली को कोई क्षति पहुँचे बिना ही सोवियत बुद्धिजीवियों को बहुत अधिक स्वतंत्रता मिलने की परिकल्पना कर सकता हूँ। मास्को के लेखकों और पेशेवर व्यक्तियों ने मेरे मन पर यह प्रभाव नहीं उत्पन्न किया कि, वे सरकारी राजनीतिक विचारधारा से विचलित होने का विचार रखते हैं। वे आलोचना कर सकते हैं अथवा संशय व्यक्त कर सकते हैं, किन्तु वे, विशेषतः भ्रमोत्पादक स्तालिन-विमुखता की जटिलताओं की वर्तमान अवधि में, विरोध नहीं करेंगे। पार्टी के वैचारिक पत्र मास्को के "कम्यूनिस्ट" के अगस्त १९५६ के अंक में बताया गया कि उसे ऐसे अनेक पत्र प्राप्त हुए थे, जिनमें पूछा गया था कि क्या मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धान्त के अध्ययन में स्तालिन की रचनाओं का प्रयोग करना उचित है। ये चतुर पत्र-लेखक अपने कदम का निरीक्षण कर रहे हैं। पत्रिका ने उन्हें बताया कि वास्तव में स्तालिन की साहित्यिक कृतियों का कौन-सा अंश रूढ़िवादी है। उसने घोषित किया—"स्तालिन एक महान मार्क्सवादी तत्त्व-विश्लेषक था।" मैं

अपने मित्रों की कन्धे हिलाते हुए तथा यह कहते हुए कल्पना करता हूँ कि "अब मै पूर्णतया भ्रम में फँस गया हूँ।" बौद्धिक सहगमन को प्रचलित करने के लिए यही उपयुक्त वातावरण है।

"कम्यूनिस्ट" के उसी अंक में जे० ग्रेबर नामक एक कला-समालोचक को प्रभाववाद का बचाव करने के लिए डॉट बतायी गयी है। लेखक उसकी निन्दा करते हुए कहता है–" वह वी० टी० लेनिन की शिक्षाओं को भूल जाता है।

पार्टी द्वारा निर्धारित मार्ग पर चलते हुए अर्थात् समय व्यतीत करते हुए बुद्धि जीवी के लिए सहगमन करना आवश्यक है और उसे " जीवन में और अधिक सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए "। दूसरे शब्दों में यों कहा जा सकता है कि उसे पंचवर्षीय योजना के समर्थन में लिखना, अभिनय करना, चित्र बनाना और शिल्प गढ़ना चाहिए। क्रेमलिन अपने सेवकों को मुक्त नहीं कर रहा है। अतः वह उन्हें अधिक स्वतंत्रता प्रदान कर सकता है।

मानवीय भावना में तथा साहित्य एवं संगीत की महान रूसी परम्परा में विश्वास से यह आशा करने की प्रेरणा प्राप्त होती है कि किसी दिन सोवियत बुद्धिवादी पार्टी और राज्य की दासता के अन्तर्गत अशान्त हो जायेगे। पोलैण्ड और हंगरी के लेखकों एवं पत्रकारों के उदाहरण की प्रतिध्वनि मास्को और लेनिनग्राड में हुई है। विश्वविद्यालयों के विभागों में एवं लेखकों के मध्य होने वाली हलचलें प्रकाश में आयी है, किन्तु वे सामान्यतः अधिकारियों द्वारा स्वीकृत सीमाओं के भीतर ही रहती हैं। पराधीनता अब भी बहुत अधिक है, बौद्धिक स्वतंत्रता दुर्लभ है। स्तालिन जिस शाल्यिक प्रक्रिया से मनुष्यों को काटकर कठपुतलियों के आकार का बना देता था, उसे पलटना कठिन कार्य है।

जान स्टुअर्ट मिल ने १८५९ में अपने ग्रन्थ " स्वतंत्रता के सम्बन्ध में ', में लिखा था कि " जो राज्य अपने नागरिकों को अपने हाथों में अधिक आज्ञाकारी साधन बनाने के लिए, भले ही वह लाभदायक उद्देश्यों के लिए ऐसा करता हो, कुण्ठित कर देता है, उसे ज्ञात होगा कि तुच्छ मनुष्यों द्वारा वास्तव में कोई भी महान सफलता नहीं प्राप्त की जा सकती।" लगभग एक शताब्दी बाद रूस में संस्कृति उसी स्थिति में है। जहां मनुष्य को गौण स्थान प्राप्त होता है, वहां कला और साहित्य का विकास अवरुद्ध हो जाता है।

सोवियत संघ पर दो व्यक्तियों, एक जर्मन और एक रूसी, कार्ल मार्क्स और आइवन पावलोव का शासन है। निश्चय ही कम्यूनिस्टों ने मार्क्स को अपनी कल्पना

के सांचे में ढाल लिया है और इस परिवर्तित मार्क्सवाद को अपनी राजनीति और अर्थशास्त्र पर शासन करने की अनुमति दे दी है। पावलोव का प्रभाव इसकी अपेक्षा कहीं बहुत अधिक है। उसके कारण सोवियत रूस ने पावलोव के बाद के समस्त मनोविज्ञान को अस्वीकृत कर दिया है। उसका मार्क्सवाद के साथ पूर्ण रूप से मेल खाता है : स्थितियाँ ही मानसिक दृषिकोण एवं स्नायविक प्रतिक्रियाओं को निश्चित करती है। उसने दिखाया कि यदि भोजन-सामग्री के दिखायी देने और साथ ही साथ घण्टी के बजने पर किसी कुत्ते की लार बहुधा टपकती रहती थी, तो वह केवल घण्टी के बजने पर भी टपकेगी। कम्यूनिस्ट शासन ने नर-नारियों और बालकों को इसी प्रकार का बनाने का प्रयास करने में लगभग चार दशाब्दियां व्यतीत कर दी है। उसने " शांति ", " फासिज्म ", " वाल स्ट्रीट ", " समाजवाद ", " लेनिनवादी ", " कम्यूनिस्ट पितृदेश " और " सर्वहारा वर्ग की तानाशाही " जैसे शब्दों के एक पूरे शब्दकोश का ही निर्माण कर डाला है, जिनके प्रति नागरिक द्वारा क्रोध अथवा उत्साह की एक निर्धारित मात्रा के साथ अपनी प्रतिक्रिया के व्यक्त किये जाने की कल्पना की जाती है। उसने प्रोत्साहन प्रदान करने वाली सामग्रियों — भय और भौतिक पुरस्कार और प्रचार—की एक शृंखला भी स्थापित की है, जिससे लार टपकती रहे। कृत्रिम यान्त्रिक साधनों द्वारा दास मनोवृत्ति को प्रेरित करने का यह महत्प्रयास इतना अधिक सफल हुआ है, जितना मानव प्राणियों से प्रेम करने वाले किसी भी व्यक्ति ने विश्वास नहीं किया होगा, किन्तु इन वर्षों में कुछ कुत्ते स्वर्गीय प्रोफेसर के शिष्यों को मूर्ख बनाने का ढंग सीख गये हैं। वे सार्वजनिक रूप से लार टपका सकते है, किन्तु अपने हृदयों में वे जानते हैं कि यह केवल घण्टी बज रही है, भोजन की सामग्री नहीं है।

सोवियत सरकार की सत्ता महान है। फिर भी, उस सत्ता को विश्वास का समर्थन नहीं प्राप्त है। सोवियत प्रणाली ने बाह्य शक्ति पर विजय प्राप्त कर ली है और आन्तरिक शक्ति को खो दिया है। यह सामाजिक ह्रास की एक दृश्य प्रक्रिया का अंग है। इस बात का संकेत किसी भी वस्तु से नहीं मिलता कि सोवियत क्रान्ति ने एक नये प्रकार के मानव-प्राणी को उत्पन्न किया है अथवा पुराने प्रकार के मानव-प्राणी में ऐसा सुधार कर दिया है, जिससे वह उच्चतर वस्तुओं की आकांक्षा करने लगे, जीवन के सम्बन्ध में अपने दृषिकोण को उच्च बनाये, अपनी सामाजिक दृष्टि का विस्तार करे, अपनी जीवन-पद्धति को शुद्ध बनाये, अथवा मनुष्य, अथवा प्रकृति अथवा कला के प्रति अपेक्षाकृत अधिक प्रेम रखे। किसी भी नयी वस्तु का जन्म नहीं हुआ है और प्राचीन नीरस एवं परिश्रान्त है।

अध्याय ९

सत्ता और निर्धनता

सोवियत मूल्यों का इसके अतिरिक्त कोई अर्थ नही है कि वे वस्तुओं की किस्म के साथ (जिसका खरीद के समय सही-सही मूल्यांकन न तो ग्राहक और न दूकानदार कर सकता है) और व्यक्तिगत आय के साथ सम्बन्धित होते है। सोवियत अर्थव्यवस्था एक धनाश्रित अर्थ-व्यवस्था है और जीवन-निर्वाह अन्य प्रत्येक स्थान की भांति अर्जन पर निर्भर करता है।

सोवियत संघ में मजदूरी और वेतन में अत्यन्त व्यापक विभिन्नता है और सरकार आंकड़ों को प्रकाशित करने से घबड़ाती है। फिर भी, उपलब्ध आंकड़ों से कुछ निष्कर्षों पर पहुँचने में सहायता मिलती है।

९ सितम्बर, १९५६ को सोवियत सरकार, कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और ट्रेड यूनियनों की राष्ट्रीय केन्द्रीय सोवियत ने एक आदेश पर हस्ताक्षर किये, जिसके द्वारा १ जनवरी १९५७ से फैक्टरियों, निर्माण-कार्य यातायात और संवाद-परिवहन में नियुक्त मजदूरों और क्लर्कों के लिए तीन सौ से साढ़े तीन सौ रूबल तक का मासिक वेतन निर्धारित किया गया था। आदेश में कहा गया था — "औसत रूप से मजदूरों और कर्मचारियों की जिन श्रेणियों का संकेत किया गया है, उन समस्त श्रेणियों के लिए की गयी वेतन-वृद्धि लगभग ३३ प्रतिशत के बराबर है।" (दूसरे शब्दों में, उन्हें प्रति मास २२५ और २६४ रूबल के बीच मिलता था।) आदेश में घोषित किया गया है कि १९५७ में सरकार को इस ३३ प्रतिशत वृद्धि पर आठ अरब रूबल व्यय करने पड़ेंगे। (अर्थात् अस्सी लाख से अधिक सोवियत मजदूर और सोवियत कर्मचारी इस निम्नतम श्रेणी के अन्तर्गत आते है। सोवियत श्रमिक वर्ग की कुल संख्या ४ करोड़ ८० लाख है।)

इस कानून का स्वागत जोरदार कम्यूनिस्ट प्रचार के साथ किया गया। अग्रलेखों में पार्टी और सरकार की प्रशंसा की गयी। मजदूरों ने राज्य को कृत्रिम उत्साह के साथ धन्यवाद दिया। इन मजदूरों में से कीव की एक स्ट्रीटकार-कण्डक्टर थी, दूसरा तिफ़लिस की एक सिल्क मिल का कर्मचारी था और तीसरी लेनिनग्राद् की एक सफाई करने वाली महिला थी। यदि कीव की ट्राली-कण्डक्टर नागरिका ग्रोमादस्काया और कुछ न खाकर दिन में केवल एक अण्डा खाये, तो

इसके लिए उसे अपनी आय का दशमांश व्यय करना पड़ेगा; यदि वह प्रति दिन एक पौण्ड सब से सस्ती काली रोटी खाये, जो सामान्यतः एक निर्धन रूसी खाता है, तो केवल इतने में ही उसके मासिक वेतन का बीसवाँ भाग समाप्त हो जायगा।

इससे प्रत्येक छै सोवियत शहरी मजदूरों में से एक के निम्न जीवन-स्तर का कुछ आभास मिलता है।

शेष पांच षष्टमांश मजदूरों में से कुछ की स्थिति बहुत अधिक अच्छी नहीं हैं। मास्को के 'इजवेस्तिया' ने २६ अक्तूबर १९५६ को कर्मचारियों की संख्या में कमी करने के लिए सरकार के प्रयास का विवरण प्रकाशित करते हुए लिखा— "अकेले गत वर्ष में ग्लावमोस्सत्राय (केन्द्रीय मास्को भवन-निर्माण-संगठन) ने ६ हजार सहायक मजदूरों को मुक्त किया, जिनके वार्षिक जीवन-निर्वाह पर ४ करोड़ रूबल व्यय हुए।" यह प्रत्येक मजदूर पर एक महीने में ५५५ रूबल के व्यय के बराबर हुआ, जिसका लगभग तीस प्रतिशत भाग सामाजिक बीमा, सामाजिक चिकित्सा आदि के लिए व्यय हुआ। अतः प्रत्येक व्यक्ति को घर ले जाने के लिए जो मासिक वेतन मिलता है, वह ३६० रूबल है। प्रति वर्ष कम से कम पन्द्रह दिन की आमदनी का न्यूनाधिक रूप से अनिवार्यतः सरकारी ऋणों में लगाने से वास्तविक वेतन में और भी अधिक कमी हो जाती है। और, प्रत्येक सोवियत शहरी मजदूर डेढ़ आश्रितों का भरण-पोषण करता है।

एक टैक्सी-ड्राइवर ने मुझसे बताया कि उसके पास १८० वर्गफुट क्षेत्रफल का एक कमरा है, जिसमें वह अपनी रुग्ण पत्नी, एक सोलह-वर्षीया पुत्री और अपनी माता के साथ रहता है; यदि वह सप्ताह में ६ दिन औसतन ढाई सौ रूबल प्रति दिन भाड़ा कमाता है, तो वह महीने में आठ सौ रूबल कमाता है; यदि वह इससे अधिक भाड़ा लाता है, तो वह एक हजार रूबल बना लेता है। उसे समय-समय पर बख्शीश भी मिलती रहती है। टैक्सी-ड्राइवर और कोयला-खनिक सोवियत श्रमिक वर्ग के रईस है। 'न्यूयार्क टाइम्स' के वेल्स हैंजेन ने अक्तूबर १९५६ में दोनेत्ज की कोयला-खान से लिखा था कि खनिक प्रति माह दो हजार रूबल तक कमा लेते है—जो इस बात पर निर्भर करता है कि वे कितना कोयला निकालते हैं। क्रान्ति के बाद से खानों में श्रमिक स्थिति अनिश्चित ही रही है; लाखों मजदूर आते हैं और स्थिति की खराबी के कारण, विशेषतः निवास-स्थानों की व्यवस्था की खराबी के कारण भाग जाते है; इस अरुचिकर कार्य के लिए एकत्र किये जाने वाले युवक कम्यूनिस्ट स्वयंसेवक भी

असमय ही भाग जाते है। अत: अत्यधिक अतिरिक्त धन का प्रलोभन दिया जाता है।

प्रायः समस्त सोवियत श्रमिक वर्ग को फुटकल काम के हिसाब से वेतन दिया जाता है, जिससे औसत मजदूरी के सम्बन्ध में सोवियत गोपनीयता का भेदन करना अत्यन्त कठिन कार्य है। ट्रेड यूनियनें दीर्घकालीन राष्ट्रीय कांग्रेसों में बड़ी-बड़ी बातें करती है, किन्तु वे मजदूरी के विषय की चर्चा नही करती।

मास्को के रूसी भाषा के पत्र "वर्ल्ड ट्रेड यूनियन मूवमेण्ट" के अगस्त १९५६ के अक में प्रकाशित एक लेख में पश्चिम की स्वतंत्र ट्रेड यूनियनों के मुखपत्र में किये गये एक तथाकथित निन्दात्मक प्रहार के विरुद्ध सोवियत श्रमिकों की स्थिति का बचाव किया गया है, किन्तु यद्यपि लेख मे समाजवाद के अन्तर्गत श्रम करने के उनके सौभाग्य के सम्बन्ध में अनेक घोषणाएँ की गयी हैं तथापि उनकी मजदूरी के सम्बन्ध में धन-सम्बन्धी कोई आंकड़े नही दिये गये है।

१९५६ में संघीय मंत्रि परिषद के केन्द्रीय साख्यिकी प्रशासन द्वारा प्रकाशित २६२ पृष्ठों की "समाजवादी सोवियत गणराज्य-संघ की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था" (The National Economy of the U S. S. R.) नामक पुस्तक में मजदूरी के विषय को केवल आधे पृष्ठ में समाप्त कर दिया गया है और उसमें इससे अधिक कुछ भी नही कहा गया है कि १९४० और १९५५ के बीच राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था में मजदूरों और कर्मचारियों की वास्तविक मजदूरी में ७५ प्रतिशत की वृद्धि हुई, जब कि अकेले औद्योगिक मजदूरों की वास्तविक मजदूरी में ९० प्रतिशत की वृद्धि हुई; इसके अतिरिक्त १९५० और १९५५ के बीच राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था में मजदूरों और कर्मचारियों की वास्तविक मजदूरी में ३९ प्रतिशत की वृद्धि हुई, और छठीं पंचवर्षीय योजना (१९५६-६०) में उनकी वास्तविक मजदूरी में "औसतन लगभग ३० प्रतिशत" की वृद्धि की जाने वाली है।

क्रेमलिन इस बात को अवश्य ही महसूस करता होगा कि यदि प्रगति के इस विवरण को रूबलों और कोपेकों में प्रस्तुत किया जाता, तो वह अधिक विश्वासोत्पादक होता। केवल प्रतिशत देने से धोखे के अतिरिक्त और किस उद्देश्य की सिद्धि होती है? यदि यह मान लिया जाय कि वृद्धि के जो प्रतिशत दिये गये हैं, वे सही है, तो रूबलों में दिये जाने वाले वेतन को छिपाने का एकमात्र कारण यही हो सकता है कि वेतन बहुत कम हैं।

रद्दियों, संकेतों, व्याख्याओं, न्यूनाधिक मात्रा में सम्भाव्य मूल्यों की गणनाओं, पुराने आंकड़ों और व्यक्तिगत यात्रा-विवरणों का प्रयोग करते हुए पश्चिम के पेशेवर

अर्थ-शास्त्री वर्षों से सोवियत मजदूर की औसत आमदनी के रहस्य का पता लगाने का प्रयास करते आ रहे है; उनके निष्कर्ष ४६ घण्टे के सप्ताह के लिए कम-से-कम पांच सौ रूबल और अधिक-से-अधिक साढ़े सात सौ और आठ सौ रूबल के बीच प्रतिमास तक पहुँचते है।

मै आठ सौ रूबल के अधिकतम और सम्भवत अत्यन्त अनुकूल अनुमान को ही लेता हूँ। सोवियत मूल्यों को दृष्टिगत रखते हुए क्रेमलिन का प्रतिशतों के पीछे छिपना उचित ही प्रतीत होता है।

(डालरों में गणना करने के लिए आठ सौ को चार रूबल से विभाजित करना और रूस में औसत मासिक मजदूरी २ सौ डालर मानना मूर्खतापूर्ण है क्योंकि ऐसी स्थिति में एक अण्डे का मूल्य २५ सेण्ट, सूती पायजामों के एक सूट का मूल्य ६६·७५ डालर और एक आइसक्रीम का मूल्य ५० सेण्ट बताना होगा।)

मै मास्को में जहा कही भी गया, वहां मैंने दूकानों की खिड़कियो में देखा, दूकानों में गया और एक नोट-बुक मे मूल्यो को दर्ज करता गया। मै उन्हें उसी अस्त-व्यस्त क्रम से पुनः उद्धृत कर रहा हूं: महिलाओं के सूती ड्रेस ५३५ रूबल, ४०८, ४९२, २८०, ८६·५०, और १०८; के वी. एन.—४९ टेलिविजन सेट ९५० से ८५० तक अंकित; रेडियो ११००, २२००, सोने की घड़ियों का मूल्य घटा कर १३ सौ से एक हजार कर दिया गया; वैकुअम क्लीनर २०४, १७०, ३००, २२०; छोटा गैस रेफ्रिजेरेटर (नार्थ # २) ६८०; बिजली की प्लेट २४; बिना बल्ब के बिजली का लैम्प ४८; बच्चोंकी गाड़ी २४८, २६०; बच्चों की बाइसिकिल १७०, बच्चों की तीन पहियो वाली साइकिल १२५, ६५; लिपस्टिक १०·५०; टेलिविजन-सेट ८४० से २२०० तक: ग्रामोफोन २१०, ८०, ३००; मुख-वाद्य ३०, ४०, २५, एक पिण्ट दूध १·२०: महिलाओं के वस्त्र ६७६, ३९०, २०३, ६१२; बिजली की केटली ९९, ७६·५०; आइसक्रीम कोन १·९५; सिल्वर-फाक्स स्टोल २७६२, २०५७; पुरुषों की रोएंदार टोपियां ३६०, ९२, २३१, ७०, ३१६; पुरुषों के स्ट्रा हैट ४५, ३३, फेल्ट हैट १५०, ६९; स्कूल की वर्दी के लिए आवश्यक लड़कों की टोपी २८ ९०, कपड़े की टोपियां ४३, ३२; पायजामे २६७; पुरुषों की कमीजें १०७, ९४, १३०; पुरुषों की चीन-निर्मित कमीजें दो अलग कालरों के साथ ६०, ६८·५०; साबुन की बट्टी ३, २·१०; क्लिनिकल थर्मामीटर ३·७५; रासायनिक गर्भ-निरोधक दवाए ३ रूबल में १०; वैकुअम क्लीनर ६५०, ४९५, बाइसिकिले ८९५, ९१५: लड़कों की बाइसिकिलें ४९५, ४३४, ४०४; एक पौण्ड मक्खन १४·२५, १४·५०, १३·७५; डच

पनीर १५ रूबल प्रति पौण्ड; एक पौण्ड केले डेढ़ रूबल; एक अण्डा एक रूबल; एक पौण्ड काली रोटी एक रूबल; एक पौण्ड सफेद रोटी डेढ़ रूबल; वोडका ५० रूबल प्रति क्वार्ट; सूअर का गोश्त दस रूबल प्रति पौण्ड; चाय ३० रूबल प्रति पौण्ड; आलू १ रूबल का दो पौण्ड; सेब चार रूबल प्रति पौंड; शक्कर ४·८० प्रति पौण्ड; औरतों के कैपरान मोजे १६·५०, २२·१० और ३५ रूबल; औरतों के जूते ९८ से ४०० रूबल तक; पुरुष का सूट १००० से १५०० रूबल तक; कुटीर पनीर १० रूबल प्रति पौण्ड; राई की रोटी १ ६५ रूबल मे दो पौंड; सूअर की चर्बी १३ रूबल प्रति पौण्ड; औरतों के बुने हुए ऊनी जम्पर २७५, ३६० रूबल; और इसी प्रकार अन्य मूल्य।

इन मूल्यों को देखते हुए औसत मजदूरी, चाहे वह ५०० रूबल हो चाहे ८०० रूबल हो, निर्धनता की ही द्योतक मानी जायगी और औसत से कम मजदूरी पाने वाला वर्ग, जिसकी संख्या नगरों में आश्रितों सहित कम-से कम साढ़े तीन करोड़ है, अत्यन्त संकट का जीवन व्यतीत करता है। उदाहरण के रूप में दो सूचनाक यहां दिये जा रहे हैं; यदि औसत सोवियत मजदूर और उसके आश्रित व्यक्ति वर्ष में प्रति व्यक्ति उतने दूध का सेवन करें, जितने दूधकी खपत ग्रेट ब्रिटेन में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष होती है, तो औसत सोवियत मजदूर को प्रति वर्ष दूध के लिए अपने एक महीने के वेतन का व्यय करना होगा......मास्को के 'लिटरेरी गजट' के १ सितम्बर १९५६ के अंक में बताया गया था कि, सरकार-संचालित नये बोर्डिंग स्कूलों में प्रत्येक विद्यार्थी की देख-रेख पर प्रति महीने १००५ रूबल व्यय होंगे।

मास्को के मेरे नवयुवक मित्रों आइवन और सोन्या को १४०० रूबल मासिक मिलते हैं। उनका भाड़ा अत्यन्त कम है, फिर भी उनका जीवन निर्वाह बड़ी मुश्किल से होता है। आइवन के धनिक चाचा ने उसे उपहार के रूप में एक अत्युत्तम सूट (२३ सौ रूबल आयात किये गये चेकोस्लोवाक ऊनी वस्त्र के लिए और एक हजार रूबल एक निजी दर्जी द्वारा सिलाई के लिए) प्रदान किया और पूरी गर्मी उन्होंने मास्को के बाहर उसके लकड़ी के बंगले में अतिथियों के रूप में बितायी।

मास्को में राज्य की सत्ता और जनता की निर्धनता के बीच कठोर असम्बद्धता की अनुभूति होती है। ये दोनों कारण और कार्य है। सरकार ने १९६० तक भारी उद्योग के बलात् विस्तार की जो नीति घोषित की है, उसका अर्थ यह है कि जनता की और अधिक पिसाई होगी, जिससे राज्य की शक्ति का निर्माण किया जा सके। स्तालिन ने १९२८ में इस नीति को प्रारम्भ किया था और तब से अविचलित रूप से इस नीति का अनुगमन किया जाता रहा है। यही कारण है कि श्रमिक वर्ग

की स्वतंत्र ट्रेड यूनियनें नहीं हैं और रूस में स्वतंत्रता नहीं है। विरोध का अधिकार प्रदान करने से सरकार के उद्देश्य में हस्तक्षेप होगा। उद्देश्य सीधा-सादा है: मजदूरों को उनके श्रम के लिए यथा सम्भव कम से कम मजदूरी दी जाय तथा किसानों को उनके उत्पादन के लिए यथा सम्भव कम से कम मूल्य दिया जाय और बची हुई धन-राशि को भारी उद्योग और शस्त्रीकरण में लगाया जाय।

समस्त इतिहास में राष्ट्रों ने विजय प्राप्त करने के लिए युद्धकालीन मितव्ययिता को स्वीकार किया है। उच्चतर वर्ग को छोड़ कर सोवियत जनता प्रायः तीस वर्षों से अनिच्छापूर्वक मितव्ययिता और संयम का जीवन व्यतीत करती आ रही है। मै ऐसे सोवियत नागरिकों से मिला, जो देशभक्त थे और ऐसे व्यक्तियों से मिला, जिन्होंने शान्तिपूर्वक आत्म-समर्पण कर दिया था; सभी स्वयं को परिश्रान्त अनुभव कर रहे थे। पथ लम्बा और बोझ भारी रहा है।

सोवियत जीवन का प्रत्येक पहलू नागरिक के स्वास्थ्य, भौतिक कल्याण और स्वतंत्रता की दृष्टि से कम्यूनिज्म के अत्यधिक मूल्य का प्रमाण प्रस्तुत करता है। सोवियत अर्थ-व्यवस्था की प्रत्येक शाखा धन और मानवीय प्रयास की दृष्टि से अत्यधिक व्यय-साध्य है। कारण सदा एक ही होता है · राज्य का स्थान सर्व प्रथम होता है और कम्यूनिस्ट अर्थ-प्रणाली अनुल्लंघनीय है, भले ही वह अक्षम हो। समस्त उपलब्ध ऑकड़े इस तथ्य को प्रकट करते है।

ऑकड़ों-सम्बन्धी सरकारी पुस्तिका में कहा गया है कि १९२८ और १९६० के बीच सोवियत रूस में कच्चे लोहे के उत्पादन में १६ गुना, इस्पात के उत्पादन में १६ गुना, कोयले के उत्पादन में १७ गुना और तेल के उत्पादन में १७ गुना वृद्धि हो जायगी, किन्तु रुई के सूत के उत्पादन में केवल २·७ गुना वृद्धि होगी। रूई का सूत अधिकांश सोवियत वस्त्रों और घरेलू कपड़ों का आधार है। थोड़े से क्षेत्रों को छोड़ कर रूस एक अत्यन्त ठण्डा देश है। पुस्तिका में बताया गया है कि १९५५ में ऊनी वस्त्रों का उत्पादन १ — $\frac{१}{३}$ गज प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष था। एक सूट और एक ओवर कोट के लिए किसी मानव-प्राणी को कितने वर्षों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी?

पुस्तिका में अन्नोत्पादन के सम्बन्ध में कोई ऑकड़े नहीं दिये गये है। उसमें केवल प्रतिशत बताये गये हैं: १९५० में सौ प्रतिशत, १९५१ में ९७ प्रतिशत, १९५२ में ११३ प्रतिशत, १९५३ में १०१ प्रतिशत, १९५४ में १०५ प्रतिशत और १९५५ में १२९ प्रतिशत। चूंकि जन-संख्या में प्रति वर्ष १·७ प्रतिशत की वृद्धि होती है, इसलिए यह स्पष्ट है कि फसल केवल १९५२ और १९५५ में

जन-संख्या-वृद्धि के अनुपात से बढी; इस बात का संकेत नहीं दिया गया है, कि उन वर्षों में भी वह देश के भोजन के लिए पर्याप्त रही अथवा नहीं।

किन्तु अत्यन्त सूक्ष्म और सतर्कतापूर्ण शुद्धता के साथ सोवियत जीवन का अध्ययन करने वाले विदेशी अर्थ-शास्त्री हवा में उड़ने वाले प्रत्येक तिनके को पकड़ते है: एक बार यूक्रेन में असाधारण फसल हुई और कुल राशि को टनों में बताया गया; मास्को की एक मासिक पत्रिका 'वोप्रोसी इकानामिकी' (आर्थिक प्रश्न) ने अपने जनवरी १९५६ के अक में अनजाने कुछ आंकड़ो को प्रकाशित कर दिया, जिनकी व्याख्या करने के लिए फिर भी, विशेषज्ञों की आवश्यकता है। लन्दन के विशेषज्ञ अपने निष्कर्षों को म्यूनिख के विशेषज्ञों के निष्कर्षों से मिलाते है और वे अपने निष्कर्षों को कैलिफोर्निया स्थित अपने सहयोगियों और मास्को-स्थित राजदूतावासों के निष्कर्षों से मिलाते है। उनके निष्कर्षों में बहुत थोडा अन्तर होता है और एक सर्वसम्मत निष्कर्ष प्रकट होता है।

१९१३ के बाद से प्रति एकड़ उत्पादन में १४ प्रतिशत की वृद्धि हुई है, यद्यपि, जैसा कि आंकड़ों-सम्बन्धी पुस्तिका में सही-सही घोषित किया गया है, जारशाही के समय में भूमि पर आदियुगीन तरीकों से खेती की जाती थी। उसमें कहा गया है कि बीस लाख लकड़ी के हलों और १ करोड़ ७० लाख लकड़ी के फावड़ों का प्रयोग किया जाता था, जब कि १९५५ में सोवियत कृषि के लिए ६४ लाख ३९ हजार ट्रैक्टर, फसल काटने और अनाज निकालने की ३ लाख ३५ हजार मशीनें, ५ लाख ४४ हजार लारियाँ और "लाखों जटिल फार्म मशीनें" उपलब्ध थीं। इसके अतिरिक्त रासायनिक उर्वरक के पहाड़ों जितने बड़े ढेर का उपयोग किया गया है, हजारों कृषि-विशेषज्ञों को ग्रामों में भेजा गया है, और कम्यूनिस्ट संगठन-कर्ताओं, आन्दोलन-कर्ताओं, 'शाक ब्रिगेडरों' और कोमसोमोल स्वयंसेवकों की अगणित वाहिनियां भोजन-संग्राम में सहायता प्रदान करने के लिए सामूहिक फार्मों पर उतरी हैं। इस धारणा के साथ कि इस प्रकार की आर्द्रता के बिना कोई फसल नही हो सकती, स्याही के जो सागर बहा दिये गये, उनका भी विस्मरण नहीं किया जाना चाहिए। इस प्रकार का कोई आडम्बर किये बिना ही और इसकी अपेक्षा बहुत कम व्यय से १९१३ और १९५२ के बीच प्रति एकड़ उत्पादन में पश्चिमी जर्मनी में २९ प्रतिशत की, फ्रांस में ४४ प्रतिशत की, स्वीडेन में ३१ प्रतिशत की और फिनलैण्ड में ८९ प्रतिशत की वृद्धि हुई। सोवियत सघ में एक कृषक अपने लिए तथा तीन और चार अन्य व्यक्तियों के लिए

अन्न का उत्पादन करता है; संयुक्त राज्य अमरीका में एक कृषक अपने लिए तथा उन्नीस और व्यक्तियों के लिए अन्न का उत्पादन करता है।

१९५३ में क्रेमलिन ने प्रकटत. महसूस किया कि उसके समक्ष रोटी का एक गम्भीर संकट उपस्थित हो गया है। उस समय, जैसा कि ख़ुश्चेव ने मास्को में कोमसोमोल की एक बैठक में, जिसका समाचार १० नवम्बर १९५६ को 'इजवेस्तिया' में प्रकाशित हुआ था, बताया था, उन्होंने मिकोयान के साथ इस सम्बन्ध में विचारों का आदान-प्रदान किया था कि "राष्ट्र को रोटी प्रदान करने के लिए हमारे पास क्या सम्भावनाएँ है।" उस समय राष्ट्र को पर्याप्त रोटी नही प्रदान की जा रही थी। सकट इतना बड़ा था कि ख़ुश्चेव की प्रेरणा के अन्तर्गत क्रेमलिन ने कजकस्तान में ८ करोड़ ८० लाख एकड़ बंजर, जो फ्रांस और इटली की समस्त कृषि-भूमि और अमरीका की कुल गेहूं कृषि-भूमि के बराबर है, भूमि को जोतने का विशाल, साहसपूर्ण और व्यवसाध्य अभिमान प्रारम्भ किया। विदेशी और यहां तक कि सोवियत नेता भी (मिकोयान उनमें से एक थे) इसके परिणामों के सम्बन्ध में सन्देह रखते थे, किन्तु कम से कम १९५६ में ख़ुश्चेव अपने जुए में विजयी हो गये; कजकस्तान में एक बढ़िया फसल उत्पन्न हुई। नवम्बर १९५६ में ख़ुश्चेव ने कोमसोमोल की बैठक में विजयपूर्वक सूचित किया कि एशिया के हृत्प्रदेश में स्थित कजकस्तान की बंजर भूमि से १९५६ में सरकार को एक अरब 'पूड' अन्न की प्राप्ति हुई थी। उस अवसर पर ख़ुश्चेव ने कहा था—"राष्ट्रीय जनसंख्या के संभरण के लिए (प्रतिवर्ष) लगभग दो अरब 'पूड' रोटीकी आवश्यकता है।" इस हिसाब से प्रति व्यक्ति को प्रति वर्ष दस 'पूड' अथवा ३६० पौण्ड की आवश्यकता है। तदनुसार, कजकस्तान की नयी भूमियों से आधी आवश्यकता की पूर्ति हुई। (विदेशी सशयवादी अब भी हँसते है और भविष्यवाणी करते हैं कि एक कजकस्तानी धूल-तूफान ख़ुश्चेव के राजनीतिक केश को बालू से पाट देगा)। धन, मनुष्यों और मशीनों की दृष्टि से इस अभियान पर अत्यधिक व्यय हुआ; ६ लाख स्वयसेवको को स्थायी कार्य के लिए खाली भूमि में जाने का आदेश दिया गया तथा और कई लाख व्यक्तियों को फसल काटने के लिए जाने का आदेश दिया गया, किन्तु सरकार न तो हिचकिचाट से काम ले सकती थी और न विलम्ब कर सकती थी। क्रान्ति के चालीस वर्षों बाद रोटी का अभाव खतरनाक सिद्ध हुआ होता।

बंजर भूमियों में वीज-वपन किये जाने से पूर्व सोवियत संघ में प्रति व्यक्ति लगभग सवा एकड़ भूमि में खेती होती थी। फिर भी, समस्त आधुनिक औजारों,

तरीकों और वैज्ञानिक पथ-प्रदर्शन के होते हुए भी रोटी का अभाव था। इससे केवल एक निष्कर्ष निकलता है: कृषक सामूहिक कृषि को अस्वीकार करते हैं और उसके लिए सर्वोत्तम प्रयास नहीं करते। वे निजी कृषि को अधिक पसन्द करते है। क्रेमलिन इस बात को जानता है और बड़े-बड़े वित्तीय पुरस्कार प्रदान कर व्यक्तिगत पहल को प्रोत्साहित करने का प्रयत्न कर रहा है। परिणाम सन्दिग्ध है। कृषक सामूहिक कृषि-प्रणाली के विरुद्ध हड़ताल पर है, विशेषत: उस समय से, जबसे हाल में ही, उसकी निजी एक एकड़ अथवा आधा एकड भूमि के, जिसमें वह स्वयं अपने लिए और बाजार में बेचने के लिए दूध, मुर्गी, सूअर, सब्जियों आदि का उत्पादन करता है, आकार को कम किया जा रहा है अथवा उसे बिल्कुल ही छीना जा रहा है।

प्रत्येक कम्यूनिस्ट किसान से, जिसे वह प्रकृत्या कम्यूनिस्ट-विरोधी पूँजीपति समझता है, घृणा करता है; बदले में किसान भी कम्यूनिस्टों से घृणा करता है। इस पारस्परिक शत्रुता से उत्पादन को क्षति पहुँचती है और राष्ट्र के जीवन-स्तर में निम्नता आती है, किन्तु किसान को स्वतंत्रता प्रदान करने से तानाशाही, जिसकी रक्षा और वृद्धि करना क्रेमलिन का प्रथम उद्देश्य है, पंगु हो जायगी।

विगत तीन अथवा चार वर्षों में बने सोवियत कानूनों और अधिनियमों से किसान को, जिसे अभी तक कुछ आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त है और इसीलिए जो एक विभीषिका है, मजदूरी के लिए भूमि जोतने वाले एक श्रमिक के रूप में परिवर्तित कर देने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति का संकेत मिलता है। इससे भी अधिक, किसान को एक दम से समाप्त कर डालने की प्रवृत्ति प्रतीत होती है। सामूहिकी-करण से मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनों का विकास हुआ है, जिनमें सम्प्रति लगभग २५ लाख व्यक्ति काम करते है। अक्तूबर १९५६ के "कम्यूनिस्ट" के अनुसार ये मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन "न केवल खेतों में, जहा उन्होंने बहुत पहले से एक निर्णायक शक्ति का रूप धारण कर लिया है, प्रत्युत पशु-पालन में भी समस्त बुनियादी प्रक्रियाओं को दिन-प्रति-दिन अधिकाधिक अपने हाथ में लेते जा रहे है।" मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन ट्रैक्टरों, फसल काटने और अन्न निकालने की मशीनों तथा अन्य मशीनों का संचालन करते है एवं सामूहिक फार्मों से बाहर और उनसे स्वतंत्र है। दूसरे शब्दों में, लाखों कृषक अनावश्यक बनते जा रहे है। ग्रामों में उनकी आवश्यकता पूर्वापेक्षा कम हो गयी है और नगरों में उनके लिए कोई स्थान नहीं है। यह एक अनिवार्य ऐतिहासिक प्रक्रिया हो सकती है, किन्तु वे इसका स्वागत

नहीं कर सकते। यदि उन्होंने अपना मन्द, मौन विध्वस जारी रखा, तो किसी को भी आश्चर्य नहीं होगा।

प्रत्येक वर्ष सोवियत समाचार-पत्र जोताई का मौसम प्रारम्भ होने से पूर्व समस्त ट्रैक्टरों को अच्छी स्थिति में रखने की आवश्यकता पर बल देते है और तत्पश्चात् वे इस परामर्श पर ध्यान न दिये जाने के अगणित उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वे किसानों से निराई की अवहेलना न करने का अनुरोध करते है, वे फसल की अपर्याप्त रखवाली के सम्बन्ध में चेतावनी देते है और यह बात काफी सच है कि जब फसलों की कटाई हो जाती है, तब मास्को के समाचार-पत्र सड़कों के किनारे एकत्र किये गये और सड़ते हुए अनाज के फोटोग्राफ प्रकाशित करते है खड़ी फसल और वास्तविक फसल के बीच इतनी अधिक क्षति होती है कि उस पर विश्वास नहीं होता, सोवियत सूचना के आधार पर अनुमान लगाया जाता है कि क्षति ३० प्रतिशत की होती है। यह सोवियत राज्य और कृषक-वर्ग के युद्ध के व्यय का एक भाग है।

तत्पश्चात् चोरियाँ प्रारम्भ होती है। किसान अपनी गाय, सूअरों और मुर्गियों को खिलाने के लिए कुछ अनाज घर उठा ले जाता है—अथवा स्वयं अपने लिए वह कुछ गेहूँ राई उठा ले जाता है। वह तर्क करता है—"यह मेरी फसल है, किन्तु शीघ्र ही सरकारी एजेण्ट आयगा और इसका अधिकांश भाग उठा ले जायगा।"

सामूहिक फार्मों को प्रति वर्ष नगर और सेना के लिए राज्य को अपने कृष्य उत्पादन का एक बहुत बड़ा भाग निम्न, क्रेमलिन द्वारा निर्धारित, मूल्यों पर देना पड़ता है। किसान इसे सरकारी लूट समझता है और इस पर क्रोध करता है। १० नवम्बर १९५६ को 'इजवेस्तिया' में प्रकाशित ख्रुश्चेव के भाषण के अनुसार सरकार ने १९५६ में इस प्रकार ३ अरब २८ करोड़ १० लाख 'पूड' अन्न की वसूली की और उपभोग के लिए दो अरब 'पूड' घटाने के बाद सरकार के हाथों में १ अरब २८ करोड़ १० लाख 'पूड' अन्न की सुरक्षित राशि बची रह गयी, जो अभूतपूर्व थी। (एक 'पूड' ३६ पौण्ड के बराबर होता है।)

इस अभूतपूर्व वृद्धि के प्रति ख्रुश्चेव की प्रतिक्रिया कम्यूनिस्ट मनोवृत्ति और इरादों का रहस्योद्घाटन करती है। उन्होंने कहा कि अब सोवियतसंघ "जन-गण-तंत्रों" को, (जो पिछलग्गू देशों के लिए कम्यूनिस्टों द्वारा दिया गया नाम है) जिन्हें खाद्यान्नों का आयात करना पड़ता है, खाद्यान्नों की आपूर्ति करने की स्थिति में हैं। "अतः"—उन्होंने उत्साहपूर्वक घोषित किया—"इस वर्ष न केवल इस बात की सम्भावना है कि हम अपनी जनसंख्या की मांगों को सन्तुष्ट करेंगे तथा मित्र

देशों के लिए आवश्यक सहायता की व्यवस्था करेंगे, प्रत्युत इस बात की भी सम्भावना है कि हम अन्न की एक बहुत बड़ी राशि सुरक्षित राशि के रूप में सरकारी खत्तियो मे जमा करेंगे। और"—उन्होंने पुन. कहा, जिसे स्तालिन की मृत्यु के बाद सर्वाधिक रहस्योद्घाटक सोवियत वक्तव्य माना जा सकता है—"जब खत्तियों में अनाज होता है तब मित्रो के साथ वार्तालाप करना सरल तथा शत्रुओं के साथ तर्क–वितर्क करना सम्भव होता है।"

इस प्रकार अन्न पिछलग्गू देशो को बनाये रखने के लिए एक जंजीर है। अन्यथा उन्हें अन्न भेज सकने की रूस की क्षमता के कारण उनके साथ बातचीत करना अपेक्षाकृत अधिक सरल क्यो हो जाता? कम्यूनिस्ट बन्धु होने के नाते उनके साथ किसी भी परिस्थिति में बातचीत करना सरल होना चाहिए।

इससे भी अधिक रोचक निश्चय ही सर्वाधिक रोचक, खुश्चेव का यह कथन है कि रोटियों की पर्याप्त सुरक्षित राशि—सम्भवतः सोवियत इतिहास में प्रथम बार—होने से शत्रु के साथ तर्क-वितर्क करना सम्भव होता है। शत्रु कौन है और "तर्क-वितर्क" का अर्थ क्या है? क्या इसका अर्थ स्वेज-सकट के समय ब्रिटेन पर आण्विक राकेट फेकने की प्रधान मंत्री बुल्गानिन की धमकी है? एक ही सप्ताह में खुश्चेव ने भाषण किया और बुल्गानिन ने पत्र लिखा।

८ मार्च १९५७ को क्रैसनोदर क्षेत्र के कृषकों के समक्ष किये गये एक भाषण में खुश्चेव अपने प्रिय विषय पर वापस लौट आये। उनसे अधिक मांस और दूधका उत्पादन करने के लिए अनुरोध करते हुए उन्होंने कहाः—"राजकीय फार्मों द्वारा जितने ही अधिक अन्न, मास, दूध और अन्य सामाग्रियों का उत्पादन किया जायगा, सोवियत पद्धति उतनी ही अधिक सुदृढ़ बनेगी। औद्योगिक और कृषि-उत्पादन की वृद्धि वह प्रहारास्त्र है, जिससे हम पूजीवादी पद्धति को दूर रख सकेंगे।"

सोवियत नेताओं के लिए न केवल उद्जन बम टैंक और तेल, शक्ति के स्रोत है, अपितु रोटी और मॉस को भी शक्ति के रूप में अनूदित कर दिया जाता है। समस्त नीति और समस्त आर्थिक गतिविधि का प्राथमिक उद्देश्य शक्ति है। अतः यह तनिक भी आश्चर्य करने की बात नहीं है कि जनता निर्धन है।

प्रामाणिक "कम्यूनिस्ट" के अक्तूबर १९५६ के अक में "सोवियत संघ के मूलभूत आर्थिक कार्य" का प्रतिपादन इस प्रकार किया गया था — "यथासम्भव अल्पाति अल्प समय में प्रति व्यक्ति उत्पादन में अत्यन्त विकसित पूंजीवादी राष्ट्रों को परास्त कर देना और पीछे छोड़ देना – यही 'अन्तिम और निर्णयात्मक युद्ध' है, जो पूँजीवाद के साथ प्रतिद्वंद्विता में समाजवाद को विजय दिलायेगा।" यदि प्रति

व्यक्ति अधिक उत्पादन का अर्थ यह हो कि सोवियत नागरिकों को अधिक जूते, रोटियाँ, अण्डे, मकान आदि मिलेंगे, तो इस प्रयास के प्रति शुभकामना ही व्यक्त की जा सकती है, किन्तु यदि पहली बार अच्छी फसल होने पर राकेट फेंकने की धमकियाँ दी जाने लगें, तो शुभकामना नहीं व्यक्त की जा सकती। और प्रतिद्वन्द्विता क्यों? विजय किस मूल्यपर? यह अति विज्ञापित शान्तिमय सह-अस्तित्व के समान नहीं दिखायी देता।

सोवियत राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था सदा ही एक अत्यन्त राजनीतिक अर्थ-व्यवस्था रही है। राजनीति और सत्ता के लिए आर्थिक आवश्यकता को बलिदान कर दिया गया, किन्तु विकासशील व्यवस्थापक वर्ग, जिसके प्रवक्ता मालेन्कोव प्रतीत होते है, आर्थिक विषयों पर बल दिये जाये के लिए प्रयत्न कर रहा है। पाँच या दस वर्षों में, जब ख्रुश्चेव, बुल्गानिन, मोलोतोव, वोरोशिलोव और कागानोविच जैसे राजनीतिक स्वामी, जो साठ अथवा सत्तर वर्षों के हो गये है, सम्भवत· दृश्य का परित्याग कर चुके होगे, औद्योगिक टेक्निशियनों और पेशेवर सैनिकों की कठोर विचारों वाली नयी पीढ़ी का राजनीतिक अखाड़े पर अधिपत्य स्थापित होने की सम्भावना है। व्यक्तियो में होने वाले इन परिवर्त्तनों के प्रकट होने पर—उनका प्रकट होना पहले से ही प्रारम्भ हो गया है—इस बात का निरीक्षण करना एक मजेदार बात होगी कि सैनिक राष्ट्रीय शक्ति के मूल्य पर व्यक्तिगत कल्याण की वृद्धि करना स्वीकार करेंगे अथवा नही। आज शस्त्रीकरण, सोवियत साम्राज्य और रूस की विदेश-नीति पर होने वाले अत्यधिक व्यय से सोवियत जनता का जीवन-स्तर अत्यन्त निम्न हो गया है।

नेतृत्व में होने वाले परिवर्त्तन चाहे जितने भी महत्वपूर्ण सिद्ध हों, सारभूत बात तो राज्य-विषयक रूसी दर्शन की है। राज्य की शक्ति सोवियत प्रणाली के कार्यों की कुंजी है। रूसी भाषा में शक्ति के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द "व्लास्ट" सरकार के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। कम्यूनिस्टों के लिए अधिकतम सत्ता तानाशाही का पर्याय है। फिर नागरिकों अथवा ससद को उसमें भागीदार बना कर सरकार की शक्ति को क्षीण क्यों बनाया जाय? सोवियत मस्तिष्क के लिए एक सब से बड़ी अबोधगम्य बात यह है कि संयुक्त राज्य में शक्ति और स्वतंत्रता का सम्मिश्रण किस प्रकार है। अतः उन्होंने सुगमतापूर्वक, स्वतः यह धारणा बना ली है कि स्वतंत्रता वास्तविक नही है और उसके पीछे "वालस्ट्रीट" की तानाशाही है। ऐसा प्रतीत होता है कि कम्यूनिस्ट प्रमुखों के दिमाग में यह बात कभी नही आयी कि केवल वही राज्य ठोस और कार्यक्षम होता है, जिसे अपनी जनता का ऐच्छिक समर्थन प्राप्त होता है।

अध्याय १०

रूस और विश्व

राष्ट्रवाद और क्रेमलिन का सत्ता-प्रेम इस बात को पूर्णतया निश्चित बना देते है कि जब तक शक्य होगा, रूस अपनी स्थिति को बनाये रखेगा; इसका अर्थ साम्राज्य है। सोवियतों ने स्वतंत्र विश्व से जो कुछ लिया है, उसे लौटाने का वे विचार नहीं रखते।

फिर भी, रूस को पश्चिम में और अधिक प्राप्ति होने की आशा नहीं है। मुझे मास्को में यूरोप से मुँह मोड़ने तथा एशिया और अफ्रीका पर, बाण्डुंग-विश्व पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रवृत्ति के दर्शन हुए। वहीं सोवियतों को मित्र बनाने तथा विजय मिलने की आशा है।

पश्चिम में, मास्को चाले चलेगा, धमकियां देगा, षड्यंत्र रचेगा, प्रचार करेगा और टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चलेगा, किन्तु यह सब कुछ वह रूस के लिए उल्लेखनीय विजय प्राप्त करने की अपेक्षा, शत्रु के लिए संकट उत्पन्न करने की दृष्टि से अधिक करेगा। क्रेमलिन को महान आशाएं तो एशिया में है, जो आधी मानव-जाति का निवास-स्थान है।

पश्चिमी यूरोप आर्थिक एकता की दिशा में अग्रसर हो रहा है। यूरोप और अमरीका में एक अपेक्षाकृत सुदृढ़ अर्थ-व्यवस्था है तथा वे आहत अभिमान और विदेशी आधिपत्य की स्मृति से पीड़ित नहीं है। यहा कम्यूनिटों के और अधिक 'मछलियॉ पकड़ने' की सम्भावना नही है। यहॉ तक कि पुरानी 'मछलियॉं' भी बेकार प्रतीत होती हैं; फ्रॉंसीसी और इटालियन कम्यूनिस्ट पार्टियों ने, यद्यपि निर्वाचकों के मध्य उनके अनुयायियों की संख्या विशाल बनी हुई है, उनके उद्देश्य को, जो सोवियत विदेश-नीति में सहायता प्रदान करना है, पूर्ण नहीं किया है।

प्रधान-मंत्री बुल्गानिन राष्ट्रपति आइसनहावर से प्रायः पत्र-व्यवहार करते हैं और सोवियत अवश्य ही पश्चिम के साथ अधिक अच्छे सम्पर्क स्थापित करने की कामना रखते हैं। उन्होंने स्तालिन की इस मूर्खतापूर्ण छलना का परित्याग कर दिया है कि रूस को कुछ सीखना नहीं है; वे विकसित औद्योगीकृत राष्ट्रों की प्राविधिक सफलताओं से लाभान्वित होना चाहते हैं। फिर भी, नेताओं के भाषणों और समाचार-पत्रों के अग्रलेखों (तथा समाचारों को भी) पढ़ने से पश्चिम के

प्रति गहरी सोवियत शत्रुता का आभास मिल जाता है। इस विचार की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में सन्देहों का निवारण एशिया और अफ्रिका के अधिकॉश भाग की घटनाओं पर व्यक्त किये जाने वाले सहानुभूति पूर्ण विचारों की तुलना करने से हो जाता है।

मै सोवियत विदेश-नीतिके सम्बन्ध में अनेक वर्षों से लिखता आ रहा हूँ, किन्तु अपने नवीनतम मास्को-प्रवास से पूर्व मैने इस बातका पूर्ण रूप से अनुभव नहीं किया था कि पश्चिम के प्रति कम्यूनिस्ट शत्रुता का मूल कारण क्या है। यह पश्चिमी सशस्त्र शक्ति का भय नहीं है; रूसी जानते है कि पश्चिम उन पर आक्रमण नही करेगा। यह पूंजीवाद का भय नही है; वे जानते है कि उनकी आर्थिक प्रणाली पूॅजीवाद के साथ-साथ रह सकती है। यह स्वतंत्रता का भय है। बहुदलीय जनतंत्र उन्हें विक्षुब्ध बना देता है, इसकी संक्रामकता से वे भयभीत रहते है। मास्को के अत्यन्त प्रबल प्रचार द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है कि पश्चिमी देश जनतांत्रिक नही है तथा वास्तविक स्वतत्रता केवल "जन – गणतंत्रों" में और सर्वोपरि, स्वभावतः, सर्वहारा वर्ग की रूसी तानाशाही के अन्तर्गत मिल सकती है। अब मार्क्सवादी – लेनिनवादी शिक्षा का यही सारतत्व है।

मास्को का विश्वास है कि एशिया और अफ्रीका में साम्राज्यवादी अपराधों के लिए पश्चिम के अस्वीकृत किये जाने तथा शीघ्र गति से नयी अर्थ – व्यवस्थाओं का निर्माण करने की इच्छा के परिणामस्वरूप तानाशाही की स्थापना होगी। किसी एशियाई को कुरेदिये और आपको सम्भवतः पश्चिम का एक आलोचक मिल जायगा। अनेक एशियाई जनतंत्र की दुहाई देते हुए भी उनको स्वतंत्र करने वाले पश्चिम के प्रति अपनी घृणा का प्रदर्शन करते हैं और रूस तथा चीन की प्रचण्ड सैनिक शक्ति के समक्ष श्रद्धापूर्वक नत-मस्तक होते है। उनका, विशेषतः सोवियत संघ का द्रुत औद्योगिक विकास एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत करता है, जिसके सम्बन्ध में गैर-कम्यूनिस्ट एशिया अपनी निर्धनता और अज्ञान के कारण यह सोचता है कि वह स्वतंत्रता-पूर्वक उसका अनुकरण कर सकता है। इस उर्वर भूमि में मास्को अपने बीज आरोपित करता है।

स्तालिन के उत्तराधिकारियों मे अनेक रोचक गुण है, किन्तु उन गुणों में भावनात्मकता का समावेश नही है। वे नेहरू को उनकी सुन्दर मुखाकृति अथवा श्रेष्ठ अंग्रेजी शैली के लिए नहीं, प्रत्युत इसलिए पसन्द करते हैं कि, वे सोचते है कि वे उनका प्रयोग पश्चिमी कूटनीति के विरुद्ध कर सकते है और उनके जरिये भारत को अन्ततोगत्वा जनतत्र से विमुख कर सकते है। नेहरू से भी अधिक वे नासिर की "एकतंत्रात्मक" पद्धति से प्रेम रखते है और जहा तक निरंकुश

दास-प्रथा वाले सऊदी अरब तथा यमन का सम्बन्ध है, वहां के समाचारों को सोवियत संघ के पत्रों में स्कैण्डिनेविया के सुशिक्षित जनतंत्रों के समाचारों की अपेक्षा अधिक स्थान प्रदान किया जाता है।

एशिया के शीर्षस्थ यात्रियों के लिए सोवियत संघ में भव्य, शानदार संचालित यात्राओं की व्यवस्था की जाती है, जिनका जादू जैसा प्रभाव होता है। हिन्देशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण के मामले में क्रैमलिन ने उनकी विशेष व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति की व्यवस्था की थी और चूकि वे एक बहुत बड़े वक्ता है, इसलिए एक लाख या उससे भी अधिक व्यक्तियों का समूह एकत्र कर दिया, जिससे उन्हें आनन्दातिरेक में भाषण करने की प्रेरणा मिली, भले ही उनका भाषण पूर्णतया राजनीतिज्ञतापूर्ण न रहा हो। उनके यात्रा-क्रम में निश्चय ही एक सामूहिक फार्म को सम्मिलित किया था। यह प्रथम फार्म था, जिसे उन्होंने कहीं भी देखा था। वे स्वयं अपने विशाल दल और अनेक उच्च सोवियत अधिकारियों के साथ आये। एक समारोहात्मक मेहराब के अन्तर्गत सजे-सजाये किसानों द्वारा अभिनन्दन किये जाने पर उन्होंने तत्काल एक वक्तता दे डाली और उसमें उन्होंने घोषित किया— "सामूहिक फार्म एक बहुत अच्छी प्रणाली है।" इस बिना सोचे-समझे दिये गये निर्णय से बहुत अच्छा कम्यूनिस्ट प्रचार हुआ।

अविवेकशील होने के कारण मास्को भाव-प्रवण एशिया-वासियों की भावनाओं को उभाड़ने का ढंग जानता है। १९५५ में अपनी भारत-यात्रा के समय ख्रुश्चेव और बुल्गानिन ने स्वागतकारी मानव-प्राणियों के समूहों से कहा कि गोवा को भारत में अवश्य मिलना चाहिए; काश्मीर भारत का है; भारत एक महाशक्ति है; पाकिस्तान पश्चिमी साम्राज्यवाद के हाथों की कठपुतली है तथा (कलकत्ता में उन्होंने कहा कि) अंग्रेजों को निकालने में बंगाल ने सबसे बड़ा योग प्रदान किया। उन्होंने वही कहा, जो श्रोता सुनना चाहते थे। यह सब कुछ शब्द मात्र था, किन्तु इससे एक प्रभाव उत्पन्न हुआ।

फिर भी, इस शोर-गुल के बाद शान्त वातावरण में कम-से-कम थोड़े-से बुद्धिमान भारतीयों को उनके देश के प्रति इस रूसी प्रेम का एक चतुरतापूर्ण कारण ज्ञात हो गया: पेकिंग के साथ मास्को की प्रतियोगिता।

सोवियत नेता जानते है कि लाल चीन के प्रति मित्रता की भारतीय अभिव्यक्तियों के पीछे पेकिंग के विस्तारवाद का भय निहित है, जो भारतीय भावनाओं का तनिक भी सम्मान किये बिना, तिब्बत के सैनिकीकरण, नेपाल के साथ चीनी

मेल-जोल, और १९५६ में बर्मा पर एक छोटे चीनी आक्रमण के रूप में पहले ही अपने को प्रकट कर चुका है।

जब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री हसन शहीद सुहरावर्दी दिसम्बर १९५६ में पेकिंग में अध्यक्ष माओ-त्से तुंग से मिलने गये, तब माओ ने उनसे कहा — "भारत चीन से डरता क्यों है?" माओ के इस दूरदर्शितापूर्ण प्रश्न का उद्देश्य स्पष्टतः पाकिस्तान को आश्वस्त करना था। फिर भी, तथ्य यह है कि भारत चीन से परेशान है। यह देखने के लिए कि सर्वप्रथम कौन महानता प्राप्त कर सकता है, भारत और चीन के मध्य जो प्रतियोगिता हो रही है, वह आर्थिक विकास के जनतांत्रिक और तानाशाही तरीकों के मध्य एक प्रतियोगिता मात्र नहीं है; वह भारत के भय को प्रतिबिम्बित करती है। बाह्य रूप से देखने पर नयी दिल्ली और पेकिंग के सम्बन्ध अत्यन्त सौहार्दपूर्ण है, वास्तव में भारत चीन की दक्षिण दिशा में विस्तारवादी प्रवृत्ति से अवगत है। दूसरी ओर, रूसी साम्राज्यवाद अधिकांशतः पश्चिम की ओर निर्देशित रहा है, जिससे भारतीय नेता नैतिक प्रश्न की उपेक्षा कर देते है। वास्तव में चूकि मास्को बगदाद-पैक्ट का और इसलिए उसका समर्थन करने वाले पाकिस्तान का विरोधी है, इसके अतिरिक्त चूँकि रूस पाकिस्तान के विरुद्ध अफगान पठानिस्तान आन्दोलन का समर्थन करता है, इसलिए रूस के साथ भारत के सम्पर्कों के चीन के साथ सम्पर्कों की अपेक्षा अधिक हार्दिकतापूर्ण होने की सम्भावना है।

चीन कोई पिछलग्गू देश नही है। वह इतना बड़ा देश है कि उसे इधर-उधर ढकेला नही जा सकता और वह इतना महत्वाकांक्षी है कि वह आज्ञाकारी नहीं हो सकता। शाश्वत प्रेम और मतैक्य के मधु-मिश्रित शब्दो के बावजूद, कम्यूनिज्म के बावजूद, एशिया में प्रमुखता प्राप्त करने के लिए रूस चीन के साथ प्रतिद्वन्द्विता कर रहा है। जून १९५६ में बोन में एक मुलाकात में जर्मन चॅासलर कोनराड अडेनावर ने मुझे कुछ ऐसी बातें बतायीं, जिन्हें ख्रुश्चेव ने उन्हें सितम्बर १९५५ में मास्को में बताया था। प्रति दिन मुट्ठीभर चावल से जिन्दगी गुजारने वाले और प्रति वर्ष एक करोड़ बीस लाख की दर से बढने वाले साठ करोड़ चीनी—ख्रुश्चेव ने घोषित किया कि यह कुछ चिन्ता की बात है।

अत्यन्त सुसंस्कृत जर्मन समाजवादी नेता कार्लो स्यमिड ने, जो अडेनावर के साथ ही मास्को गये थे, पोलिट ब्यूरो के सदस्य लाजार कागानोविच के एक वक्तव्य को, जो उन्होंने वहाँ उनके समक्ष दिया था दुहराया · चीन को टर्बाइनों, जेनेरेटरों, मशीनो के औजारो, और अन्य भारी औद्योगिक सामग्रियो की आवश्यकता

है और हम चाहते है कि जर्मनी उनकी आपूर्ति में सहायता प्रदान करे, किन्तु हम आप द्वारा निर्यात की गयी सामग्रियों को चीन नहीं भेजेगे, हम अपनी भेजेंगे और आपकी रख लेगे; हम नहीं चाहते कि, चीनी देखे कि आप हमारी अपेक्षा अधिक अच्छा काम करते है।

और जर्मन विदेश-मंत्री हीनरिच वान ब्रेण्टानो ने, जो उसी प्रकार अडेनावर के प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्य थे, मेरे समक्ष स्पष्टीकरण किया कि ख्रुश्चेव ने जो कुछ चॉसलर से और कागानोविच ने जो कुछ स्यमिट से कहा, वह "चारा" था, चीन और सामान्यतः एशिया के विकास में एक भागीदार के रूप मे पश्चिमी जर्मनी को अपनी ओर मिलाने के अभियान का एक अग था।

अडेनावर "जाल में नही फँसे।" उन्होंने देखा कि चीन रूस की सर्वाधिक चिन्ता का बिषय बना हुआ है, उन्होंने उस चिन्ता में यूरोप के लिए एक आशा देखी। कतियत पर्यवेक्षक लेनिन को यह उद्धृत करते हुए परिकल्पना करते है कि रूस पेकिंग होते हुए पेरिस में प्रवेश करेगा। फिर भी, तथ्य यह है कि उठते हुए चीनी दैत्य का सामना करने के लिए रूस को पेरिस, बोन, लन्दन और वाशिंगटन के साथ शांति से रहने की आवश्यकता हो सकती है। (अन्ततोगत्वा जर्मनी के पुनः एकीकरण के सम्बन्ध में अडेनावर की महती आशा को इसी से प्रेरणा प्राप्त हुई।)

१९५६ की ग्रीष्म ऋतु के अन्तिम भाग में 'न्यूयार्क टाइम्स' के जैक रेमण्ड ने बाह्य मंगोलिया से दस हजार चीनी टेक्निशियनों की उपस्थिति का संवाद प्रेषित किया था, जो समझौते के अनुसार, सेवा की अपनी अनुबन्धात्मक अवधि के समाप्त होने पर बाह्य मंगोलिया की नागरिकता स्वीकार कर सकते है। अन्य पश्चिमी प्रेक्षकों ने चीनी सैनिकों को चीन से मंगोलिया की राजधानी उलान बेटर तक एक रेल-सड़क का निर्माण करने के कार्य में रत देखा। १९१८ से १९२४ तक सोवियत निर्बलता की मध्यान्तर अवधि को छोड़कर बाह्य मंगोलिया १९११ से ही, जब मचू वंश का पतन हुआ और सोवियत आधिपत्य के अन्तर्गत चीनियों समेत समस्त विदेशियों को बाह्य मगोलिया से निकाल दिया गया, बाह्य मंगोलिया रूस के अधीनस्थ रहा है। अब लाल चीन ने उक्त भूतपूर्व चीनी प्रान्त के लिए एक प्रकार से पुनः दावा पेश कर दिया है।

उत्तरी कोरिया, मचूरिया और सिनक्यांग (चीनी तुर्किस्तान) में भी चीनी कम्यूनिस्ट दबाव के समक्ष सोवियतों को पीछे हटने के लिए विवश होना पड़ा। रूसी भालू और चीनी दैत्य ने एक दूसरे को छाती से लगाया है, किन्तु उन्होंने शुद्ध प्रेम के वशीभूत हो कर ऐसा नहीं किया है,। वे दो राष्ट्र है और, जैसा कि

उन्हें अवश्य करना चाहिए, राष्ट्रों की भाँति, एक ही साथ समान और विरोधी उद्देश्य रखने वाले राष्ट्रों की भाँति व्यवहार करते है। जनतंत्र के प्रति घृणा और एशिया में पश्चिम की उपस्थिति का विरोध उन्हें एक साथ लाता है; सन्देह और प्रतिद्वन्द्वी सत्ता के हित उन्हें सतर्क रखते है।

इन परिस्थितियों में सामरिक और औद्योगिक औजारो के लिए किसी भी चीनी अनुरोध को अस्वीकृत करने से रूस डरता है। रूस चीन द्वारा शोषित हो रहा है। बदले में चीनी रूस को राजनीतिक समर्थन प्रदान करते है, जहां इससे अनेक उद्देश्य की सिद्धि होती है। इस प्रकार चीन ने हगरी में रूस द्वारा किये गये दमन का समर्थन किया और जब १७ जनवरी १९५७ को मास्को में एक समारोह में भाषण करते हुए प्रधान मंत्री बुल्गानिन ने प्रधान मंत्री चाऊ एन ली को धन्यवाद दिया, तब चाऊ ने सोवियत आर्थिक सहायता के लिए अपनी सरकार की कृतज्ञता व्यक्त की। यह पारस्परिक आदान-प्रदान है। प्रतिद्वन्द्विता बनी हुई है। एशिया में चीन को जन-संख्या, औद्योगिक सम्भावना और भौगोलिक स्थिति का लाभ प्राप्त है।

एशिया में सत्ता-गुट किसी भी प्रकार ठोस नहीं है। सम्प्रति रूस पश्चिम को एशिया से (और अमरीका को यूरोप से) निकालना चाहता है, बाण्डुंग-जगत के दुर्बल, अविकसित राष्ट्रों पर आधिपत्य स्थापित करना अथवा कम-से-कम उन्हें प्रभावित करना चाहता है। वे इस बात का अनुभव नही कर पाते, यह आधुनिक मनोविज्ञान के आश्चर्यो में से एक है। यह प्रत्यक्ष प्रतीत होता है। अथवा क्या एशियाई और अफ्रीकी यह विश्वास करते है कि आदर्शवादी, शांति-प्रेमी रूस पूर्णतया निस्स्वार्थी है? वास्तव में एशिया और अफ्रीका में किये जाये वाले सोवियत कार्य पश्चिम और चीन के विरुद्ध मास्को के शीत-युद्ध के अंग है।

शीत-युद्ध उष्ण-युद्ध के उपायों को समाप्त नहीं कर देता। यह बात प्रत्यक्ष है कि कर्नेल नासिर को जेट बम-वर्षक विमान और बड़े-बड़े टैंक प्रदान कर क्रेमलिन मध्य-पूर्वीय तनावों में कमी करने में योग नही प्रदान कर रहा था। वह आग में घी डाल रहा था। वह एक ऐसे विस्फोट का, जिससे पश्चिम हिल उठता और रूस की शक्ति बढ़ जाती, खतरा मोल कर—अथवा उसकी आशा में—एक मित्र बना रहा था।

जारशाही रूस भी ब्रिटेन के साथ अपनी प्रतिद्वन्द्विता के अंग के रूप में और अपनी घरेलू सामाजिक समस्याओं को हल न कर सकने के कारण अरब और अफ्रीकी जगत में विस्तारवादी उद्देश्यों पर चलता था। अन्य बातों के समान ही इस सम्बन्ध में भी सोवियत रूस अपने एकतंत्रवादी पूर्वाधिकारियों के पद-चिह्नों

पर ही चलता है। १९४५ में और १९४६ में स्तालिन ने सार्वजनिक रूप से तुर्की पर अधिकार कर लेने का प्रयास किया। संयुक्त राज्य अमरीका के समर्थन से तुर्क कठोर और अपाच्य बन गये। तत्पश्चात् स्तालिन ने ट्रिपोलिटैनिया (तीबिया) पर संयुक्त राष्ट्र संघीय ट्रस्टीशिप के लिए मांग की, जिससे अफ्रीका में रूस को उसका स्थान मिल जाता। यह प्रयास भी विफल हो गया।

१९५४ में स्वेज द्वारा अपने सैनिक अड्डेका परित्याग कर दिये जाने के पश्चात् यह अनिवार्य था कि किसी न किसी को शक्ति-रिक्तता की पूर्ति करनी होगी। संयुक्त राज्य अमरीका इस सरल सत्य को देख सकता था और जैसा कि उसने १९४७ में यूनान और तुर्की में किया था, ब्रिटेन के स्थान की पूर्ति के लिए कोई व्यवस्था कर सकता था, किन्तु स्पष्ट है कि यह विचार सही व्यक्तियों के मस्तिष्क में नहीं उत्पन्न हुआ। स्तालिन के उत्तराधिकारियो ने बुद्धिमत्तापूर्वक तब तक प्रतीक्षा की, जब तक अरब-इसराइल स्थिति ने सकट का रूप नही धारण कर लिया और तत्पश्चात् उन्होंने केवल एक पक्ष को बड़े-बड़े शस्त्रास्त्र भेजे। इससे अन्ततोगत्वा सोवियतों को यूरेशिया का गला, स्वेज नहर के निकट पांव रखने का स्थान मिल गया, जिसके लिए वे अत्यधिक लालायित रहते थे। अपने प्रभाव को गहरा बनाने के लिए वे इस क्षेत्र को अशांत बनाये रखेंगे। इसराइल के प्रति अरबो की अदम्य शत्रुता से लाभ उठायेंगे और उसमें वृद्धि करेंगे। वे मिस्र और इराक की प्राचीन प्रतिद्वन्द्विता को, जो बाइबिल-युग से, जब इराक बेबिलोन था, चली आ रही है, प्रोत्साहित करेंगे तथा पश्चिम-समर्थक इराक के विरुद्ध पश्चिम-विरोधी मिस्र का समर्थन करेंगे और साथ ही साथ इराक को पश्चिम से विमुख करने का प्रयास करेंगे। वे तुर्की और इराक के विरुद्ध सीरिया का एक मोहरे के रूप में प्रयोग करेंगे। एक अन्य क्षेत्र में वे जर्मनी को विभक्त तथा पश्चिमी जर्मनी को अपने पूर्वीय तृतीयांश की प्राप्ति की भावनात्मक आकांक्षा से पीड़ित रखेंगे।

१९४८ में स्तालिन की पश्चिम के साथ शांति हो सकती थी, किन्तु जब उसने देखा कि जर्मनी विध्वस्त हो चुका है, इटली और फ्रास विशाल कम्यूनिस्ट पार्टियों द्वारा राजनीतिक दृष्टि से गतिहीन हो चुके है, इंग्लैण्ड में दम नही रह गया है तथा अमरीकी सेनाएं वापस जा रही हैं, तब वह समस्त यूरोप पर अधिपत्य स्थापित करने का प्रयास करने का लोभ संवरण नहीं कर सका। इससे शीत-युद्ध शीघ्र ही प्रारम्भ हो गया!

पुनः १९५६ की ग्रीष्म ऋतु में जेनेवा में हुए शिखर-सम्मेलन में पश्चिम के साथ क्रेमलिन की शांति हो सकती थी। वास्तव में शांति निश्चयपूर्वक प्रारम्भ भी

हो गयी थी, किन्तु मास्को के द्वार पर मध्य-पूर्वीय सुअवसरों के उपस्थित हो जाने पर आकाश में काली घटाएँ घिर आयी। वास्तव में जेनेवा शिखर-सम्मेलन के समय मिस्र में सोवियत शस्त्रास्त्र पहुंच रहे थे। विस्तार और शरारत की सम्भावना उपस्थित होने पर रूस मुकर गया।

कम्यूनिज्म के "शाति" और "सह-अस्तित्व" के प्रचार की बौछार के पीछे यह सत्तात्मक राजनीति की वास्तविकता है।

एशिया और अफ्रीका रूस एव अमरीका के मध्य होने वाले एक विशाल सत्ता-संघर्ष के साक्षी और सम्भाव्य शिकार है। उनका इससे लाभ उठाना अथवा इससे छिपना समझा जा सकता है, किन्तु इससे उनका भ्रम में पड़ जाना नहीं समझा जा सकता। स्पष्टता की खातिर उन्हें सोवियत साम्राज्यवाद के अस्तित्व और वास्तविक स्वरूप को मान्य करने की आवश्यकता है।

एशिया और अफ्रीका के कतिपय सर्वाधिक बुद्धिशाली व्यक्ति उतने ही अज्ञान है, जितना अज्ञान मेरा मास्को का वह नवयुवक कम्यूनिस्ट मित्र था, जिसे मैंने सोवियत साम्राज्यवाद का उल्लेख कर स्तभित कर दिया था। उनका तर्क है: हमें जितने साम्राज्यवाद ज्ञात हैं, वे सभी पूंजीवादी थे, रूस पूँजीवादी नहीं है; अतः रूस साम्राज्यवादी नहीं है। सम्भवतः हंगरी में की गयी पाशविकता तथा पोलैण्ड और मास्को के अन्य उपनिवेशों पर पाशविक सोवियत दबावों से अन्ततोगत्वा इन मिथ्या तर्कों तथा भ्रम का निवारण हो जायगा। वह विदेश-नीति अन्धी है, जो सोवियत साम्राज्यवाद पर ध्यान नहीं देती।

यूरोप और अमरीका भी साम्राज्यवाद अथवा सत्ता के उद्देश्यों से प्रेरित होते है, किन्तु अधिकाश पश्चिमी सरकारें स्वतत्रता में सन्निहित अवरोधों के अधीनस्थ होती हैं, प्रधान मंत्री ईडेन की स्वेज-नीति पर मजदूर दल, पत्रों, गिर्जाघर, छात्रसमूहों तथा व्यक्तिगत नागरिकों के विरोध का जो निर्णायक प्रभाव पड़ा, उस पर दृष्टिपात कीजिये। इस तथा अन्य कारणों से पश्चिमी साम्राज्यवाद पश्चाद्गामी, बाहर से कठोर और विनम्र है, जब कि सोवियत साम्राज्यवाद नया और पाशविक है; फिर भी वह स्वयं को पुनीत कहता है और जो कोई भी उसे चुनौती देता है, वह "फासिस्ट" और "युद्धाकांक्षी" है। उदाहरणार्थ, अपने प्रौढ़ मध्य युग में भी ब्रिटिश शासन कतिपय सीमित नागरिक अधिकारों की अनुमति प्रदान कर स्वयं अपनी कब्र खोदने वाला बन गया। सोवियत साम्राज्य, आवश्यकता वश, अपनी

सीमाओं के अन्तर्गत स्वतन्त्रता के अवशेषों को नष्ट कर देगा तथा उनसे बाहर उसके लिए संकट उत्पन्न कर देगा ।

प्राधान्य चाहे मुस्कानों का हो अथवा वक्र भृकुटियों का, वार्ताओ का हो अथवा धमकियों का, निरस्त्रीकरण का हो अथवा पुन· शस्त्रीकरण का, पूर्व-पश्चिम-सघर्ष, जो वास्तव में सोवियत साम्राज्य और पश्चिम का संघर्ष है, बहुत दिनों तक हमारे साथ रहेगा। उसके निवारण का सर्वोत्तम मार्ग है, रूस के पिछलग्गू देशो मे जनतंत्र का विकास तथा परिणामतः सोवियत रूस का १९३९ से पूर्व की अपनी सीमाओं के पीछे हट जाना । इससे रूस के भीतर विलम्ब से स्वतन्त्रता का प्रसार होगा। निश्चय ही पश्चिमी साम्राज्यवाद के और पीछे हटने तथा जनतांत्रिक देशों में नागरिक स्वतन्त्रताओं को और अधिक शक्तिशाली बनाने से इस प्रक्रिया की गति में वृद्धि की जा सकती है।

जो कुछ भी हो जाय, रूस एक तृतीय विश्व-युद्ध द्वारा सफलता प्राप्त करने की ओर प्रवृत्त नहीं होगा । रूस के इतिहास में युद्ध भाग्य-निर्णायक और घातक सिद्ध हुए हैं । वे राजनीतिक परिवर्तन को अथवा कम-से-कम पर्याप्त राजनीतिक अशान्ति को जन्म देते हैं । १९०४—५ का रूस-जापान-युद्ध एक उदाहरण है । प्रथम विश्व-युद्ध के परिणामस्वरूप जारशाही की समाप्ति हो गयी। द्वितीय विश्व-युद्ध के समय, जैसा कि स्तालिन ने २४ मई १९४५ को एक भाषण में प्रकट किया "नैराश्य के ऐसे क्षण उपस्थित हुए", जब उसे इस बात का भय उत्पन्न हो गया था कि उसे पद-च्युत कर दिया जायगा । स्तालिन के उत्तराधिकारी इस इतिहास को जानते हैं। जब तक उन्हें इस बात का निश्चय नहीं हो जायगा कि वे शीघ्रतापूर्वक युद्ध में विजयी हो जायेंगे, तब तक वे युद्ध नहीं प्रारम्भ करेंगे । और उदजन-आण्विक युग में कोई बात निश्चयपूर्वक कैसे कही जा सकती है?

एक बड़े युद्ध के अत्यधिक असम्भाव्य होने के कारण तथा छोटे-छोटे युद्धों के अन्त भी गतिरोध में होने के कारण (कोरिया, हिन्दचीन और इसराइल तथा मिस्र के युद्धों को देखिये) विश्व के समक्ष एक नयी स्थिति उपस्थित हो गयी है । उसे युद्ध का कोई विकल्प अवश्य ही ढूँढना होगा। सम्प्रति यह अन्तरराष्ट्रीय राजनीति का सार-तत्व है । समस्त आधुनिक इतिहास में सामान्यत· सत्ता का सन्तुलन समय-समय पर होने वालों युद्धों द्वारा ठीक किया गया है । आज सरकारें बिना युद्धो के उसे ठीक करने के साधन ढूँढ़ रही है । पहले से ही कतिपय समीकरणों ने विश्व-

शक्तियों के पुनर्वर्गीकरण की सृष्टि करने की दिशा में कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इन समीकरणोंकी सूची में निम्नलिखित बातों का समावेश किया जा सकता है: विदेशी सहायता, प्रचार, करार और गुट; संयुक्त-राष्ट्र-संघ में मतदान; क्षेत्रीय एकीकरण की दिशा में प्रवृत्ति--उदाहरणार्थ यूरोप मे, कतिपय राष्ट्रों की आर्थिक अवनति तथा अन्य राष्ट्रों का औद्योगिक विकास; और साम्राज्यवादी प्रभुत्व के विरुद्ध जनता के आन्दोलन।

खण्ड २

पिछलग्गू देशों में संकट

अध्याय ११

प्रचंड विस्फोटक

स्तालिन कहा करता था कि, सोवियत सघ का समर्थन एक मात्र अन्तरराष्ट्रीयतावाद है। विदेशी कम्यूनिस्ट ने इस आवश्यकता की पूर्ति सोवियत राष्ट्रवादी बन कर की; उसका उद्देश्य-वाक्य था : रूस चाहे सही काम करे; चाहे गलत, वह मेरा देश है।

किन्तु जब यह विदेशी कम्यूनिस्ट एक शासक बन गया, तब संघर्ष उत्पन्न हुआ: वह रूस के प्रति वफादार रहे अथवा स्वयं अपने देश युगोस्लाविया अथवा जेकोस्लोवाकिया अथवा पोलैण्ड अथवा रूमानिया के प्रति ? सिद्धान्ततः वह दोनों के प्रति वफादारी रख सकता था; वह मास्को-रूपी मक्का के समक्ष नतमस्तक हो सकता था और स्वदेश के प्रति भी प्रेम रख सकता था। व्यवहारतः सोवियत रूस की माँग थी कि वह उसके प्रति पूर्ण निष्ठा रखे और यदि आवश्यकता हो, तो इसके लिए अपने पितृदेश का भी बलिदान कर दे—और सामान्यतः ऐसा ही होता था। क्रेमलिन का उपदेश था—"रूस आपका एक मात्र पितृ देश है" और आदत तथा कृतज्ञता के वशीभूत हो कर (क्योंकि पिछलग्गू शासकों को सत्तारूढ़ बनाने वाली लाल सेना ही थी) विदेशी कम्यूनिस्ट सोवियत संघ की सेवा करता था।

सब से पहले मार्शल टिटो ने आपत्ति की। वे द्वितीय विश्व-युद्ध में शत्रु के साथ लड़ चुके थे और इस प्रक्रिया में उन्होंने एक सेना तथा प्रशासन-यंत्र का निर्माण कर लिया था, अतः उनमें स्वभाग्य-निर्णय की माँग करने की शक्ति, अभिमान, साहस और दूरदर्शिता थी। कम्यूनिस्टों के मूर्ख धर्मगुरु ने इसे एक अक्षम्य अपराध कहा और युगोस्लावों पर शाब्दिक बज्र-प्रहार करना प्रारम्भ कर दिया—उसने उन्हें "फासिस्ट", "तुर्क हत्यारे", "बुखारिनवादी" और "कसाई" कहा—तथा जून १९४८ में टिटो पर प्रतिबंध लगा दिया। टिटो इस अभिशाप से बच गये और अपने एक निजी सिद्धान्त टिटोवाद का प्रवर्तन करने के लिए जीवित रहे। यह एक प्रचण्ड विस्फोटक है, जो सोवियत साम्राज्यवाद को खण्ड-खण्ड कर देगा।

अन्य साम्राज्यों को क्षति पहुँचाने वाले राष्ट्रवादों का मास्को सदा समर्थन करता है। स्वयं उसके साम्राज्य में सोवियत राष्ट्रवाद के अतिरिक्त अन्य कोई भी राष्ट्रवाद नहीं होना चाहिए। टिटोवाद राष्ट्रीय कम्यूनिज्म है, वह कम्यूनिज्म के साथ युगोस्लाव — अथवा हंगेरियन, पोलिश, चेकोस्लोवाक, बल्गेरियन, रूमानियन अल्बानियन—राष्ट्रवाद का मिश्रण है। स्तालिन के साम्राज्य को वह जो क्षति पहुँचा सकता था उसे उसने पहले ही देख लिया।

अपने पूर्वजों मार्क्स, लेनिन और 'भयानक' आइवन के समान स्तालिन भी असहिष्णु तथा एकाधिपत्यवादी था। वारसा, प्राग, बुडापेस्ट, बुखारेस्ट, बेलग्रेड और तिराना-स्थित उसके प्रतिनिधियों को भक्तिपूर्वक उसकी आज्ञा का पालन करना पड़ता था। फिर भी, टिटो शासन करने के साथ-साथ वास्तविक सत्ता भी चाहते थे और उन्होंने खुले रूप से विद्रोह किया एवं जून १९४८ में क्रेमलिन द्वारा वृत्त के पार ढकेल दिये जाने के बाद भी उन्नति करते रहे, तब पिछलग्गू देशों में उनके मित्र बनने लगे।

स्तालिन ने उन्हें स्तालिनवादी निरंकुशता के साथ (अन्य कोई भी विशेषण अपर्याप्त होगा) डांटा। फिर भी टिटोवाद स्तालिन के बाद भी जीवित रहा और उसके उत्तराधिकारियों को शीघ्र इस बात का अनुभव हो गया कि यह एक अनश्वर शक्ति है, जिसके प्रति उन्हें अवश्य प्रेम-प्रदर्शन करना चाहिए और उसे नष्ट करना चाहिए। इस उद्देश्य से बुल्गानिन और ख्रुश्चेव ने मई १९५५ में विमान द्वारा बेलग्रेड की यात्रा की। अब यह सिद्ध हो गया है की उनकी यह यात्रा टिटो जैसे अन्य व्यक्तियों को उत्पन्न न होने देकर साम्राज्य की रक्षा करने का एक दूरदर्शिता-पूर्ण प्रयास थी।

हवाई अड्डे पर प्रथम क्षण में ख्रुश्चेव ने विशिष्टतापूर्वक सुनियोजित आवेग से टिटो को आकृष्ट कर पुनः सोवियत शिबिर में लाने का प्रयत्न किया। असफल मनोरथ होने पर क्रेमलिन के नेता–द्वय ने एक अन्तिम विज्ञप्ति में स्वीकार किया कि समाजवाद के लक्ष्य तक दो मार्गों से पहुंचा जा सकता है। यह स्वीकृति मिशनरी महत्वाकांक्षाएँ रखने वाले तथा पृथक् हो गये समुदाय को मूल धर्म–सम्प्रदाय द्वारा दी जाने वाली कागजी मान्यता के समान थी।

टिटो की योजनाएँ यह थीं कि जिन टिटोवादियों को फाँसी दे दी गयी थी, उन्हें पुनः निर्दोष घोषित कर दिया जाय, पिछलग्गू देशों से सत्तारूढ़ स्तालिन-वादियों को निष्कासित कर दिया जाय तथा समस्त कम्यूनिस्टों को टिटोवाद में दीक्षित कर दिया जाय। ऊपर से देखने पर यह एवरेस्ट शिखर जैसा ऊँचा अहम्

प्रतीत होता था, छोटा-सा युगोस्लाविया (१ करोड़ ६० लाख जनसंख्या वाला) महान रूसी भालू को अपने संकेत पर नचाने का प्रयत्न कर रहा था। वास्तव में टिटो की शक्ति राष्ट्रीय स्वतंत्रता और साम्राज्यवादी शोषण से मुक्ति की इस भावना की संक्रामकता में निहित थी, जिसको उन्होंने जन्म दिया था। विदेशी कम्यूनिस्ट जिस समय सोवियत संघ में निर्वासित जीवन व्यतीत करता था अथवा विदेशों में गैरकानूनी रूप से भूमिगत होकर काम करता था, उस समय उसके उपचेतन मन में देशभक्ति सुषुप्त पड़ी हुई थी। जब उसने पिछलग्गू देशों पर रूस के कठोर नियंत्रण का अनुमान किया तथा देखा कि टिटो उस नियंत्रण से बच गये है, तब देशभक्ति अंकुरित हो गयी और उसने कचोटना प्रारम्भ कर दिया।

टिटो की स्वतंत्रता के अनेक आकर्षक लाभ थे · युगोस्लाविया को पश्चिम से भारी परिमाण मे खाद्यान्न, कच्ची सामग्रिया, औद्योगिक यत्र, और शस्त्रास्त्र (जिनमें अमरीकी जेट विमान भी सम्मिलित थे) मिलते थे और १९५५ के समझौते के बाद रूस ने भी सहायता भेजी। स्वतत्रता के कारण युगोस्लाविया पूर्व और पश्चिम के प्रेमियों द्वारा उपहार भेजे जाने का पात्र बन गया।

इसके अतिरिक्त मास्को के नियंत्रण से मुक्ति के परिणामस्वरूप टिटो स्वदेश में भयंकर स्तालिनवादी नीतियों का परित्याग करने में समर्थ हो गये। प्रयोग और आशा की एक अवधि के पश्चात् युगोस्लाव सरकार ने मार्च १९५३ में अनिवार्य सामूहिक फार्मों को विघटित कर दिया तथा कृषको को पुनः निजी भूमि पर निजी कृषि करने की अनुमति प्रदान कर दी। निश्चय ही, टिटोवादियों में पूजीवादी कृषि के प्रति बद्धमूल मार्क्सवादी पूर्वाग्रह बना हुआ है और वे समय-समय पर ग्राम्य समाजवाद के लिए आहें भर कर कृषकों के सन्देह को जागृत करते रहते हैं, किन्तु वे सरकारी खुदरा दुकानों, सहकारी हाट-व्यवस्था तथा यंत्रों के सहकारितापूर्ण उपयोग को प्रोत्साहन देकर तथा जो थोड़े-से ऐच्छिक सामूहिक फार्म बचे रह गये है, उदाहरण के रूप मे उनका समर्थन करके ही सन्तोष करते हैं। समृद्ध कृषकों पर भारी कराधान तथा कृषि-पद्धति की यान्त्रिक अनुन्नतावस्था (Technological backwardness) के बावजूद, जिसके कारण युगोस्लाविया अभी तक खाद्यान्न सम्बन्ध में आत्मभरित नहीं हो पाया है, किसान के लिए स्थिति में सामूहिकीकरण की अपेक्षा बहुत अधिक सुधार हो गया है। सरकार के लिए इसका अर्थ है किसान के दैनिक कार्यचक्र में प्रत्येक कार्य के निर्देशन एवं निरीक्षण के कमर तोड़ देनेवाले, विरोध उत्पन्न करने वाले कार्य से मुक्ति। बलपूर्वक लादे गये सामूहिक फार्मों की समाप्ति में रूस के पिछलग्गू देशों के लिए विस्फोटक आकर्षण है और यदि कृषकों

को उसके सम्बन्ध मे ज्ञात हो जाय, तो रूस के लिए भी उसमे उसी प्रकार का आकर्षण हो जायगा।

उद्योग में भी टिटोवादियों ने एक नवीनता प्रारम्भ की, जो पिछलग्गू देशों में, विशेषतः पोलैण्ड में रुचि और प्रशंसा की भावना को जागृत करती है, सामूहिक कृषि के बाद रूस में सर्वाधिक घृणित आर्थिक व्यवस्था यह है कि वहां समस्त उद्योगों और व्यापार का प्रबन्ध राज्य के हाथों मे केन्द्रित है। यह सामूहिक कृषि का जुड़वॉ भाई है। फरवरी १९५६ में बीसवीं पार्टी कांग्रेस में एक उपचार के रूप मे विकेन्द्रीकरण के प्रश्न पर संक्षिप्त रूपसे विचार-विमर्श किया गया था और उसके बाद से इस दिशा मे कुछ शीघ्रतापूर्ण पग उठाये गये है, किन्तु केन्द्रीकरण का विलोम विकेन्द्रीकरण नहीं है; कीव अथवा तिफलिस में स्थित कोई कार्यालय नौकरशाही लालफीतावाद में उतना ही डूबा हुआ हो सकता है, जितना कि मास्को में स्थित कोई कार्यालय। केन्द्रीकरण को समाप्त करने का उपाय है प्रजातंत्र अथवा नीचे से नियंत्रण। श्रमिक परिषदों की, जो राज्य-पूजीवादी नौकरशाही का स्थान ग्रहण कर युगोस्लाविया के समस्त औद्योगिक एवं व्यावसायिक अध्यवसायों की व्यवस्था करती हैं, टिटोवादी प्रणाली का यही लक्ष्य है। लक्ष्य की पूर्ति अभी तक नहीं हुई है और प्रणाली पूर्णता से बहुत दूर है, किन्तु कार्मिक संघीय समाजवाद (Guild socialism) अथवा आर्थिक जनतंत्र की एक पद्धति के रूप में श्रमिक परिषदों में एक ऐसी सम्भावना निहित है, जो स्वयं युगोस्लाव कम्यूनिज्म के लौहावरण का भी भेदन कर सकती है और स्वतंत्रता के लिए प्रविष्ट होने का पथ प्रशस्त कर सकती है।

एक और मामले में युगोस्लाविया सोवियत स्तालिनवाद से विलग हो गया है। यह विलगता कम्यूनिस्ट पार्टी के विकास में निहित है, जो अब शासन नहीं करती। उसके सर्वसाधारण सदस्य तथा उसके बुद्धिजीवी अब देश के स्वामी होने का स्वांग नहीं करते। सत्ता टिटो-रानकोविच-कार्देल्ज की त्रिपुटी में, जिस पर विश्वस्त मार्शल की विशाल, नेता-सदृश आकृति का आधिपत्य है, तथा जिला और क्षेत्रीय पार्टियों के कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों में निवास करती है—इन सभी को सेना तथा सतर्क गुप्त पुलिस का समर्थन प्राप्त है। युगोस्लाविया एकदलीय राज्य से निर्दलीय राज्य बन गया है। सत्ता के एक साधन के रूप में दल का लोप हो गया क्योंकि राज्य ने राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का प्रत्यक्ष प्रबन्ध करने के कार्य का परित्याग कर दिया। गॉव में उसका स्थान किसान ने तथा नगरों में श्रमिक परिषदों ने ले लिया।

युगोस्लाव जनता और नेताओं के सम्बन्ध को संगीतात्मक कहा जा सकता है। दोनों पक्ष कानों से राजनीति का खेल खेलते हैं। जनता, जिसे इतिहास से ओत-

प्रोत उसके देश के विशद् अनुभव ने व्यावहारिक बुद्धिमत्ता की शिक्षा प्रदान की है, सरकारी नीति के संकेत प्राप्त करने के लिए सावधानी के साथ सुनती है तथा सामान्यतः असहायावस्था के कारण अथवा नीतिवश अथवा स्वहित के कारण, उसके अनुरूप कार्य करती है। अपनी सीमित लोकप्रियता से अवगत होने के कारण तथा जिन कठोर युद्ध-प्रिय जातियों पर, वे शासन करते है, उनके अंगूठों को बहुत अधिक जोर से न कुचलने के लिए उत्सुक होने के कारण, नेता शिकायतें सुनने के लिए अपने कान जमीन से सटाये रहते है और वे जानते है कि, कब पीछे हट जाना चाहिए। सामूहिक फार्मों के विघटित किये जाने के समय यही हुआ था।

'जियो और जीने दो' की यह विराम-संधि स्तालिनवाद की पूर्ण हस्तक्षेप की नीति से अत्यधिक भिन्न है तथा पिछलग्गू देशों में उसके अनुकरण-कर्त्ताओं की संख्या में वृद्धि ही होती जायगी।

स्तालिन के उत्तराधिकारी टिटो के आकर्षण को समझते थे: वे स्तालिनवादी कठोरताओं और अनमनीयताओं की अस्वीकृति का प्रतिनिधित्व करते थे; वे राष्ट्रवाद के प्रतीक थे; पूर्वी यूरोप के निवासी उनकी प्रशंसा ऐसे एक मात्र साहसी कम्यूनिस्ट के रूप में करते थे, जिसने स्तालिन की अवहेलना की थी और जीवित बच गया था तथा वास्तव में क्रेमलिन से क्षमा-याचना करवायी थी। क्रेमलिन के कतिपय नेता इन सारी बातों के लिए उनसे घृणा करते थे; अन्य नेता इस विचार से उनका मैत्रीपूर्ण सहयोग चाहते थे कि यदि उन्होंने मास्को के आलिंगन को स्वीकार कर लिया, तो पिछलग्गू देशों के असन्तुष्ट व्यक्ति सम्बन्ध-विच्छेद की मांग नहीं करेंगे।

तदनुसार, खुश्चेव ने टिटो की माँगो को स्वीकार कर लिया।

यदि स्तालिन 'रेड स्क्वेयर' के मकबरे में एक शीशे के भीतर दिखायी नहीं देता, तो यह कहा जा सकता था कि उसने जिन राष्ट्रीय कम्यूनिस्टों को अपना शिकार बनाया था, उन्हें टिटो की इच्छा के अनुसार समस्त पूर्वी यूरोप में एक के बाद दूसरे को पुनः सम्मानित किये जाते हुए तथा अपने प्रिय जनों को सत्ताच्युत किये जाते हुए देखकर अपनी कब्र में करवट बदल ली।

यहाँ पश्चिमी विशेषज्ञों में इस प्रश्न को लेकर एक प्रबल वाद-विवाद प्रारम्भ हो गया कि टिटो की स्थिति क्या है। क्या रूस ने उन्हें अपने शिविर में सम्मिलित कर लिया था? क्या वे क्रेमलिन के स्तालिनवादियों के विरुद्ध खुश्चेव का समर्थन कर रहे थे? क्या वे पिछलग्गू देशों को एक टिटोवादी गुट में लाने का गुप्त रूप से स्वप्न देख रहे थे? कुछ भी हो, मास्को उनकी माँगों की इतना अधिक क्यों स्वीकार करता जा रहा था?

टिटो सोवियत शिविर में वापस नही लौट रहे थे। वे अपने स्वतंत्र महत्व का विनिमय मास्को की एक लटकती हुई कठपुतली की दयनीय, असुरक्षित स्थिति के साथ क्यों करते ? इसके अतिरिक्त युगोस्लाव देशभक्त है और यदि टिटो स्वेच्छा-पूर्वक तथा मूर्खतापूर्वक अपने एव उनके सिरों को पुनः मास्को के फांसी के फन्दे में डाल देते, तो वे उनके लिए संकट पैदा कर देते।

यह बात भी समान रूप से निर्विवाद है कि टिटो में उस शक्ति का अभाव था, जिसके द्वारा सोवियत नेताओं को कोई नीति स्वीकार करने के लिए विवश कर सकते। वे उनके परामर्श को उसी समय स्वीकार करते, जब वह तर्कसंगत होता। वे अवश्य ही यह करते रहे होंगे : पिछलग्गू देशों में राष्ट्रीय कम्यूनिज्म परिपक्व हो गया है तथा स्तालिनवादियों को निष्कासित कर एव नम्रता की नीति ग्रहण कर उसके साथ समझौता कर लेना चाहिए।

यह प्रत्यक्ष है कि हगरी और पोलैण्ड में शीघ्र ही जो 'भूकम्प' आनेवाला था, उसकी पूर्व सूचनाएँ क्रेमलिन के 'भूकम्प-सूचक यत्र' पर अकित हो रही थीं और इसलिए असन्तुष्ट तत्वों को शांत करने के लिए मास्को ने टिटोवादी सुविधाओं को स्वीकार कर लिया।

इसी समय आग और धुआ वेगपूर्वक प्रकट हो गये। अप्रैल, मई और जून १९५६ में प्राग मे छात्रों और लेखकों के विरोध-प्रदर्शन हुए। २८ और २९ जून को पोजनान नगर ने विद्रोह कर दिया। पोलैण्ड और हंगरी में अन्यत्र भावी घटनाएँ पहले से ही अपनी काली परछाइयां फैला रही थी।

इसी समय सोवियतों ने टिटो के प्रति अपनी नीति में परिवर्त्तन कर दिया। इसका कारण या तो क्रेमलिन के नेतृत्व में सत्ता का स्थानान्तरण था या यह था कि, जिन नेताओं ने संकट को दूर रखने के लिए टिटो के साथ मेल-जोल किया था वही नेता अब इस निश्चय पर पहुँचे कि, वास्तव में पिछलग्गू देशों में टिटोवाद के साथ नरमी का व्यवहार करने से संकट शीघ्र उत्पन्न हो गया था।

यह नयी नीति अगस्त १९५६ के प्रारम्भ में 'जन गणराज्यों' की राजधानियों में मास्को द्वारा प्रेषित एक गुप्त पत्र द्वारा निर्धारित की गयी थी। उक्त पत्र द्वारा 'जन गणराज्यों' को टिटोवाद से दूर रहने की चेतावनी दी गयी थी। १७ अक्तूबर १९५६ को प्राग में मैने चेकोस्लोवाक विदेश-मंत्री वाक्लाव डेविड से उस पत्र के सम्बन्ध में पूछा। उन्होंने बताया कि, उन्होंने उसके सम्बन्ध में कभी नहीं सुना था। दूसरे दिन मैंने चेकोस्लोवाक प्रधान मत्री विलियम सिरोकी से पूछा। उन्होंने कहा कि, इस प्रकार के पत्र का कोई अस्तित्व नहीं था। "तब सम्भवतः

तार द्वारा आदेश प्राप्त हुए होंगे और मौखिक संवाद भेजा गया होगा"—मैंने कहा।
"नही"—उन्होने उत्तर दिया—"किन्तु विचार-विमर्श सदा होते रहते है।"

उस महीने के उत्तरार्द्ध मे बेलग्रेड में उच्च युगोस्लाव अधिकारियो ने मुझे बताया कि १७ अक्तूबर के 'वाशिंगटन पोस्ट' में प्रकाशित पत्र शब्दशः नहीं, तो भी पर्याप्त रूप से सही था। मुख्य अनुच्छेद में लिखा गया है·

"......समाजवाद का निर्माण केवल अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की ध्वजा के अन्तर्गत, समाजवादी देशों के साथ घनिष्ठ सम्पर्क रख कर किया जा सकता है, उसका निर्माण राष्ट्रवाद की ध्वजा के अन्तर्गत, समाजवादी देशो के साथ सम्पर्क रखे बिना नहीं किया जा सकता।"

रूस के लिए "अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की ध्वजा" क्रैमलिन की है; युगोस्लाविया के लिए "राष्ट्रवाद की ध्वजा" क्रेमलिन की है। पत्र में सारांश रूप से घोषित किया गया था कि टिटो समाजवाद की स्थापना नहीं कर सकते। यह कार्य केवल उन राष्ट्रों द्वारा किया जा सकता है, जो सोवियत संघ के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हों। दूसरे शब्दों में, टिटो का अनुकरण मत करो, रूस के पीछे-पीछे चलो।

बेलग्रेड में गुप्त पत्र ने उत्तेजना को और तत्पश्चात् क्रोध को जन्म दिया। १९ सितम्बर को ख्रुश्चेव विमान द्वारा युगोस्लाविया पहुँचे और उन्होंने ब्रिओनी में टिटो के साथ विचार-विनिमय किया। २७ सितम्बर को टिटो ख्रुश्चेव के साथ विमान द्वारा याल्टा गये। यह टिटो की प्रथम विमान-यात्रा थी और प्रत्येक व्यक्ति यही तर्क उपस्थित करता था कि कार्य अवश्य ही अत्यन्त महत्वपूर्ण होगा। वे ५ अक्तूबर को स्वदेश लौट आये। संसार उत्सुकता से ओतप्रोत रहा था।

कभी-कभी राजनीति का छात्र ऐसी सूचना निकाल सकता है, जिससे किसी रहस्य का उद्घाटन हो जाता है, अन्य समयों पर उसे केवल स्थिति मे निहित तर्क को देखने की अनुमति प्रदान की जाती है। अक्तूबर के दूसरे पखवाड़े में, बेलग्रेड में, युगोस्लाव ब्रिओनी-याल्टा वार्ताओ के सम्बन्ध में कोई रहस्य नहीं प्रकट हुए थे, किन्तु वे मास्को के विरुद्ध "बेईमानी" का आरोप अवश्य लगाते थे; मुझे बताया गया कि मई १९५५ में बुल्गानिन और ख्रुश्चेव की बेलग्रेड-यात्रा के बाद से मास्को की समस्त नीति "बेईमानी से भरी हुई" थी। १९५५ की शिशिर ऋतु में मेरे साथ तर्क-वितर्क करते समय जिन युगोस्लाव कम्यूनिस्टों ने सोवियत रूस का पक्ष लिया था, उन्होंने ही १९५६ की शिशिर ऋतु में रूस के विरुद्ध मेरी आलोचना के साथ अपनी निजी आलोचनाओं को भी जोड़ दिया। सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि, वे रूसी नेताओं की प्रतिभा के सम्बन्ध में घृणा की भावना रखते थे।

पोलिट ब्यूरो के सदस्य मोशे पियादे ने "मूक रूसियों" की बात की । फिर भी, सोवियत रूस के साथ युगोस्लाव-सम्बन्ध के कारण यह अन्तर्मुखी क्षय रुक गया । सार्वजनिक रूप से युगोस्लाव सरकार ने हंगरी मे रूस द्वारा टैंकों से की गयी हत्याओ पर कोई क्रोध नहीं व्यक्त किया ।

स्थिति मे निहित बहिर्मुखी तर्क कम्यूनिस्ट हितों की समानता का है । मास्को की दृष्टि में टिटो का राष्ट्रीय कम्यूनिज्म अरुचिकर और विघातक है क्योंकि वह साम्राज्यवाद–विरोधी है, किन्तु मार्शल ने क्रेमलिन को चेतावनी दी कि यदि वह राष्ट्रीय कम्यूनिज्म को स्वीकार नहीं करेगा, तो उसे इससे बहुत अधिक बुरी किसी वस्तु का सामना करना पड़ सकता है । वह वस्तु होगी एक बहुदलीय जनतत्र, जिसे न तो टिटो चाहते थे और न क्रेमलिन चाहता था । ब्रिओनी–याल्टा–वार्ताओं में केवल एक ऐसा परस्पर–लाभदायक समझौता हो सकता था, जिसके द्वारा मास्को पिछलग्गू देशों मे टिटो के प्रभाव को सहन कर लेता, बशर्ते वे इस बात का वचन देते कि वे टिटोवाद को जनतंत्र की दिशा में विकसित होने से, जैसा कि वह हंगरी मे नवम्बर १९५६ के प्रथम सप्ताह में विकसित होने वाला था, रोकने में सहायता करेंगे ।

क्रेमलिन के "कठोरतावादी" इस समाधान को पसन्द नहीं करते थे और उन्होंने ऐसे ढंग से, जिसकी पापा स्तालिन ने सराहना की होती, इस्पात पर– बुडापेस्ट में जीवित पुरुषों, स्त्रियों और युवकों के कोमल मास को बमों से भून डालने वाले टैंकों के इस्पात पर–भरोसा किया ।

मास्को की नयी नीति के सम्बन्ध में टिटो ने अपनी प्रतिक्रिया बोधगम्यता, मिश्रित कटुता के साथ व्यक्त की । कटुता ने उन्हें ब्रिओनी-याल्टा वार्ताओ के आवरण को दूर हटाने तथा क्रेमलिन में होने वाले दलगत संघर्ष पर प्रकाश डालने के लिए प्रेरित किया । उन्होंने यह ११ नवम्बर १९५६ को एड्रियाटिक सागर–स्थित बन्दरगाह पुला में किये गये एक उल्लेखनीय भाषण में किया ।

कट्टर स्तालिन-विरोधी टिटो ने घोषित किया कि "नये सोवियत नेताओं ने देखा कि स्तालिन के पागलपन की कृपा से सोवियत संघ स्वदेश में, विदेश में तथा पिछलग्गू देशों में अत्यन्त जटिल स्थिति में फँस गया है", किन्तु स्तालिन से विमुख होते समय उन्होंने "गलती से सारे प्रश्न को व्यक्तित्व के सिद्धान्त का एक प्रश्न मान लिया, न कि प्रणाली का प्रश्न ... उन्होंने उस प्रणाली पर कोई प्रहार नहीं प्रारम्भ किया है ... व्यक्तित्व के सिद्धान्त की सृष्टि प्रणाली द्वारा ही सम्भव हुई ।" टिटो ने बलपूर्वक कहा कि, रूस और पिछलग्गू देशो में कतिपय कम्यूनिस्ट इस स्तालिन-

प्रणाली को पुनर्जीवित करने और उसे पुन सत्तारूढ बनाने के लिए कार्यरत है। जड़ यही है, जिसमें सुधार किया जाना आवश्यक है।"

आपने पुनः कहा कि, युगोस्लाविया ने मास्को के साथ अपने सम्बन्धों में सुधार कर लिया था। १९५५ में बेलग्रेड में तथा १९५६ में मास्को में युगोस्लाव और सोवियत नेताओं ने समाजवाद तक पहुँचाने वाले भिन्न-भिन्न मार्गों के सम्बन्ध में घोषणाओं पर हस्ताक्षर किये थे–इसका अर्थ था पिछलग्गू देशों के लिए एक स्वीकृत मार्ग के रूप में टिटोवाद को मान्य करना। टिटो ने पुनः कहा– "दुर्भाग्यवश सोवियत नेताओं ने इसका अर्थ इस प्रकार नही लगाया। उन्होंने सोचा कि 'ठीक है, चूँकि युगोस्लाव इतना हठ कर रहे है, इसलिए हम इन घोषणाओं का सम्मान करेंगे और इन्हें कार्यरूप में परिणत करेंगे, किन्तु दूसरे देशों के सम्बन्ध में नहीं क्योंकि वहाँ की स्थिति भिन्न है...', किन्तु यह गलत है क्योंकि १९४८ में जिन तत्वों ने युगोस्लाविया को प्रतिरोध करने के लिए उत्तेजित किया था, वे ही तत्व इन पूर्वी देशों में, पोलैण्ड में, हँगरी में और अन्य देशों मे भी निवास करते हैं। कुछ में उनकी संख्या अधिक है, कुछ मे कम है।" टिटो ने कहा कि, उन्होंने मास्को में क्रेमलिन को चेतावनी दी थी कि दूसरे पूर्वी देश स्तालिन-विरोधी उसी प्रकार प्रतिरोध कर सकते है, जिस प्रकार युगोस्लाविया ने किया था "और इसमें सुधार करना बहुत कठिन कार्य होगा।"

बाद में ब्रिओनी और याल्टा की चर्चा आयी : "हमने देखा कि, जहाँ तक अन्य देशों का सम्बन्ध है, वहाँ कठिनाई का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि इन देशों के सम्बन्ध में–पोलैण्ड, हंगरी और अन्य देशों के सम्बन्ध में– सोवियत नेताओं के दृष्टिकोण भिन्न थे। फिर भी, हमने इस दृष्टिकोण को दुखद नहीं समझा क्योंकि हमने देखा कि यह दृष्टिकोण समस्त सोवियत नेताओं का नहीं, प्रत्युत नेताओं के केवल एक वर्ग का था, जिसने कुछ अंश तक अपने दृष्टिकोण को दूसरे वर्ग पर लाद दिया था।"

सोवियत नेतृत्व में स्तालिनवादी तत्वों की इस विजय के बावजूद, जिसे टिटो ने अक्तूबर १९५६ में याल्टा में देखा था, उन्होंने "कतिपय संकेतों और वार्तालापों के आधार पर" आशापूर्वक यह विश्वास किया कि स्तालिन-विरोधी गुट का प्रभुत्व स्थापित हो जायगा। उनका यह विश्वास गलत प्रमाणित हुआ।

फिर भी, टिटो ने इस बात को स्वीकार किया कि क्रेमलिन की स्तालिनविरोधी शक्तियों ने पिछलग्गू देशों की "समाजवादी शक्तियों में अपर्याप्त विश्वास" का परिचय दिया। "जब पोजनान का काण्ड हुआ, तब सोवियत नेताओं ने हमारे

प्रति अपने दृष्टिकोण मे अकस्मात् परिवर्त्तन कर दिया। उनका व्यवहार अधिक रूखा हो गया। उनका विचार था कि इसके लिए हम युगोस्लाव उत्तरदायी थे। हा, हम उत्तरदायी थे"—टिटो ने गर्वपूर्वक स्वीकार किया—"...क्योंकि आज युगोस्लाविया की जो स्थिति है, उस स्थिति का निर्माण हमने किया और इस युगोस्लाविया का प्रभाव हमारी सीमाओ के पार भी व्याप्त है।"

मास्को के बावजूद पोलैण्ड की घटनाएँ अनुकूल सिद्ध हुई, टिटो ने कहा कि गोमुल्का की नयी सरकार "जनतन्त्रीकरण तथा पूर्ण स्वतन्त्रता की दिशा मे तथा सोवियत सघ के साथ अच्छे सम्बन्धो की दिशा में भी" जाने वाले मार्ग पर चल रही थी। परिणामस्वरूप पोलैण्ड के कम्यूनिस्ट–विरोधी प्रतिक्रियावादियों के हाथ से अवसर निकल गया।

कतिपय पिछलग्गू देशों के सत्ताधारियो को पोलैण्ड मे हुए परिवर्त्तन अच्छे नही लगे। उनमें से एक छोटे-से अल्बानिया का छोटा स्तालिन एनवर होक्सहा था। टिटो ने उसे एक "गुण्डा" और "एक तथाकथित मार्क्सवादी" बताया, "...जो केवल लेनिनवाद और मार्क्सवाद शब्दों का उच्चारण भर कर सकता है तथा और कुछ नहीं कर सकता।" उसने कूटनीतिज्ञतापूर्वक चेकोस्लोवाक और अन्य स्तालिनवादी नेताओं को डाट-फटकार नहीं बतायी।

टिटो ने अपने उसी पुला वाले भाषण में प्रकट किया कि इस जून, १९५६ की मास्को-यात्रा में उन्होंने क्रेमलिन को हंगरी के सम्बन्ध में चेतावनी दी—"हमने कहा कि राकोसी की सरकार में तथा स्वयं राकोसी में हंगरी के राज्य का नेतृत्व करने अथवा आन्तरिक एकता की स्थापना करने की योग्यता नहीं है। दुर्भाग्य-वश सोवियत नेताओं ने इस बात में विश्वास नही किया और उन सभी ने कहा कि राकोसी एक पुराना क्रान्तिकारी है तथा वह ईमानदार है, आदि-आदि। जहां तक मै उसे जानता हूं, विशेषत' राज्य के मुकदमे के बाद और अन्य समस्त बातों के बाद, मैं यह नहीं कह सकता कि वह ईमानदार है। मेरी दृष्टि में ऐसे व्यक्ति संसार में सब से अधिक बेईमान होते हैं।......जब मैं मास्को जा रहा था, तब कुछ व्यक्तियों को इस बात से आश्चर्य हुआ कि मैंने हंगरी से होकर यात्रा नहीं की, किन्तु मैने राकोसी के कारण हंगरी से होकर यात्रा नहीं की। मैंने कहा कि मै हंगरी से होकर नहीं जाऊंगा, भले ही इस से यात्रा का समय एक तिहाई हो जाय।"

टिटो ने पुनः कहा कि अन्त में जब मास्को ने राकोसी को अपदस्थ कर दिया, तब उसने उसके स्थान पर एर्नो गेरो को नियुक्त कर दिया, "जो किसी भी प्रकार राकोसी से भिन्न नहीं था।" किन्तु यह स्पष्ट था कि "हंगरी की जनता उन

स्तालिनवादी तत्वों के पूर्ण विरुद्ध थी, जो अभी तक सत्तारूढ़ बने हुए थे।" मास्को ने राकोसी को बहुत अधिक समय तक पदारूढ़ बनाये रखने तथा उसके स्थान पर गेरो को नियुक्त करने की जो गलती की, उससे हंगरी की क्रान्ति भड़क उठी।

ये क्रेमलिन-विरोधी दोपारोपण वास्तविक टिटो के एक पक्ष को प्रतिबिम्बित करते है; उन्होने टिटोवाद की स्थापना के मार्ग में बाधा उपस्थित करने के कारण मास्को की निन्दा की और अवसर का उपयोग करते हुए रूस पर यह छींटाकशी की, कि उसने हंगरी में जैसा बीज बोया, वैसा ही फल उसे चखने को मिला।

तत्पश्चात् टिटो ने अपने अन्य पक्ष का प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि यद्यपि २३ अक्तूबर १९५६ को गेरो-शासन के विरुद्ध जनता के आक्रोश के प्रथम विस्फोट के समय टैंकों द्वारा हस्तक्षेप कर रूसियों ने गलती की तथापि कुछ दिन बाद का दूसरा सशस्त्र हस्तक्षेप उचित था, क्योंकि "सोवियत सरकार पश्चिम द्वारा किये गये किसी भी हस्तक्षेप तथा होर्थीवादियों और पुरानी प्रतिक्रियावादी शक्तियों के पुनः सत्तारूढ़ होने को सहन नही कर सकती थी।" उन्होंने प्रतिक्रिया-वादी कह कर मनमाने ढंग से उनकी निन्दा क्यों की, जब कि समस्त प्रमाणों से यह विदित होता है कि वे मजदूर, छात्र, किसान, सैनिक और बुद्धिजीवी थे, जो दीर्घकालीन स्तालिनवाद की भयंकरताओ से भड़क उठे थे? क्योंकि, टिटो के कथनानुसार, "उन्होंने 'कामरेड' शब्द के प्रयोग के विरुद्ध आदेश दिये और लाल तारकों को हटा दिया।" कम्यूनिस्टों और गुप्त पुलिस के सिपाहियों को फांसी पर लटका दिया गया। "यह एक कत्ले आम था। सोपरोन में बीस कम्यूनिस्टों को फांसी पर लटका दिया गया......यह कार्य भयंकर फासिस्ट और प्रतिक्रांतिवादी भीड़ द्वारा किया गया। इन घटनाओं को रोकने के बदले नागी-सरकार ने हंगरी को रूस एवं अन्य पिछलग्गू देशों के साथ एक सैनिक मैत्री में आबद्ध करने वाली वारसा-संधि की निन्दा करते हुए एक घोपणा प्रकाशित की तथा हंगरी की स्वतंत्रता की घोषणा की, मानो इस विषम परिस्थिति में यही सर्वाधिक महत्वपूर्ण काम था, मानो वारसा-संधि से हंगरी का पृथक् हो जाना कोई महत्व रखता हो।" (हंगरी-वासियों के लिए सोवियत दासता से मुक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात थी, वास्तव में यह उनका मुख्य लक्ष्य है क्योंकि जब तक हंगरी पर रूसी हथियारों से शासन होता रहेगा, तब तक किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता सम्भव नही है।)

टिटो ने घोषित किया कि, यदि टैंकों द्वारा किया गया द्वितीय सोवियत हस्तक्षेप "हंगरी में समाजवाद की रक्षा के लिए किया गया था, तो कामरेडो, हम कह सकते हैं कि, हम सोवियत हस्तक्षेप को आवश्यक समझते है, यद्यपि", उन्होंने

अपने कथन की असम्बद्धता पर ध्यान न देते हुए पुनः कहा—" हम अन्य देशों के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप किये जाने के विरुद्ध है।"

जोर देने के लिए उन्होंने दोहराया—४ नवम्बर को जो द्वितीय सोवियत हस्तक्षेप प्रारम्भ हुआ, " वह एक बुरी बात थी, किन्तु यदि उससे हंगरी में समाजवाद की रक्षा का कार्य सम्पन्न हुआ, जिससे समाजवाद का और अधिक विकास हो सके,...तो यह समस्त प्रकरण एक निश्चयात्मक प्रकरण कहा जायगा—किन्तु शर्त यह है कि जिस क्षण हंगरी में स्थिति स्थिर और शांतिपूर्ण हो जाय, उसी क्षण सोवियत सेनाएँ वहाँ से हट जायें।"

टिटो एक कलाकार है; सभी राजनीतिज्ञ कलाकार होते है। इस भाषण में उन्होंने ऐसा आत्म-चित्रण किया, जिससे उनको समझने में सहायता मिलती है। सबसे गहरा रंग लाल है। वे एक कम्यूनिस्ट है। यदि नीला रंग स्वतंत्रता का प्रतीक है, तो चित्र में उसके बड़े-बड़े भाग मिलते हैं, किन्तु जनतंत्र के प्रतीक श्वेत रंग का उसमें अस्तित्व नहीं है। टिटोवाद का आदर्श एक ऐसी प्रणाली होगी, जिसमें सार्वभौम कम्यूनिस्ट राष्ट्र मास्को के अधीनस्थ नहीं, प्रत्युत उसके साथ (और युगोस्लविया के साथ) सम्बद्ध होंगे; प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय व्यक्तित्व के उपयुक्त आर्थिक और सामजिक स्वरूपों का विकास करेगा, किन्तु कोई भी राष्ट्र सर्वहारा वर्ग की तानाशाही के नाम पर बोलने वाले एक अल्प समुदाय द्वारा शासन की प्रणाली का परित्याग नहीं करेगा।

अक्तूबर १९५६ के अन्तिम भाग में एक दिन संध्या समय मिलोवान जिलास ने अप्रत्याशित रूप से मुझसे टेलिफोन पर बातचीत की। वे एक समय युगोस्लाव कम्यूनिस्ट पार्टी के पोलिट ब्यूरो के सदस्य तथा बेलग्रेड के शासक-दल में चौथे नम्बर के व्यक्ति थे, किन्तु १९५४ में उन्हें नेतृत्व और पार्टी की सदस्यता से बाहर निकाल दिया गया और अब वे एक निजी नागरिक का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उन्होंने मुझसे अपने घर पर आने अथवा नगर में, जिसका अर्थ था किसी काफी-गृह में, मिलने के लिए कहा। (स्पष्टतः मैंने सोचा कि बेलग्रेड मास्को नहीं है।)

जिलास का, जो पहले एक उत्साही टिटोवादी तथा टिटो के घनिष्ठ मित्र थे, अपराध यह था कि, उन्होंने एक युगोस्लाव कम्यूनिस्ट दैनिक पत्र में एक लेख-माला प्रकाशित की, जिसमें समस्त नागरिकों को और अधिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता प्रदान करने तथा स्वतंत्र चुनावों का समर्थन किया गया था। एक कम्यूनिस्ट राज्य में इन लेखो का प्रकाशन पर्याप्त उदारता का प्रमाण था, किन्तु बाद में जो निष्कासन

का दण्ड दिया गया, उससे यह प्रमाणित होता है कि, जनतंत्र के विरुद्ध राष्ट्रीय कम्यूनिज्म भी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है।

पार्टी के समक्ष हुई जिस सुनवाई में जिलास की आलोचना की गयी तथा उन्हें दल से निष्कासित किया गया, उस सुनवाई के समय टिटो ने उनके अनास्थापूर्ण विचारों का उद्गम-स्थल पश्चिमी प्रभावों को बताया, जो एकदलीय तानाशाही के लिए खतरनाक है। और, वास्तव में, जिलास बाद मे और अधिक आगे बढ़ गये—अपनी इस स्थिति की रूपरेखा वे केवल विदेशी पत्रों में ही प्रस्तुत कर सकते थे; उन्होंने युगोस्लाविया में एक बहुदलीय जनतंत्र की स्थापना के लिए अनुरोध किया।

अक्तूबर १९५६ में जब मैं जिलास के घर पहुँचा, तब उन्होंने मुझसे कहा कि, उनकी कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षाएँ नहीं थीं—जो व्यक्ति सत्ता के शिखर के इतना निकट रहा हो, उसके मुँह से इस प्रकार की बात आश्चर्यजनक लगती है, फिर भी यह विश्वास करने योग्य है क्योंकि वे सारत· एक बुद्धिवादी हैं, जो विचारों में रुचि रखते है। चाहे जो कुछ हो, पश्चिमी ढंग के सामाजिक जनतंत्र में उनका विश्वास अधिक प्रबल हो गया था। उन्होंने स्वतंत्रता के एक भावी युगोस्लाव घोषणा-पत्र के एक अनुच्छेद की रूपरेखा भी प्रस्तुत की, जिसके अनुसार कोई भी राजनीतिक दल किसी धर्म अथवा राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदाय अथवा राजतंत्र की पुनः स्थापना के विचार का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता।

एक प्रकार से जिलास का व्यक्तिगत इतिहास स्तालिनवाद से टिटोवाद तक और टिटोवाद से जनतंत्र तक, जिसे टैंकों ने अस्थायी रूप से धराशायी कर दिया, हंगरी की प्रगति के समानान्तर है। जिलासवाद एक ऐसी वस्तु है, जिससे टिटो स्वयं अपने देश में, पिछलग्गू देशों में तथा रूस में डरते है। वे चाहते हैं कि स्तालिनवाद से विमुखता का कार्य टिटोवाद तक ही आकर रुक जाय।

फिर भी, जिस प्रकार माता अपनी सन्तान को सदा अपने से बांध कर नहीं रख सकती, उसी प्रकार आविष्कर्त्ता अपने आविष्कार पर बहुत कम नियंत्रण रख पाता है। टिटोवाद एक यांत्रिक शक्ति है अथवा इतिहास के सप्ताहान्त के लिए एक पड़ाव है। वह चाहे एक वर्ष तक चले अथवा दस वर्षों तक चले, वह एक क्रम (Phase) से अधिक नहीं है, जो द्वन्द्व के नियमों के अनुसार व्यतीत हो जायगा।

अतः अपने निजी दृष्टिकोण के अनुसार कट्टर स्तालिनवादी सही हैं। "यांत्रिक शक्ति से दूर रहो", यह उनकी नीति है। उन्हें सन्देह है कि, टिटोवाद की रक्त-धारा में, स्वेच्छापूर्वक अथवा अनिच्छापूर्वक, ऐसे कीटाणु विद्यमान हैं, जो

अन्ततोगत्वा कम्यूनिस्ट तानाशाही और रूसी साम्राज्यवाद को नष्ट कर डालेंगे। क्रेमलिन के स्तालिनवादी इस बात को अधिक पसन्द करते है कि सम्प्रति जो स्थिति है, वह स्थायी रूप से बनी रहे तथा पोलैण्ड और हंगरी में टिटोवादी तूफ़ान के भविष्य-सूचक परिणामों को वे अवश्य ही चिन्ता के साथ देखेंगे। कम-से-कम वे अन्य पिछलग्गू देशों में उसका प्रसार न होने देने की आशा रखते है। यदि सम्भव हुआ, तो वे इन दोनों शरारती देशों तथा युगोस्लाविया पर पुनः अधिकार कर लेंगे तथा उन्हें माता रूस और पिता स्तालिन की गोद में लौटा देंगे।

अब नाटक का पूर्ण पट-दृश्य आया। मास्को ने टिटो पर, जिनका राष्ट्रीय साम्यवाद सोवियत साम्राज्य के लिए घातक विभीषिका है, भीषण प्रहार प्रारम्भ किया तथा टिटो ने जिलास को, जिनका सामाजिक जनतंत्र युगोस्लाव साम्यवाद के लिए घातक विभीषिका है, गिरफ्तार कर लिया।

दोनों अभिनेताओं ने चरित्र-अभिनेता का अभिनय किया। कम्यूनिस्ट हंगरी के मामलो में रूस द्वारा टैंकों के साथ हस्तक्षेप किये जाने और पोलैण्ड मे कम्यूनिस्ट पार्टी के चुनावों में हस्तक्षेप करने का प्रयत्न किये जाने के बाद 'प्रवदा' ने (१९ नवम्बर १९५६ को) आरोप लगाया कि पुला में किया गया टिटो का भाषण "अन्य कम्यूनिस्ट पार्टियों के कार्यों में हस्तक्षेप करने की मनोवृत्ति" का परिचायक था। भ्रष्ट द्विस्तरीय नैतिकता का कितना अच्छा उदाहरण है यह! इसके अतिरिक्त उस भाषण में टिटो ने 'कम्यूनिस्ट पार्टियो को 'स्तालिनवादी, और 'गैर–स्तालिनवादी' पार्टियों में विभक्त करने का जो प्रयत्न किया, उससे' वस्तुतः, कम्यूनिस्ट-आन्दोलन को केवल हानि ही पहुँच सकती है।" आगे चल कर 'प्रवदा' ने टिटो के इस वक्तव्य की, कि "व्यक्तित्व के सिद्धान्त" के लिए कोई व्यक्ति नहीं अपितु प्रणाली ही अपराधी थी, तुलना "मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विरुद्ध संघर्ष में प्रतिक्रियावादी प्रचारकों" द्वारा किये गये इसी प्रकार की मनगढ़न्त बातों के साथ की। 'प्रवदा' ने कहा कि सामान्य रूप से "भाषण में ऐसी अनेक घोषणाओं का समावेश है, जो स्वरूपतः और सारतः, दोनों प्रकार से सर्वहारा वर्ग के अन्तरराष्ट्रीयतावाद और श्रमिको की अन्तराष्ट्रीय एकता के सिद्धान्तों का खण्डन करने वाली है।" ये शब्द दुष्टतापूर्ण हैं।

फिर भी, 'प्रवदा' के प्रहार के तत्काल बाद टिटो द्वारा जिलास की गिरफ्तारी से क्रेमलिन को सम्भवतः सान्त्वना प्राप्त हुई होगी। १९५४ में नेतृत्व से निर्वासित किये जाने के बाद से ही जिलास की स्थिति गड़बड़ हो गयी थी क्योंकि यद्यपि वे टिटो-शासन के अकेले जनतंत्रवादी विरोधी थे, तथापि शासन ने उदारतापूर्ण

सहिष्णुता से उनकी स्पष्ट शत्रता को शान्त कर दिया था, किन्तु न्यूयार्क के 'न्यू लीडर' नामक साप्ताहिक पत्र के १९ नवम्बर के अंक में प्रकाशित जिलास के लेख ने अवश्य ही टिटो पर आवेश के क्षण में और मर्मस्थल पर प्रहार किया होगा। जिलास ने लिखा था— "युगोस्लाविया के अनुभव से यह प्रमाणित होता हुआ प्रतीत होता है कि, राष्ट्रीय साम्यवाद कम्यूनिज्म की सीमाओं का अतिक्रमण करने अर्थात् ऐसे सुधार प्रारम्भ करने में असमर्थ है, जिनसे कम्यूनिज्म शनैः शनैः स्वतंत्रता के रूप में परिणत हो जायगा।" टिटो स्वयं पर किये गये इस प्रहार से प्रसन्न नहीं हो सकते थे। जिलास ने यह कह कर स्थिति को और भी बुरी बना दिया कि स्वयं स्थायी रूप से परिवर्तित न होकर पूर्वी यूरोप में राष्ट्रीय साम्यवाद का रासायनिक प्रभाव उत्पन्न करने वाले अभिकर्त्ता के रूप में युगोस्लाविया का कार्य अब महत्वपूर्ण नहीं रह गया है। अब पोलैण्ड और हॅगरी में राष्ट्रीय साम्यवाद ने अपनी निजी गति पकड़ ली थी और वह टिटो पर निर्भर नहीं करता था। अन्त में, जिलास ने युगोस्लाव सरकार के विरुद्ध यह आरोप लगाया कि, संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा-परिषद में हॅगरी में रूसी सैनिक हस्तक्षेप के विरुद्ध मत न देकर उसने अपने सिद्धान्तों का परित्याग किया। उन्होंने कहा कि युगोस्लाव-सरकार ने ऐसा कार्य "अपने संकीर्ण आदर्शगत और नौकरशाही वर्ग-हितों" की रक्षा करने के लिए अर्थात् जनतंत्र के विरुद्ध, जिसने हॅगरी की ओर से खतरा उत्पन्न कर दिया था, अपनी तानाशाही की रक्षा करने के लिए किया। जिलास का यह आरोप अक्षम्य था।

इस लेख के लिए, जिसमें पोलिश पत्रों में प्रकाशित होने वाले पोलिश सरकार, मार्क्सवाद और रूस की निन्दा करने वाले सैकड़ों लेखों की अपेक्षा युगोस्लाव सरकार की बहुत कम आलोचना की गयी थी, जिलास को तीन वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया।

टिटो जिलास को गिरफ्तार कर सकते हैं, किन्तु वे युगोस्लाविया में अथवा अन्य कम्यूनिस्ट देशों में स्वतंत्रता के प्रवाह को अवरुद्ध नहीं कर सकते। मास्को टिटो को डॉट सकता है, किन्तु वह समस्त साम्राज्यों को आच्छादित कर लेने वाली राष्ट्रवादी मुक्ति की लहर को सोवियत साम्राज्य के समक्ष शाँत होकर रुक जाने का आदेश नहीं दे सकता। इतिहास तानाशाहों के आदेश पर भी नहीं रुकता।

युगोस्लाविया के संकट को, जो समस्त राष्ट्रीय साम्यवादियों का संकट है, नवम्बर १९५६ में बम्बई में हुए एशियाई समाजवादी सम्मेलन में हिन्देशिया के सुतन शहरयार ने उत्तम रीति से व्यक्त किया था। युगोस्लाविया से आये हुए बन्धु

प्रतिनिधियों की ओर अभिमुख होकर उन्होंने कहा—"क्या आप तानाशाही का आचरण करते हुए स्वतंत्रता की वृद्धि के लिए वास्तव में कार्य कर सकते है?" एक सीमा तक वे ऐसा कर सकते है, किन्तु वह सीमा शीघ्र पहुँच जाती है और तब टिटो को अवश्य ही जिलास को गिरफ्तार करना होगा तथा पीछे हटना होगा अथवा उन्हें आगे बढ़ना होगा और तानाशाही का परित्याग कर देना होगा। युगोस्लाविया और पोलैण्ड के समक्ष सम्प्रति यही समस्या उपस्थित है और अन्ततोगत्वा वह समस्त पिछलग्गू देशों के समक्ष उपस्थित होगी। उनका संकट यह है कि मानव में स्वतंत्र होने की स्वभाविक आकांक्षा होती है। कारागार में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी स्वतंत्रता की कामना करता है।

सोवियत साम्राज्यवाद पिछलग्गू देशों के संकट से पूर्णरूपेण अवगत है और परिणामस्वरूप वह राष्ट्रीय साम्यवाद का विरोध उसी शत्रुता से करता है, जिस शत्रुता से वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विरोध करता है। अतएव, टिटो तथा ख्रुश्चेव और उनके साथियों के समस्त गमनागमनों एवं उनके मध्य होने वाले समस्त सम्मेलनों के बावजूद, युगोस्लाविया तथा सोवियत संघ की नयी, १९५५ के बाद की मित्रता जन्म लेते ही काल-कवलित हो गयी। उसे 'प्रवदा' द्वारा किये गये प्रहारों तथा बेलग्रेड द्वारा दिये गये उत्तरों एवं अन्त में युगोस्लाव विदेश-मंत्री कोका पोपोविक द्वारा संघीय विधान-सभा में किये गये उस भाषण द्वारा दफना दिया गया, जिसमें उन्होंने बताया कि, उनके देश का सोवियत शिविर मे सम्मिलित होने का कोई इरादा नहीं है। इसके अतिरिक्त उन्होंने आरोप लगाया कि 'समस्त साम्राज्यवादी षड्यंत्रों ने सम्मिलित रूप से समाजवाद के पक्ष को जितनी क्षति पहुंचायी, उससे बहुत अधिक क्षति उसे द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की अवधि में स्तालिनवाद ने पहुँचायी तथा वह क्षति अतुलनीय है।" मास्को ने इसका प्रतिशोध युगोस्लाविया को दी जाने वाली सहायता तथा उसके साथ होने वाले व्यापार को समाप्त कर लिया।

इस प्रकार टिटो अँधियारी गली के अन्धकाराच्छन्न सिरे पर पहुँच गये हैं। साम्यवाद पश्चिम के साथ उनके सम्बन्धों में बाधक बनता है; राष्ट्रवाद रूस के साथ उनकी मित्रता के मार्ग को अवरुद्ध करता है। घरेलू नीति में भी वे गतिरोध पर पहुँच गये हैं, जहाँ उन्हें प्राप्त होने वाला राजनीतिक समर्थन उनकी आर्थिक प्रगति के समान ही सीमित है।

युगोस्लाविया की स्थिति तानाशाही के चंगुल से क्रान्तिकारी मुक्ति की मांग कर रही है। टिटो को जिलास की आवश्यकता है। राष्ट्रवाद के साथ जनतंत्र को संयुक्त करने से टिटो को राष्ट्रीय साम्यवाद से प्राप्त होने वाली शक्ति की अपेक्षा अधिक शक्ति प्राप्त होगी।

अध्याय १२

चार अनुगामी

जेकोस्लोवाकिया के प्रधान मंत्री श्री विलियम सिरोकी ने कहा कि, "९० प्रतिशत से अधिक जनसंख्या" उनकी सरकार का समर्थन करती है। मुझे विश्वास नहीं हुआ और मैने एक टैक्सी-ड्राइवर का मत पूछा। "अधिक से अधिक दस प्रतिशत"—उसने उत्तर दिया। इस प्रकार कम-से-कम सौ प्रतिशत तो हो ही जाता है।

सोवियत संघ में विरोधी मतों का पता लगाने के लिए सामान्यत श्रम करना पड़ता है; जेकोस्लोवाकिया में वे स्वत.स्फूर्त रूप से प्रकट किये जाते है। १९५६ के अपने द्वितीय प्राग-प्रवास की समाप्ति के एक दिन पहले मै अतिरिक्त क्राउनों को डालरों में परिवर्तित कराने के लिए राज्य बैक मैं गया। वक्ता (Teller) ने अपने टंकण-यंत्र (Type-writer) में कार्बन प्रतिलिपि के साथ कोरा कागज रखा तथा अनेक विवरणों के खानों की पूर्ति की। तत्पश्चात् उसने कार्बन प्रतिलिपि के साथ दूसरी प्रश्नावली टंकित की। उसने दोनों पर हस्ताक्षर किये तथा प्रति-हस्ताक्षर के लिए उन्हें एक उच्चतर अधिकारी को दे दिया। "समय और शक्ति का कितना दुरुपयोग है"—मैंने कहा—"किसी भी अन्य देश में क्राउनों को देने के बीस सेकण्ड बाद ही मुझे डालर मिल गये होते।"

"किसी भी अन्य देश में नहीं"—उच्चतर अधिकारी ने संशोधन करते हुए कहा—"किसी भी पश्चिमी देश में।" वह यह प्रदर्शित कर रहा था कि, उसकी सहानुभूति किस ओर थी।

मैं एक टैक्सी-ड्राइवर की बगल में बैठा और उससे अपने गन्तव्य स्थान का नाम बताया। "जर्मन बोलते हो?"—मैंने पूछा।

"नहीं।"—उसने उत्तर दिया।

" अंग्रेजी ? "

" मुझे खेद है कि नही । "

" रूसी ? "

" नहीं, नहीं, नहीं ! " – उसने चिल्ला कर कहा और अपने हाथ के अगूठों को जोर के साथ नीचे की ओर दबाया । वह रूस के प्रति अपने आक्रोश को व्यक्त कर रहा था ।

प्राग के एक संग्रहालय में आधुनिक कला की एक प्रदर्शनी में एक चित्र के समक्ष मै खड़ा था । मैने अपनी बगल मे खड़े एक अनजान व्यक्ति से कहा— " यह समाजवादी यथार्थवाद जैसा तो नहीं दिखायी देता, क्या वैसा दिखायी देता है ? "

" और यह अच्छी बात है कि यह वैसा नहीं दिखायी देता । " – उसने कहा ।

वह एक नवयुवक शिल्पकार था । मैंने उसके कार्य के सम्बन्ध में पूछा । " सर्जनात्मक व्यक्ति का सम्मान नही किया जाता । " – उसने फुसफुसाते हुए कहा । मैंने सामान्य स्थितियों के सम्बन्ध में पूछा । उसने चारों ओर देखा; वहाँ अन्य दर्शक थे, जो उसकी बातों को सुन सकते थे । उसने ओठों के सामने अपनी अगुलिया कर दीं; तत्पश्चात् उसने अपनी कलाइयों को एक दूसरी के ऊपर रखा और उन्हें दबाया ।

प्राग में अपने प्रवास-काल में मैने मौन और दासता के इस अभिनय को अनेक बार देखा । फिर भी, लोग अजनबी व्यक्तियों से भी बात करते थे । मै एक दिन विदेश-कार्यालय के चौड़े गलियारे में जा रहा था कि, मैने एक व्यक्ति से दिशा-निर्देश के लिए कहा । वह एक भौगोलिक विभाग का मुख्य अधिकारी सिद्ध हुआ, जिसने युद्ध से पूर्व उक्त विभाग में स्वर्गीय विदेश-मंत्री जान मसारिक के अन्तर्गत कार्य किया था । " वे आश्चर्यजनक व्यक्ति थे । " – मैंने स्वेच्छापूर्वक कहा ।

" वे देशभक्त और सज्जन थे । " – उसने मत व्यक्त किया ।

हम लोग एक खिड़की के निकट खड़े थे और हम दोनो ने नीचे उस सहन की ओर देखा, जिसके पत्थरों पर १० मार्च १९४८ को गिरकर मसारिक की मृत्यु हो गयी थी । चाहे उन्हें धक्का दे कर गिरा दिया गया हो, चाहे वे इस कारण कूद पड़े हों कि कम्यूनिस्टों ने उनके लिए और कोई मार्ग नही रहने दिया था, उनकी मृत्यु हत्या ही थी । उस व्यक्ति ने दुख से सिर हिलाया ।

" और अब स्थिति कैसी है ? " – मैंने कुछ क्षण रुक कर पूछा ।

" हमें अपनी स्वतन्त्रता का अभाव खलता है । " – उसने कहा ।

मैं इसी प्रकार के चालीस वार्तालापों का विवरण प्रस्तुत कर सकता हूँ।

फिर भी, तानाशाही के अन्तर्गत विरोध वर्षों तक विद्यमान रह सकता है और उसका विस्फोट तब तक नहीं हो सकता, जब तक उसे चिनगारी अथवा दियासलाई से प्रज्ज्वलित न किया जाय। मार्च, १९५३ में स्तालिन की मृत्यु से जेकोस्लोवाकिया में मुक्ति अथवा कम-से-कम बन्धन के शिथिल होने की आशाओं को प्रोत्साहन मिला। इसके बदले, जब प्राग सरकार ने 1 जून १९५३ के लिए मुद्रा-विषयक एक ऐसे सुधार की घोषणा की, जो बचायी गयी धन-राशि और मजदूरी को जब्त कर लेने के तुल्य था, तब पिल्सेन में मजदूरों ने हड़ताल कर दी और जनता के समूह मौन रूप से उस स्थान पर एकत्र हुए, जहाँ अमरीकी सैनिक नाजियों के साथ युद्ध करते हुए मारे गये थे। उनका समर्थन ट्रेड-यूनियन नेताओं तथा यहाँ तक कि कम्यूनिस्टों ने भी, जिन्होंने अपने पार्टी-कार्ड फाड़ डाले, किया। अमरीकी टैंक दस्ते के सेनापति जनरल पैट्टन ने मई, १९४५ में पिल्सेन को मुक्त किया था; नागरिकों ने अपने, शांतिकालीन रूसी दमनकर्त्ताओं के प्रति विरोध प्रकट करने के लिए अपने युद्धकालीन अमरीकी मुक्तिदाताओं के लिए प्रदर्शन किये। यदि पैट्टन ने निष्क्रिय न रह कर प्राग पर—जो सड़क द्वारा पिल्सेन से केवल तीन घण्टे की दूरी पर है—अधिकार कर लिया होता तथा रूसियों को उस पर अधिकार न करने दिया होता, तो जेकोस्लोवाकिया स्वतंत्र रह गया होता। इस बात का अनुभव करने के लिए उनमें से किसी का भी इतिहासकार होना आवश्यक नहीं था। (यदि आंग्ल-अमरीकी सशस्त्र सेनाओं को उनकी सरकारों ने रूसियों से पहले ही बर्लिन और वियना में प्रवेश करने की अनुमति दे दी होती, तो आज यूरोप का स्वरूप पूर्णतया भिन्न ही होता।)

पिल्सेन अन्धकार में विद्युत्-प्रकाश के तुल्य था। अभी उसके महत्व का मूल्यांकन करने अथवा यह कह सकने का समय बिल्कुल नहीं आया है कि उसका कोई महत्व ही नहीं था।

जेकोस्लोवाकिया में दूसरा संघर्ष अप्रैल, मई और जून, १९५६ में घटित हुआ। वह स्पष्टतः मास्को में हुई बीसवीं पार्टी कांग्रेस तथा पोलैण्ड और हंगरी पर पड़े उसके प्रभावों का परिणाम था। उक्त दोनों देशों में छात्र, पत्रकार और लेखक शीघ्र ही उत्पन्न होने वाली क्रांति के लिए शाब्दिक आधार का निर्माण कर रहे थे। उसी प्रकार जेकोस्लोवाकिया में भी छात्रों और लेखकों में जान आयी। कवियों ने नेतृत्व किया। प्राग में २२ अप्रैल १९५६ को प्रारम्भ हुई लेखक-कांग्रेस में, जो एक सप्ताह तक चलती रही, चेक कवि जारोस्लाव सीफर्ट ने अप्रत्यक्ष श्लेषात्मक प्रश्नों

जिनका महत्व स्पष्ट था, और प्रत्यक्ष आरोपों, दोनों का प्रयोग किया। उसने कहा–"हमें इस कांग्रेस में ऐसे व्यक्तियों से, जो महत्वहीन नहीं है, बारम्बार यह बात सुनने को मिलती है कि लेखकों के लिए सत्य बात बताना आवश्यक है। इसका अर्थ अवश्य ही यह होगा कि हाल के वर्षों में लेखक सत्य नहीं बोलते थे। अब प्रश्न यह है कि वे सत्य बोलते थे अथवा नहीं बोलते थे? स्वेच्छापूर्वक अथवा अनिच्छापूर्वक? जानबूझ कर अथवा बिना समझे-बूझे? हार्दिक उत्साह के बिना अथवा हार्दिक सहमति से?...मै आप से पूछता हूँ कि जब १९४८ में चेक साहित्य पर एक ऐसे व्यक्ति का, जिसे चेक भाषा का भी ज्ञान नहीं था, "आधिपत्य" था, तब हम सब कहाँ थे... उस समय हम कहाँ थे, जिस समय इस व्यक्ति ने बीस-वर्षीय बालकों और बालिकाओं के समूह को भेजा, जिन्होंने युवकोचित उत्साह के साथ चेक पुस्तकों की प्लेटों को तोड़ डालने और नष्ट कर देने का आदेश दिया?... जिस समय अनेक पुस्तकालयाध्यक्षों ने सतर्कता, कायरता, क्रोध अथवा अनुचित उत्साह के वशीभूत होकर हमारे पुस्तकालयों को नष्ट कर देने के लिए और केवल फरवरी १९४५ के बाद, जब कम्यूनिस्टों ने सत्ता हस्तगत कर ली, प्रकाशित पुस्तकों से नये पुस्तकालयों का निर्माण करने के लिए उन पर हाथ रखे, उस समय हम कहाँ थे?

जान स्टुअर्ट मिल और वाल्टेयर को उद्धृत करते हुए उसने कहा–"कारागार में पड़े लेखकों के विषय में सोचिए; हमें उनके मानवीय भाग्य के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। हमें उनके अपराध अथवा निर्दोषता के सम्बन्ध में निर्णय करने का कोई अधिकार नहीं है, किन्तु एक चेक कवि होने के नाते मुझे अपना यह मत व्यक्त करने का अधिकार है कि वे अपने राजनीतिक अपराध और त्रुटियों के लिए पर्याप्त कष्ट भोग चुके है।"

यह वीरतापूर्ण प्रहार कोई अकेला कृत्य नहीं था। एक अन्य कवि फ्रैण्टिसेक हरूबिन ने कहा–"चेक साहित्य के लिए यह अस्वास्थ्यकर और अपमानजनक बात थी कि विगत दस वर्षों में उसकी समस्याओं पर स्पष्टतापूर्वक विचार-विमर्श नहीं किया जा सका। कवियों को समारोहात्मक निन्दाएँ लिखने के लिए विवश किया गया, किन्तु एक लोकोक्ति में संशोधन करके कहा जाय, तो कहा जायगा कि बलात् लादा गया प्रेम वास्तव में प्रेम नहीं होता।" उसने शिकायत की कि जिरी कोलार को "जो अपने को परिस्थितियों के अनुकूल बनाने और तलवे चाटने की अपेक्षा खून बहा देना अधिक पसन्द करता, एकान्तवास के लिए विवश कर दिया गया और अन्त में उस का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया गया। यह

अमानुषिक और असंस्कृत है... यदि आज हममें से अनेक व्यक्ति लज्जित नहीं है, तो कल हमारी सन्तानें लज्जित होंगी।" हरूबिन ने घोषित किया कि एक सुप्रसिद्ध चेक कवि के शव-संस्कार के समय "मैने कतिपय पद्यों की रचना की थी, किन्तु वे मिलते नहीं, क्योंकि उस समय इस प्रकार की चीजों को जेब में लेकर चलना बहुत अधिक सुरक्षित नही था।"

उसी कॉंग्रेस में भाषण करते हुए स्लोवाक लेखक लैडिस्लाव नमैको ने सूचित किया—"उन्होंने मेरे मित्र को गिरफ्तार कर लिया, जिसका मै सम्मान करता था और जिसे मैं चाहता था। उन्होंने मेरे विचारों को विश्रृंखलित कर दिया... मेरी आत्मा चौकन्नी हो गयी।"

इन तथा इन्ही के सदृश्य अनेक क्रोधाभिव्यक्तियों ने जेकोस्लोवाकिया के पार्टी व्यवस्थापकों को इतना अधिक संत्रस्त कर दिया कि उनकी सब से बड़ी 'तोप' गणराज्य के राष्ट्रपति, देश के सर्वाधिक प्रभावशाली कम्यूनिस्ट एण्टोनिन जापोटाकी सक्रिय हो गये। उन्होंने मास्को की बीसवीं पार्टी कांग्रेस को उद्धृत करते हुए स्वीकार किया कि, व्यक्तित्व के सिद्धान्त ने जेकोस्लोवाक साहित्य को क्षति पहुँचायी थी। उन्होंने कहा कि उस कॉंग्रेस ने "कला में समस्त सर्जनात्मक शक्तियों के लिए असाधारण रूप से अनुकूल वातावरण की स्थापना की" किन्तु—यहां 'तोप' 'कार्क स्क्रू' (बोतल का काग निकालनेवाला) के समान प्रतीत होने लगी—"पुराने जगत् के अवशेषों, जनता के मस्तिष्क में बचे रह गये पूँजीवादी विचारों, सिद्धान्तों और मतों के विरुद्ध कठोर एवं निरन्तर संघर्ष करते रहना आवश्यक है।" फिर भी, "लेखक को पूर्णतया स्वतंत्र होना चाहिए और अपने कलात्मक कार्य का निश्चय करना चाहिए।" फिर भी, पार्टी "समाजवाद एवं साम्यवाद के पक्ष के लिए समस्त लेखकों को खुले रूप से एवं ईमानदारी के साथ अपनी ओर लेने के कार्य को निश्चय ही अपना राजनीतिक उद्देश्य मानती है और मानती रहेगी।"

राष्ट्रपति जापोटोकी के व्यापक आश्वासनों और प्रच्छन्न चेतावनियों को बाद में घटित घटनाओं के प्रकाश में पढ़ना आवश्यक है। कतिपय लेखकों को कारागार से मुक्त कर दिया गया, किन्तु स्पष्ट सम्भाषण और कवियों द्वारा कही गयी बातों-जैसी बातों का सरकारी तौर से प्रकाशन अकस्मात् बन्द हो गया। जब मैंने अक्तूबर १९५६ में इस बात की चर्चा संस्कृति-मंत्री फ्रैण्टिसेक काहुदा, विदेश-मंत्री वाक्लाव डेविड और प्रधान मंत्री विलियम सिरोकी से की और कहा कि लेखकों को भयभीत बनाकर आत्मसमर्पण करने के लिए विवश किया गया, तब तीनों ने प्रायः एक ही उत्तर दिया। वह उत्तर था—"नही, लेखकों ने अपने मत व्यक्त किये, और कम्यूनिस्टो

की हैसियत से हमने अपने मत व्यक्त किये। आखिरकार, हमें भी तो भाषण-स्वातंत्र्य का उतना ही अधिकार है", किन्तु सरकार की आवाज भयंकर मेघ-गर्जन के तुल्य है।

लेखकों के साथ-साथ ही, किन्तु सम्भवतः उनसे स्वतंत्र रूप से, छात्रों ने भी अपने क्रोध को व्यक्त किया। दोनों समूह फरवरी १९५६ में हुई बीसवीं सोवियत पार्टी कॉंग्रेस के प्रति अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त कर रहे थे। अप्रैल में प्राग, ब्राटिस्लावा तथा अन्य विश्वविद्यालयों के छात्रों ने प्रस्तावों के प्रारूप तैयार करना प्रारम्भ किया, जिन्हें उन्होंने बुलेटिन-बोर्डों पर प्रदर्शित किया तथा हवाई डाक और मोटर साइकिल-चालक संदेशवाहकों द्वारा समस्त देश की पाठशालाओं में वितरित किया। इन प्रारूपों को एक समन्वित प्रस्ताव का रूप प्रदान किया गया और १२ मई को उसे संस्कृति-मंत्री काहुदा के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इस प्रस्ताव में सन्निहित बातों को सिडनी ग्रूसन ने 'न्यूयार्क टाइम्स' के २८ मई के अक में प्रकाशित किया तथा कम-से-कम आंशिक रूप से जेकोस्लोवाक सरकारी सूत्रों ने भी उनकी पुष्टि की – किन्तु यह आंशिक पुष्टि भी विस्मयकारी है। यदि इस बात को ध्यान में रखा जाय कि प्रस्ताव का प्रारूप ऐसे युवकों द्वारा निर्मित किया गया था, जिनकी आयु अधिक-से-अधिक बीस वर्षों की थी तथा जिनके मस्तिष्कों को आठ वर्षों तक मार्क्सवाद-लेनिनवाद की भट्ठी में सेका गया था, तो ज्ञात होगा कि, प्रस्ताव में सन्निहित बातें वास्तव में उल्लेखनीय थीं। प्रस्ताव द्वारा मांग की गयी थी कि, जनता को संसद के सदस्यों पर नियत्रण करने एवं उन्हें वापस बुलाने का अधिकार प्रदान किया जाय; एक से अधिक राजनीतिक दलों को कार्य करने की अनुमति प्रदान की जाय; रेडियो और पत्र समाचारों को ईमानदारी के साथ एवं तत्काल प्रसारित करें; विदेशी रेडियो स्टेशनों को अवरुद्ध करने की प्रथा बन्द की जाय; पश्चिमी साहित्य और फिल्मों को उपलब्ध कराया जाय; नागरिकों को यात्रा करने की स्वतंत्रता प्रदान की जाय, राजनीतिक बन्दियों को क्षमा प्रदान की जाय, बलपूर्वक स्वीकारोक्तियां प्राप्त करने के लिए उत्तरदायी जांच-कर्त्ताओं को दण्डित किया जाय, और अदालतों के अभिलेखों को प्रकाशित किया जाय; सोवियत ध्वज को केवल सोवियत छुट्टियों के अवसर पर प्रदर्शित किया जाय, न कि, जैसी कि प्रथा है, जब-जब जेकोस्लोवाक ध्वज फहराया जाता है, तब-तब फहराया जाय; और सोवियत राष्ट्रगान को अपेक्षाकृत कम सुनाया जाय। प्राग के चार्ल्स विश्वविद्यालय के छात्रों ने "एक देश, एक ध्वज, एक राष्ट्रगान" का उच्चार किया। इसके अतिरिक्त छात्रों ने मांग की कि, निवासस्थानों की अधिक अच्छी व्यवस्था की जाय

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के पाठ्यक्रमों में कमी की जाय तथा रूसी भाषा का अध्ययन अनिवार्य न रहे।

इन मांगों को स्वीकार नहीं किया गया। इसके विपरीत, छात्रों का मुँह बन्द कर दिया गया। पार्टी और सरकार के पत्रों ने ऐसी भाषा में, जिसे समझने में न तो वे और न लेखक चूक कर सकते थे, आदेश दिया कि आलोचना बन्द कर दी जाय। 'जिवोट स्ट्रैनी' ने घोषित किया—"जेकोस्लोवाकिया की कम्यूनिस्ट पार्टी ने बता दिया है और बताना जारी रखेगी कि वह शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोणों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं प्रदान करेगी...वर्ग के अर्थ में हम स्वतंत्रता को श्रमिकों की स्वतंत्रता के रूप में समझते हैं, न कि शोषकों और उनके एजेन्टों की स्वतंत्रता के रूप में।" 'म्लाडा फ्राण्टा' ने कहा—"हाल में ही कतिपय लेखकों तथा विश्वविद्यालयीय छात्रों के एक छोटे-से भाग ने जिन विदेशी, असमाजवादी प्रवृत्तियों का प्रदर्शन किया है, उनकी ओर हमारी कम्यूनिस्ट पार्टीने ध्यान आकृष्ट किया है। हमें इस प्रकार के समस्त प्रभावों के विरुद्ध संघर्ष करना है।"

लन्दन के 'न्यू स्टेट्समैन एण्ड नेशन' के सम्पादक जान फ्रीमैन ने जेकोस्लोवाकिया तथा अन्य पिछलग्गू देशों की अपनी यात्रा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए, अपने पत्र के २१ जुलाई १९५६ के अंक में लिखा :—

"...चेक कम्यूनिस्ट पार्टी के केन्द्रीय सचिव (आदर्श) जिरी हेण्डरिख से, जब सैद्धान्तिक शब्दावली में "जनतत्रीकरण" के वास्तविक अर्थ पर प्रकाश डालने के लिए कहा गया, तब उन्होंने मुझे औद्योगिक एव आर्थिक आयोजन के विकेन्द्रीकरण के ठोस उदाहरणों द्वारा उत्तर दिया...जब मैने प्राग में जिरी हेण्डरिख से चेक पार्टी की परिभाषा के अनुसार राजनीतिक परिवर्त्तनों की परिभाषा करने के लिए कहा, तब उन्होंने अपने उत्तर का आरम्भ इन शब्दो से कर मुझे आश्चर्यचकित कर दिया कि, 'बुनियादी तौर पर यहाँ कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ है"।

प्राग की यात्रा के पश्चात् मैं भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचा कि, जेकोस्लोवाकिया के नेता शत प्रतिशत स्तालिनवादी है तथा उन्हें इस बात में गहन विश्वास है कि स्तालिनवादी बने रहना नितान्त आवश्यक है। इस भय से कि जनता तथा बुद्धिवादियों का असन्तोष शीघ्र ही उन्हें घसीट कर जनतंत्र के "नरक" में पहुंचा देगा, नेताओं ने स्तालिन—विमुखता की फिसलनपूर्ण ढालवाँ भूमि पर बाहर निकलने से इनकार कर दिया। इसके बदले वे तानाशाही की अनमनीय सपाट चट्टान पर दृढ़तापूर्वक पाँव जमा कर खड़े रहे। "यदि आप जनता को अंगुली पकड़ने देते हैं, तो आपको पोजनान, पोलैण्ड की शीत क्रान्ति तथा हंगरी की उष्ण क्रान्ति जैसे

संकटों का सामना करना पड़ता है।...यदि आप असन्तुष्टों का दमन शीघ्र कर दें, तो आप को बाद में टैंक नहीं बुलाने पड़ेंगे।" ऐसा प्रतीत होता है कि ये नियम जेकोस्लोवाक कम्यूनिस्ट नेताओं का पथ-प्रदर्शन करते है। प्राग के अधिकारियों के साथ इस विषय पर तर्क करना मुझे कठिन प्रतीत हुआ; अपने मानदण्ड से—और सम्प्रति—वे सही है। जब विरोध इतना व्यापक हो, तब थोड़ा-सा तुष्टीकरण भी खतरनाक होता है। मै केवल उनके इस कथन से सहमत नहीं हो सकता कि यह "समाजवाद" और "स्वतंत्रता" है। इसके अतिरिक्त वे सदा-सर्वदा के लिए ढक्कन पर नहीं बैठे रह सकते।

जेकोस्लोवाक सरकार जो इतने अधिक समय तक कठोर स्तालिनवादी मार्ग पर चलने में समर्थ रही, उसका मुख्य कारण अधिकांश विशेषज्ञों के मतानुसार, देश की अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल आर्थिक स्थिति थी। मास्को से प्राग में पहुँचने पर मुझे प्राग के उच्चतर स्तर विशेष रूप से प्रभावोत्पादक दृष्टिगोचर हुए। रूस की अपेक्षा लोग अधिक अच्छे वस्त्र धारण किये हुए, अधिक प्रसन्न-चित्त और अधिक स्वस्थ प्रतीत हुए। दूकानों में अधिक तथा बढ़िया सामान थे और भीड़ भी कम थी—जिसका कारण मूल्यों की अधिकता थी। शासन "स्तालिनाल्ली" (Stalinallees) अथवा अन्य वाह्याडम्बरों पर विशाल धन-राशियाँ बर्बाद करता हुआ नहीं प्रतीत हुआ। यद्यपि प्राग वास्तव में एक नगर के रूप में सदा के समान ही सुन्दर था तथापि वह घिसाघिसाया-सा दृष्टिगोचर हुआ; उसके भवन, बसे और ट्रामें अधिकांशतः युद्ध-पूर्व काल की थीं। सोवियत संघ ने, प्रकटतः, जेकोस्लोवाकिया को अन्य पिछलग्गू देशों तथा एशियाई और पश्चिमी राष्ट्रों के लिए मशीनों के औजार प्रदान करने का एक स्रोत बनाने की योजना बनायी थी और इसलिए उसने चेकों को पर्याप्त परिमाण में कच्ची सामग्रियां भेजीं। चेकों ने, जो अच्छे श्रमिक और अनुभवी संगठनकर्त्ता होते हैं, उन कच्ची सामग्रियों का सर्वोत्तम उपयोग किया। अन्तिम बात यह है कि चूँकि जेकोस्लोवाकिया ८० प्रतिशत औद्योगिक है, इसलिए सामूहिकीकरण के परिणाम दुर्बलताकारक होते हुए भी अन्य, अधिक ग्राम्य "जनगणराज्यों" में सामूहिकीकरण के परिणामों की अपेक्षा कम भयंकर थे।

स्तालिन के देहावसान के वाद जेकोस्लोवाकिया के मार्ग के अपेक्षाकृत अधिक सरल होने का दूसरा कारण यह है कि जब कि पोलैण्ड, हंगरी और बल्गेरिया ने अपने राष्ट्रीय साम्यवादियों का शुद्धीकरण कर दिया था और इस प्रकार टिटोवादी भावना को जीवित रखा था, तब जेकोस्लोवाकिया ने अपने कट्टर और अति घृणित,

मास्को-प्रशिक्षित स्तालिनवादी, कम्यूनिस्ट पार्टी के महासचिव रूडोल्फ स्लैन्स्की का शुद्धीकरण किया। नवम्बर १९५२ में तेरह अन्य व्यक्तियों के साथ उस पर मुकदमा चलाया गया और फासी दे दी गयी। यद्यपि स्लैन्स्की के उत्तराधिकारी कम स्तालिनवादी नहीं थे और वे भी समान रूप से मास्को की इच्छाओं के दास थे, तथापि उसके साथ प्रतिकूल तुलना करने पर वे एक राहत के रूपमें प्रतीत हुए। उनमें से कोई भी टिटोवादी नही था। व्लाडिस्लाव गोमुल्का के रूप में पोलैण्ड में स्तालिनवाद का राष्ट्रीय साम्यवादी विकल्प विद्यमान था; जिस प्रकार हंगरी में इमरे नाज के रूप में यह विकल्प विद्यमान था। जेकोस्लोवाकिया में यह बात नहीं थी। स्लैन्स्की के बाद के कम्यूनिस्ट प्रभुओं में से कोई भी इस आधार पर जनता के समर्थन के लिए अपील नहीं कर सकता था कि उसे मास्को द्वारा दण्डित किया गया था। वे सभी मास्को द्वारा नियुक्त किये गये थे। चूंकि नेता जानते थे कि उनकी लोकप्रियता कितनी तुच्छ है (वह लगभग मतदान के उल्टे अनुपात में है: ३० मई १९४८ को कुल मतदाताओं के ८६ प्रतिशत ने और २८ नवम्बर १९५४ को ९७·९ प्रतिशत ने कम्यूनिस्टों के पक्ष में मत दिया), इसलिए उन्होंने प्रत्यक्षतः सोवियत संघ का सहारा लेने की बुद्धिमत्तापूर्ण नीति अपनायी। प्रत्येक सम्भव अवसर पर, जिसमें अत्यन्त असम्बद्ध अवसर भी सम्मिलित है, जेकोस्लोवाक कम्यूनिस्ट प्रणाली क्रेमलिन के साथ अपनी घनिष्ठता तथा शाश्वत रूप से उसके अनुगमन पर बल प्रदान करती है, मानो वह जनता से कहती हो —"हम जानते है कि तुम हम से प्यार नहीं करते, किन्तु हमारा बड़ा भाई हम से प्यार करता है और वह अत्यन्त शक्तिशाली है।" ७ सितम्बर, १९५६ को "रूडे प्रावो" ने लिखा — "सोवियत संघ के प्रति दृष्टिकोण विचार-विमर्श का विषय नहीं है।" स्पष्टतः वह नहीं है, क्योंकि सोवियत संघ के बिना वर्त्तमान शासन का अस्तित्व ही समाप्त हो जायगा, किन्तु यद्यपि रूस आर्थिक प्रतिबन्धों और हस्तक्षेपों की धमकियों द्वारा वर्त्तमान जेकोस्लोवाक सरकार की अस्तित्व-रक्षा की गारण्टी प्रदान करता है, तथापि देश में सोवियत सेनाएँ नहीं रखी गयी हैं। परिणामतः हंगरी और पोलैण्ड में रूसी सैनिकों की उपस्थिति के कारण जिस क्रोध की सृष्टि हुई, उस क्रोध से जेकोस्लोवाकिया बच गया है।

इसके अतिरिक्त जेकोस्लोवाकिया ने पुराने आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य की, जिसका वह एक समय में एक भाग था, कतिपय कौशलपूर्ण प्रशासनात्मक पद्धतियों को कठोर कम्यूनिस्ट शासन के अनुकूल बना दिया है। तनाव में कमी करने के लिए सुविधाएँ प्रदान की जाती है, किन्तु उनकी घोषणा नहीं की जाती,

जिससे और अधिक सुविधाओं की मांग न की जाने लगे अथवा सरकार की भूतकालीन भूलों का स्मरण न दिलाया जाने लगे। (इस प्रकार लेखकों के अतिरिक्त दो रोमन कैथोलिक बिशपो, स्लैन्स्की के अनेक सह-प्रतिवादियों तथा पार्टी के सचिव के रूप में स्लैन्स्की की नायब मेरिया स्वर्मोवा को चुपचाप जेल से रिहा कर दिया गया।) राष्ट्रीय प्रतिरक्षामंत्री तथा उपप्रधान मंत्री अलेक्सेज सेपिक्का को स्तालिन-विमुखता के एक क्षणांश में ही उन पदों से हटा दिया गया—उसे प्रेमपूर्वक नापसन्द किया जाता था—किन्तु सन्तोष के लिए उसे एक महत्त्वपूर्ण पद प्रदान किया गया। नागरिक जब सरकार के प्रति अपनी शत्रुता-भावना को निजी तौर पर व्यक्त करते हुए सुन लिये जाते है, तब सामान्यतः उन्हें दण्डित नही किया जाता, किन्तु ऐसे सार्वजनिक वक्तव्यों के लिए उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता है, जिनसे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता हो कि, अधिकारियों के रुख में नरमी आ गयी है। यदि किसी विदेशी संकट अथवा आन्तरिक परिस्थिति के कारण असन्तोष में वृद्धि होती है, तो सरकार के पास इस बात की पर्याप्त आर्थिक क्षमता है कि वह कहीं वेतन में वृद्धि कर दे, कहीं मूल्यों में कमी कर दे, किसी विशेष असन्तुष्ट क्षेत्र में अधिक सामग्रियॉ भेजने लगे तथा समय-समय पर असहयोगी कृषकों के बाहर जाने और सुधरे हुए 'कुलकों' के भीतर आने के लिए सामूहिक फार्मों के द्वार खोल दे। कभी-कभी सरकार जनता का समर्थन प्राप्त करने के प्रयास में यहूदी-विरोध का उपयोग करती है, जैसा कि स्लैन्स्की के मुकदमे में किया गया था; बहुधा वह पुनर्जात जर्मन सैनिकवाद के खतरे पर बल प्रदान करती है। (कम्यूनिस्ट इस धारण के अनुसार काम करते हैं कि चूँकि दो शत्रुओं से घृणा करना कठिन है, इसलिए वे जर्मन-विरोधी भावना को जीवित रख कर रूस के प्रति शत्रुता की भावना को दूर ही रख सकते है) और कम्यूनिस्ट प्रणाली अपनी प्रजा को इस बात का विस्मरण कभी नहीं करने देती कि वह कठोर दण्ड दे सकती है। इस बात की याद दिलाने के लिए बहुधा साम्राज्यवादी एजेण्टों और जासूसों के, जिन्हें निर्ममतापूर्वक समाप्त कर दिया जायगा, एक नये संकट के सम्बन्ध में जोर-जोर से अप्रमाणित घोषणाऍ की जाती है। अब जनता जान गयी है कि, यह उचित व्यवहार करने एवं सजग हो जाने के लिए गुप्त पुलिस की एक चेतावनी होती है।

सांस्कृतिक और तांत्रिक दृष्टि से जेकोस्लोवाकिया (जनसंख्या एक करोड़ चालीस लाख) पूर्वी यूरोप का सर्वाधिक विकसित देश है, किन्तु वह पिछलग्गू देशों में सबसे अधिक पिछलग्गू भी है। अन्य तीन पिछलग्गू देश रूमानिया;

बल्गेरिया और अल्बानिया हैं। राष्ट्रीय स्वाधीनता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संघर्ष में पोलैण्ड और हंगरी की जनता ने इन चारों को बहुत पीछे छोड़ दिया है।

जेकोस्लोवाकिया के समान ही रूमानिया भी रूस का ही अनुगमन करता है। २ सितम्बर १९५६ को बुखारेस्ट के सरकारी दैनिक पत्र "स्कैन्तेइया" ने लिखा—"सोवियत संघ और उसकी कम्यूनिस्ट पार्टी का महान अनुभव हमारे लिए शिक्षा एवं प्रेरणा का मुख्य स्रोत है और रहेगा, जो अनेक त्रुटियों एव विफलताओं से हमारी रक्षा करेगा"। यह वक्तव्य टिटोवाद का खण्डन और क्रेमलिन का समर्थन एक साथ ही करता है। फिर भी, जब क्रेमिलिन ने स्तालिन-विमुखता का मार्ग ग्रहण किया, तब रूमानिया के कठपुतली नेताओं की नींद महीनों तक हराम हो गयी थी, क्योंकि रूस में स्तालिन-विमुखता से टूटे हुए राजनीतिक तारों की मरम्मत हो गयी तथा उप-उत्पादन के रूप में केवल उतनी ही मात्रा में नीतियों में उदारता आयी, जितनी मात्रा सुरक्षापूर्ण थी, तब रूमानिया में उसका अर्थ यह होता कि, आलोचना एवं स्वतंत्रता की लहर के लिए द्वार खुल जाते, जिससे शासन को उखाड़ फेंका जा सकता था। जब भारत के उपराष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने २७ जून १९५६ को रूमानिया की बृहत् राष्ट्रीय विधान सभाके विशेष अधिवेशन में भाषण किया और कहा कि "व्यक्ति को अनाम जन-समूह में खोया हुआ एक घटक नहीं होना चाहिए, क्योंकि जगत का सर्वोच्च मूल्य एक मानव-व्यक्ति है। सत्य व्यक्ति पर ही प्रकट होता है।" तब विस्मित कठपुतली सांसदिक अपने हाथों पर हाथ धरे बैठे रह गये। जब उन्होंने उनसे कहा—"अतः हमारे मतानुसार यह आवश्यक है कि, अल्प संख्या और विरोधी दलों को अपना मत व्यक्त करने का पूर्ण अवसर प्रदान किया जाना चाहिए", तब उनके चेहरे गजों नीचे लटक गये। उन्होंने पुनः कहा —"उत्पीड़न एवं रूढ़िवादिता की शताब्दियों में हमें विष के प्याले, 'क्रास', 'स्टेक', यातना-गृह और नजरबन्दी-शिविर के रूप में चेतावनियां दी गयी थी......हमारे मतानुसार संसद असन्तोष की अभिव्यक्ति के लिए होती है, उसका दमन करने के लिए नहीं।" सौभाग्यवश वे एक सम्मानित विदेशी अतिथि थे और उन्हें भाषण करने के लिए आमंत्रित किया गया था, अन्यथा उन्हें किसी नजरबन्दी शिविर में भेज दिया गया होता। उनके भाषण को प्रकाशित नहीं किया गया।

उसी महीने बुखारेस्ट में लेखकों की एक कांग्रेस में अलेक्जेण्डर जार नामक एक रूमानियन उपन्यासकार और निबन्धकार ने इसी प्रकार के स्वर में भाषण किया और तब से उसके सम्बन्ध में कुछ भी नहीं सुना गया है। श्री जार ने घोषित किया कि कम्यूनिस्ट अपने सदस्यों को "कायरता की भावना" से शिक्षित

करते हैं । उन्होंने कहा कि लेखक " दोहरा जीवन व्यतीत करते है ।" साहित्यिक आलोचना निम्न स्तर पर पहुँच गयी थी तथा कम्यूनिस्ट पार्टी कई लेखकों के विरुद्ध पुलिस शक्ति का प्रयोग कर रही थी । जार ने प्रतिबन्धी को भंग करने तथा तूफान उत्पन्न करने का प्रयास किया; वह अपनी गर्दन ही तोड़ बैठा । " अराजकतावादी, पूँजीवादी तथा व्यक्तिवादी " कह कर उसकी निन्दा की गयी और इसलिए, अनिवार्यतः, उसे पार्टी से निष्कासित कर दिया गया ।

कम्यूनिस्ट पार्टी के सचिव जौर्ज्यू–डेज ने लेखकों की उस कांग्रेस में स्वयं भाषण किया और पार्टी तथा राज्य की सेवा के निमित्त कला एव साहित्य के कर्त्तव्य के सम्बन्ध में कतिपय भली भांति चुने गये, सर्द शब्दों द्वारा उनके आरम्भिक विद्रोह को शान्त कर दिया ।

(" कलात्मक सृष्टि की स्वतंत्रता वास्तविक व्यापकता कहां प्राप्त करती है ?" —मास्को के " कम्यूनिस्ट " ने अपने अक्तूबर १९५६ के अंक में प्रश्न किया । " समाजवादी देशों में ।"—उसने उत्तर दिया । विशेषत· रूमानिया, जेकोस्लोवाकिया और निश्चय ही सोवियत संघ मे ।)

श्री ख्रुश्चेव स्वयं इस बात के लिए हमारे गवाह है कि रूमानिया के छात्रों में भी असन्तोष है । मास्को काम्सोमोल के समक्ष किये गये एक भाषण में, जो १० नवम्बर १९५६ को 'इजवेस्तिया' में प्रकाशित हुआ था, उन्होंने कहा –" एक विश्वविद्यालय में नवयुवक छात्रों में कतिपय अस्वस्थ मनःस्थितियां देखने के बाद, रूमानियन कामरेडों ने छात्रों तथा उनके कई अभिभावकों के साथ स्पष्टतापूर्वक बातचीत करने का निश्चय किया । मुलाकात में उन्होंने इस प्रकार के प्रश्न पूछे—

" 'आप संस्था में अध्ययन कर रहे हैं और आपको छात्रवृत्ति मिलती है ?'

" 'हां'—छात्रों के प्रतिनिधियों ने उत्तर दिया ।

" 'आपके लिए शयनागार की व्यवस्था की गयी है तथा आपके प्राध्यापक अच्छे है ?'

" 'हां'—छात्रों ने स्वीकार किया ।

" 'क्या आप पढ़ना चाहते है ?'—उनसे पूछा गया ।

" 'हम पढ़ना चाहते हैं'—उन्होंने उत्तर दिया ।

"तब अधिक अच्छी तरहसे पढ़िये और जीवन को अधिक गहराई के साथ देखिये । यदि आपमे से कुछ लोग पढ़ना नहीं चाहते, तो काम करने के लिए जाइये और तब आप निश्चय ही श्रमिक जनता के जीवन को अधिक अच्छी तरह से समझ पायेंगे ।"

इसमें सन्देह नहीं कि रूमानियन छात्रों ने संकेत को समझ लिया – और मास्को-वासी भी इसे समझे बिना नही रहेंगे।

संकेतों, डण्डों और मधुर वचनों द्वारा एक राष्ट्र को एकरूप सम्बद्धता की पोटली बना दिया गया है। 'लन्दन टाइम्स' के विशेष संवाददाता ने उक्त पत्र के १५ अगस्त १९५६ के अंक मे लिखते हुए "रूमानियन पत्रों की अस्वाभाविक रूप से अधिक नीरसता, शासन की 'स्तालिन-विमुखता—निश्चय ही यदि उस प्रक्रिया को वास्तव में प्रारम्भ हुई कहा जा सके—की सामान्य मन्द गति" की ओर ध्यान आकृष्ट किया। संवाददाता "परिवर्त्तन के लक्षणों की तलाश व्यर्थ में करता रहा!" वहां वही स्थिति है, जो जेकोस्लोवाकिया में है (और उसके कारण भी वही है), केवल वह और भी अधिक खराब है क्योंकि देश अपेक्षाकृत निर्धन है; अतः दमन और भ्रष्टाचार की मात्रा अधिक है। नये शासक सिंहासन-च्युत किये गये राजाओं के महलों का उपयोग करते है; एक नया उच्चतर वर्ग निष्कासित रईसों के समान जीवन-यापन करता है; रोटी—केवल बुखारेस्ट को छोड़कर—इस देश मे, जो किसी समय एक समृद्धिशाली कृषि-प्रधान देश था, राशन द्वारा मिलती है; किसानों को सामूहिक फार्मों में सम्मिलित होने के लिए बाध्य किया जाता है; व्ययसाध्य-उद्योगों की स्थापना की जाती है और वास्तविक आय घटती जाती है। यह रूमानियन साम्यवाद है।

रूमानियनों में एक लोकोक्ति प्रचलित है–"पानी बह जाता है; पत्थर पड़ा रहता है।" वे आशावादी हैं। एक अन्य लोकोक्ति है कि "झुका हुआ सिर तल-वार के प्रहार से बच जाता है। एक तीसरी लोकोक्ति इस प्रकार है–"जब तक पुल के ऊपर न पहुंच जाओ, तब तक शैतान के साथ भाईचारा बनाये रखो।" हैन्स उलरिख़ केम्फ्स्की ने (म्युनिख के स्वेद्देउत्शे जीतुंग के १८ सितम्बर १९५६ के अंक में) एक रूमानियन का कथन उद्धृत किया है। उक्त रूमानियन ने उससे बुखारेस्ट में कहा था—"हमारी सरकार हमसे कहती है कि समुद्र का पानी सब से मीठा होता है, इतना मीठा पानी हमें पीने के लिए सम्भवतः नहीं मिलेगा। अतः हम सभी उसे पी लेते हैं—और चुपके से उसे पुनः थूक देते हैं।" वही पत्रकार लिखता है कि–"भौतिक कष्टों के बावजूद मुझे ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला, जिसने देश के राजनीतिज्ञों के विरुद्ध क्रोध अथवा यहां तक कि घृणा का भी प्रदर्शन किया हो। उन्हें घास-फूस का बना हुआ आदमी समझा जाता है। औसत रूमानियन के लिए आइसनहावर नहीं, अपितु टिटो स्वतंत्रता के प्रतीक है।" उसे केवल एक व्यक्ति ऐसा मिला, जिसके अनुमान के अनुसार कम्यूनिस्टों को दस प्रतिशत

जनता का समर्थन प्राप्त है; अन्य व्यक्तियों ने ३ से ५ प्रतिशत तक का अनुमान लगाया, किन्तु "जन गणराज्य" में इसका कोई महत्त्व नही है। जब चुनाव का समय आता है, तब कम्यूनिस्टों को ९७ प्रतिशत से भी अधिक मत प्राप्त होते है और "ससद" में प्रत्येक बात सर्वसम्मति से स्वीकृत की जाती है। जनता की सहमति का अभाव है, किन्तु श्रेष्ठ सोवियत सैनिक डिविजन और एक प्रभावशाली गुप्त पुलिस राजनीतिक रिक्तता की पूर्ति करते है।

तीसरे पिछलग्गू देश बल्गेरिया में, जहां खुले आम हत्या होती है, तनिक भी भिन्नता नहीं पायी जाती।

त्रैचो कोस्तोव का जन्म १७ जून १८९७ को सोफिया मे हुआ था। वह पेशे से एक पत्रकार था। वह बल्गेरियन कम्युनिस्ट पार्टी में सम्मिलित हुआ और धीरे-धीरे उसके महासचिव तथा बल्गेरिया के उपप्रधान मंत्री के पद तक पहुँच गया। जून, १९४९ में पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। उसका मुकदमा ७ दिसम्बर से १२ दिसम्बर १९४९ तक चला। १६ दिसम्बर १९४९ को उसे फांसी दे दी गयी। लौहावरण के पूर्व के देशों के कम्यूनिस्टों के जीवन-चरित्र के सम्बन्ध में यह कोई असाधारण बात नहीं है। उसकी मृत्यु टिटोवाद के परिणाम स्वरूप हुई।

प्रकरण संख्या २: "सोवियत कम्यूनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस तथा बल्गेरियन कम्यूनिस्ट पार्टी के लिए उसकी शिक्षाएँ।" यह ११ अप्रैल १९५६ को सोफिया मे टोडोर झिवकोव द्वारा, जो बल्गेरियन कम्यूनिस्ट पार्टी के महासचिव के पद पर, जिस पद पर कभी त्रैचो कोस्तोव आसीन था, आसीन है, किये गये एक भाषण का शीर्षक था। इस नये व्यक्ति ने अपने भाषण में बताया कि निरपराध कामेरडों के विरुद्ध अभियोग लगाये गये तथा उन्हें अन्यायपूर्वक दण्ड दिये गये। उसने घोषित किया कि कोस्तोव उनमें से एक था।

इस प्रकार कोस्तोव को कब्र में अपराध-मुक्त किया गया, किन्तु बल्गेरिया में जीवित टिटोवादियों का जीवन शीघ्र समाप्त कर दिया जाता है। कोस्तोव की हत्या स्वाभाविक ही थी क्योंकि स्तालिन की दृष्टि में बल्गेरियन टिटोवादी अन्य किसी भी स्थान के टिटोवादी की अपेक्षा अधिक बुरा था और इसका कारण यह था कि टिटोवाद के एक पुल के रूप में होने पर बल्गेरिया पड़ोसी युगोस्लाविया के साथ मिलकर एक दक्षिण-स्लाव संघ का निर्माण कर सकता था और स्तालिन को सन्देह था कि यह संघ सोवियत साम्राज्य से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर देता।

कम्यूनिस्ट बल्गेरिया का प्रथम नेता जार्जी दिमित्रोव, जो एक सिंहपुरुष था तथा जिसने लिपज़िग में राइखस्टैग-अग्निकाण्ड के सुप्रसिद्ध मुकदमे के समय नाजियों

की अवहेलना की थी, टिटो का मित्र था और उसने बिल्कुल निर्दोषता के साथ, क्योंकि वह एक सीधा-सादा व्यक्ति भी था, एक संघ के निर्माण का समर्थन किया, जिसमें न केवल युगोस्लाविया और बल्गेरिया को बल्कि जेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, रूमानिया, हंगरी, अल्बानिया और यूनान को भी—रूस को नहीं— सम्मिलित किया जाता। अत. यह पृथक्करण के समान प्रतीत हुआ। २९ जनवरी १९४८ के 'प्रवदा' ने दिमित्रोव की भीषण निन्दा की। १२ फरवरी को ६ सोवियत नेता—स्तालिन, मोलोतोव, मालेनकोव, झडानोव, सुस्लोव और जोरिन-तीन युगोस्लाव नेताओं और तीन बल्गेरियनों—दिमित्रोव, वैस्सिल कोलारोव और त्रैचो कोस्तोव—से मास्को में मिले। युगोस्लाव नेताओं में से एक ने बाद में बताया—"स्टालिन का चेहरा लाल हो गया था और वह अपनी नोटबुक में निरन्तर घसीटता जा रहा था।"

"तुम शब्दों द्वारा चमकना चाहते थे"—स्टालिन ने चिल्ला कर दिमित्रोव से कहा—"...इस प्रकार के संघ का निर्माण सम्भव है।"

१९४९ में दिमित्रोव बीमार पड़ा और चिकित्सा के लिए उसे बल्गेरिया से रूस लाया गया। अन्य रोगों के साथ-साथ उसे मधुमेह का भी रोग था और सुना जाता है कि उसकी सर्वोत्तम चिकित्सा की गयी, किन्तु उसे 'इन्सुलिन' नहीं दिया गया। कुछ भी हो, २ जुलाई १९४९ को उसकी मृत्यु हो गयी। यह उसके कामरेड त्रैचो कोस्तोव के, जिसने उसके साथ स्तालिन से मुलाकात की थी, सोफिया में गिरफ्तार किये जाने के थोड़े ही दिनों बाद हुआ।

स्पष्ट है कि, स्तालिन स्वतंत्र राष्ट्रीय साम्यवादी राज्यों के किसी संघ को सहन नहीं कर सकता था। उन्हें पिछलग्गू ही बने रहना था। स्तालिन के बाद से मास्को बल्गेरिया को उसी प्रकार के कठोर आलिंगन में आबद्ध करके रखता है, जिससे वह युगोस्लाविया के साथ मिल कर साम्राज्य से बाहर न चला जाय। जहाँ तक सम्भव होगा, रूस बल्गेरिया में समस्त पथ-भ्रष्टताओ, असन्तोष और विरोध का दमन करेगा।

चौथा पिछलग्गू देश एड्रियाटिक सागरीय तुच्छ, निर्धन अल्बानिया (जन-संख्या १३ लाख) है। इस बात को कोई भी नहीं समझता कि यह कम्यूनिस्ट कैसे है। यह एक अलग पड़ा हुआ, लुटेरों से भरा हुआ, डाकुओं द्वारा शासित देश है, जिसका निरीक्षण पिस्तौलधारी सोवियत दूत किया करते है, किन्तु तट पर छिपने के ऐसे अनेक स्थल और अड्डे है, जहाँ से सोवियत पनडुब्बियाँ भूमध्य सागर में आक्रमण करने के लिए जा सकती हैं। इन परिस्थितियों में अल्बानिया की अपनी

कोई इच्छा नहीं है और इस बात की प्रत्येक सम्भावना है कि जब तक उसे कोई छीन नहीं लेगा अथवा रूसी साम्राज्य विध्वस्त नहीं हो जायगा, तब तक वह मास्को का महत्वहीन प्रतिरूप ही बना रहेगा। युगोस्लाव, जो तिराना शासन से घृणा करते है, सरलतापूर्वक अपने पड़ोसियों को चकनाचूर कर सकते है, किन्तु वे बाल्कन-व्यवस्था को अस्त-व्यस्त करने एवं सोवियत आक्रमण को निमत्रित करने से डरते हैं। अतः अल्बानियन साम्यवाद तब तक बना रहेगा, जब तक हिम-स्खलन उसे बहा नहीं ले जायगा। इस बीच वहाँ टिटोवादी आलोचकों और विरोधियों को फांसी दी जाती है तथा बेलग्रेड के साथ झगड़ा प्रारम्भ किया जाता है।

चारों पिछलग्गू देश असन्तुष्ट जनसंख्या के क्रोध का सामना कर रहे हैं। यदि सम्भव होता, तो यह जनसंख्या स्वतंत्र हो जाती और जब शक्य होगा, तब वह स्वतंत्र होकर रहेगी। ये सरकारें १९४४ और १९४८ के बीच मास्को द्वारा जबरदस्ती लादी गयी थीं और वे अपने जन्म चिह्न को मिटाने अथवा जनता का समर्थन प्राप्त करने में सफल नहीं हुई हैं।

अध्याय १३

शाश्वत त्रिकोण

५ मार्च १९५३ को जब स्तलिन की मृत्यु हो गयी तथा मालेनकोव-बेरिया-मोलोतोव की त्रिमूर्ति ने अस्थायी रूप से शासन-सूत्र सम्हाला, तब समस्त साम्राज्य में एक अन्तःप्रेरणा विद्युत्-धारा की भाँति फैल गयी; दानव का विनाश हो चुका था; मुक्ति निकट प्रतीत होती थी। यह बात भ्रान्तिपूर्ण सिद्ध हुई। उसकी प्रेतात्मा आगे बढ़ती गयी और कोई भी मुक्ति दृष्टिगोचर नहीं होती थी, किन्तु जर्मनी के रूसी क्षेत्र में ऐसा प्रतीत हुआ कि, सूत्र-संचालन करने वाले हाथ का कौशल और विश्वास अकस्मात् समाप्त हो गया। क्रेमलिन के आदेशों से स्थिति और भी बिगड़ गयी। उनसे मास्को की कठपुतलियाँ भ्रम में पड़ गयीं, क्योंकि उनसे अधिक उत्पादन एवं मजदूरों के वेतन में कटौती की आशा से मध्यम वर्ग और किसानों का समर्थन करने के लिए कहा गया। पूर्वी जर्मनी-स्थित तीन सोवियत क्षत्रपों—वाल्टर उलब्रिख, ओटो ग्रोटेवोहूल और विल्हेल्म पीक ने अवश्य ही यह अनुभव

किया होगा कि, मास्को ने उन्हें उनके सिर के बल खड़ा कर दिया था; मजदूरों पर पद-प्रहार करना तथा पूँजीपतियों से प्रेमालाप करना कम्यूनिस्ट सिद्धान्त के बिल्कुल अनुरूप नहीं था।

मजदूरों ने भी ऐसा ही सोचा और विद्रोह कर दिया।

सोवियत पत्रों तथा उनका अनुगमन करने वाली प्रतिध्वनियों ने सर्वप्रथम स्वभावतः कहा कि १६ और १७ जून १९५३ का विद्रोह फासिस्टों और गुण्डों का कार्य था, किन्तु बाद में पूर्वी जर्मनी में प्रकाशित आंकड़ों द्वारा निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गया कि, मास्को द्वारा जबरदस्ती लादी गयी "सर्वहारा वर्ग" की तानाशाही के विरुद्ध सर्वहारा वर्ग की क्षेत्र-व्यापी क्रान्ति हुई थी। इसके अतिरिक्त श्रमिकों को अश्रमिकों का भी समर्थन प्राप्त था।

जून, १९५३ की पूर्व जर्मन क्रान्ति ने उलब्रिख-ग्रोटेवोह्ल-पीक सरकार को उखाड़ फेंका। तत्पश्चात् रूसी टैंकों का आगमन हुआ। उन्होंने सड़कों और फैक्टरियों पर पुनः अधिकार कर लिया तथा कठपुतलियों को पुनः सिंहासनारूढ़ कर दिया।

जून १९५३ के बाद से, मास्को की ओर से व्यवस्था करने वालों ने इस बात का कोई संकेत नहीं प्रदान किया है कि, उन्हें पुनः अपने प्रति विश्वास उत्पन्न हो गया है। इसके विपरीत २४ फरवरी १९५६ के ख्रुश्चेव के गुप्त भाषण के बाद, जिसे समस्त प्रौढ़ों ने विदेशी ब्राडकास्टों में सुना है (और अनेक पश्चिम बर्लिन की यात्रा करने पर पढ़ते भी है) क्षेत्र के जर्मन अधिकारी असाध्य अनिश्चितता से पीड़ित प्रतीत होते हैं।

रूस में स्तालिन की प्रतिमा के भजन के बाद भी थोड़ा-सा यह विश्वास बचा रह गया है कि, उस अत्याचारी ने रूस का हित-साधन किया था। पिछलग्गू देशों में और विशेषतः पूर्वी जर्मनी में उसके पतन ने अपने साथ-साथ कम्यूनिज्म को भी नीचे गिरा दिया। अपने आदर्शवाद से वंचित पूर्वी जर्मनी के शासक ऐसे नग्न देश-द्रोहियों के समान हो गये है, जिनका भण्डा फूट गया है और जो यह आशा नही कर सकते कि क्षेत्र के एक करोड़ सत्तर लाख निवासी उनका सम्मान करेंगे। कुछ सम्भवतः स्वयं भी अपना सम्मान नहीं करते।

पूर्वी जर्मनी की कम्यूनिस्ट पार्टी की नैतिक शक्ति का ह्रास जिस सीमा तक हुआ है, उसका पता उसके पोलिट-ब्यूरो के सदस्य कार्ल स्चिरडेवान द्वारा केन्द्रीय समिति की सामान्य सभा में दिये गये एक वक्तव्यसे, जो २८ नवम्बर १९५६ को सरकारी "न्यूज डूश लैण्ड" में प्रकाशित हुआ था, लग सकता है। उसने कहा कि, "पार्टी के सदस्यों के मध्य निराशा एवं शत्रुतापूर्ण वाद-विवाद की

भावना के लक्षणों का दृढता एवं शक्ति के साथ विरोध करना" आवश्यक है। उसने पुनः कहा कि हंगरी और पोलैण्ड की घटनाओं ने अनेक कम्यूनिस्टों को भ्रम में डाल दिया है और "ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी है कि पोलिट-ब्यूरो भी प्रत्येक वस्तु के सम्बन्ध में तत्काल सूचना देने की स्थिति में नहीं रह गया है।" प्रसंग को देखते हुए इसका स्पष्ट तात्पर्य यह है कि, सर्वप्रथम मास्को से परामर्श करना पड़ता है। उसने भ्रान्ति, अनिश्चितता तथा शांतिपूर्ण घटना-विकास के लिए गम्भीर चिन्ता के लक्षणों के विरुद्ध संघर्ष करने की आवश्यकता भी बतायी। स्चिरडेवान ने वचन दिया कि, पार्टी "राजनीतिक दृष्टि से" अर्थात् तर्क-वितर्क से और "सुरक्षात्मक कार्रवाइयों से" अर्थात् गिरफ्तारियां करके अपनी रक्षा करेगी। वास्तव में उक्त भाषण के बाद ही छात्रों और प्राध्यापकों की गिरफ्तारी तथा आतंकित करने का अभियान प्रारम्भ हो गया। बेलग्रेड के पत्र 'पोलिटिका' के पूर्वी बर्लिन-स्थित संवाददाता लियन डेविचो ने अपने पत्र के २ दिसम्बर के अंक मे लिखा कि लिपजिग में तथा अन्य स्थानों पर "कतिपय अप्रिय घटनाएँ" घटित हुई थीं, जिनमें छात्र सम्मिलित थे...श्रमिक हड़ताल की बातें अधिकाधिक कर रहे है। डेविचो आश्चर्य प्रकट करते हुए लिखता है— "यह निर्णय किये जा सकने के पूर्व कि विश्वविद्यालयों के समस्त विभागों में रूसी भाषा छात्रों के लिए अनिवार्य भाषा नहीं होगी, क्या हमारे लिए प्रतीक्षा करना आवश्यक है ?" झगड़ा रूसी भाषा के साथ नहीं, बल्कि रूस के साथ है।

पूर्वी जर्मनी सत्ता और जनता के सम्बन्ध-विच्छेद का पूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। आतंकवादी किसी नगर पर जितना शासन करते है, उससे तनिक भी अधिक शासन सरकार देश पर नहीं करती। वास्तव में नागरिक अपीलों और प्रचार को तनिक भी नहीं सुनते। यह स्थिति यदि ज्यों की त्यों रहे, तो एक सीमित अर्थ में यह स्वतन्त्रता है; क्षेत्र ने जून १९५३ की क्रान्ति में अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की। अधिकारी जनता को यथासम्भव कम से कम परेशान करते हैं और आशा करते है कि, जनता उन्हें परेशान नहीं करेगी। फिर भी, यह स्वतंत्रता विचार, सार्वजनिक भाषण, प्रकाशनों, राजनीतिक गतिविधि अथवा वैज्ञानिक अनुसंधान के सम्बन्ध में नहीं प्राप्त है। अतः पूर्वी यूरोप के अन्य देशों के समान ही पूर्वी जर्मनी में भी छात्र और बुद्धिवादी – धनी लेखकों को छोड़ कर – असन्तुष्ट हैं।

एक विशेष परिस्थिति शासन के विरुद्ध पूर्व जर्मन भावना को और अधिक उग्र बना देती है; अन्य पिछलग्गू देश रूसी आधिपत्य और साम्यवाद से संत्रस्त है। पूर्वी क्षेत्र में वे जर्मनी को दो भागों में विभक्त करते हैं।

पश्चिमी जर्मनी की राजनीति में पुनः एकीकरण का प्रश्न प्रमुख प्रश्न बन गया है, किन्तु जीवन अपने सह्य मार्ग पर चलता है। फिर भी, पूर्वी क्षेत्र के निवासी के लिए उसके देश का विभाजन शाश्वत संत्रस्तता का साधन है। इससे उसकी देशभक्ति पर आघात पहुँचता है तथा उसकी आर्थिक क्षति होती है और जब तक वह पूर्व में रहता है, तब तक वह इस प्रश्न से पीड़ित होता रहता है कि पश्चिम की ओर पलायन कर जाना चाहिए अथवा नहीं। एक ओर वह थक कर चकनाचूर कर देने वाले अपने काम, व्यापक नीरसता, नौकरशाही छल-छद्मों, मिथ्याभाषी पत्रों एवं रेडियो तथा शारीरिक कष्टों से बचना चाहता है; अधिकांश खाद्य-सामग्रियाँ अब भी राशन से मिलती है, निवास-स्थानों की स्थिति घृणाजनक है और वस्त्रों की किस्म सोवियत वस्त्रो जैसी होती है। दूसरी ओर हो सकता है कि उसके बालक नि:शुल्क छात्रवृत्तियों से विश्वविद्यालयों में अध्ययन करते हों, उसके पास थोड़ी-सी सम्पत्ति हो, जिसके साथ उसका लगाव हो, उसे अपने फर्नीचर, कपड़ों और रसोई के बर्त्तनों को उपहासास्पद रूप से कम मूल्य पर बेचना पड़ेगा और हो सकता है कि परिवार में वृद्ध व्यक्ति हों, जो सीमा पार करने में बाधक होंगे।

१९४९ और २० सितम्बर १९५६ के बीच बीस लाख पूर्व जर्मनों ने पश्चिम जाकर इस समस्या का समाधान किया। इनमे से दस लाख ने बर्लिन होकर, जहाँ पहुँचना अपेक्षाकृत सरल है, पलायन किया और शेष दस लाख में से आधे व्यक्ति सैनिक आयु के थे, जिन्होंने लाल सेना में भर्ती किये जाने से इनकार कर दिया।

यह क्षेत्रीय शासन के विरुद्ध अविश्वास का प्रचण्ड मत मात्र नहीं है। एक करोड़ सत्तर लाख की कुल अवशिष्ट जनसंख्या में बीस लाख की संख्या का पलायन जन-शक्ति के चिन्ताजनक ह्रास का परिचायक है। विश्व-बाजार में प्रचलित मूल्यों से कम मूल्य पर सामग्रियों के सोवियत संघ को भेजा जाने तथा एक विशाल रूसी अधिकार सेना के रख-रखाव पर होने वाले अत्यधिक व्यय से और अधिक शोषण होता है। परिणामस्वरूप पुनरेकीकरण की भावना एक शाश्वत पूर्व भावना बन गयी है और यह भावना अपने आप पश्चिम-स्थित बन्धुओं तक पहुँचती रहती है, भले ही वह मिश्रित रूप में पहुँचती हो। चूँकि १९५६ में जर्मनी के दोनों भागों में प्रतिबन्धों के समाप्त कर दिये जाने से यात्रा में सुविधा हो गयी, इसलिए उसके बाद से यह भावना और भी अधिक पश्चिम मे पहुँचती है।

फिर भी, पुनः एकीकरण के सम्बन्ध में मास्को निषेधाधिकार का प्रयोग करता है। यद्यपि पूर्वी क्षेत्र के आर्थिक शोषण से क्रेमलिन की आय में कमी होती जा रही है तथापि सैनिक एवं राजनीतिक कारण रूस के वहाँ से हटने में बाधक सिद्ध होते हैं।

पूर्वी जर्मनी यूरोप में सोवियत रूस का सर्वाधिक पश्चिम में स्थित सामरिक अड्डा है। यूरोपीय रूसियों से इसलिए अधिक डरते हैं कि रूस की सेनाएँ क्षेत्र में स्थित हैं। रूस के लिए यह लाभ की एक बात है। जर्मनी का पुनः एकीकरण हो जाने पर पोलैण्ड और उसकी सीमा एक ही हो जायगी। यह मास्को के लिए एक हानिकारक बात होगी।

जर्मनी, पोलैण्ड और रूस का त्रिकोण शाश्वत है, किन्तु उनमे प्रेम कभी नहीं रहा। आज पोलैण्ड में शक्तिशाली सोवियत सशस्त्र सेनाएँ दो कारणों से स्थित हैं; प्रथम, पूर्वी जर्मनी के साथ रूस के समस्त स्थलीय संचार-मार्ग पोलैण्ड में होकर जाते है और चूँकि पूर्वी जर्मनी में मास्को की सेनाएँ स्थित है, इसलिए पोलैण्ड में उसकी सेनाओं का रहना आवश्यक है। यदि रूस पूर्वी जर्मनी से हट जाय, तो इस बहाने की प्रामाणिकता समाप्त हो जायगी। द्वितीय कारण यह है कि द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद रूस ने पोलैण्ड को बहुत अधिक जर्मन क्षेत्र प्रदान कर दिये। ओडर और नीसी नदियों द्वारा निर्मित रेखा के पूर्व में स्थित क्षेत्रों के लिए पश्चिमी जर्मनी अभी तक दावा करता है। पोलैण्ड-स्थित रूसी सेनाएँ पश्चिमी जर्मनी के क्षेत्र-विषयक दावे के विरुद्ध ओडर-नीसी सीमा की रक्षा करने का आडम्बर रचती हैं।

यह एक कुरूप विडम्बना है कि, रूसी अपने को पोलैण्ड का संरक्षक बताते हैं। इतिहास में तीन बार जारशाही रूस ने पोलैण्ड के विभाजन में सहायता पहुँचायी थी। १९३९ में सोवियत रूस ने भी वही कार्य ऐसी मूर्खता से किया कि यदि वह द्वितीय विश्वयुद्ध के आरम्भ का प्राथमिक रूप न होता, तो उसकी सराहना की जाती। यह घातक प्रमाण माइकेल फ्रायड द्वारा हाल में ही लिखित "डेर आसब्रुख डेस क्रीग्स, १९३९" (वेरलाग हर्डर – ऐल्बर, १९५६) नामक पुस्तक में प्रकाशित किया गया है। इस प्रमाण में हिटलर-सरकार के गुप्त संग्रहालय के अभिलेख सम्मिलित हैं। १८ अगस्त १९३९ को नाजी विदेश-मंत्री रिबनट्रॉप ने मास्को-स्थित अपने राजदूत को तार द्वारा आदेश भेजे कि वह "श्री मोलोतोव से तत्काल मुलाकात करने का" प्रयास करे और उन्हें बताये कि "जर्मनी और रूस के सम्बन्धों का स्पष्टीकरण करने के प्रयास में फुहरेर इस बात को आवश्यक समझते हैं कि, जर्मन पोलिश युद्ध के आरम्भ होने पर आश्चर्य न व्यक्त किया जाय। वे

अग्रिम स्पष्टीकरण को आवश्यक समझते हैं, जिससे इस युद्ध के सम्बन्ध में रूस के हितों पर विचार किया जा सके।...(अन्तिम वाक्य में कहा गया है) इस सिलसिले में आपको इस निर्णायक परिस्थिति को ध्यान में रखना चाहिए कि जर्मन-पोलिश युद्ध का शीघ्र आरम्भ सम्भव है और इसलिए हम लोग इस बात में अत्यधिक रुचि रखते हैं कि मैं तत्काल मास्को की यात्रा करूं।"

इससे अधिक सरल बात और क्या हो सकती है? हिटलर ने पोलैण्ड के विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ करने का निश्चय किया था और वह लूट की सामग्री में स्तालिन को भागीदार बनाना चाहता था, जिससे रूस तटस्थ रहे।

एक अन्य अभिलेख, समस्त सन्देहों का निराकरण कर देता है। यह एक गुप्त संधि है, जिस पर २३ अगस्त १९३९ को रिबनट्रॉप और मोलोतोव ने हस्ताक्षर किये थे और जिसके द्वारा नारेव, विस्तुला और सैन नदियों पर जर्मनी एवं रूस के मध्य पोलैण्ड के विभाजन की व्यवस्था की गयी है। मास्को और बर्लिन 'एक मैत्रीपूर्ण समझौते' द्वारा इस बात का निर्णय करेंगे कि भविष्य में किसी प्रकार के पोलिश राज्य का अस्तित्व रहेगा अथवा नहीं।

नाजी जर्मनी की पराजय होने पर सोवियत सरकार ने मास्को द्वारा नियुक्त की गयी लुबनिन-समिति द्वारा शासित एक पोलिश राज्य का निर्माण किया। इस बात को निश्चित कर देने के लिए कि वह राज्य सदा रूसी सेना के आधिपत्य के समक्ष कृतज्ञतापूर्वक शीश झुकाता रहेगा, मास्को ने उसे उदारतापूर्वक ओडर-नीसी रेखा के पूर्व में स्थित जर्मन क्षेत्र प्रदान कर दिये।

अब पुनः एकीकरण के बदले जर्मनी सम्भवतः ओडर-नीसी क्षेत्रों का परित्याग कर सकता है। यह एक जटिल घरेलू-राजनीतिक समस्या है, क्योंकि पश्चिमी जर्मनी के पाँच करोड़ निवासियों में से एक करोड़ दस लाख व्यक्ति पोलैण्ड और रूस द्वारा हस्तगत क्षेत्रों के निवासी हैं और जो राजनीतिज्ञ अथवा दल इन क्षेत्रों का परित्याग करने की घोषणा कर देशभक्तिहीनता का परिचय देगा, उसे हानि ही पहुँचेगी। फिर भी, पुनः एकीकरण के लिए जर्मन आकांक्षा इतने गहरे रूप से दुखदायिनी बन गयी है कि जिस क्षण पुनः एकीकरण एक व्यावहारिक सम्भावना का रूप धारण कर लेगा, उस क्षण—किन्तु उससे पूर्व नहीं—पश्चिम जर्मनों के लिए ओडर-नीसी क्षेत्रों का परित्याग करने की अपेक्षा इस सुअवसर का परित्याग करना अधिक कठिन हो सकता है। वास्तव में कतिपय दूरदर्शी पश्चिम जर्मन निजी तौर पर पहले से ही कह रहे है कि पोलैण्ड के प्रति मैत्रीपूर्ण भावना के प्रदर्शन के रूप में ओडर-नीसी क्षेत्रों का त्याग करने की एकपक्षीय घोषणा तत्काल कर दी जानी चाहिए।

अतः मास्को निम्नलिखित बातों को समस्त साधनों से अवश्य रोकेगा— (१) पूर्वी जर्मनी का हाथ से निकल जाना, (२) जर्मनी का पुनः एकीकरण, (३) पोलिश-जर्मन मित्रता। ये सभी बातें एक दूसरे से सम्बद्ध है और इनके परिणाम-स्वरूप जर्मनी एवं पोलैण्ड से रूस को अपनी सेनाएँ हटा लेनी पड़ेंगी तथा उसका साम्राज्य समाप्त हो जायगा।

इस प्रकार की घटना के घटित होने के विरुद्ध क्रेमलिन का मुख्य प्रचारास्त्र पश्चिम जर्मनी का पुनरस्त्रीकरण है, जिसे उसने उस समय भी एक हौवा के रूप में चित्रित किया, जब एक पश्चिम जर्मन ने भी वर्दी नहीं पहनी थी, किन्तु यदि पश्चिमी जर्मनी निरस्त्र एवं तटस्थ हो जाय, तो रूस और भी बुरी स्थिति में फँस जायगा, क्योंकि जर्मनी से भय के कम हो जाने पर पोलैण्ड-निवासी जर्मनी के साथ सम्बन्ध सुधारने के लिए अधिक इच्छुक होंगे।

अत: पश्चिमी जर्मनी का पुनरस्त्रीकरण हो अथवा न हो अथवा वह तटस्थ रहे या न रहे, जर्मनों और पोलों को पृथक्-पृथक् रखने तथा पोलैण्ड के आन्तरिक मामलों में दखल रखने के लिए मास्को पूर्वी जर्मनी पर तब तक अधिकार बनाये रखेगा, जब तक वह ऐसा कर सकेगा।

यदि जर्मनी का पुनः एकीकरण हो गया, तो पोलैण्ड स्वतंत्र हो जायगा। यदि पोलैण्ड स्वतंत्र होता, तो जर्मनी का पुनः एकीकरण हो सकता था। प्रश्न यह है कि क्या पोलैण्ड स्वयं अपने प्रयासों द्वारा भीतर से अपने को स्वतंत्र कर सकता है? इस प्रकार पूर्वी जर्मनी भौगोलिक दृष्टि से रूस-से पृथक् हो जायगा और उसे पश्चिमी जर्मनी के साथ मिलना ही पड़ेगा।

इस प्रकार शाश्वत त्रिकोण जर्मनी और सोवियत साम्राज्य के भविष्य की कुंजी है। वह पोलैण्ड को रूसी साम्राज्य की नींव की आधारशिला बना देता है।

अध्याय १४

पोजनान

शाह बेल्शाजार ने सौ सरदारों को दावत पर बुलाया और जब वे खा-पी रहे थे, तभी दीवार पर अंगुलियाँ प्रकट हुईं और उन्होंने चार रहस्यमय शब्द लिखे, जिन्हें बेबिलोन के बुद्धिमान व्यक्तियों में से कोई नहीं पढ़ सका। तत्पश्चात् जूडिया से आये हुए शरणार्थी डैनियल को बुलाया गया। "मेने, मेने, टेकेल, उपहारसिन" – उसने पढ़ा। मेने : ईश्वर ने आप के राज्य के दिन गिन दिये है और उसे समाप्त कर दिया है। टेकेल : आपको तुला में तौला गया और आप अयोग्य पाये गये। उपहारसिन : आप का राज्य बांट दिया गया है और मेदे लोगों तथा ईरानियों को दे दिया गया है।

क्रेमलिन की दीवार पर सोवियत के 'मेने, मेने' लिखे हुए हैं: "टिटो, जून १९४८"। 'पूर्वी जर्मनी, जून १९५३'। 'पोजनान, जून १९५६।' अंगुलियां आगे बढ़ती है और लिखती है: 'पोलैण्ड'। 'हंगरी'। कमिसारों को तुलाओं में तौला गया है और वे अयोग्य सिद्ध हुए है। उनके साम्राज्य के दिन गिने-चुने रह गये है और वह उन लोगों के मध्य विभक्त कर दिया जायगा, जिन्हें उसने पराधीन बनाया। बेल्शाजार इसे जानते है, किन्तु वे यह नहीं जानते कि क्या करना चाहिए।

मास्को के विदेशी साम्राज्य की समाप्ति का संकेत देने वाली समस्त घटनाओं में बन्दी देशों की जनता की आन्तरिक बुद्धिमत्ता और विश्वास तथा रूस की मूर्खता जितनी उत्साहवर्द्धक घटना और कोई नहीं है। पोजनान जनता के इस आन्तरिक ज्ञान का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत करता है कि कब, क्यों और कहाँ रुक जाना चाहिए।

पोजनान पोलैण्ड की युद्धोत्तरकालीन क्रान्तिकारी सृष्टि थी। सूत्रपात से पूर्व सदा कुछ-न-कुछ होता है, किन्तु जो पोल स्वतंत्रता की दिशा में अपने देश की प्रगति की कहानी का वर्णन करते हैं, वे पोजनान से प्रारम्भ करते है। क्योंकि ३ लाख ३० हजार की जनसंख्या वाले नगर पोजनान में काले गुरुवार, २८ जून १९५६ और काले शुक्रवार, २९ जून १९५६ को जो घटनाएँ घटित हुईं, उन्होंने पोलैण्ड के राजनीतिक शरीर को काट कर खोल दिया तथा रोगग्रस्त अवयवों को प्रकट कर दिया। पोजनान ने वारसा-स्थित नेताओं को चेतावनी दी कि यदि उन्होंने घाव को भरा, तो उनकी पद्धति समाप्त हो जायगी।

जैसा कि १६ जून १९५३ को पूर्वी बर्लिन में हुआ था, उसी प्रकार पोजनान में भी मूल संकट एक कारखाने में वेतन-सम्बन्धी शिकायत के कारण प्रारम्भ हुआ। इस संकट के उग्र रूप धारण करने से बहुत पहले ही ट्रेड युनियनें उसे समाप्त कर सकती थीं, किन्तु ट्रेड युनियनें सरकार द्वारा नियन्त्रित थीं, सरकार मजदूरों का शोषण कर रही थी और मजदूर ट्रेड युनियनों अथवा सरकार पर विश्वास नहीं करते थे। चूँकि समस्त मजदूरों की शिकायतें एक ही प्रकार की थीं, जिन्हें दूर नहीं किया गया था, इसलिए शीघ्र ही संकट समस्त नगर में व्याप्त हो गया। कुछ घण्टों के भीतर ही हड़ताल ने उग्र रूप धारण कर लिया और उस उग्रता में जनता ने कम्यूनिस्ट शासन के प्रति अपनी घृणा का प्रदर्शन किया।

हड़ताल "जिसपो" (ZISPO) में प्रारम्भ हुई। "जिसपो" में प्रयुक्त अंग्रेजी अक्षर "जेड" फैक्टरी के लिए है; "आई" "इन द नेम आफ" (के नाम पर) के लिए है; "एस" स्तालिन के लिए है; "पी. ओ." पोजनान के लिए है। "ज़िसपो" इजिन बनाने का एक पुराना कारखाना है, जिसमें पन्द्रह हजार से अधिक व्यक्ति काम करते है। कुछ समय से जो असन्तोष बढ़ता जा रहा था, उसने इतना गम्भीर रूप धारण कर लिया कि ६ जुलाई की रात को ५ बजकर ५० मिनट पर वारसा रेडियो द्वारा किये गये एक ब्राडकास्ट के अनुसार शुक्रवार, २२ जून को सहायक मशीन उद्योग मंत्री डेमिडोव और राष्ट्रीय धातु मजदूर ट्रेड यूनियन के अध्यक्ष और सचिव ने वारसा से 'ज़िसपो' तक की विशेष यात्रा की, कम वेतन और ऊंचे करों के सम्बन्ध में प्रकट किये गये विरोधों को सुना और राजधानी में लौटने पर उनके सम्बन्ध में विचार करने का वचन दिया; किन्तु उसी सरकारी ब्राडकास्ट में बताया गया कि दूसरे ही दिन "मुख्य वाचनालय में कर्मचारी बड़ी संख्या में एकत्र हुए और उन्होंने एक प्रतिनिधि मण्डल को वारसा भेजने की माग की।"

सोमवार, २५ जून को सत्ताइस व्यक्तियों का एक प्रतिनिधि-मण्डल निर्वाचित किया गया। वे मंगलवार को प्रातः काल ९ बजे वारसा पहुंचे, ११ बजकर ४५ मिनट पर "ज़िसपो" का प्रबन्ध करने वाले मशीन-उद्योग-मंत्रालय में पहुँचे और वे मंत्री रोमन फिडेल्स्की, उसके सहायक डेमिडोव तथा अन्य व्यक्तियों के साथ वहाँ संध्या समय ७ बजे तक परामर्श करते रहे।

मंत्रालय ने अवश्य ही यह महसूस किया होगा कि "ज़िसपो" की स्थिति अत्यन्त विस्फोटक थी, क्योंकि मंगलवार को वारसा में हुई इन दीर्घकालीन समझौता-वार्ताओं के बावजूद फिडेल्स्की और डेमिडोव ने 'ज़िसपो' के मजदूरों का

सामना करने के लिए बुधवार को (वारसा से १७५ मील पश्चिम में स्थित) पोजनान जाना स्वीकार कर लिया।

पोलिश कम्यूनिस्ट पार्टी द्वारा दिये गये विवरण में घोषित किया गया कि वारसा-वार्ताओं के समय फिडेल्स्की ने मजदूरों की मांगों की पूर्ति कर दी थी, किन्तु यदि बात ऐसी थी, तो उसे बुधवार को इस सम्बन्ध में 'ज़िसपो' के कर्मचारियों के साथ तर्क-वितर्क करने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? तथ्य यह है कि फिडेल्स्की ने 'ज़िसपो' में जिस सभा में भाषण किया, वह एक तूफानी सभा थी। पोलिश दैनिक पत्र 'ग्लोस स्जजेसिन्स्की' (स्जजेसिन अथवा स्टेटिन की आवाज) के ३ जुलाई के अंक में प्रकाशित जे० बैरन के 'ज़िसपो में मजदूरों के साथ मेरी बातचीत' शीर्षक लेख में 'जिसपो' के वारसा गये हुए प्रतिनिधि-मंडल के अध्यक्ष तासजेर को यह कहते हुए उ धृत किया गया है कि जब उसने बुधवार की सभा में फिडेल्स्की के साथ हुए वार्तालाप का विवरण प्रस्तुत किया, तब "मजदूरों को सन्तोष नहीं हुआ।" तासजेर ने बैरन को बताया कि तत्पश्चात् फिडेल्स्की भाषण करने के लिए खड़ा हुआ और उसने समझौते का स्पष्टीकरण करने का प्रयास किया, किन्तु तासजेर के कथनानुसार मजदूर "इन सब बातों को समझ नहीं सके और इनसे उन्हें रुपया मिलता हुआ नहीं प्रतीत हुआ।"

फिडेल्स्की की पराजय उत्पादन के परिमाण-निर्धारण (Norms) के प्रश्न पर हुई। उत्पादन–परिमाण–निर्धारण फुटकर काम की पद्धति के अन्तर्गत मजदूरों से कड़ी मजदूरी कराने के लिए कम्यूनिस्टों का एक व्यवस्था-विषयक आविष्कार है, जिसके अनुसार रूस तथा पिछलग्गू देशों में काम किया जाता है। यह वेतन की एक एकाई के लिए उत्पादन की एक इकाई है, जैसे दस ज्लाटी (पोलिश सिक्का) के लिए दस बोल्ट, किन्तु ज्योंही किसी कारखाने के कर्मचारी उत्पादन की निर्धारित इकाई पर पहुँच जाते है, त्योंही उत्पादन का निर्धारित परिमाण बढ़ा दिया जाता है–उदाहरणार्थ, उसे दस से बारह बोल्ट कर दिया जाता है; किन्तु वेतन जहाँ-का-तहां रह जाता है और जो कोई मजदूर बारह बोल्ट का उत्पादन नहीं करता, उसकी आय में कटौती कर दी जाती है। तासजेर के कथनानुसार फिडेल्स्की ने वचन दिया कि वर्त्तमान उत्पादन-परिमाण में जब उत्पादन होने लगेगा, तब उसे और अधिक नहीं बढ़ाया जायगा। फिर भी, यह स्पष्ट है कि, मजदूरों ने उस पर विश्वास नहीं किया, "उसकी बात को समझा नहीं।" "ज़िसपो" की सभा में फिडेल्स्की को जो तकलीफें उठानी पड़ीं, उनका वर्णन करते हुए ६ जुलाई को वारसा-रेडियो ने कहा कि "मजदूर साफ-साफ कह रहे थे कि ये केवल वचन थे

और वचनों द्वारा हमें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। हाँ, यह अत्यन्त उत्तेजनापूर्ण समय था, जिसमें मन्त्रालय का एक व्यक्ति प्रश्नो के उत्तर देता था।"

निराश होकर "ज़िसपो" के मजदूरों ने दूसरे दिन प्रातःकाल हड़ताल कर दी। प्रातःकाल ७ बजे मजदूर काम पर आये और कुछ मिनट बाद वे कारखाने से बाहर निकल आये तथा नगर के मध्य भाग में स्थित रेड आर्मी स्ट्रीट तक जाने के लिए चार मील का अभियान प्रारम्भ कर दिया। साथ-ही-साथ पोजनान की प्रायः अन्य सभी फैक्टरियों, और स्टोरो, सरकारी कार्यालयों, रेलवे तथा नगरीय यातायात-सेवाओं, 'बेकरियों' और होटलों के मजदूर अपने काम छोड़ कर जुलूस में शामिल हो गये। यह एक सुनियोजित, संगठित बहिर्गमन था।

प्रातःकाल साढ़े आठ और नौ बजे के बीच किसी समय एक विदेशी व्यवसायी ने रेड आर्मी स्ट्रीट पर स्थित अपने होटल की खिड़की से प्रदर्शन का एक चित्र खीच लिया। अस्सी से सौ गज तक चौड़ी सड़क कई हजार नागरिकों से भरती जा रही थी। चित्र के बाये मध्य भाग में, एक सरकारी भवन के बाहर, पोजनान के वार्षिक अन्तरराष्ट्रीय मेले के सम्मान में विदेशी झण्डे फहरा रहे है।

हड़ताल और मेला सम्बद्ध थे। मेले के दर्शकों के जरिये असन्तुष्ट मजदूर संसार को बता रहे थे और उनका ख्याल था कि घटना-स्थल पर असंख्य विदेशी व्यवसायियों और उनके साथ आये हुए विदेशी पत्रकारों की उपस्थिति के कारण सरकार को मजदूरों पर गोली चलाने मे संकोच होगा। जुलूस मेले के मैदान की दिशा में बढ़ रहा था।

एक अन्य छाया-चित्र में एक ऊंचे, 'सिलेण्डर' के समान गुम्बज की छत पर खड़े चार व्यक्तियों की गहरी काली प्रतिच्छाया दिखायी देती है। उन्होंने थोड़े ही समय पूर्व लाल झण्डे को नीचे झुका दिया था और पोलिश राष्ट्रध्वज—एक लाल छड़ के ऊपर एक श्वेत सीधा छड़—फहराया था। चित्र में दिखायी देनेवाली पड़ोस के आयताकार घण्टाघर की दो दीवार-घड़ियों में प्रातःकाल ९ बजकर ३७ मिनट हुआ है। इस प्रकार प्रातःकाल ही हड़ताल ने राजनीतिक रंग धारण कर लिया था। वह कम्यूनिस्ट-विरोधी थी।

पोजनान के दैनिक पत्र "गजेटा पोजनान्स्का" ने २० जुलाई १९५६ को बताया कि हड़तालियों ने "एक रेडियो-गाड़ी पर अधिकार लिया। एक ब्रिटिश मशीनरी-निर्यातक श्री जी० अपने भागीदार के साथ मेले में जा रहे थे कि प्रदर्शन-कारियों ने उन्हें उठा लिया और जिस प्रकार ऊँचे ज्वार में लकड़ी का टुकड़ा उछलता है, उसी प्रकार वे उन्हें उछालने लगे। उनका ध्यान इस बात की ओर गया कि रेडियो

गाड़ी से ये नारे लगाये जा रहे थे : "यह शांतिपूर्ण हड़ताल है"; "हम रोटी चाहते हैं," "पोलैण्ड स्वतंत्र हो"; "कोई भी वस्तु हमें दबा कर नहीं रख सकती"; "हम पश्चिम की भांति जीना चाहते हैं"। गाड़ी की छत पर खड़े, भाव-भंगिमाए बनाते हुए व्यक्ति चिल्ला-चिल्ला कर और अधिक मागें कर रहे थे, जो ये है :—"स्वतंत्र चुनाव हो तथा काम की स्थितियों मे सुधार हो"; मूल्यों में कमी हो"; "गुप्त पुलिस को भंग करो"; राजनीतिक बन्दियों को रिहा करो"।

अल्पकालीन मध्यान्तर के पश्चात् जुलूस दीवारों से घिरे कारागार की ओर बढ़ा। हड़तालियों के बीच अफवाह फैल गयी थी कि "जिसपो" का जो प्रतिनिधि-मण्डल वारसा गया था, उसके कई सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया गया था। स्पष्टतः यह अफवाह सच नहीं थी, किन्तु भीड़ के कतिपय व्यक्ति इसमें विश्वास करते थे और अन्य व्यक्ति सम्भवतः शासन द्वारा बन्दी बनाये गये व्यक्तियों को मुक्त करना चाहते थे।

जेल-अधिकारियों ने बिना प्रतिरोध के आत्मसमर्पण कर दिया। उन्होंने एक खिड़की से सफेद झण्डा फहराया तथा छत पर लाल झण्डे के स्थान पर पोलिश राष्ट्रीय ध्वज फहरा दिया। जब कि जनसमूह की हर्षध्वनि के साथ बन्दी बड़ी संख्या में खुले हुए दरवाजों से बाहर निकले, तब नवयुवकों ने जेल में प्रवेश कर वार्डेन के शस्त्रास्त्रों पर अधिकार कर लिया।

ब्रिटिश व्यवसायी श्री जी० कहते है—"अब रेडियो-गाडी पुनः चालू हुई और जुलूस से कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रधान कार्यालय की ओर चलने के लिए कहा।" कई विदेशी प्रत्यक्षदर्शियों ने यूरोपीय पत्रों में इस दृश्य का वर्णन किया है : बालक सीढ़ियों के नीचे इधर-उधर घूमते रहे, मजदूर अपने जूतों से कालीन की मोटाई नापते हुए सत्ता के इस दुर्ग की एक मंजिल से दूसरी मंजिल तक विचरण करते थे और एक बार तो उन्होंने जान-बूझकर उसे अशुद्ध कर दिया। महिलाओं ने उपहास करते हुए संगमरमर के खम्भों पर शौचालय में प्रयुक्त होने वाला कागज लपेट दिया। पोलिश और सोवियत नेताओं के चित्रों को फ्रेमों से निकाल कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया। एक विदेशी प्रेक्षक लिखता है—"एक गलियारे में एक क्रुद्ध जनसमूह ने एक सन्दिग्ध पार्टी-सदस्य को घेर लिया और उसका चेहरा भय से सफेद पड़ गया।"

एक विदेशी द्वारा खींचे गये चित्र में पार्टी-भवन की सबसे ऊपर की मंजिल की खिड़कियों पर दो भोंड़े चिह्न दिखायी देते है। एक में "स्वतंत्रता" और दूसरे में रोटी" लिखा हुआ है। छत पर उड़ती हुई एक पताका पर लिखा हुआ था—

"हम रोटी चाहते हैं"। किसी मजाकिये ने वहीं पर दूसरा वाक्य लिख दिया – "मकान किराया पर देने के लिए है।"

पार्टी के प्रधान कार्यालय से जनसमूह यू० बी० भवन की ओर बढ़ा। यू० बी० उरजाद बेजपीक जेन्स्त्वा अथवा सुरक्षा-प्रशासन के प्रथम अक्षर है, सीधे-सादे शब्दों में इसका अर्थ है, गुप्त पुलिस। यू० बी० में उस दिन प्रथम बार गोलियाँ चलीं और रक्त प्रवाहित हुआ। यू० बी० के कई आदमी मारे गये; उनके एक टामीगन-चालक के शरीर के अवयवों को काट दिया गया; एक दूसरे को कुचल कर मारा डाला गया। संघर्ष में बालकों, औरतो और असैनिक व्यक्तियों की मृत्यु हुई। यहाँ भी पोलिश सेना घटनास्थल पर पहुँची। टैंकों का आगमन हुआ। नाटकीयता की दृष्टि से तथा राजनीति की दृष्टि से यू० बी० दुर्ग के समक्ष घटित हुई रक्तमयी घटनाएँ, पोजनान-प्रकरण की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटनाएँ थीं।

यू० बी० के लिए होने वाला संघर्ष कई घण्टों तक जारी रहा। यह उस प्रकार का सघर्ष था, जिसमें यद्यपि पराजय ही हाथ लगी तथापि जो इतिहास का निर्माण करता है और अन्तिम सफलता का द्योतक है।

'जिसपो' के जो प्रतिनिधि जेल में नहो मिले थे, उनकी खोज करता हुआ जन-समूह यू० बी० की ओर बढ़ा, किन्तु जब जुलूस एक बार कम्यूनिस्ट दमन के अभिकरण और प्रतीक यू० बी० के सामने खड़ा हो गया, तब वह अलिखित कानून जो जन-समूहों के आचरण को शासित करता है कार्य करने लगा। लापता प्रतिनिधियों का विस्मरण कर दिया गया। भवन ने क्रुद्ध भीड़ के लिए उसी प्रकार का कार्य किया, जिस प्रकार का कार्य लाल झण्डी खुले सांड के लिए करती है।

पोजनान की घटनाओं के एक महीने बाद, मै प्राचीन आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक शान्त कक्ष में बैठ कर विश्वविद्यालय के शिक्षक से बातें कर रहा था। आक्सफोर्ड का वह अर्थशास्त्री ब्रिटिश अर्थशास्त्रियों के एक प्रतिनिधि-मण्डल का सदस्य था तथा गुरुवार, २८ जून को वह सयोगवश पोजनान में ही था। उस दिन वह १२ बजे से १ बजे तक डोम्ब्रोवस्की और मिकीविक्ज सड़कों के कोने पर, विदेशी ब्राडकास्टों को अवरुद्ध करने वाले स्टेशन पर खड़ा रहा। हड़तालियों और नवयुवकों ने स्टेशन के भीतर प्रवेश कर, उसके मूल्यवान विद्युत यंत्रों को खिड़कियों से बाहर फेंक दिया था। मलबे के बीच से होकर चलते हुए जहाँ उन्होने हार के समान दिखाई देनेवाला क्रोमियम का मुलम्मा किया हुआ धातु का एक टुकड़ा उठाया, जिसे उन्होंने मुझे दिखाया, आक्सफोर्ड के प्राध्यापक ने एक पोलिश मजदूर को यह

कहते हुए सुना –“ उन्होंने इस पर चालीस लाख ज्लाटी व्यय किये, किन्तु मुझे पर्याप्त रोटी भी नहीं मिली। ”

सड़क के पार विध्वस्त ब्राडकास्ट अवरोधक स्टेशन से हड़ताली, जो प्रात काल थोड़े ही समय में विद्रोही बन गये थे, यू० बी० भवन पर पत्थरों और गैसोलीन से भरी हुई बोतलों (मोलोतोव काकटेल) से आक्रमण कर रहे थे। प्रत्यक्ष था कि, वे टैंकों के आने की आशा कर रहे थे क्योंकि जहाँ डॉम्ब्रोवस्की स्ट्रीट कोचानोवस्की स्ट्रीट से–जिस सड़क पर यू० बी० भवन स्थित है–मिलती है, वहाँ उन्होंने गिरे हुए वृक्षों और उलटी हुई ट्रामों से मार्ग अवरुद्ध कर दिया था। पास ही उन्होंने ट्रालियाँ खड़ी कर दीं और उनकी बगल में अन्य ट्रालियाँ पहुँचा दी, जिससे सैनिक गाड़ियों का मार्ग अवरुद्ध हो जाय।

उस समय यू० बी० ने पत्थरों और ‘मोलोतोव काकटेलों’ का उत्तर अपनी “बर्प गनों” (Burp guns) से गोलियाँ चला कर दिया। अर्थशास्त्री ने बताया कि सर्व प्रथम मरने वालों में दो महिलाएँ और दो बालक थे।

उन्होंने फिर बताया कि १२ बजकर ३० मिनट पर सैनिकों से, जो फौलाद के शिरस्त्राण नहीं पहने हुए थे, भरी हुई दो लारियाँ तथा दो रूस-निर्मित टी ३४ स्तालिन टैंक डोम्ब्रोवस्की में आये। जनता ने सैनिकों को देखकर हर्षध्वनि की और उन्हें इस बात का विश्वास प्रतीत होता था कि, वे विद्रोहियोंका साथ देंगे।

सैनिक ट्रकों से उतरे, किन्तु उन्होंने अपनी राइफलें और मशीनगनें अपने साथ नहीं लीं। हड़ताली तत्काल ट्रकों पर सवार हो गये, उन्होंने शस्त्रास्त्रों पर अधिकार कर लिया, कूद कर मार्गावरोधों को पार किया तथा उन लोगों के साथ हो गये, जो यू० बी० के विरुद्ध युद्ध कर रहे थे। लन्दन के “न्यू स्टेट्समैन ऐण्ड नेशन” के १४ जुलाई के अंक में एक गुमनाम प्रत्यक्षदर्शी के विवरण से इस विवरण की पुष्टि होती है। “जनता चारों ओर लारी पर टूटी पड़ रही थी और मैंने राइफलों और गोला-बारुद को एक हाथ से दूसरे हाथ में दिये जाते हुए देखा। अफसर का चेहरा सफेद था और उसका रिवाल्वर अभी तक उसके पास था। कुछ व्यक्ति उसे घसीट रहे थे। एक टैंक यू० बी० भवन की ओर बढ़ा। उसका कमाण्डर खुले ‘टरेट’ में खड़ा था। भीड़ में सम्मिलित कुछ व्यक्तियों ने उपहास करते हुए कुछ शोर किया। ज्यों ही टैंक रुका, त्यों ही लोग उस पर टूट पड़े और पुनः मै यह नही देख सका कि, ठीक-ठीक क्या हुआ। मै रास्ता बनाता हुआ उसकी ओर बढ़ा। कुछ लोगों के साथ बातचीत करने के पश्चात् मेरे दुभाषिये ने प्रसन्नतापूर्वक

कहा—'टैंक हमारे अधिकार में आ गया है।' एक दूसरे टैंक पर भी इसी प्रकार अधिकार कर लिया गया।"

सैनिकों का और विशेषतः टैंकों का व्यवहार रूस के पिछलग्गू देशों की सेनाओं की मनस्थिति एव निष्ठा पर जो प्रकाश डालता है, उसके कारण उसका विशेष महत्व है। म्युनिख में मैंने बडी संख्या में संग्रहीत किये गये पोजनान—विद्रोह सम्बन्धी छाया-चित्रों का अध्ययन किया। एक चित्र में घरों और वृक्षों की पृष्ठभूमि में एक टैंक दिखायी देता था, जिसके पार्श्व भाग मे पोलिश गरुड़ और २६४ की संख्या रग से अकित की गयी थी। उसके चारों ओर मजदूर, आफिसों के कनिष्ठ कर्मचारी तथा विश्वविद्यालय के छात्रों के समान दिखायी देने वाले नवयुवक एवं नवयुवतियाँ बड़ी संख्या में एकत्र थीं। दो व्यक्तियों को उठा कर टैंक के दूरस्थ ऊपरी भाग पर चढ़ा दिया गया था और वे 'टरेट' में टैंक के वर्दी-धारी चालक के साथ तर्क-वितर्क करते हुए दिखायी दे रहे थे। टैंक के इस्पात के बने विशाल ढाचे के निकटस्थ भाग मे एक महिला एक कर्मचारी की बगल में खड़ी थी और वह कर्मचारी झुक कर नीचे मशीन-कक्ष में किसी व्यक्ति से बात कर रहा था। यह स्पष्टतः टैंक के समर्पण के लिए चलने वाली समझौता-वार्ता थी।

एक दूसरे शौक़िया, किन्तु उच्च कोटि के फोटोग्राफर, इंगलैण्ड के कैम्ब्रिज विश्व-विद्यालय में व्यावहारिक अर्थशास्त्र-विभाग के सचिव श्री राबर्ट डेवीज से, जब मैं उनके घर पर मिलने गया, तब उन्होंने मुझे अपने पोजनान-सम्बन्धी चित्र दिखाये। एक चित्र में वही २६४ संख्या वाला टैंक अत्यन्त निकट से यू० बी० भवन पर गोले बरसाता हुआ दिखायी दे दे रहा था। यू० बी० की दीवार पर धुएं के काले धब्बे, धुएं के बादलों तथा गिरते हुए पलस्तर से इस बात का संकेत प्राप्त होता है कि टैंक की गोलियों ने अपने निशाने पर किस स्थान पर प्रहार किया था। टैंक समर्पित कर दिया गया था।

श्री डेवीज कहते है कि टैंक केवल अपनी मशीनगनों का प्रयोग करता था, तोप का नहीं। आपको तोप के गोलों के फूटने की आवाज नहीं सुनायी पड़ी। वास्तव में मशीनगन से गोली-चालन शीघ्र ही रुक गया। आपका विश्वास है कि टैंक के मिले-जुले नागरिक व सैनिक कर्मचारी मशीनगनों में पुनः गोली भरने अथवा तोप से गोला छोड़ने में असमर्थ थे। श्री डेवीज के आक्सफोर्ड-स्थित सहयोगी का कहना है कि टैंकों के—जिनकी संख्या कम से कम दो और सम्भवतः तीन थी—कर्मचारी विशुद्धतः असैनिक व्यक्ति थे, जो उन्हें चला नहीं सकते थे अथवा उनके शस्त्रास्त्रों का प्रयोग नहीं कर सकते थे।

स्पष्ट है कि, यद्यपि नगर-व्यापी हड़ताल की व्यवस्था पूर्व रूप से की गयी थी तथापि विद्रोहियों की सैनिक कार्रवाई अप्रत्याशित थी और उसका संचालन अकुशलतापूर्वक किया गया। यू० बी० के प्रधान कार्यालय के पार्श्वों से तथा पृष्ठ भाग से दक्षतापूर्वक व्यूह-रचना करते हुए तीन टैंकों ने इच्छुक सैनिकों से प्राप्त शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित उत्सुक पदाति असैनिकों के समर्थन से, जो उन्हें प्राप्त हुआ होगा, यू० बी० भवन पर सरलतापूर्वक अधिकार कर लिया होता, किन्तु अधिक समय व्यतीत होने से पहले ही टैंक गतिहीन एवं मौन हो गये।

१ बजे डोम्ब्रोवस्की स्ट्रीट पर स्थित सेना ने भीड़ में अश्रुगैस के कुछ कमजोर गोले फेंके। आक्सफोर्ड के अर्थशास्त्री ने मत व्यक्त किया—"मै केवल यह ख्याल कर सकता हूँ कि, यह सैनिक टुकड़ी अब दो दलो में विभक्त हो गयी थी। वे दल एक दूसरे से नहीं लड़े, किन्तु एक दल ने अश्रुगैस छोड़ी और दूसरा दल या तो तटस्थ था या यू० बी०-विरोधी था।" फिर भी, भीड़ तितर-बितर नहीं हुई; इसके बदले सैनिक कर्त्तव्य के पालन के लिए कम से कम जो कुछ कर सकते थे, उसे करने के बाद वे पीछे हट गये। श्री डेवीज ने अश्रु-गैस का एक खोल उठा लिया। लोगों ने आपको बताया कि यह रूसी है, किन्तु वह रूसी नहीं था। उन्होंने यह भी बताया कि यू० बी० के प्रतिरक्षक रूसी थे। यह बात भी सन्देहास्पद ही है, किन्तु ये वक्तव्य पोलिश भावनाओं को प्रतिबिम्बित करने वाले हैं।

अब आक्सफोर्ड का प्राध्यापक मिक्कीविक्ज और क्रैसिन्स्की के कोने पर चला गया। किसी आफिस के एक क्लर्क ने उससे कहा—"पूर्वी जर्मनी और चीन के निवासी हमारा मक्खन खा जाते है, रूसी हमारा कोयला ले जाते हैं और दाम नहीं देते। हमारे लिए कुछ भी नहीं छोड़ा जाता।" १ बजकर ३० मिनट पर कई टैंक मिक्कीविक्ज में आवाजें करते हुए उसकी दिशा में बढ़े, किन्तु वे सघन भीड़ को देख कर रुक गये। जनता ने चिल्ला-चिल्ला कर पूछा—"क्या तुम लोग पोल हो?" एक टैंक के 'टरेट' में खड़े एक स्मित-वदन कर्मचारी ने अपने दोनों हाथों को सिर के ऊपर ले जाकर जोड़ा तथा सहानुभूति व्यक्त करने के लिए उन्हें इधर-उधर हिलाने लगा। टैंकों से गोलियां नहीं चलायी गयीं।

इस बीच यू० बी० पर जोरदार प्रहार जारी रहा। हताहतों को कोचानोवस्की से डोम्ब्रोवस्की ले जाया जा रहा था। एम्बुलेन्स गाड़िया नगर में दौड़ लगा रही थी। ट्रकें एवं कारें पोजनान के बाहर से परिचारिकाएं ला रही थी। डोम्ब्रोवस्की पर एक सैनिक ने, जिसके सिर के चारों ओर पट्टी बंधी हुई थी और जो विद्रोहियों के

साथ मिलकर यू० बी० के विरुद्ध लड़ता रहा था, एम्बुलेन्स में रखे जाते समय क्रोधपूर्वक घूसा तान कर चिल्लाते हुए कहा—"रोटी।"

दो बजे आक्सफोर्ड का अर्थशास्त्री घटना-स्थल से चला गया। लगभग आधा घण्टा बाद शरीर के अवयवों को काटकर, मारने की एक घटना घटित हुई और श्री जी० ने इस समस्त भयकर दृश्य को देखा। ऐसा प्रतीत होता है कि, दो बजे के कुछ समय बाद यू० बी० की एक टुकड़ी भवन से बाहर निकली। एक अफसर ने एक यू० बी० सैनिक को गोली चलाने का आदेश दिया, किन्तु उसने इनकार कर दिया और अफसर ने उसे गोली मार दी। यू० बी० के दूसरे सैनिकों ने अवश्य गोलिया चलायीं तथा एक नागरिक घायल हुआ। जब जनता उसे उठाने के लिए नीचे झुकी, तब यू० बी० के सैनिको ने उस पर 'टामीगनों' से गोलियां बरसायीं और श्री जी० ने चार हताहतो को गिना। अब भीड़ इस बात से तथा अफसर के कार्य से भी क्रोधोन्मत्त होकर यू० बी० के बन्दूकधारियों की ओर तीव्र गति से बढ़ी। भीड़ में सम्मिलित व्यक्तियों ने एक बन्दूकधारी सैनिक को घेर लिया तथा उसके अगो को काट डाला।

"आपसे यह पूछने में मुझे घृणा का अनुभव होता है"—मैंने श्री जी० से कहा—"किन्तु बताइये कि वास्तव में क्या हुआ?"

"मैने देखा कि उन्होने उसके कान को सबसे पहले काट डाला।"—उन्होंने उत्तर-दिया—"मैंने उसकी बॉह को काटते हुए नहीं देखा, किन्तु जब वे उसे इधर-उधर ढकेल रहे थे, तब मैने देखा कि उसकी बॉह नहीं थी और उसकी बगल से खून की धारा प्रवाहित हो रही थी। तत्पश्चात् उन्होंने उसे भूमि पर पटक दिया तथा उसके ऊपर कूद पड़े। उसका शरीर लुब्दी जैसा हो गया था।" यू० बी० ने गोलियां चलाना अस्थायी रूप से बन्द कर दिया। इसका कारण या तो यह था कि, वह कत्ले आम करने से भयभीत थी या यह था कि, उसने विद्रोहियों के साथ और अधिक युद्ध करना बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य नहीं समझा। फिर भी युद्ध जारी रहा। विद्रोही सड़क पर से, पांच मंजिले ब्राडकास्ट-अवरोधक स्टेशन की छत पर से तथा अन्य महत्वपूर्ण स्थानों से यू० बी० पर गोलियां बरसा रहे थे।

गुरुवार को तीसरे पहर पोलिश-पूर्व जर्मन सीमा के क्षेत्र से पोजनान नगर में टैंक लाये गये। इन टैको की संख्या अनुमानतः सत्तर और दो सौ के बीच थी तथा सभी टैंक विशालकाय टी ३४ टैक थे, किन्तु पोलिश भाषा बोलने वाले एक रूमानियन ने, जिससे मैंने म्युनिख में मुलाकात की, कहा कि उसने इनमें से कतिपय टैंको को शुक्रवार को उस जिले से दूर, जहॉ यू० बी० युद्ध हुआ था, सड़कों पर

परित्यक्त स्थिति में तथा कर्मचारी-विहीन देखा । उसने तथा अन्य व्यक्तियों ने गुरुवार को तीसरे पहर तथा शुक्रवार को सारे दिन निरस्त्र सैनिकों को अकेले, अथवा जोड़ों में अथवा असैनिक नागरिकों से घिरे हुए सड़कों के कोनों पर इधर-उधर घूमते हुए तथा नागरिकों के साथ मित्रतापूर्वक बातचीत करते हुए देखा ।

गुरुवार को संध्या समय आठ और नौ बजे के बीच श्री डेवीज मेले के मैदान के निकट स्थित रेलवे स्टेशन पर गये । अन्त्यस्थल पर निरन्तर 'ट्रेसर' गोलियों की बौछार हो रही थी तथा सिर के ऊपर दो जेट विमान तथा एक दो पंखो वाला एक विमान आग की लपटें छोड़ते हुए चक्कर लगा रहे थे ।

ब्राडकास्ट-अवरोधक स्टेशन पर विद्रोही शुक्रवार के तीसरे पहर तक सरकारी सेनाओ के विरुद्ध डॅटे रहे । शुक्रवार को तीसरे पहर चार बजे पोलिश भाषा बोलने वाला एक रूमानियन रेलवे स्टेशन पर था जिसने सुना कि "विद्रोही पीछे हट रहे हैं ।" बाहर उसने वास्तव में देखा कि सैनिक नागरिकों को खदेड़ रहे थे, किन्तु, उसने कहा कि सैनिक पूर्णतया निर्लिप्त दिखायी देते थे और समय-समय पर बिना निशाना साधे अपनी मशीनगनों से गोलियाँ चला रहे थे, मानो वे किसी मैत्रीपूर्ण खेल में भाग ले रहे हों ।

महाप्राभियोक्ता (Prosecutor–General) मैरियन रिबनिस्कीकी १७ जुलाई की घोषणा के अनुसार पोजनान में दो दिनों मे ५३ व्यक्ति, जिनमें यू० बी० के नौ सैनिक भी सम्मिलित थे, मारे गये और तीन सौ व्यक्ति घायल हुए ।

युद्ध शनिवार को शान्त हुआ, किन्तु समस्त नगर में विमान-वेधक तोपें, टैंक और सैनिक नियुक्त थे । प्रत्येक स्थान पर पोजनान-निवासी सेना के साथ बन्धुत्व-भाव से मिल-जुल रहे थे ।

पोलिश सेना जनता के विरुद्ध एक अविश्वसनीय साधन थी । यू० बी० ने, जिसे पोजनान-विद्रोह से पूर्व घृणा की दृष्टि से देखा जाता था, अब जनता को क्रोध से पागल बना दिया । मजदूर शासन के कुप्रबन्ध तथा त्रुटिपूर्ण आयोजना का मूल्य चुकाते आ रहे थे और वे असन्तुष्ट थे । पतनोन्मुख पद्धति के इन समस्त गम्भीर लक्षणों के साथ नवयुवकों की नैतिकता का ह्रास सम्मिलित हो गया । पश्चिम में भी यह धारणा बद्धमूल हो गयी थी कि कम्यूनिस्ट देशों को अपने वयस्क निवासियों का समर्थन भले ही न प्राप्त हो, नवयुवक निश्चय ही उत्साहपूर्वक उनका समर्थन करते है । पोजनान ने इस धारणा को मिथ्या प्रमाणित कर दिया ।

११ जुलाई को कम्यूनिस्ट दैनिक पत्र "गजेटा पोजनान्स्का" ने "डब्ल्यू० एफ० यू० एम० (पोजनान का एक मशीन-पुर्जा कारखाना) के नवयुवक मजदूर" शीर्षक एक लेख प्रकाशित किया, जिसमें कहा गया था कि २८ और २९ जून को "फैक्टरी की नवयुवक कम्यूनिस्ट लीग के भूतपूर्व अध्यक्ष और अब उसके एक सदस्य बोगडान ओब्स्ट ने उत्तेजनात्मक कार्यों में भाग लिया..." इसका अर्थ यह है कि उसने विद्रोह में भाग लिया।

पोजनान के दैनिक पत्र "ग्लोस विएलकोपोल्स्की" ने अपने १० जुलाई के अक में पियोत्र जायकी का "को वाडिस" शीर्षक एक लेख प्रकाशित किया, जिसमें उसने २८ जून को संध्यासमय ६ बजे "चौदह, सोलह, अठारह वर्ष की उम्र के लगभग तीस बालको द्वारा, जो बन्दूके, हाथगोले, रिवाल्वर और स्वयचालित बन्दूकें लिये हुए थे" पोजनान के एक उपनगरीय पुलिस थाने पर किये गये आक्रमण का वर्णन किया। उन्होंने शस्त्रास्त्रों के लिए थाने की तलाशी ली। "नेता का कार्य जोसेफ आर० कर रहा था, वह पी० स्थान का निवासी है तथा एक प्रबल कार्यकर्ता एवं स्थानीय नवयुवक कम्यूनिस्ट लीग का अध्यक्ष है और अभी तक कम्यूनिस्ट युवक का स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकने वाला बिल्ला लगाये हुए था। ओह कैसी विडम्बना है!" लेख में घोषित किया गया है कि इसी प्रकार के आक्रमण अन्य स्थानों पर भी हुए।

श्री जायकी पूछते हैं कि पोजनान में इतने अधिक किशोरों ने सार्वजनिक भवनों पर क्यों आक्रमण किये? वे उत्तर देते है—"उपद्रवों में नवयुवकों ने स्वतः स्फूर्त—मैं उन्हें विवेकहीन कहूँगा—जो भाग लिया, उसके कारणों की खोज सर्वोपरि सम्भवतः हमारी गलतियो में ही की जानी चाहिए।"

आप स्पष्टीकरण करते है—"हमने अपने नवयुवकों को क्या दिया है? यह अवश्य कहा जाना चाहिए, विशेषतः उस जटिल राजनीतिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, जिसमें विद्यालय में नवयुवकों को सिखायी गयी बातों का घर पर विरोध किया जाता है। यह अवश्य ही कहा जाना चाहिए कि हमने युवकों को कुछ अधिक नहीं दिया है। विरोधी प्रवाहों में फँसे हुए, पतित प्रतिमाओं (स्तालिन की) की धूल में सने हुए नवयुवक उन्माद के पंजों में फँस जाते हैं। यहाँ से आदर्शवाद के पूर्ण अभाव तक की दूरी केवल एक डग है।" अनूदित किये जाने पर उसका अर्थ होता है कम्यूनिज्म का पूर्ण विरोध।

"स्जतान्दार म्लोदन्व" नामक पोलिश युवकोपयोगी पत्र ४ जुलाई १९५६ के अंक में युवक कम्यूनिस्ट लीग में परिवर्तन करने के लिए आह्वान करता है।

" यदि हम ऐसा नहीं करते, " पत्र चेतावनी देता है – " यदि हम युवकों की आवश्यकताओं, स्वप्नों एवं दिन-प्रतिदिन के कार्य से अपने को पृथक् रखना जारी रखते हैं, तो इस बात की आशंका उत्पन्न हो जायगी कि वे अन्तिम और अपरिवर्त्तनीय रूप से बिगड़ जायेंगे । "

यू० बी० के बन्दूकधारी सैनिकों ने अपने भवन की सबसे ऊपर की मंजिल की खिड़कियों से गोली चला कर एक सोलह वर्षीय बालक की हत्या कर दी । प्रदर्शनकारियों ने उसके रक्त में एक पोलिश झण्डा डुबाया और उसे मेले के मैदान तक ले गये, जिससे विदेशी उसे देख सकें । इस दृश्य के अनेक चित्र लिए गये । राष्ट्रध्वज के ऊपर के श्वेत भाग पर खून के धब्बे इतने स्पष्ट है कि उन्हें देखकर रक्त जम जाता है । झण्डे के चारों ओर, और उसके पीछे युवकों का सघन जुलूस चल रहा है । जुलूस में सम्मिलित युवकों में से कुछ आठ से दस वर्ष तक की आयु के बालक हैं, उनमें से अधिकांश अधिक आयु के हैं । आगे की पंक्ति में अधेड़ उम्र की, गम्भीर मुख-मुद्रा वाली एक महिला चल रही है । प्रत्येक व्यक्ति दुखी, निराश एवं कृत-संकल्प दिखायी देता है ।

सुप्रसिद्ध पोलिश कम्यूनिस्ट कवि विक्टर वोरोशिल्स्की रूस में एक वर्ष तक रहने के पश्चात् जुलाई में वापस लौटे और २९ जुलाई १९५६ को वारसा के प्रमुख साहित्यिक साप्ताहिक पत्र " नोवा कल्चरा " ने उनके द्वारा लिखित एक डायरी-सदृश लेख प्रकाशित किया । वे लिखते हैं – " अपने ही पुत्र को, जिसे किसी ने एक वर्ष तक नहीं देखा हो, देखने से अधिक विस्मयकारी बात और क्या हो सकती है ? वह कितना बढ गया है, किन्तु अभी हम इन शारीरिक परिवर्त्तनों के अभ्यस्त भी नहीं हो पाये थे कि छोटा फेलेक कुछ भावुकता के साथ अपनी कहानी कहना प्रारम्भ कर देता है ... ' उन्होंने झण्डे को उसके खून में डुबा दिया और प्रतिशोध की बातें करने लगे ... ' मैने यह कल्पना नहीं की थी कि एक सप्तवर्षीय बालक को रक्त और मृत्यु का कोई ज्ञान होगा अथवा लोद्ज़के खेल के मैदान के एकान्त में राजनीति उसके पास पहुंच गयी होगी । "

यदि सप्तवर्षीय फेलेक सुदूर पोजनान की घटनाओं को जानता है, तो उसके समकालीन स्टीफेन, वानेक और जोसेफ भी उन घटनाओं को जानते है, पोलैण्ड के किशोर भी जानते है और उनके बुजुर्ग भी निश्चित रूप से जानते हैं । पोलों की जाति रोमाण्टिक है और उनकी स्मृतियाँ लम्बी है । " वे प्रतिशोध की शपथ खा रहे थे " – छोटे फ़ेलेक ने कहा ।

अध्याय १५

गुप्त पुलिस के रहस्य

मास्को अपने प्रति सदा ईमानदार रहता है। पोजनान के सम्बन्ध में वह अपने प्रति ईमानदार था। जिस दिन विद्रोह हुआ, उसी दिन सोवियत पत्रों को और उन्हें प्रतिध्वनित करते हुए कम्यूनिस्ट जगत के, जिसमें युगोस्लाविया भी सम्मिलित था, समस्त समाचार-पत्रों और रेडियो स्टेशनों को बिना किसी जॉच-पड़ताल अथवा प्रमाण के ज्ञात हो गया कि यह कार्य 'विदेशी साम्राज्यवादी एजेण्टों', 'अमरीकी जासूसों' और 'पोलिश प्रतिक्रान्तिकारियों' का था। क्रेमलिन की भाषा के मोटे शब्दकोश में इन शब्दों का अर्थ है 'वे व्यक्ति, जिन्हें हम पसन्द नहीं करते।' वे मजदूर, नवयुवक कम्यूनिस्ट अथवा कम्यूनिस्ट नेता हो सकते है; हो सकता है कि वे जो कुछ जानते और सोचते हैं, उसके सम्बन्ध में वे सचाई के साथ लिखते है, किन्तु यदि यह मास्को की पुस्तक के अनुकूल नहीं है, तो वे 'प्रतिक्रियावादी' हैं।

युगोस्लाव शीघ्र ही सम्हल गये और उन्होंने पोजनान में जासूसों के सम्बन्ध में अपनी मूर्खतापूर्ण बात को वापस ले लिया। पोलिश कम्यूनिस्ट यह अनुभव कर रहे थे कि, उनका अस्तित्व संकट में है और वे कोई मूर्खतापूर्ण कार्य करने की मनःस्थिति में नहीं थे। २४ जुलाई के दैनिक 'जाइसी वारसावी' ने स्वीकार किया कि 'प्रथम विज्ञप्ति शीघ्रतापूर्वक तैयार की गयी थी, जब स्थिति अत्यन्त तनावपूर्ण थी तथा पोजनान की गलियों में गोली-चालन अभी तक जारी था।' उसने क्षमा-याचना की—'अब केवल उपद्रवकारियों और साम्राज्यवादी एजेण्टों पर ध्यान केन्द्रित करना गलत होगा।' वारसा के सरकारी पत्र 'ट्रिब्यूना लुड्' ने ६ जुलाई को कहा कि पोजनान "हमारी पार्टी के लिए और सबसे अधिक ट्रेड यूनियनों के लिए एक विशेष गम्भीर चेतावनी थी, एक विशेष कडुवा पाठ था... मजदूरों के पास असन्तोष के लिए एक आधार था... हड़ताल के शीघ्र होने में सर्वहारा वर्ग के राज्य की नौकरशाही प्रवृत्तियों का हाथ कम नहीं था... पोजनान की घटनाओं से हमें जो मुख्य निष्कर्ष निकालना चाहिए, वह यह है कि हमारी अर्थ-व्यवस्था में शब्दों का परित्याग कर कार्यों की ओर अभिमुख होना आवश्यक है। अन्यथा ऐसे संघर्ष उत्पन्न हो सकते है, पोजनान जिनका उग्रतम उदाहरण था

मास्को की मनःस्थिति भिन्न ही प्रकार की थी। क्रेमलिन ने, जो दूसरे देशों के मामलों में कभी हस्तक्षेप नहीं करता—परमात्मा न करे—प्रधान मंत्री बुल्गानिन और प्रतिरक्षा-मंत्री मार्शल झुकोव को पोलैण्ड भेजा। झुकोव स्वभावतः यह जानना चाहते थे कि पोजनान के बाद क्या अब भी पोलिश सेना का रूस के लिए कोई मूल्य रह गया है। बुल्गानिन नगर-नगर का दौरा कर भाषण करने लगे। इन भाषणों में उन्होंने पोलों को परामर्श दिया कि क्या करना चाहिए। २१ जुलाई को उन्होंने वारसा में स्पष्टीकरण किया कि निश्चय ही "हम मार्क्सवादी–लेनिनवादी लोग समाजवादी प्रजातन्त्रवाद में" विश्वास रखते है, किन्तु "तथाकथित 'राष्ट्रीय विचित्रताओ' के नाम पर समाजवादी शिविर के अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों को क्षीण करने के निमित्त किये जाने वाले प्रयासों की हम उपेक्षा नहीं कर सकते।" टिटोवाद नहीं। उन्होंने "प्रजातंत्र के मिथ्या विस्तार" के नाम पर "जनता के जनतंत्रों" की शक्ति को क्षीण करने के प्रयासों का भी मजाक उड़ाया। स्वतंत्रता नहीं। विशेषत. पत्रों के लिए यह आवश्यक है कि वे "यही मार्क्सवादी दृष्टिकोण अपनाये।" भाषण-स्वातंत्र्य नहीं। पोलिश पत्रों में रूस तथा पोलिश कम्यूनिस्ट नेताओं की आलोचना की गयी थी।

श्री बुल्गानिन ने पोलिश सरकार को यह परामर्श भी दिया कि वह उन आर्थिक नीतियों का परित्याग न करे, जिनके फलस्वरूप पोजनान की घटनाए हुई थी, कष्ट उठाने पड़े थे तथा देश विपत्ति के कगारे पर पहुँच गया था। बुल्गानिन कह रहे थे कि जब जनता शिकायत करे, तब चूड़ी कस दो, कषाघात करो तथा मुँहों को बन्द कर दो।

फिर भी, पोलैण्ड रूसी तरीकों से काम लेने की मनःस्थिति में नहीं था। इस प्रकार तो केवल और पोजनानों की सृष्टि होती और वारसा विद्रोह का दमन करने के निमित्त टैंकों के लिए तथा राजनीतिक शर्तों के साथ आर्थिक सहायता के लिए पूर्ण रूप से मास्को का आश्रित हो जाता।

पोलिश जनता ने अपनी भूमि पर १ सितम्बर १९३९ को हिटलर के आक्रमण के बाद से इतना अधिक खून बहाया था कि अब वह और अधिक खून न बहाना ही पसन्द करती। जिस प्रकार १६ जून १९५३ को पूर्वी बर्लिन में हुई हड़ताल समस्त क्षेत्र में फैल गयी थी, उस प्रकार पोजनान की घटनाएँ नहीं फैलीं क्योंकि राष्ट्र को आशा थी कि एक पोजनान पर्याप्त चेतावनी का काम करेगा और चूंकि और भी पोजनान भ्रूणावस्था में विद्यमान थे, इसलिए पोलिश कम्यूनिस्ट नेता बुल्गानिन के मॅहगे परामर्श को नहीं स्वीकार कर सके। चुनाव करने के लिए विवश

होने पर पोलिश कम्यूनिस्टों ने कठोर दमन को, जो उन्हें रूस का निष्क्रिय दास बना देता, अस्वीकृत कर दिया और स्वतंत्रता को चुना—किन्तु उसी सीमा तक, जिस सीमा तक परिस्थितियों और उनकी निजी मार्क्सवादी पृष्ठभूमि ने अनुमति दी।

पोलैण्ड की अर्थ-व्यवस्था को विनष्ट करने में मास्को पहले ही पर्याप्त योगदान कर चुका था; वह विशाल परिमाण में कोयला, जो देश की प्रमुख निर्यात-सामग्री है, उठा ले गया था और उसके लिए डालरों के बदले पेनियों में भुगतान किया था; उसने वारसा को शस्त्रास्त्र-निर्माण उद्योग का विस्तार करने के लिए प्रेरित किया था (कम्यूनिस्ट पार्टी के सचिव एडवर्ड ओचाब ने अगस्त १९५६ में पोजनान के 'जिसपो' कारखाने में कहा—"ढाई वर्षों की अवधि में हमने एक महत्वपूर्ण तोप-निर्माण उद्योग की सृष्टि की, हमने विमानों और टैंकों का निर्माण किया तथा अपनी सेना को आधुनिक शास्त्रास्त्रों से सुसज्जित किया"); और उसने भारी उद्योगों में, जिनमें ऐसी किसी वस्तु का उत्पादन नहीं होता था, जिसे जनता खा-पहन सके अथवा अन्य प्रकार से उपयोग में ला सके, विशाल पोलिश धन-राशि के विनियोजन का आदेश दिया। अपनी मार्क्सवादी गर्वोक्तियों के बावजूद कम्यूनिस्ट विश्वजनीन आर्थिक और सामाजिक नियमों के सामान्य कार्य को पहले से नहीं देख सकते, उन्हें रोक सकना तो दूर की बात है। वारसा की नीतियों के निम्नलिखित परिणाम हुए—मुद्रा-स्फीति; ज्लाटियों के बदले, जिनके मूल्य का ह्रास हो गया था और जिन्हें वह खर्च नहीं कर सकता था, नगर को खाद्य-सामग्री प्रदान करने से किसान का इनकार करना; फैक्टरियों और खानों में उत्पादनशीलता में ह्रास; पुरुषों और स्त्रियों के मध्य व्यापक मद्यपान; नगरों में जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि; नवयुवकों के मध्य गुण्डागिरी और फजूलखर्ची; पार्टी में निम्न नैतिक स्तर; और पोजनान की दो दिनों की घटनाएँ।

अब श्री बुल्गानिन ने इसी प्रकार की और नीतियाँ ग्रहण करने का परामर्श दिया। 'दूसरा गाल फेरने' के बदले वारसा अपनी पीठ फेर लेना चाहता था। व्यवहारतः यह कठिन था और कठिन है, क्योंकि एक पोलिश कम्यूनिस्ट सरकार के लिए दो परस्पर-विरोधी प्रभुओं—मास्को और पोलिश जनता—की सेवा करना आवश्यक है और इस संकट से बचने का सर्वोत्तम साधन यह होता कि, सरकार जनता के नियंत्रण में चली जाती और क्रेमलिन से कह देती कि जनता उसे रूस की सेवा करने की अनुमति नहीं देती।

१९४८ में युगोस्लाव सरकार सोवियत आलिंगन से मुक्त हो गयी और वह जनतंत्र की स्थापना किये बिना ही ऐसा कर सकी। वहाँ टिटोवाद अथवा राष्ट्रीय

साम्यवाद पर्याप्त सिद्ध हुआ, किन्तु पोलैण्ड के लिए आवश्यक था कि वह सोवियत प्रभुत्व से मुक्ति प्राप्त करने के लिए जनता को स्वतंत्रता प्रदान करता। (क्या स्वतंत्र पोलैण्ड कम्यूनिस्ट होना चाहेगा ?) यह बात वारसा के कार्य को बेलग्रेड के कार्य की अपेक्षा बहुत अधिक जटिल बना देती है।

किसी राजनीतिक विभाजक दण्ड से अनेक पोलिश बुद्धिवादियों ने तथा कम्यूनिस्टों और साधारण नागरिकों ने भी इस बातका पता लगा लिया कि उनकी राष्ट्रीय मुक्ति व्यक्तिगत स्वतंत्रता में निहित है। इस तक पहुँचने के लिए उन्हें बीच की बाधा, गुप्त पुलिस अथवा यू० बी०, को समाप्त करना था। ऐसा करने का सर्वोत्तम साधन था भाषण-स्वातंत्र्य।

१९५३ के मध्य से पोलैण्ड में टेढ़े-मेढ़े मार्ग से जो घटनाएं हुईं, उनका यही सारांश है।

स्तालिन की मृत्यु से पोलैण्ड में कोई प्रत्यक्ष परिवर्त्तन नहीं हुआ। बेरिया की मृत्युसे परिवर्त्तन हुआ, क्योंकि पिछलग्गू देशों पर सोवियत गुप्त पुलिस का ही शासन था। १९४४ और १९४५ में ज्यों ही रूसी सेना पूर्वी यूरोप के किसी देश पर आक्रमण करती थी, त्योंही एक स्थानीय कम्यूनिस्ट को स्वराष्ट्र-मंत्री के पद पर नियुक्त कर दिया जाता था। हंगरी और जेकोस्लोवाकिया में जब कम्यूनिस्टों ने सरकार को पूर्ण रूप से अपने नियंत्रण के अन्तर्गत कर लिया, उसके पहले ऐसा ही हुआ था। गुप्त पुलिस स्वराष्ट्र मंत्रालय के अधीनस्थ होती है और प्रत्येक मामले में एक अप्रसिद्ध सोवियत अफसर स्वराष्ट्र-मंत्रालय का कर्त्ता-धर्त्ता होता है। इसके जरिये वह राष्ट्र पर शासन करता है। गिरफ्तार करने और मुकदमा चलाने का अधिकार प्राप्त होने के कारण तथा राजनीतिक दृष्टि से समझौतामूलक एवं व्यक्तिगत दृष्टि से संत्रासकारी सूचना एकत्र करने के लिए समस्त विभागों मे महत्वपूर्ण स्थानों पर नियुक्त किये गये एजेण्टों के कारण यह कार्य उतना कठिन नहीं है, जितना कठिन यह प्रतीत होता है।

इस पद्धति के विद्यमान होने की बात सामान्यतः विदित थी, किन्तु उन इतिहास-निर्माणकारी घटनाओं में से एक घटना द्वारा अब विश्व को किसी सोवियत पिछलग्गू देश की आन्तरिक कार्यप्रणाली के सम्बन्ध मे विस्तृत विवरण प्राप्त हो गया है। फिर भी, यह घटना एक सांयोगिक घटना मात्र नही है, क्योंकि यह तानाशाही पुलिस राज्य की प्रकृति का परिणाम है। यह घटना थी पोलिश जन-सुरक्षा-मंत्रालय के दसवें विभाग के उपनिर्देशक लेफ्टिनेण्ट कर्नल जोसेफ स्वियात्लो का पश्चिम में पलायन। दसवां विभाग पोलैण्ड के उच्चतम कम्यूनिस्ट

नेताओं के सम्बन्ध में व्यक्तिगत फाइले रखता था। स्वियात्लो प्रान्तों मे गुप्त पुलिस की ड्यूटी करने के बाद १९४५ में इस विभाग में आया। "बेजपीका" में, जो पोलिश गुप्त पुलिस का सामान्य नाम है, अपनी गतिविधियों का जिक्र करते हुए स्वियात्लो ने कहा—"बेजपीका मे नौकरी करते समय मैने पार्टी और शासन के लगभग उन समस्त प्रमुख अधिकारियों को गिरफ्तार किया, जो उस अवधि मे गिरफ्तार किये गये थे।" इनमे गोमुल्का भी सम्मिलित थे।

जो व्यक्ति किसी झूठ बोलने वाले, जासूसी करने वाले, यातनाए देने वाले तथा हत्या करने वाले संगठन में दीर्घकाल तक उच्च पद पर रहा हो, उसे सामान्यत शुद्ध सत्य के सर्वोत्तम स्रोत के रूप मे नही स्वीकार किया जायगा, किन्तु स्वियात्लो ने जो रहस्योद्घाटन किये, वे पोलैण्ड की घटनाओं द्वारा सही प्रमाणित हो चुके हैं। वास्तव मे उन रहस्योद्घाटनो ने प्रत्यक्षतः पोलिश सरकार को व्यग्र बना दिया और उसकी नीति का पुनर्निमाण किया।

स्वियात्लो बीस वर्षों से कम्यूनिस्ट था। उसने पोलिश कम्यूनिस्ट पार्टी के सचिव बोलेस्लाव बीरूत तथा 'बोलिट ब्यूरो' के अन्य सदस्यो के व्यक्तिगत आदेशों से अनेक नाजुक, सोच-समझ कर किये जानेवाले कार्य संपन्न किये थे। दिसम्बर, १९५३ में उसका तात्कालिक उच्चतर अधिकारी, दसवे विभाग का प्रधान कर्नल फेगिन पूर्वी जर्मनी के सुरक्षा-प्रमुख से परामर्श करने के लिए उसे पूर्वी बर्लिन ले गया। (पिछलग्गू देशो की पुलिस-प्रणालिया निश्चय ही एक दूसरे से सम्बद्ध होती है।) वहाँ से वह पश्चिमी बर्लिन में चला गया तथा अमरीकी अधिकारियों के समक्ष जा उपस्थित हुआ। सितम्बर, १९५४ में, वाशिंगटन में पत्रों ने उससे मुलाकात की और बाद मे उसने अपनी लम्बी कहानी पोलैण्ड में ब्राडकास्ट की। उसे 'वायस आफ अमेरिका', 'रेडिओ फ्री यूरोप' तथा अन्य माध्यमों द्वारा अबाध गति से दोहराया गया तथा गुब्बारो द्वारा पुस्तिकाओं के रूप में भी प्रचारित किया गया।

बीरूत, जैकब बरमैन, और हिलैरी मिंक सर्वोच्च पोलिश नेता थे। स्वियात्लो ने कहा—"बीरूत के आदेश से मैने कामरेड जेकब बरमैन के विरुद्ध आपत्तिजनक प्रमाण एकत्र किये तथा उनके सम्बन्ध में एक व्यक्तिगत फाइल रखी। दूसरी ओर जेकब बरमैन ने मुझे बीरूत की पत्नी वान्दा गोर्स्का के सम्बन्ध में एक व्यक्तिगत फाइल रखने का आदेश दिया। यह स्पष्ट है कि गोर्स्का पर कड़ी निगरानी रखने के कारण मैं बीरूत पर भी नजर रख सकता और बरमैन यही चाहते थे।"

किन्तु प्रमुखता प्राप्त करने से पूर्व बीरूत सोवियत एन० के० वी० डी० (गुप्त पुलिस) का वेतनभोगी कर्मचारी था। उस समय—१९४६ में—पोलिश कम्यू-

निस्ट पार्टी के नेता उसके सचिव ब्लाडिस्लाव गोमुल्का थे। वे एक कट्टर कम्यूनिस्ट थे, जिन्होंने युद्ध से पूर्व पूँजीवादी पोलैण्ड में कई वर्ष कारागार में व्यतीत किये थे। इसीसे उनकी जान बच गयी, क्योंकि रूस में रहनेवाले प्रमुख पोलिश कम्यूनिस्टों को १९३५ में स्तालिन के आदेश से फाँसी दे दी गयी थी और तत्पश्चात् उनकी पार्टी को भंग कर दिया गया था। इससे मास्को के प्रति गोमुल्का के प्रेम में वृद्धि नहीं हो सकती थी। न वे पोलिश कम्यूनिस्ट सरकार में एन० के० वी० डी० के प्रवेश से ही अपरिचित रहे।

१९४७ के प्रारम्भ में गोमुल्का ने एक निषिद्ध बात कह कर पोलैण्ड और कम्यूनिस्ट जगत को विस्मय-चकित कर दिया। पार्टी के मासिक पत्र "नोवे द्रोगी" (नये मार्ग) में उन्होंने बताया कि जबकि सोवियत संघ में विधि-निर्माण और विधि-कार्यान्वय के कार्य (Legislative and Executive Functions) एक संस्था द्वारा किये जाते है, तब पोलैण्ड में "श्रमिक वर्ग की तानाशाही और इससे भी अधिक एक ही दल की तानाशाही न तो आवश्यक है, न इससे किसी उद्देश्य की सिद्धि होगी...पोलैण्ड अपने ही मार्ग पर आगे बढ़ सकता है और बढ़ रहा है।"

समाजवाद के दो मार्गों के सम्बन्ध में यह घोषणा असामयिक टिटोवाद था। गोमुल्का ने अपने अपराध को यह घोषित कर और अधिक बढ़ा दिया कि "पोलैण्ड में सामूहिकीकरण नही होगा।" पथरीले सोवियत मार्ग से इस प्रकार की भिन्नता उन्हें पोलिश किसानों के मध्य लोकप्रिय बना देती और इस प्रकार उनकी सरकार की शक्ति में वृद्धि करती तया मास्को पर उसकी निर्भरता को कम कर देती।

स्पष्टतः गोमुल्का एक लक्षित व्यक्ति थे। जून, १९४६ में बीरूत ने "जान-बूझकर तथा सोच-समझकर लेनिन के मूल्यांकन में संशोधन करने" के कारण उनकी सार्वजनिक रूप से आलोचना की—

"गोमुल्का का शारीरिक अस्तित्व समाप्त कर देने की तैयारियाँ १९४८ में प्रारम्भ हुईं," स्वियात्लो ने गवाही दी "—उस समय भी गोमुल्का पार्टी के सर्वशक्तिमान महासचिव थे और उनके साथ स्पिचाल्स्की और अन्य व्यक्तियों के समान पूर्ण निष्ठावान व्यक्ति थे ... बीरूत ने निश्चय किया कि सर्वप्रथम इस गुट की एकता भंग की जानी चाहिए। किसी ऐसे व्यक्ति को मनोनीत करना आवश्यक था, जो अलग हो जाय तथा स्वयं गोमुल्का और उनके सहयोगियों पर प्रहार करे। इसके लिए जनरल मेरियन स्पिचाल्स्की को चुना गया', जो पोलिट ब्यूरो के सदस्य एवं उपप्रतिरक्षा-मंत्री थे।

जब कि गुप्त पुलिस गोमुल्का के विरुद्ध मामला तैयार कर रही थी, तभी उन्हे सरकार और पार्टी में उनके पदों से जनवरी, १९४९ में निष्कासित कर दिया गया। नवम्बर १९४९ मे उन्हें पार्टी की सदस्यता से भी अलग कर दिया गया। बीरूत उनका उत्तराधिकारी नियुक्त हुआ। इससे स्पिचाल्स्की को वश में करने का कार्य सुविधाजनक हो गया।

युद्धकाल में स्पिचाल्स्की पोलिश कम्यूनिस्ट भूमिगत जनसेना में खुफिया विभाग का प्रधान था। उसका जोसेफ नामक एक भाई था, जो उसी समय लन्दन-स्थित, निर्वासित पोलिश सरकार के प्रति वफादारी रखने वाली नाजी-विरोधी गैर-कम्यूनिस्ट भूमिगत स्वदेश-सेना में, एक अफसर था। (दोनों सेनाएं एक दूसरे के विरुद्ध थी क्योंकि यदि जन-सेना जीत जाती, तो पोलैण्ड रूस का समर्थक होता और यदि स्वदेश-सेना की विजय हो जाती, तो पोलैण्ड पश्चिम का समर्थक होता है।) भाई मेरियन ने गैर-कम्यूनिस्ट जोसेफ के साथ सम्पर्क बनाये रखा और इस सम्पर्क का लाभ उठा कर उसने लेकोविक्ज और जारोसेविक्ज नामक दो खुफिया एजेण्टों को कम्यूनिस्ट जासूसो के रूप में स्वदेश-सेना में भेज दिया।

जब युद्ध समाप्त हो गया, तब जनरल मेरियन स्पिचाल्स्की ने बीरूत की जानकारी के साथ दोनों एजेण्टो को पुरस्कृत किया। लेकोविक्ज को खाद्य-मंत्री तथा जारोसेविक्स को उसका सहायक नियुक्त किया गया। फिर भी, अक्तूबर १९४९ मे लोकोविक्ज और जारोसेविक्स को गिरफ्तार कर लिया गया और उनके विरुद्ध यह अभियोग लगाया गया कि उन्होंने नाजी गेस्टापो द्वारा नियुक्त कम्यूनिस्ट विरोधी एजेण्टो के रूप में जन-सेना में प्रवेश किया था। पोलिट ब्यूरो के सदस्य स्पिचाल्स्की के आसपास के अन्य व्यक्तियो को भी इस प्रकार के मनगढ़न्त अभियोगों में गिरफ्तार कर लिया गया।

स्वियात्लो कहता है कि उन निरपराध व्यक्तियों में से किसी ने भी अपराध स्वीकार नहीं किया, किन्तु बीरूत और उसके सहयोगियों ने स्पिचाल्स्की से कहा कि, उन्होंने उसे फॅसा लिया था। स्पिचाल्स्की ने इस पर विश्वास किया हो अथवा न किया हो, उसने देख लिया कि आज्ञापालन करने पर उसकी क्या गति होगी और तदनुसार उसने पार्टी की केन्द्रीय समिति के एक पूर्ण अधिवेशन में गोमुल्का के विरुद्ध भाषण किया।

कहने की आवश्यकता नहीं कि केन्द्रीय समिति के अगले पूर्ण अधिवेशन में ही स्पिचाल्स्की की इसलिए आलोचना की गयी कि, उसने गेस्टापो के एजेण्टों के

साथ अपने भूतकालीन सम्बंधों को छिपाये रखा और १९५१ में स्वियात्लो ने स्वयं उसे गिरफ्तार कर लिया।

स्पिचाल्स्की द्वारा अपने घनिष्ठ मित्र गोमुल्का की आलोचना, तत्पश्चात् उसकी गिरफ्तारी, उसके साथियो की गिरफ्तारी तथा गोमुल्का के निष्कासन से अवश्य ही पार्टी के सदस्य और पार्टी से असम्बद्ध अनेक पोल विस्मय में पड़ गये होंगे। स्वियात्लोने अपनी ही आवाज में जो रहस्योद्घाटन किये, उनसे सराहनीय स्पष्टीकरण तथा सम्बन्धकारक सूत्र प्राप्त हुए।

फिर भी, कैदी स्पिचाल्स्की ने गोमुल्का के विरुद्ध झूठी गवाही देने से इनकार कर दिया। अन्य प्रमुख कम्यूनिस्टों को गिरफ्तार किया गया, किन्तु उन्होंने भी कोई गवाही नहीं दी। स्वियात्लो ने स्लैन्स्की के मुकदमे के समय कई बार जेकोस्लोवाकिया की तथा राज्य के मुकदमे के समय हंगरी की यात्रा की। उसने ये यात्राएं इस आशा से कीं कि वह ऐसे आंकड़ों का संग्रह कर सकेगा, जिनके प्रकाशित होने पर गोमुल्का की बड़ी प्रतिष्ठा में काला धब्बा लग जायगा तथा पार्टी और जनता की दृष्टि में उसकी गिरफ्तारी उचित सिद्ध हो जायगी। ये प्रयास निरर्थक सिद्ध हुए। फिर भी, स्वियात्लो कहता है–"जुलाई १९५१ में गोमुल्का को गिरफ्तार करने का निर्णय कर लिया गया।"

पोलिश गुप्त पुलिस के प्रधान स्टैनीस्लाव "रैडकीविक्ज ने मुझे अपने कार्यालय में बुलाया"–स्वियात्लो ने अपने ब्राडकास्ट में कहा–"वहाँ मुझे रोमकोवस्की, लीतोव्स्की, स्वितलिक सहित समस्त उपसुरक्षा-मंत्री और उनके ऊपर उनका सोवियत परामर्शदाता मिले। रैडकीविक्ज ने मुझे क्राइनिका जाने, गोमुल्का को गिरफ्तार करने तथा उसे वारसा वापस लाने का आदेश दिया। उसने कहा कि यह बीरूत का आदेश है ...यह कार्य सरल नहीं था। मै जानता था कि गोमुल्का अपने साथ एक बन्दूक रखता था। अतः मुझे हर एक बात के लिए तैयारी करनी थी, जिससे मुझे देखकर वह अपने आपको या मुझ को गोली न मार दे...

"जब मै क्राइनिका में पहुँचा और न्यू रिसार्ट होटल में गोमुल्का के कमरे में प्रविष्ट हुआ, तब प्रातःकाल के ७ बजे थे। उसकी पत्नी जोफिया घर पर नहीं थी। वह थोड़े समय के लिए नगर में चली गयी थी। गोमुल्का मुझे भली भांति जानता था। अतः मै कमरे में घुसा, नमस्कार किया और पुनः कहा कि मैं पार्टी के आदेश से उसे अपने साथ वारसा ले जाने के लिए आया था। पहले तो गोमुल्का ने इनकार कर दिया...इसी बीच उसकी पत्नी लौट आयी और उसने कुछ तर्क-वितर्क किया।" वे प्रातःकाल १० बजे तक बात करते

रहे। स्वियात्लो कहता है कि वह स्वेच्छापूर्वक चलने के लिए गोमुल्का को राजी करने का प्रयास करता रहा। गोमुल्का का अंगरक्षक दल स्वियात्लो के आदेशाधीन था। सम्भवतः यह बात भी गोमुल्का के समक्ष स्पष्ट हो गयी। अन्ततोगत्वा उसने स्वियात्लो के साथ जाना स्वीकार कर लिया। उसे वारसा के निकट एक निजी मकान में ले जाया गया। "मैने गोमुल्का की पत्नी जोफिया को पड़ोस के एक मकान में अलग रखा। मै इन मकानों के लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी था..." —स्वियात्लो ने घोषित किया।

बीरूत स्लैन्स्की, राज्क और कोस्तोव के मुकदमों के समान ही गोमुल्का के विरुद्ध मुकदमा चलाना चाहता था। गोमुल्का ने अपराध-स्वीकृति द्वारा अपनी ही मृत्यु में सहयोग प्रदान करना स्वीकार नहीं किया। बीरूत ने अलेक्जेण्डर कोवाल्स्की नामक एक पुराने कम्यूनिस्ट से स्वयं मुलाकात की और उसे बताया कि गोमुल्का को हानि पहुँचाने के लिए उसे न्यायालय में क्या-क्या झूठी बातें कहनी चाहिए। उक्त व्यक्ति ने, जो एक भूतपूर्व धातु-मजदूर था, ऐसा करना स्वीकार नहीं किया।

"परिणामस्वरूप"—स्वियात्लो ने घोषित किया—"अन्य उपाय अपनाये गये। फिर भी, अत्यन्त कुशलतापूर्वक प्रयुक्त उत्तेजनाओं द्वारा भी कोई जानकारी नहीं प्राप्त की जा सकी... अन्त में रोमकोव्स्की और फेगिन ने उसे एक साथ काम देना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने सात दिनों तक निरन्तर उससे प्रश्न पूछे। उन्होंने इतनी तीव्रता से प्रश्न पूछे कि कोवास्की विक्षिप्त हो गया। उसे त्वोकी में एक पागलखाने में ले जाया गया और वहाँ उसकी मृत्यु हो गयी—"

समय गुजरता गया। क्रेमलिन दबाव डालता रहा। "समय-समय पर सोवियत परामर्शदाता रैडकीविक्ज से पूछते थेः 'तुम लोग गोमुल्का के सम्बन्ध में क्या करने जा रहे हो?" किन्तु "गोमुल्का ने किसी भी बात को स्वीकार नहीं किया तथा दूसरे व्यक्तियो ने उसे फँसाया नहीं...इसके अतिरिक्त पार्टी में अब भी उसके अनुयायी कुछ शक्ति रखते है। उन्हें इस बात का स्मरण है कि गोमुल्का पार्टी का स्रष्टा था..."

गोमुल्का के विरुद्ध कभी मुकदमा नहीं चलाया गया।

ज्ञान प्रत्येक स्थान पर शक्तिशाली होता है, किन्तु जब किसी तानशाही की व्यापक गोपनीयता उसे इतना अधिक दुर्लभ बना देती है, तब वह विशेष रूप से शक्तिशाली बन जाता है। स्वियात्लो ने पोलिश वायुमण्डल में जिस ज्ञान का प्रक्षेपण किया, उसे नेताओं के जीवन पर से पर्दा हट गया और वे प्रत्यक्ष रूप से

थर्रा उठे। बीरूत को पार्टी में प्रचलित उसके नाम 'कामरेड तोमाज' से सम्बोधित करते हुए स्वियात्लो ने कहा—"आप ने १९४७ और १९५२ के जनमत-संग्रह तथा चुनावों में झूठ से काम लिया। आपको याद है कि मै सुरक्षा-संगठन मे निर्मित उस विशेष आयोग का सदस्य था, जिसने १९५२ मे आपके लिए समस्त क्षेत्रीय निर्वाचन-आयोगों के विवरण तैयार किये थे। आपने केवल इतना ही किया कि, आवश्यक आकड़े भर दिये। कामरेड तोमाज, आपने कानूनी विरोध और वास्तविक राजनीतिक दलों को समाप्त कर दिया और इसके लिए आपने जिन तरीकों से काम लिया, उनमें केन्द्रीय समिति से सम्बद्ध हत्यारों के एक विशेष गिरोह के प्रयोग का तरीका भी सम्मिलित था......"

स्वियात्लो ने कहना जारी रखा—"यदि आप आज जनता के साथ सम्बंध और समाजवादी नैतिकता के सम्बन्ध में इतने जोर से बोलते है, तो सम्भवतः आप यह भी बतायेगे कि, आप स्वय किस प्रकार का जीवन व्यतीत करते है।" स्वियात्लो जानता था कि बीरूत बतायेगा, इसलिए उसने स्वय ही बता दिया। "...आपके पास दस से कम छोटे-छोटे विलासमय प्रासाद नहीं है?..." और उसने उन प्रासादों के नाम तथा उनकी ठीक-ठीक स्थिति बतायी। "ये समस्त प्रासाद और भवन परी-लोक के समान शान-शौकत से सजाये गये है।" उसने सूक्ष्मतम विवरण, सामान, स्वादिष्ट भोजन-सामग्रियों के नामों के साथ उनका चित्रण किया। बीरूत के भवनों में "कामरेड वान्दा गोर्स्का सचिव के रूप में रहने का प्रयास भी नहीं करतीं। उनके पास अनेक रोयेंदार वस्त्र, पतले से पतले फ्रांसीसी और चीनी रेशम के अन्तर्वसन, दर्जनों जोड़े जूते और दर्जनों हैट है...यह सब पोलिश मजदूर के नीरस, शुष्क एवं कठोर जीवन के पूर्णतया विपरीत है। इस विपरीतता में पाशविकता है।"

स्वियात्लो ने अपने रहस्योद्घाटनो में गुप्त पुलिस प्रधान तथा पोलिश पोलिट ब्यूरो के सदस्य स्टैनिस्लाव रैडकीविक्ज पर विशेष ध्यान दिया। "उदाहरणार्थ, रैडकीविक्ज जानता था कि जांच-विभाग के निर्देशक कर्नल रोजान्स्की के मातहत अधिकारी कप्तान केदूजिया द्वारा मंत्रालय में की गयी जॉच-पड़ताल के समय चतुर्थ विभाग के एक खंड के प्रमुख लेफ्टिनेण्ट कर्नल दोब्रजिन्स्की की हत्या कर दी गयी ... उसे स्पिचाल्स्की के मुकदमे के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था। बेजपीका ने दोब्रजिन्स्की की मृत्यु के सम्बन्ध में नहीं बताया। न उनसे उसी केदूजिया द्वारा मारे गये सेसानिस की मृत्यु की ही सूचना दी ... रैडकीविक्ज को मोर्कजार्स्की के प्रतिवेदन के सम्बन्ध में भी मालूम था...

इस प्रतिवेदन में उसने बलात् स्वीकारोक्तियाँ प्राप्त करने के लिए कर्नल रोजान्सकी द्वारा उसके साथ प्रयुक्त तीस से अधिक तरीकों का उल्लेख किया था।" दूसरे व्यक्तियों ने बताया कि "किस प्रकार जॉच-पड़ताल के समय रोजान्स्की ने उन्हें पीटा, उनके दॉत तोड़ दिये, अपमानजनक शब्दों में उन्हें गाली दी, उनके ऊपर थूका तथा उन पर लात से प्रहार किया . ये सभी बाते रैडकीविक्ज को मालूम थीं, किन्तु उसने कोई कार्रवाई नही की...औपचारिक रूप से रैडकीविक्ज सुरक्षा मंत्रालय का प्रमुख है, किन्तु व्यवहारतः रैडकीविक्ज का तथाकथित परामर्शदाता सोवियत जनरल लालिन ही उसका प्रधान है।" स्वियाल्लो ने बताया कि यू. बी. के कर्मचारी विभाग में प्राय सभी व्यक्ति रूसी है और उनका प्रमुख कर्नल निकोलाई ओरेच्वो है। ओरेच्वो की रूसी पत्नी "कामरेड बीरूत की टाईपिस्ट है, जिससे बीरूत पर सभी ओर से कड़ी निगरानी रखी जाती है।" स्वियात्लो ने बताया कि यू. बी. के वित्तीय विभाग का निर्देशक भी कर्नल किसियेव नामक एक रूसी है।

स्वियाल्लो के रहस्योद्घाटनों ने शासन को कंपा दिया। यद्यपि पोलिश पत्रों ने उसे देशद्रोही तथा मिथ्याभाषी कहा, तथापि उन्होने उसके विशिष्ट आरोपों का खण्डन करने का प्रयास कभी नहीं किया। पोलैण्ड और रूस में अनेक उच्च पदाधिकारी कम्यूनिस्ट जानते थे कि, उसकी साक्षी निर्विवाद तथ्यों पर आधारित थी। वास्तविकता तो यह है कि, पोलिश सरकार के कार्यों से स्वियात्लो के कथन की पुष्टि ही हुई। स्वियात्लो के तात्कालिक उच्चतर अधिकारी कर्नल अनातोल फेगिन को गिरफ्तार कर लिया गया और दसवे विभाग को सरकारी तौर से समाप्त कर दिया गया। सुरक्षा उपमंत्री रोमन रोमकोवस्की को गिरफ्तार कर लिया गया। जांच-पड़ताल-विभाग के प्रमुख रोजन्स्की को, जिसके विरुद्ध स्वियात्लो ने निरंकुशताओं का अभियोग लगाया था, उसी प्रकार गिरफ्तार कर लिया गया और जब उसे पांच वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया, तब वारसा के साप्ताहिक पत्र 'पो प्रोस्तू' (सीधे-सादे शब्दों में) ने अप्रैल १९५६ में शिकायत की कि दण्ड अत्यन्त कम था। 'रोजान्सकी कौन है?' पत्र ने प्रश्न किया—'पोलैण्ड में प्रत्येक व्यक्ति इस बात को जानता है ... साफ–साफ कहा जाय, तो उसने निर्दोष व्यक्तियों को केवल यातनाएँ दीं।'

जब स्वियात्लो ने 'ब्राडकास्ट' करना प्रारम्भ किया, उसके कुछ सप्ताह बाद ही ७ दिसम्बर, १९५४ को रैडकीविक्ज को यू. बी. के प्रधान के पद से हटा दिया गया और बदले में उसे राज्यीय फार्मों का मंत्री नियुक्त किया गया।

(बाद में वह जेल चला गया ।) स्वयं यू. बी. को दो भागों में विभक्त कर दिया गया और दोनों भागों का पूर्ण रूप से पुनर्गठन किया गया । जन-सुरक्षा-समिति के नये अध्यक्ष एडमण्ड शोलकोव्स्की ने १७ जून १९५६ को वारसा रेडियो पर इस सुधार का स्पष्टीकरण करते हुए कहा — "डेढ़ वर्ष पूर्व पोलिश कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के तृतीय पूर्ण अधिवेशन में सुरक्षा के सम्बन्ध में प्रस्ताव स्वीकृत किये गये थे . . . एक मूलभूत संगठनात्मक परिवर्तन यह है कि भूतपूर्व जन-सुरक्षा-मंत्रालय को समाप्त कर दिया गया और उसके स्थान पर जन-सुरक्षा-समिति की स्थापना हुई ... यह नाम-परिवर्तन मात्र नहीं है ... (इन परिवर्तनों के) परिणाम-स्वरूप सुरक्षा-यंत्र की पूछताछ सम्बन्धी कार्य-प्रणाली मे गम्भीर और निश्चयात्मक सुधार हुए . . . विभिन्न श्रेणियों के कई कर्मचारियों को निकाल दिया गया . . . कर्मचारियों की संख्या में २२ प्रतिशत से अधिक की कमी कर दी गयी ... सत्य को विकृत रूप में प्रस्तुत करने के अपराधी अनेक व्यक्तियों को निकाल दिया गया । जिन्होंनें जाँच-पड़ताल के सिलसिलो में अनुचित तरीकों से काम लिया उनके विरुद्ध मुकदमा चलाया गया ।" उसने घोषित किया कि अब यू बी. गिरफ्तारियों और मुकदमों द्वारा पार्टी के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता । उसने घोषित किया कि राजनीतिक जीवन की समस्याओ का "केवल राजनीतिक समाधान ही किया जायगा और प्रशासनिक तरीकों (गुप्त पुलिस के तरीकों) को स्वीकार नहीं किया जायगा ।"

रैडकीविक्ज को बर्खास्त हुए बहुत दिन नहीं बीते थे कि दिसम्बर, १९५४ में गोमुल्का और उसकी पत्नी को कारागार से मुक्त कर दिया गया । बाद में सरकार ने जनरल मेरियन स्पिचालकी को मुक्त कर दिया ।

स्वियात्लो ने सितम्बर १९५४ में, जो रहस्योद्घाटन किये, उनके सम्बन्ध में कम्यूनिस्ट पार्टी के सैद्धान्तिक पत्र "नोवे द्रोगी" ने शीघ्र प्रतिक्रिया व्यक्त की । पत्र के दिसम्बर १९५४ के अंक में एक लेख में कहा गया — "सुरक्षा-सेवा के व्यक्तिगत कर्मचारियों में यह विचित्र धारणा उत्पन्न हो गयी है कि उन्हें अपने को अन्य सरकारी विभागों के कर्मचारियों, पार्टी के अन्य सदस्यों, श्रमिक जनता से ऊपर समझने का अधिकार है, उन्हें जनता की सरकार के कानूनों तथा नागरिकों के सांविधानिक अधिकारों की अवहेलना करने का अधिकार है......अभी तक सुरक्षा-यंत्र पर पार्टी का नियंत्रण अपर्याप्त रहा है ।"

जनता किसी भी गुप्त पुलिस से घृणा करती है । स्वियात्लो द्वारा किये गये रहस्योद्घाटनों के बाद उसे गालियाँ दी जाने लगीं तथा उसकी निन्दा की जाने

लगी और वह बचाव करने वालों से वंचित हो गयी । पोलिश पत्रों ने शिकायत की कि यू० बी० से निकाले गये अधिकारियों को कोई दूसरा काम नहीं मिल पाता; वे घृणा के पात्र हो गये है । २८ जून को पोजनान मे यू० बी० भवन पर हुए आक्रमण का स्पष्टीकरण करने के लिए मास्को को विदेशी जासूसों से सम्बन्धित बातों का आविष्कार करने की कोई आवश्यकता नहीं थी । यू० बी० सार्वजनिक घृणा का पात्र थी । १९५४ मे स्वियात्लो के ब्राडकास्टों के बाद से उसका आत्म-विश्वास, अनुल्लंघनीयता तथा उसके अधिकार समाप्त होने लगे । उसके प्रति भय कम हो गया, पोलिश जबानें खुल गयी तथा लेखक और पत्रकार कम्यूनिस्ट शासन के दुष्कृत्यों की आलोचना अधिक स्वतंत्रता से करने लगे । पोलिश क्रान्ति का जन्म हो चुका था ।

अध्याय १६

लेखनी मास्को से अधिक शक्तिशालिनी है

अशाति १९५३ में निजी तौर पर प्रारम्भ हुई । पोलिश लेखक, सम्पादक, पत्रकार, छात्र, और प्राध्यापक रूढ़ि के प्रतिबन्धों से संत्रस्त थे । मास्को ने चेतावनी देने के लिए जो अगुली उठायी, उससे बन्धन-मुक्त होने की आकांक्षा बढ़ गयी ।

सार्वजनिक लेखनी-विरोध अभियान १९५५ मे साधारण रूप में प्रारम्भ हुआ और १९५६ के मध्य में, जब पोजनान और आर्थिक स्थिति के ह्रास के साथ इसने सरकार तथा सरकार की नीति को बदल दिया एवं रूस की खुली उपेक्षा को जन्म दिया, इसने बल पकड़ लिया । लेखनी ने खेत को जोता और बोया; राजनीतिज्ञों और जनता ने फसल काटी ।

जनवरी, १९५५ में एक पत्र ने अधिकारियो को चेतावनी दी कि, वे पोलिश ग्रामों में समय के संकेतों को पढ़ने में गलती न करें; किसान सामूहिकीकरण को स्वीकार नहीं कर रहे थे । उसी वर्ष के दिसम्बर महीने में 'जायसी वारसावी' ने ठोस उदाहरणों द्वारा प्रमाणित किया कि पोलिश वैज्ञानिकों को बड़ी-बड़ी अनुसंधान-योजनाओं पर अत्यधिक समय और धन व्यय कर लेने के पश्चात् किसी यूरोपीय अथवा अमरीकी पत्र से, जो संयोगवश उनके हाथों में पड़ गया, यह पता लगा कि

उनकी समस्याओं का समाधान पहले ही हो गया था। इन विदेशी पत्रिकाओं के मूल्य के रूप में कुछ सौ ज्लाटियों की बचत करने के लिए मंत्रालय लाखों की बर्बादी क्यों करते है?

इन दो सत्यों से यह प्रमाणित हो गया कि जिस तथ्यात्मक आलोचना से पोलिश तूफान का प्रारम्भ हुआ, उसका विस्तार कितना था। फिर भी, अकस्मात् सामान्य स्थितियो के विरुद्ध अभूतपूर्व प्रकार की एक प्रखर आलोचना से यवनिका-उद्घाटन हो गया। यवनिका-उद्घाटक अत्यन्त सम्मानित कम्यूनिस्ट और पोलिश लेखक-संघ के अधिकृत मुखपत्र के प्रधान सम्पादक आदम वाजिक द्वारा लिखित "प्रौढों के लिए एक कविता" थी। प्रमुखतम साप्ताहिक पत्रिका 'नोवा कल्चरा' ने जब २१ अगस्त १९५५ को उसे प्रकाशित किया, उसके शीघ्र ही बाद उक्त कविता ने एक राष्ट्रीय सनसनी का रूप धारण कर लिया। कविता जीवन की कुरूपता, कठोरता, नीरसता, सरकारी कथनों के मिथ्यात्व, मार्क्सवादी मंत्रों की वचना के विरुद्ध वाजिक की अरुचि की अभिव्यक्ति थी :—

मेरे मित्र, मै जादू डालने में विश्वास करने से इनकार करता हूँ,
न मै शीशे के अन्तर्गत रखे गये दिमागों में विश्वास रखूँगा।
मेरा विश्वास है कि एक मेज के केवल चार पाये होते है।
मै विश्वास करता हूँ कि पांचवा (मेज का पाया) अवास्तविक है।
और मेरे मित्र, जब अवास्तविकताएँ एकत्र होती है,
तब मनुष्य का हृदय रुग्ण हो जाता है और वह मर जाता है।
सत्य यह है,
जब ऊब के तांबे के सिक्के का शोर-गुल
ज्ञान के लक्ष्य के मार्ग को अवरुद्ध कर देता है,
जब मस्तिष्कहीनता के गिद्ध हमारे दिमागों को खाते है,
जब छात्र अज्ञानपूर्ण पाठ्यपुस्तकों के कारागार में बन्दी है,
जब कल्पना का दीपक बुझ जाता है,
जब अच्छे व्यक्ति, आकाश से आये हुए
हमें सुरुचि का अधिकार प्रदान करने से अस्वीकार करते है,
तब यह सच है कि
अज्ञान हमारा द्वार खटखटाता है।
वे समुद्र का जल निगल जाते है और चिल्लाते है
"लेमोनेड"

बाद में वे चोरी-चोरी घर जाते हैं
वमन करने के लिए
वमन करने के लिए!
वे दौड़ते हुए आये और यह चिल्लाते हुए कि
" समाजवाद की स्थितियों में
घायल अंगुली आपको पीड़ा नहीं पहुँचायेगी "
उन्होंने अपनी अगुलियाँ काट लीं
उन्हें पीड़ा का अनुभव हुआ।
उन्होने सन्देह किया।
उन्होंने पुरुषों को गीली परिचारिकाओं के रूप में परिवर्तित कर दिया।
मैंने एक विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान सुना :
" समुचित रीति से व्यवस्थित आर्थिक प्रेरणाओं के बिना
हम प्राविधिक प्रगति नहीं कर सकते।"
ये एक मार्क्सवादी के शब्द है।
यह आपके लिए वास्तविक कानूनों का एक ज्ञान है
और एक कल्पना लोक का अन्त है।

आदम वाजिक द्वारा लिखित " प्रौढ़ों के लिए कविता " को वयस्कों ने पढ़ा और युवकों ने उसका पाठ किया। पार्टी के अधिकारियों को आघात लगा और वे चौकन्ने हो गये। उन्होंने आलोचना की नलिका को मोड़ देने का प्रयास किया। बुद्धिवादी वीरतापूर्वक मैदान में डटे रहे। 'नोवा कल्चरा' ने १९५६ का आरम्भ अपने १ जनवरी के अंक में प्रकाशित एक ऐसे लेख से किया, जिसमें " आलोचनाके पुनरुत्थान " को " निश्चित रूपसे सहायक " बताया गया। इसने पहले ही बहुत-कुछ " लीपा-पोती को, अर्थात् वास्तविकता पर असत्य के रंग को, समाप्त कर दिया था...... सांकेतिक शब्द और नारे श्रोताओं को बहुत दिनों से उबाते आ रहे है और अन्ततः उन्होंने अपनी रचना करने वालों को ही उबाना प्रारम्भ कर दिया है।" लेखक ने " उस असम्बद्ध आशावाद की, गम्भीतर विचार द्वारा असमर्थित जीवन के प्रति उस सन्तोष की, नवीन के ज्ञान के बिना ही नवीन की उस घोषणा की " निन्दा की। उसने लिखा कि, निकृष्ट नाट्यालोचना " नाटक-लेखन में हमारे पुराने संकट के कारणों में से एक है।" निश्चय ही बाहर का शत्रु

इन आलोचनाओं को उद्धृत करेगा, किन्तु "शत्रु के सर्वाधिक विषैले दांत को तोड़ने का केवल एक तरीका है: आलोचना पर उसके इस एकाधिपत्य को आलोचना द्वारा समाप्त कर दिया जाय।"

लोद्ज के "क्रोनिका" के जनवरी, १९५६ के अंक में एक लेखक ने कम्यूनिस्ट प्रचार पर प्रहार किया: (उसने बताया कि) स्वतंत्र यूरोप प्रेस के गुब्बारों के जरिये "मिलोश्ज की पुस्तक "बन्दी मस्तिष्क" और ओरवेल की पुस्तक "१९८४" की प्रतियाँ हमारे पास पहुँची हैं। शत्रु ने उन तथ्यों को, जो सत्य, किन्तु हमारे प्रतिकूल थे तथा हमारे प्रचार में जिनकी अवहेलना की गयी, पकड़ लिया है...... जिस समय किसी खान में आग लगी अथवा गुण्डागिरी ने एक व्यापक विभीषिका का रूप धारण कर लिया, उस समय हमारा प्रचार मौन बना रहा।" यहाँ यह बात दिखायी देती है कि आलोचक अब भी अपने दृष्टिकोण को उचित सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा है, स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है।

अब मास्को में बीसवीं पार्टी काँग्रेस आयी और चली गयी। "कुछ वर्षों पूर्व मैं एक कट्टरपन्थी सिद्धान्तवादी था", कैट ने २५ मार्च १९५६ के 'नोवा कल्चरा' में लिखा—"मैं प्रश्नों के उत्तर केवल 'हाँ' अथवा 'नहीं' में देता था।...... जब मुझसे युद्ध के सम्बन्ध में पूछा जाता था, तब मै उत्तर देता था कि पूँजीवाद उसी प्रकार युद्ध लाता है, जिस प्रकार बादल वर्षा लाता है ... मैं एक कट्टरपन्थी सिद्धान्तवादी के रूप में प्रसन्न था। अब मैं कट्टरपन्थी सिद्धान्तवादी नहीं हूँ।"

इसी समय कम्यूनिस्ट पार्टी के अधिकृत दैनिक पत्र वारसा से प्रकाशित होने वाले 'ट्रिब्यूना लुड्ड" ने एक ऐसे विषय को स्पर्श करने का साहस किया, जो सोवियत पत्रों के लिए निषिद्ध था। २९ मार्च १९५६ को उसने एक पोलिश पाठक का, जो मास्को की बीसवीं पार्टी काँग्रेस का अध्ययन कर रहा था और परेशान था, एक पत्र उद्धृत किया। समाचार पत्र लिखता है—"इस प्रकार इस व्यक्ति ने केवल यह प्रश्न किया: किस वस्तु पर और किस व्यक्ति पर विश्वास किया जाय? सत्य क्या है और मिथ्या क्या है? इस प्रश्न में कोई विचित्र बात नहीं है। अनेक व्यक्ति निम्नलिखित विचारधारा का अनुसरण करते है: यदि मैं असत्यों में विश्वास कर सका और उन्हें सत्य मान सका, तो यह गारण्टी कौन देगा कि आज मैं जिस बात को सत्य सोचता हूँ, वह असत्य नहीं निकल जायगी?" इस प्रश्न के पूछे जाने का ही स्वस्थ प्रभाव पड़ा।

केवल तीन दिन बाद " ट्रिब्यूना लुडू " ने एक विस्मयजनक प्रस्ताव उपस्थित किया। उसने पूछा कि पोलिश ' सेज्म ' अथवा संसद सरकारी आदेशों की केवल पुष्टि क्यों करती है और वह इतनी नीरस क्यों है? उसने प्रश्न किया—" क्या इस प्रकार के प्रस्तावों पर विचार-विमर्श की, विचार-संघर्ष की आवश्यकता नहीं है। फिर सदा मतैक्य ही क्यों रहता है...... हमारी संसद में बहुत कम वाद-विवाद होता है। "

जब अप्रैल में पोलिश संस्कृति एवं कला-परिषद का उन्नीसवाँ अधिवेशन प्रारम्भ हुआ, तब मास्को की पार्टी कॉंग्रेस के पाठों तथा ख्रुश्चेव के गुप्त भाषण को भली-भाँति हृदयंगम कर लिया गया था। ५–११ अप्रैल १९५६ के " प्रजेग्लाद कल्चराल्नी " ने परिषद के समक्ष जान कोट्ट की आलोचनाओं के उद्धरण प्रकाशित किये – " उदारवाद का विवाह का जामा गिर गया और अत्यन्त घृणित निरंकुशता अपनी समस्त नग्नता के साथ प्रकट हुई... यह एक ऐसा सत्य है, जो, कम से कम, हमें अपनी देशभक्ति के खोखलेपन का अनुभव करने के लिए बाध्य करता है......हमने प्रत्येक व्यक्ति को अपना विश्वास प्रदान किया है। हमने सोचा कि हमारे शिविर में घटित होने वाली प्रत्येक वस्तु मानव जाति के पक्ष को आगे बढ़ाती है। हमने वास्तविकता का स्पष्टीकरण करने का प्रयत्न किया, सत्य सीखने का नहीं। स्पष्टीकरण करना और औचित्य सिद्ध करना। किसी भी मूल्य पर! यहाँ तक कि सत्य के मूल्य पर भी। " रूसी क्रान्ति के प्रथम वर्षों में सोवियत साहित्य एक उपयोगी उद्देश्य सिद्ध करता था, किन्तु " १९३०–४० की अवधि के प्रारम्भ में साहित्य और कला ने सत्य बोलना बन्द कर दिया...... कला का उपयोग राजनीतिक प्रणाली का नहीं, प्रत्युत एक राजनीतिक संगठन का औचित्य सिद्ध करने के लिए किया जाता था......जिस साहित्य को अपराधों के सम्बन्ध में बोलने की अनुमति नहीं थी, जिस साहित्य को मुकदमों के सम्बन्ध में मौन धारण करना पड़ता था, उससे आत्मा पीड़ित होती थी......साहित्य को, जिसकी जबान पर ताला लगा दिया गया था, और अधिक, और गहराई तक झूठ पर अवलम्बित होना पड़ा......साहित्य और कला के विकास की मार्क्सवादी विवेचना बीसवीं शताब्दी के द्वार पर रुक गयी। उसके बाद प्रत्येक वस्तु समाजवादी समाज में कला के यांत्रिक विकास तथा पूँजीवादी समाजों में कला, संस्कृति और साहित्य के समान रूप से यान्त्रिक ह्रास के सम्बन्ध में मिथ्या एवं साधारणीकृत सिद्धान्त के अधीनस्थ हो गयी। "

वक्ता ने कहा कि पोलैण्ड को ह्रास के इस सोवियत भवर में फँसा दिया गया। "म्रियमाण आत्मा की, एक विस्तारशीला नैतिक—और केवल नैतिक नहीं—अन्धता की मन्द, निर्मम प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। लेखक, विज्ञानवेत्ता और कलाकार को अधिकाधिक एक ऐसा शिष्य समझा जाने लगा, जिसकी इस बात के लिए जाँच की जा रही हो कि उसने घर पर करने के लिए दिये गये कार्य को पूरा किया है अथवा नहीं।" श्री कोट्ट ने बताया कि यदि ठीक-ठीक कहा जाय, तो गत दो वर्षों में पोलैण्ड आन्दोलित हुआ था। अन्य किसी भी स्थान से अधिक समाजवादी शिविर में "साहित्य और कला से असत्य और निर्वीर्यता को धो डालने के प्रयास के मार्ग की बाधाएँ विजित हो गयी हैं..... (इसके बावजूद) हमें पार्टी के नेताओं से न तो सहायता प्राप्त हुई है, न प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है।"

महान सोवियत ग्लेशियर का पोलैण्ड से पीछे हटना प्रारम्भ हो रहा था। तूफान ने एक सोते का रूप धारण कर लिया था। पोलिश बुद्धिवादी न केवल क्रेमलिन पर, प्रत्युत वारसा-स्थित क्षुद्र क्रेमलिन पर भी प्रहार कर रहे थे। कोई भी गुप्त पुलिस उनका स्पर्श नहीं करती थी। जनता उनकी सराहना करती थी। कभी-कभी कोई सम्पादक संकट में फँस जाता था। कभी-कभी सेन्सर किसी लेख को जब्त कर लेता था। सामान्यत कान उमेठने से क्षति नहीं पहुँचती थी। पार्टी के उच्चतम क्षेत्रों में सम्पादकों और लेखकों के संरक्षक थे। वास्तव में पार्टी के अन्तर्गत गुटों की फूट तथा यू. बी. के दमन ने ही तूफान का खुले मौसम में परिवर्तन सम्भव बनाया।

५ अप्रैल, १९५६ के "ट्रिब्यूना लुड्ड" ने प्रकट किया कि, अब कम्यूनिस्टों में विद्रोह व्याप्त हो रहा था। जहाँ कही मास्को की बीसवीं पार्टी काँग्रेस की कार्रवाइयों पर विचार-विमर्श होता था, वहीं पोलिश कम्यूनिस्ट "मुक्त पार्टी जीवन" की माँग करते थे। सदस्य यह जानने के लिए हठ करते थे कि, गुप्त अधिवेशनों में क्या होता था।

और बुद्धिजीवी सदा ही मास्को द्वारा दास बनाये जाने की अपनी अवधि क उल्लेख कर बैठते थे। अप्रैल १९५६ के उत्तरार्द्ध में "प्रजेग्लाद कल्चराल्नी" में विटोल्ड विर्पस्जा ने पूछा—"क्या मेरे जीवन में कोई ऐसा समय था, जब मुझे वास्तव में यह विश्वास हुआ हो कि मास्को-मुकदमे के अभियुक्त देशद्रोही और फासिस्टों के एजेण्ट थे? नहीं। मुझे सदा सन्देह बना रहा अथवा अधिक स्पष्टता के साथ कहा जाय, तो मै बेचैनी का अनुभव करता था।"

यदि केवल मास्को का "लिटेरेरी गजट" इस प्रकार के किसी वक्तव्य को प्रकाशित कर सकता अथवा अपने पोलिश सहयोगी से लेकर इसे पुन: मुद्रित कर सकता !

"प्रजेग्लाद कल्चराल्नी" के उसी अंक में एक अन्य महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ। लुडविक मैज ने लिखा कि अब बेजपीका (यू० बी०) हमें आदेश नहीं दिया करता। बहुत अच्छा, किन्तु क्या यही सब कुछ था? नहीं, 'अफीम' भी वहां थी। "यह हमारा अपराध है। हम एक ऐसा आरामदेह जीवन व्यतीत करने के अभ्यस्त हो गये है, जिसमें कोई व्यक्ति हमारे लिए सोचता है और हमारे लिए बात करता है तथा हम प्रत्येक कार्य कठपुतलियों की भॉति करते है।" श्री मैज का मन पीड़ित था। उन्होंने स्तालिन में विश्वास किया था। स्तालिन-विमुखता में खतरे निहित थे। क्या इससे पूँजीवादी कुलक कृषक वापस आ जायेंगे? "जाइये और मेरी मां से पूछिये, जिसका जीवन एक कुलक के कारण नष्ट हो गया था ... क्या हमें वर्ग-संघर्ष का बिल्कुल ही विस्मरण कर देना चाहिए?" वे भूतकाल से और स्वयं से संघर्ष कर रहे थे, सार्वजनिक रूप से सघर्ष कर रहे थे और सोच रहे थे—यह एक नयी और स्वस्थ घटना थी।

२६ अप्रैल १९५६ के "ग्लोस रोबोलिक्जी" में एक लेखक ने इसी प्रकार की मानसिक अशांति व्यक्त की—"जब शुष्क भूमि पर तूफान आता है, तब वह केवल जीवनदायिनी आर्द्रता ही नहीं उत्पन्न करता। इससे क्षति भी होती है, गन्दे पानी की धाराएँ अनाज को उखाड़ देती है तथा मिट्टी को दूर बहा ले जाती हैं।" उसने कहा कि मास्को की बीसवीं पार्टी कॉंग्रेस ने ग्रामों में सामूहिक कृषि को विघटित करने के लिए शत्रुओं के प्रयासों को तीव्रता प्रदान कर दी है। "अब, बीसवीं कॉंग्रेस के बाद, वे तृतीय कोटि के पैगम्बर कहते हैं कि यह उत्पादक सहकारों का अन्त है ...... उपद्रवकारियों की जेबों में एक दूसरा तर्क रहता है: 'क्या तुमने गोमुल्का के सम्बन्ध में सुना है? ...... उसका सामूहिक कृषि का सामना करने से इनकार करना सम्भवत: ठीक ही था'।"

गोमुल्का अपनी जेल की कोठरी में बैठा हुआ था, किन्तु देश उसके सम्बन्ध में चर्चाएँ कर रहा था। स्वतंत्रता ने एक कैदी की रक्षा की।

पोलैण्ड राजनीतिक उफान की अवधि में प्रविष्ट हो गया था। "ट्रिब्यूना लुडु" के ३ मई १९५६ के अंक में साइलेशिया में एक औद्योगिक अध्यवसाय में "लगभग एक दर्जन" पार्टी-बैठकें होने का समाचार प्रकाशित हुआ। विषय था बीसवीं पार्टी कॉंग्रेस। "पार्टी के सदस्यों ने सम्भवत: प्रथम बार अपनी बैठकों में

संसद और व्यक्तिगत संसद-सदस्यों के कार्य की आलोचना की ...... बीसवीं कॉंग्रेस के बाद इससे भी अधिक मूल्यवान जो बात है, वह सम्भवतः यह तथ्य है कि अधिकाधिक व्यक्ति साहसपूर्वक अपने विचारों को व्यक्त करने लगे है, किन्तु ये प्रथम अंकुर मात्र हैं ...... अनेक मजदूर अभी तक भयभीत हैं।" वे सोचते हैं कि क्या "आलोचना का फैशन गुजर जायगा और तब कौन जानता है कि इसके लिए किसी को किस प्रकार का दण्ड दिया जा सकता है।'

वाद-विवाद प्रारम्भ हुए। एक लेखक ने बताया कि ख्रुश्चेव के रहस्योद्घाटनों के बाद प्रत्येक कम्यूनिस्ट के 'हाथ कलुषित' हो गये थे। एक दूसरे ने उत्तर दिया—"मै ऐसा नहीं सोचता।" एक के विरुद्ध महात्मा गांधी का समर्थन करने तथा 'निर्मल हाथों' के सिद्धान्त का प्रतिपादन करने का अभियोग लगाया गया। उसने इसका खण्डन किया। स्त्रियाल्लो की कहानी के उल्लेखों की भरमार हो गयी, यद्यपि उसके नाम का उल्लेख नहीं किया जाता था।

"हम विरोधियों के अथवा यहाँ तक कि शत्रुओं के भी मतों की उपेक्षा नहीं कर सकते"—एस० कोजिक्की ने १५ अप्रैल १९५६ को 'पो प्रोस्तू' में लिखा। उसने तर्क उपस्थित किया कि 'शत्रु' और 'राजनीतिक विरोधी' की धारणाओं के बीच 'बराबर' का चिह्न रखना गलत है। ये नये और वीरतापूर्ण शब्द थे। फिर भी, थोड़ी-सी सुरक्षा का भी ध्यान रखा गया—"निश्चय ही इसका अर्थ यह नहीं है कि...सभी प्रकार के अवांछनीय राजनीतिक तत्वों को भाषण-स्वतन्त्रता प्रदान की जानी चाहिए।" दूसरी ओर, "हमें—कई वर्षों के व्यवधान के पश्चात्—स्वीकार करना चाहिए कि हमारे राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन के कतिपय पहलुओं का विश्लेषण हमारे शत्रुओं ने सही ढंग से किया था और सम्भवतः पुनः बहुधा सही ढंग से करेंगे।" इसका उपचार है सत्य। "सत्य शत्रु के हाथों से प्रचारास्त्र को गिरा देता है।'

इस बीच पाठकों ने प्रतिक्रिया व्यक्त करना प्रारम्भ कर दिया। 'जायसी वारसावी' ने ३० अप्रैल १९५६ को घोषित किया कि यह एक अच्छी बात है कि प्रत्येक प्रति अपने साथ भूतकालीन विकृतियों और त्रुटियों तथा अवशिष्ट कठोरता एवं पुरानी आदतों की तीव्र और ईमानदारी से पूर्ण आलोचना लेकर आती है..."आपने हमें पहले क्यों नहीं बताया?"—नागरिक कह रहे थे।

२० मई को उसी समाचारपत्र ने विदेशी रेडियो स्टेशनों को अवरुद्ध करने की निन्दा की। यदि प्रत्येक व्यक्ति उन्हें बिना किसी हस्तक्षेप के सुनता, तो "न

समझने वाले अथवा केवल घृणा से ओतप्रोत श्रोता " उनके वक्तव्यों को तोड़-मरोड़ अथवा अतिरंजित नहीं कर सकते थे ।

१३ मई के 'जिस आई जुत्रो' (आज और कल) ने शिकायत की कि पश्चिम के साथ पोलैण्ड का सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया गया था । " १९५० के आरम्भ में समस्त अप्रगतिशील पत्रों का आना बन्द हो गया......हमें पश्चिम की कला के साथ अवश्य ही साहसपूर्वक होड़ करनी चाहिए...अन्य राष्ट्रों की कला को जाने बिना कोई अपनी निजी कला का निर्माण नहीं कर सकता...अब वह समय आ गया है, जब उस प्रथा को समाप्त कर दिया जाना चाहिए, जिसके अन्तर्गत केवल उसी कलाकार को विदेश-यात्रा के लिए 'सांस्कृतिक प्रवेशपत्र' प्राप्त हो सकता है, जो कम्यूनिस्ट पार्टी का सदस्य हो, अथवा उससे सहानुभूति रखने वाला हो ।"

जून १९५६ में 'ग्लोस' ने एक ऐसे क्षेत्र मे प्रवेश करने का साहस किया, जिसमें प्रवेश करने से कायर डरते थे . वह क्षेत्र था पोलिश विदेश-सम्बन्धों का । लेख का लेखक इस बात से पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं था कि " विगत ग्यारह वर्षों में पोलिश विदेश-नीतियों की धारा सोवियत नीतियों के साथ एक ही नदी में प्रवाहित होती रही ।" वह इस स्थिति के कारणों को समझता था, किन्तु इसमें किसी न किसी प्रकार का पोलिश अग्रणीत्व असम्भव नहीं था । " एक समय हमने अपने को भावनाओं में बह जाने दिया तथा फ्रांस के साथ, जिसके और हमारे अनेक हित समान है, अपने सम्बन्धों को शिथिल हो जाने दिया ।" स्कैण्डिनेविनय देशों के साथ सम्बन्धों की भी उपेक्षा की गयी थी । " समस्त अच्छी विदेश-नीतियाँ आवश्यक रूप से नमनीय होनी चाहिए..." वह उतनी दूर तक गया, जितनी दूर वह उस समय जा सकता था ।

साहित्यिक पत्रिकाओं ने अपने विशेष क्षेत्र का परित्याग कर दिया तथा वे जीवन के मानवीय एवं दार्शनिक पहलुओं की गहराई के साथ छान-बीन करने लगीं । ३ जून के 'जायसी लिटेरैकी' ने पूछा—" क्या हम जनसाधारण के दृष्टिकोण एवं उसकी चेतना में उदासीनता, क्लान्ति और नैराश्य के प्रति आँखें बन्द रखना जारी रख सकते हैं ? ... प्रश्न केवल अधिक वेतन का नहीं है । मजदूर और मालिक —पूँजीवाद का प्रारम्भ वहीं से हुआ था । वहीं से समाजवाद का भी प्रारम्भ हुआ था...वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि मजदूर इस बात के प्रति उदासीन है कि उसका मालिक कोई पूँजीपति है अथवा समाजवादी राज्य है... क्या हम

फैक्टरी-निर्देशक की इस पूर्णतया बोधगम्य इच्छा के सम्बन्ध में आश्चर्य कर सकते है कि उसके विशेषाधिकार उसके जीवन के अन्त तक कायम रहें ?"

इस लेख का लेखक मिरोस्लाव फ्लिजीयर उद्योग की एक अन्य जटिल समस्या की ओर मुड़ा – "यदि यह मान लिया जाय कि फुटकर काम के अनुसार वेतन देने की पद्धति, बिना किसी चमत्कार के, केवल परिमाण पर आधारित है, तो सीधा-सादा परिणाम यह होगा कि व्यय पर ध्यान न देकर उत्पादन में वृद्धि करने के लिए समस्त साधनों का उपयोग किया जायगा। किसी भी मूल्य पर परिमाण !" एक समाधान के रूप में श्री फ्लिजियर सुझाव देते है कि "उद्योग के लाभ में मजदूरों को तर्कसंगत एवं प्रत्यक्ष हिस्सा मिले।" रूस में इन सब को राजद्रोहात्मक माना जाता।

अनेक पोलिश कम्यूनिस्ट अपने सिद्धान्त की मूलभूत धारणा की इस प्रकार की जाँच-पड़ताल से संत्रस्त और चौकन्ने हो गये। उन्होंने बुद्धिवादियों के विरुद्ध काना-फूसी द्वारा प्रत्युत्तर दिया, और चूँकि कुछ बुद्धिवादी यहूदी थे, इसलिए वे यहूदी-विरोधी कानाफूसी भी करने लगे। एड्डा वेरफेल ने १७ जून के 'पो प्रोस्तू' में प्रत्युत्तर दिया। ये दोनों प्रति-धाराएं तब तक दिखायी देती रहीं, जब तक वे चरम सीमा पर नहीं पहुँच गयी और उनमें संघर्ष नहीं हो गया।

कम्यूनिस्ट विश्व में किसी भी स्थान पर पद्धति की प्रमुख समस्याओं के विषय में इतनी गम्भीर विचारणा एवं स्पष्टवादिता से काम नही लिया गया है; और चूँकि समस्त लाल धुरी में पद्धति, न्यूनतम विभिन्नताओं के साथ, एक ही प्रकार की है, इस लिए पोलों ने कम्यूनिज्म की कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में ज्ञान प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण सेवा-कार्य किया है। पोजनान का विद्रोह निकट आता जा रहा था। निश्चय ही, किसी भी व्यक्ति ने इसकी पूर्व-कल्पना नहीं की थी, किन्तु आर्थिक प्रश्नों पर ध्यान केन्द्रित किया जाने लगा था। सर्वाधिक साहसी पत्र 'यो पोस्तू' ने अनेक अनुल्लेखनीय बुराइयों पर प्रहार किया। इसके १० जून के अक में एक लेख में बढ़ती हुई बेकारी पर प्रकाश डाला गया: "सम्प्रति हमारे गॉव जनसंख्या-विहीन हैं, कृषि उपेक्षित है तथा नगरों में श्रमिकों का आधिक्य है।"

पॉच लाख व्यक्ति अस्थायी रूप से बेकार थे। दो सप्ताह बाद पत्र ने "क्या यह मार्क्सवाद की गोधूलि वेला है?" के विचित्र शीर्षक के अन्तर्गत व्लोद्जिमिर गोदेक और रिसजार्द तुर्स्की द्वारा लिखित एक लेख प्रकाशित किया, जिसमें आर्थिक संकट पर अधिक व्यापक रूप से प्रकाश डाला गया था। उन्होंने इस प्रस्ताव से प्रारम्भ किया कि समाजवाद के अन्तर्गत आन्तरिक विरोध हैं। उदाहरणार्थ, "विगत

दस वर्षों में न केवल हमारे छोटे उद्योग और शिल्पकार विकास नहीं कर सके, प्रत्युत इसके विपरीत, वास्तव में, वे पीछे हटे।......लाखों एकड़ भूमि पड़ती पड़ी हुई है......हमारी कृषि दस वर्षों से गतिहीन बनी हुई है......हमारी कृषिक अर्थ-व्यवस्था में, विशेषत. व्यक्तिगत कृषि में जो उत्पादनात्मक सम्भावनाएँ निहित है, उनसे हम केवल न्यूनतम लाभ ही लेते है......क्या यहाँ अन्तर्विरोध नहीं है?"

इसके अतिरिक्त "समाजवादी प्रणाली में सामग्रियों तथा उत्पादन के साधनों की अत्यधिक बर्बादी उतनी ही हानिकारक हो सकती है, जितनी पूँजीवादी प्रणाली में मन्दियाँ होती है। क्या यहाँ भी अन्तर्विरोध नहीं है?" "...... एक सप्ताह पूर्व अर्थशास्त्रियों का सम्मेलन समाप्त हो गया। कार्यसूची में ६ वर्षीय योजना के परिणाम तथा आगामी पंचवर्षीय योजना की सम्भावनाओं से सम्बन्धित प्रतिवेदन सम्मिलित थे। दुर्भाग्यवश सरकार के जो सदस्य प्रतिवेदन प्रस्तुत करने वाले थे, उन्होंने अन्तिम क्षण इनकार कर दिया। क्यों?

"अभी तक सरकारी तौर पर पंचवर्षीय योजना की सम्पुष्टि क्यों नहीं हुई है, यद्यपि उसके प्रथम ६ महीने पहले ही व्यतीत हो चुके है?

"... ..हमारी प्रणाली में, जो वैज्ञानिक आयोजना पर आधारित है, प्रत्येक वस्तु इस बात को प्रमाणित करती हुई प्रतीत होती है कि मामला उल्टा ही है।" उद्योग और कृषि में सामञ्जस्य नहीं है और "सामूहिक कृषि आन्दोलन में अव्यवस्था फैली हुई है।" यह एक दूसरा समाजवादी अन्तर्विरोध है।

दोनों लेखकों ने सरकार के एक मंत्री से मुलाकात की। उसने उन्हें बताया कि और अधिक यंत्रीकरण तथा स्वयंक्रियता (Automation) से उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हो सकती है तथा आवश्यक मजदूरों की संख्या में कमी हो सकती है। तब इसे प्रचलित क्यों नहीं किया गया? "देश में बेकारी फैलने के भय के कारण वह ऐसा नहीं कर सकता। यह प्रश्न अब एक आलंकारिक प्रश्न नहीं रह गया है कि बर्खास्त किये गये मजदूर कहाँ काम खोजने जायेंगे..." लेखकों ने अनुमान लगाया कि पाँच लाख बेकार व्यक्तियों के अतिरिक्त 'लगभग बीस लाख' मजदूर अनावश्यक हैं। यह समाजवादी अक्षमता है। इस प्रकार तांत्रिक प्रगति में विलम्ब होता है तथा अकुशलता को प्रोत्साहन मिलता है।

लेखक और अधिक गहराई तक जाते हैं – "निर्धारित समय से अधिक काम? इस देश में अनेक मजदूरों के लिए निर्धारित समय से अधिक समय तक काम एक दूसरी मजदूरी के तुल्य है...जिस काम को पूरा करने में वह तेरह घण्टे लगाता

है, वह सात घण्टों में भली भाँति हो सकता है ... मजदूर बहुत ही कठोर श्रम करता है क्योंकि उसे जीवित रहना ही है। उसे अपने लिए तथा अपने परिवार के लिए कम-से-कम जीवन-निर्वाह के अत्यन्त प्रारम्भिक साधन तो प्राप्त करने ही पड़ेंगे। अतः भौतिक प्रोत्साहनों की वर्तमान प्रणाली के अन्तर्गत उसके लिए सात घण्टों के काम को उससे दुगुनी अवधि में करना आवश्यक हो जाता है। यह न केवल कार्यों को सम्पन्न करने की हमारी पद्धति की मूर्खता की ओर इंगित करता है, अपितु हमारी प्रणाली में अन्तर्निहित कतिपय अमानवीय तत्वों की ओर भी इंगित करता है ...'

उन्होंने और अधिक अन्तर्विरोधों पर बल दिया : वस्तुओं का अभाव होते हुए भी बेकारी को छिपाना। (वे एक दूसरी बात का भी उल्लेख कर सकते थे : पेय पदार्थों की अधिकता और पीने के लिए कम मिलना। पेरिस के 'ली मोण्डे' के वारसा-स्थित सवाददाता फिलिप बेन ने अपने पत्र के ३ अगस्त १९५६ के अक में विवरण दिये। निश्चय ही उस ग्रीष्म ऋतु में अधिक परिमाण में 'बीयर' और खनिज जल का उत्पादन हुआ था, किन्तु चार करोड़ धातु-ढक्कनों (Metal stoppers) की आवश्यकता थी, जब कि योजना में केवल ढाई करोड़ की व्यवस्था की गयी थी। इससे भी बुरी बात यह थी कि योजना का केवल ५६ प्रतिशत अश पूरा हुआ। अतः बोतले बिना भरे रह गयी।)

इस आर्थिक रोग के मूलभूत कारण का पता लगाने पर श्री गोडेक और श्री तुर्स्की एक ही निष्कर्ष पर पहुँचे; यह राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का निर्देशन करनेवाली नौकरशाही का दोष है। राजनीतिक व्यवस्थापक ने विशेषज्ञ को निष्कासित कर दिया है। अकुशल, अवैयक्तिक व्यवस्थापक जनता की शक्ति का शोषण कर रहा था। निर्देशक का कार्य एक पेशा बन गया है। उदाहरण के तौरपर — क्रैकाऊ क्षेत्र के एक जिला-नगर में एक निर्देशक है। प्रथमतः वह संस्कृति-विभाग का प्रमुख था। उसने नवस्थापित और आशापूर्ण म्युनिसिपल नाट्यशाला को नष्ट कर दिया, जिसके लिए उन्होंने उसे स्थानान्तरित कर एक औद्योगिक प्रतिष्ठान का निर्देशक बना दिया, जहाँ उसे अधिक वेतन मिलता था। कुछ महीनों तक निर्देशक के पद पर काम करने के पश्चात् उसे, नकद कोष में धन की कमी होने के कारण, जेल में डाल दिया गया। जाँच-पड़ताल के बाद उसे रिहा कर दिया गया और पुनः निर्देशक के पद पर नामजद किया गया। इस बार उसे एक दूसरी जिला-संस्था में भेजा गया। और उसी कहानी की पुनरावृत्ति हुई : धन का गबन हुआ, जाँच-पड़ताल हुई, अदालत ने दण्ड दिया और कुछ महीने जेल में रहने पड़े। जब

निर्देशक जेल से बाहर निकला, तब उसे पुनर्वासित कर दिया गया तथा निर्देशक का एक नया पद प्रदान किया गया। और, इसी कहानी की पुनरावृत्ति पांच अथवा छः बार हुई......

'एक क्षेत्र विशेष में जिला राजकीय फार्म बोर्ड के निर्देशक के पद पर निम्न-लिखित पेशों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों की नियुक्ति हुई थी। एक बढ़ई, एक बिना पेशे का व्यक्ति...तत्पश्चात् एक बिजली इंजीनियर (वे कहते हैं कि वह सर्वश्रेष्ठ था) तत्पश्चात् जिला-सुरक्षा-पुलिस का प्रधान आदि-आदि।'

दोनों लेखकों ने अपने अन्तिम अनुच्छेद में घोषित किया कि 'व्यवस्थापकों के पेशे का यह निश्चित रूप धारण करना' पोलिश समाजवादी अर्थ-व्यवस्था के समक्ष उपस्थित 'गम्भीर खतरा' है।

गोदेक और तुर्स्की ने अपने लेख के शीर्षक में जो प्रश्न उठाया था, उसका उत्तर उन्होंने कभी नहीं दिया। हमें यह नहीं बताया गया कि क्या यह मार्क्सवाद की गोधूलि बेला है। लेख के प्रकाशित होने के चार दिन बाद पोजनान ने निर्लिप्त, अयोग्य निर्देशकों द्वारा राज्य के बड़े व्यवसाय की कुव्यवस्था तथा मानव-प्राणियों के प्रति गुप्त पुलिस के दुर्व्यवहार के विरुद्ध भीषण विद्रोह कर दिया। यह पोलिश कम्यूनिस्ट नेतृत्व की गोधूलि वेला थी। रूस ने ग्रहण को रोकने तथा भाषण-स्वातन्त्र्य के प्रवाह को अवरुद्ध करने का प्रयास किया, किन्तु तूफान ने, जो एक सोते के रूप में और तत्पश्चात् एक धारा के रूप में परिणत हो गया था, अब बाढ़ का रूप धारण कर लिया था। वह गोमुल्का को अन्दर बहा लायी तथा ख्रुश्चेव, मोलोतोव, मिकोयान और कागानोविच को बहाकर पुनः मास्को पहुँचा आयी। कवियों के पद्यों तथा लेखकों की लेखनियों ने इस सब का सूत्रपात किया। आलोचना करने वाली पत्रिकाएँ काला बाजार मूल्य पर तब तक बारम्बार बिकती रहती थीं, जब तक उनके अक्षर बिल्कुल मिट नहीं जाते थे। उनके विचार सैकड़ों की संख्या में नवस्थापित स्वतंत्र विचार-विमर्श क्लबों द्वारा ग्रहण कर लिये जाते थे और ये क्लब विशाल जन-समुदायों को आकृष्ट करते थे। लोग बात करना चाहते थे। वे सत्य सुनना चाहते थे। यू० बी० के शस्त्रागार में इसके विरुद्ध कोई शस्त्र नहीं था। मास्को इसकी तुलना नहीं कर सकता था।

अध्याय १७

रक्तहीन क्रान्ति

एक पोलिश पत्रकार निम्नलिखित प्रसंग का वर्णन करता है: जब पोलैण्ड के नम्बर एक कम्यूनिस्ट बोलेस्लाव बीरूत का शव, जिसकी मृत्यु मार्च, १९५६ में मास्को में हुई, सार्वजनिक दर्शन के लिए वारसा में रखा हुआ था, तब पत्रकार की नौकरानी ने शव को देखने के लिए छुट्टी की माँग की। "किन्तु तुम पागल हो", पत्रकार ने डाँट कर कहा—"तुम्हारी आयु सत्तर वर्ष की है और तुम्हारे स्नायु अत्यन्त दुर्बल है। बाहर तापमान शून्य से भी नीचे है और तुम्हें शव के दर्शन करने के लिए छः घण्टों तक पंक्ति में खड़ा रहना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त, मैं जानता हूँ कि तुम कम्यूनिस्ट–विरोधिनी हो। फिर कामरेड बीरूत में यह आकस्मिक रुचि क्यों?"

उसने स्पष्टीकरण किया—"मैं उस व्यक्ति को देखना चाहती हूँ, जिसे रूसियों ने मार डाला।"

इस बात का कोई प्रमाण नही है कि बीरूत की अस्वाभाविक मृत्यु हुई थी, किन्तु रूसियों की दुरभिसन्धि की अफवाह ने उसे एक पोलिश नायक बना दिया। पोलैण्ड के राष्ट्रीय मस्तिष्क में चार रूसी विभाजनों, इसके अतिरिक्त आक्रमणों, दबायी गयी क्रान्तियों तथा दमनात्मक शासन की स्पष्ट स्मृति बनी हुई है। यह काला इतिहास कम्यूनिस्टों और गैर-कम्यूनिस्टों को समान रूप से संत्रस्त करता है। उन सभी के लिए रूस अत्याचार का पर्याय है, और इस समय वह जितना अत्याचार का पर्याय है, उतना कभी नहीं था। पोलों के लिए रूस अपरिचित पूर्व का देश है। पोलिश पार्टी के सदस्यों के लेखों और भाषणों से यह निष्कर्ष निकलना है कि वे महसूस करते है कि सोवियत संघ पोलैण्ड में कम्यूनिज्म के लिए रोग का चुम्बन रहा है। इस ज्ञान की पीड़ादायकता में इस अनुभूति द्वारा तनिक भी कभी नहीं होती कि रूस न होता, तो कोई पोलिश कम्यूनिस्ट सरकार होती ही नहीं। रोमन कैथोलिकों की विशाल बहुसंख्या वाला तथा मुख्यतः कृषकों का देश पोलैण्ड ऐच्छिक कम्यूनिस्ट प्रयोग के लिए सराहनीय रूप से उपयुक्त नहीं है। अतएव पोलैण्ड में सोवियत शक्ति कम्यूनिज्म की प्रबलतम संरक्षिका है। ऋण-भार भयंकर है, सम्बन्ध-सूत्र एक फन्दा है, फिर भी, जब तक पोलिश

कम्यूनिज्म स्वयं अपनी सफलताओं के सहारे खड़ा नहीं हो सकता और जब तक रूस को पश्चिमी जनतंत्र के विरुद्ध एक तटस्थ क्षेत्र के रूप में पोलैण्ड की आवश्यकता है, तब तक सम्बन्ध इसी प्रकार का बना रहेगा। वे एक दूसरे पर निर्भर है तथा एक दूसरे से घृणा करते है।

निकिता खुश्चेव के क्रोधावेशपूर्ण, क्रेमलिन के सांड-जैसे व्यवहार से पोलैण्ड में संस्कृति एवं शिष्टता के लिए रूस की प्रतिष्ठा में वृद्धि नहीं हुई है। पोल उन्हें 'किसान' कह कर सम्बोधित करते है, जिससे उनका तात्पर्य सभ्य व्यक्ति से नहीं होता। वे बीरूत के शव को दफनाने के लिए वारसा लाये। शव-संस्कारों के समाप्त हो जाने पर उन्होंने अपनी यात्रा के वास्तविक उद्देश्य अर्थात् एक उत्तराधिकारी के निर्वाचन की ओर ध्यान दिया। पोलिश कम्यूनिज्म को प्रतिभा के बाहुल्य का वरदान नही प्राप्त हुआ है। १९३८ में स्तालिन ने पार्टी के उन नेताओं को हलाल कर डाला, जो अपने पूँजीवादी देशवासियों से सुरक्षा के लिए समाजवादी पितृभूमि में भाग कर चले गये थे। युद्ध, हिटलर के नजरबन्दी शिविरों तथा यू० बी० ने और अधिक नेताओं को समाप्त कर दिया। अब, चूँकि बीरूत नहीं रह गया था, बरमैन यू० बी० के साथ सम्बद्ध होने तथा मास्को का अनुगामी होने के कारण अत्यन्त लोक-अप्रिय था, और हिलैरी मिंक 'ल्यूकेमिया' के कारण अपंग हो गया था, इसलिए पोलैण्ड के नम्बर एक कम्यूनिस्ट का चुनाव करने का कार्य सरल नहीं था। मतदान के लिए आयोजित की गयी केन्द्रीय समिति की बैठक में बहुमत स्पष्टत. रोमन जाम्ब्रोवस्की के पक्ष में था। खुश्चेव ने उसके नाम को अस्वीकृत कर दिया। उन्होंने एकत्र व्यक्तियों को परामर्श दिया—"यहां पहले से ही अब्रामोविचों की संख्या बहुत अधिक है"—दूसरे शब्दों में यहूदियों की संख्या बहुत अधिक है। इस पर एक तूफान खड़ा हो गया। "आप यहूदी-विरोधी हैं"—केन्द्रीय समिति की एक उपसदस्या श्रीमती रोमामा ग्रैनास ने चिल्ला कर कहा। उन्होंने क्रुद्ध हो कर सभा-कक्ष से बाहर चले जाने की धमकी दी। "मैंने सोवियत संघ के यहूदियों की रक्षा की", उन्होंने कहा और बताया कि जनवरी १९५३ में डाक्टरों के "षड्यंत्र" के समय किस प्रकार स्तालिन ने समस्त सोवियत यहूदियों को साइबेरिया में निर्वासित कर देने की योजना बनायी थी। खुश्चेव ने बताया कि केवल उनके तथा 'पोलिट ब्यूरो' के अन्य कई सदस्यों के विरोध के कारण ही इस योजना को रद्द किया गया।

(१९५६ में मास्को में मेरे यहूदी मित्रों ने मुझे सूचित किया कि आर्कटिक क्षेत्र में उनके निर्वासन की अन्तिम तैयारियाँ पहले ही कर ली गयी थीं तथा वे

प्रस्थान करने के आदेश की प्रतीक्षा प्रति घण्टे किया करते थे। जब अप्रैल,१९५३ में बेरिया ने घोषित किया कि डाक्टरों के विरुद्ध झूठा अभियोग लगाया गया था तथा उन्हें रिहा एव पुनर्वासित किया जा रहा है, तब वे यहूदी भी प्रसन्न हो गये, जिन्होंने कभी अपने को यहूदी नहीं समझा था और उस दिन यहूदी निवासस्थानों में टेलिफोनों का बजना कभी बन्द नहीं हुआ; उन्होंने एक दूसरे को बधाई दी तथा ईसाइयों से बधाइयां प्राप्त की।)

खुश्चेव ने पोलिश केन्द्रीय समिति के समक्ष स्पष्टीकरण किया कि उन्होंने जाम्ब्रोवस्की का विरोध इसलिए नहीं किया कि वे यहूदियों को पसन्द नहीं करते थे, प्रत्युत इसलिए किया कि पार्टी के प्रथम सचिव के पद पर एक यहूदी को प्रतिष्ठित कर देने से अधिकाधिक पोल कम्यूनिज्म के विरुद्ध हो जायेंगे। खुश्चेव के निषेधाधिकार का सम्मान कर जाम्ब्रोवस्की के नाम को वापस ले लिया गया। खुश्चेव ने इस पद के लिए एडवर्ड ओचाब का नाम प्रस्तावित किया। ओचाब को इस सम्भावना से प्रसन्नता नही हुई। वह कम्यूनिस्टों के मध्य एक अनिश्चित मस्तिष्क वाला "हैमलेट" था, उसमें दृढ़ता का इतना अभाव था और वह इतना अधिक ईमानदार था कि वह इस पद के लिए अनुपयुक्त था। फिर भी, खुश्चेव के अनुरोध करने पर उसने स्वीकार कर लिया।

अब नेताओं के मध्य सर्वोच्च सत्ता के लिए भीषण संघर्ष प्रारम्भ हो गया। इसने पोलैण्ड को पत्रकारों का स्वर्ग बना दिया क्योंकि प्रत्येक प्रतिद्वन्द्वी गुट के पास अपने पत्रकार और सम्पादक समर्थक थे और विशेषतः मास्को बनाम गोमुल्का संकट के समय, जब रूसी सैनिक हस्तक्षेप आसन्न था, कोई भी ऐसा समाचार नही होता था, जिसकी पुष्टि कोई अच्छा पोलिश संवाददाता अथवा यहां तक कि कोई सक्रिय पश्चिमी संवाददाता भी, ठीक काफी-गृह की बहुधा यात्रा कर अथव प्रतिद्वन्दी गुटों के साथ सही सम्बन्ध स्थापित कर न कर सके।

पार्टी दो भागों में—कट्टर पन्थियों और प्रगतिशीलों में—विभक्त हो गयी थी। कट्टरपन्थी नाटोलिन गुट के थे, उन्हें यह नाम इसलिए दिया गया था कि उनके सबसे बड़े नेता मार्शल कान्स्टैण्टिन रोकोसोवस्की वारसा के नाटोलिन नामक उपनगर में निवास करते थे। रोकोसोवोस्की एक पोलिश-वंशीय सोवियत नागरिक थे। वे १९३० में रूसी सेना के एक मार्शल बने, किन्तु बाद में स्तालिन ने उन्हें एक साइबेरियन नजरबन्दी शिविर में भेज दिया। हिटलर से युद्ध करने के लिए रिहा किये जाने पर उन्होंने अनेक अभियानों में एक प्रतिभाशाली युद्ध-विशेषज्ञ के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की। युद्ध के बाद स्तालिन ने आदेश दिया कि रोकोसोवोस्की

एक 'पोल' है और उन्हें पोलिश सशस्त्र सेनाओं एवं पौलेण्ड-स्थित रूसी अधिकार-सेना का प्रधान नियुक्त कर दिया। मार्शल को स्वयं राजनीति में कोई रुचि नहीं थी, किन्तु उन्होंने नाटोलिनवादियों को, जो राजनीति में रुचि रखते थे, अपनी प्रतिष्ठा से लाभान्वित होने दिया।

इन कट्टरपन्थियों के विरुद्ध उदारपन्थी खड़े थे, जिनके नेता भूतपूर्व सोशल डेमोक्रैट, एक नाजी नजरबन्दी शिविर के भूतपूर्व निवासी, एक पाश्चात्य और बुद्धिवादी प्रधान मंत्री जोसेफ साइरैंकिविक्ज थे। ओचाब बहुधा उनका साथ देता था; इससे भी अधिक वह केन्द्र में रह कर सन्तुलन को ठीक रखने का प्रयास करता था।

मार्च १९५६ में ओचाब ज्यों ही प्रथम सचिव के पद पर निर्वाचित हुआ, त्यों ही नाटोलिनों ने प्रहार प्रारम्भ कर दिया। प्रतिरक्षा-मंत्रालय में रोकोसोवोस्की के सहायक तथा सेना के मुख्य राजनीतिक कमिसार जनरल काजीमियर्ज विटासेवस्की ने लोद्ज में एक जोरदार भाषण किया, जिसमें उसने तूफान उत्पन्न करने वाले बुद्धिवादियों पर प्रचण्ड प्रहार किया तथा उनके मध्य जो यहूदी थे, उनको निशाना बना कर अनेक असन्दिग्ध रूप से विषयुक्त बाण छोड़े। (जनवरी १९५३ में जब स्तालिन ने सोवियत डाक्टरों के "षड्यंत्र" का पता लगाया, तब विटासेवस्की ने पोलिश सेना से यहूदियों को निकाल दिया था।)

विटासेवस्की पोलिट ब्यूरो के लिए नाटोलिन गुट का उम्मीदवार था। उन्हें उम्मीद थी कि केन्द्रीय समिति के जुलाई में होने वाले पूर्ण अधिवेशन में पोलिश ट्रेड युनियनों के अध्यक्ष विक्टर क्लोसिविक्स को भी, जो कठपुतली संगठन का निर्देशन करने वाला एक घृणित कठपुतली नेता था, यही सम्मान प्रदान किया जायगा।

जब कि ये षड्यंत्र चल ही रहे थे और इसके पूर्व कि ओचाब जटिल राजनीतिक स्थिति का सही-सही सर्वेक्षण कर सके, उसकी सचिव की कुर्सी के नीचे पोजनान रूपी बम का विस्फोट हो गया। इस कटु धूम्राच्छादित वातावरण में नेता किसी नीति के लिए अन्धकार में भटक रहे थे। उनके समक्ष दिमाग को परेशान कर देने वाले प्रश्न उपस्थित थे। क्या पोजनान की घटनाएँ आलोचना की बाढ़ एवं शैथिल्य का परिणाम थीं? अथवा क्या वे अपूर्ण स्तालिन-विमुखता से उत्पन्न हुई थीं? क्या पार्टी को कठोर हो कर पुनः दमन प्रारम्भ कर देना चाहिए अथवा और अधिक सुधार करने चाहिए? रौंद डालें अथवा उठ जाने दें?

इस अनिश्चितता में पोजनान के मुकदमों को बार-बार स्थगित किया गया। वारसा लड़खड़ा गया। जब मुकदमे प्रारम्भ हुए, तब किसी भी हड़ताली अथवा हड़तालियों के नेता को कठघरे में खड़ा नहीं किया गया; सरकार को मजदूर वर्ग के क्रोध को भड़काने का साहस नही हुआ। जिन सैकड़ों व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया था, उनमें से अनेक को रिहा कर दिया गया। बीस वर्ष से कम अथवा थोड़ी अधिक आयु के केवल बारह नवयुवकों पर – नौ पर यू० बी० पर गोली चलाने के लिए तथा तीन पर एक यू० बी० सैनिक की पाशविक हत्या करने के लिए–मुकदमें चलाये गये और कतिपय रिहाइयों के साथ दिये गये दण्ड इतने कम थे, मुकदमे सनसनी से इतने रहित थे कि उनका शिक्षणात्मक प्रभाव उपेक्षणीय था और उनक मनोवैज्ञानिक प्रभाव शून्य अथवा ऋण था। यह स्पष्ट था कि जनता कठोर व्यवहार को सहन नहीं करेगी।

पोजनान के तत्काल बाद प्रधान मंत्री साइरैकिविक्ज ने उदारपन्थी मार्ग पर चलना जारी रखने के सरकार के इरादे की घोषणा की और जब जुलाई में पूर्ण अधिवेशन का आयोजन हुआ, तब विटासेवस्की और क्लोजिविक्ज पोलिट ब्यूरो के सदस्य चुने जाने में विफल हो गये। दूसरी ओर रोकोसोवस्की ने सेना में विटासेवस्की का ओहदा बढ़ा दिया तथा नाटोलिनवादी तूफान-सोता-बाढ़ आन्दोलन के प्रमुख नेता जेर्जी मोरावस्की को 'ट्रिब्यूना लुडू' के सम्पादक के पद से हटाने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली सिद्ध हुए।

इस बीच आर्थिक स्थिति निरन्तर बिगड़ती गयी तथा राजनीतिक पक्षाघात की आशंका उत्पन्न हो गयी। राज्य-यंत्र एक अतल गर्त के तट की ओर लुढ़कता जा रहा था। उदारपन्थियों ने अनुभव किया कि यदि किसी सुदृढ़ पोलिश हाथ ने चक्र को अपने नियंत्रण में नहीं लिया, तो मास्को अपने नियंत्रण में ले लेगा। नाटोलिनों ने सोवियत-विरोधी भावना की बढ़ती हुई लहर देखी। यदि विभीषिका उपस्थित हो जाती, तो गुट-संघर्ष में विजय प्राप्त करने का कोई मूल्य नही रहता।

सभी आँखें व्लाडीस्लाव गोमुल्का की ओर मुड़ गयी। १९५४ के अन्त में कारामुक्त होने के बाद डेढ़ वर्ष से अधिक समय से वह अवकाश प्राप्त जीवन व्यतीत कर रहा था। ५ अगस्त १९५६ को पार्टी ने उसे पुनः साधारण सदस्यता प्रदान कर दी। तत्पश्चात् सरकार ने उसे एक पद प्रदान करने का प्रस्ताव किया, जिसे उसने अस्वीकृत कर दिया। वह संकट के प्रति तथा सौदाबाजी के लिए उससे प्राप्त होने वाले लाभों के प्रति सचेत था। इसलिए उसने मांग की कि उसे सब कुछ मिले अथवा कुछ भी न मिले। उसकी न्यूनतम मांग अधिकतम थी : वह

पार्टी के प्रथम सचिव का पद चाहता था। उसकी शक्ति के स्रोत का स्पष्टीकरण करना सरल था: वह एक राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट था और उसने रूसी नियंत्रण का प्रतिरोध किया था; वह एक सामान्य बुद्धि रखने वाला व्यक्ति था और उसने अनैच्छिक सामूहिकीकरण का विरोध किया था।

सरकार और पार्टी के सन्देशवाहक गोमुल्का के निजी निवासस्थान की यात्रा करने लगे। ज्यों-ज्यों संकट गम्भीर रूप धारण करता गया, त्यों-त्यों दूतों की पंक्ति लम्बी होने लगी। प्रत्येक व्यक्ति समझने लगा कि अब उसका अधिकार पद्धति के सहारे के लिए अनिवार्य हो गया है। पोलिट ब्यूरो ने अधिकृत रूप से उसे अपनी अनेक समस्याओं से अवगत कराया। कट्टरपन्थी नाटोलिन और उदारवादी उसका समर्थन प्राप्त करने के लिए होड़ करने लगे। नाटोलिन पोलिट ब्यूरो में गोमुल्का के प्रवेश को स्वीकार करने के लिए सहमत हो गये, किन्तु प्रथम सचिव के रूप में नहीं। उन्हें आशा थी कि वे उसके प्रभाव पर अधिकार कर लेंगे तथा उसे उसका उपयोग करने से रोक देंगे। दूसरी ओर, उसने हठ किया कि रूस के हाथ को कमजोर बनाया जाय और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने साइरैकिविक्ज का तथा ओचाब का, जो अपने ही शब्दों में प्रथम सचिव के रूप में प्राप्त "भीषण अनुभव" को समाप्त कर अत्यधिक प्रसन्न हुआ, साथ दिया।

गोमुल्का ने शर्तें रख दीं: गुप्त पुलिस द्वारा की गयी नृशंसताओं के लिए उत्तरदायी व्यक्तियों को दण्ड दिया जाय; जनरल मेरियन स्पिचाल्स्कीं तथा बीरूत-बरमैन-मिंक शू. बी. शासन के अन्य निर्दोष शिकारों को अवश्य पुनर्वासित किया जाय; आर्थिक तानाशाह, सामूहिकीकरण का जनक और भारी उद्योगों में अत्यधिक पूँजी विनियोग करनेवाला हिलैरी मिकं पोलिट ब्यूरो से अवश्य त्यागपत्र दे दे; गोमुल्का ने फ्रांसिसजेक माजुर, जिसे पोल सामान्यतः एक सोवियत एजेण्ट समझते थे तथा पोलिट ब्यूरो में एक प्रमुख नाटोलिनवादी जेनान नोवाक के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार की शर्त रखी। सबसे कठिन शर्त यह थी कि गोमुल्का ने हठ किया कि रोकोसोवोस्की पोलिट ब्यूरो से हट जाय; यह क्रेमलिन के लिए प्रत्यक्ष चुनौती थी और इसका अर्थ केवल यही लगाया जा सकता था कि यह पोलैण्ड में उसकी सत्ता के लिए एक खतरा था।

मिंक और बरमैन ने पोलिट ब्यूरो से त्यागपत्र दे दिया। माजुर लापता होकर रूस पहुंच गया। जेनान नोवाक ने त्यागपत्र दे दिया। भयग्रस्त नाटोलिनवादियों ने मास्को को सन्देश भेजे।

इस तनावपूर्ण वातावरण में शुक्रवार, १९ अक्तूबर को प्रातःकाल १० बजे पार्टी की केन्द्रीय समिति की बैठक आयोजित हुई। ओचाब ने सदस्यों को शांत किया, किन्तु शीघ्र ही सूचित किया कि बैठक को तत्काल स्थगित करना होगा, जिससे वे ख्रुश्चेव, मिकोयान, मोलोतोव और कागानोविच से, जिनका विमान ठीक उसी समय मास्को से वारसा के निकट स्थित ओकी नीसी हवाई अड्डे पर पहुंचा था, मिलने के लिए जा सके। रूसियों को निमंत्रित नही किया गया था। ओचाब को उनके आगमन से कुछ घण्टे पहले ही यह समाचार प्राप्त हुआ था।

पोलिश पोलिट ब्यूरो के सदस्य तथा अन्य उच्च कम्यूनिस्ट गोमुल्का के साथ—जो अभी तक पार्टी का एक साधारण सदस्य मात्र था—ओकीनीसी हवाई अड्डे पर पहुचे। वहाँ उन्हें पता चला कि चारों सोवियत नेता अपने साथ चौदह रूसी जनरलों को भी लाये थे। रोकोसोवोस्की उनसे मिला। इस प्रकार वारसा-संधि की समस्त सशस्त्र सेनाओं के सोवियत सेनापति मार्शल कोनीव ने भी उनसे मुलाकात की।

मास्को से सोवियत नेताओं का यह आगमन एक साथ ही सनसनीखेज और दुष्टतापूर्ण, दोनों था। चारों सोवियत नेता एक सोवियत सैनिक बर्छी की राजनीतिक नोक के तुल्य थे। उनके आगमन से पूर्व की रात में पोलिश भूमि पर स्थित सोवियत सैनिक डिविजनों में पूर्वी जर्मनी से एक डिविजन बुला कर वृद्धि कर दी गयी तथा रूस से आया हुआ एक दूसरा डिविजन वारसा की सीमा पर स्थित हो गया। सोवियत नौसेना की टुकड़ियां ग्दान्स्क (डाञ्जिग) और स्टेट्टिन के सामने प्रदर्शनात्मक रूप से प्रकट हो गयीं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि मास्को दूसरे देशों के मामलों में कभी हस्तक्षेप नहीं करता; ख्रुश्चेव, मोलोतोव, मिकोयान और कागानोविच केवल यह चाहते थे कि वारसा में उनके शब्द अधिक विश्वासोत्पादक सिद्ध हों।

ओकीनीसी हवाई अड्डे पर कोमर—जनरल वाक्लाव कोमर—नाम का एक छोटा-सा आदमी उपस्थित था। उसने स्पेनिश गृह-युद्ध में अन्तरराष्ट्रीय ब्रिगेड के बाल्कन डिविजन का सेनापतित्व किया था; जब द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हुआ, तब वह फ्रांस में पोलिश सेना में भर्ती हो गया था। हाल में ही सरकार ने उसे पोलैण्ड की आन्तरिक सुरक्षा-पुलिस (के. बी. डब्ल्यू.) का, जो एक बड़ी, सुसज्जित और बख्तरबन्द टुकड़ी थी, प्रधान सेनापति नियुक्त किया था। ज्यों ही रूसी सेनाएं वारसा की ओर बढीं, त्यों ही कोमर ने अपने के. बी. डब्ल्यू के सैनिकों की व्यूह-रचना की और नगर को चारों ओर से घेर लिया। हवाई अड्डे पर कोमर ने

रोकोसोवस्की से यों ही कहा कि यदि सोविय़त सेना राजधानी में प्रवेश करने की आशा करेगी, तो उसे युद्ध के द्वारा ही ऐसा करना होगा। उसके सैनिक वारसा जाने वाली सड़कों तथा पुलों पर तैनात थे।

रात में चुने हुए मजदूरों को वारसा की फैक्टरियों में बुला लिया गया था, उन्हें शस्त्रास्त्र प्रदान किये गये थे तथा यह आदेश दिया गया था कि यदि रूसियों ने आक्रमण किया, तो वे फैक्टरियों में तैयार रहें।

सम्भवतः यह कल्पना करना सुरक्षित है कि रोकोसोवस्की ने क्रेमलिन से आये हुए चारों व्यक्तियों के कान मे यह जानकारी डाल दी, जिन्होंने अपनी कारों के वारसा में प्रविष्ट होने पर अवश्य ही यह अनुभव किया होगा कि उनकी दलीलों का समर्थन करने के लिए रूसी सेना रहने के स्थान पर वे वास्तव मे शत्रु पोलिश सशस्त्र सेनाओं से घिर गये थे।

एक बार वारसा में पहुँच जाने पर पोलिश कम्यूनिस्टों ने रूसियों को छोड़ दिया और उस 'हाल' में लौट आये, जहां केन्द्रीय समिति के सदस्य चिंतातुर होकर प्रतीक्षा कर रहे थे। ओचाब ने पुनः अधिवेशन का आयोजन किया, जिसमें तुरन्त ही गोमुल्का तथा उसके तीन समर्थक केन्द्रीय समिति के सदस्य चुन लिए गये। तत्पश्चात् विचार-विमर्श पुन· स्थगित कर दिया गया; पोलिश नेता, जिनमें गोमुल्का भी था, अब वारसा-स्थित बेल्वेडियर प्रासाद में रूसियों से वार्तालाप करने के लिए गये।

ये वार्ताएं रात में ३ बजे तक चलती रहीं और उस दिन प्रातः काल ६ बज कर ४० मिनिट पर चारों रूसी विमान द्वारा मास्को के लिए प्रस्थित हो गये। आमने-सामने हुई इस बातचीत की समाप्ति पोलिश विजय के रूप में हुई और पोलिश दर्प को दृष्टिगत रखते हुए तथा कोमर के अतिरिक्त गोमुल्का के सामने का नायक होने का कारण यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है कि विवरणों का रहस्योद्घाटन हो गया।

ख्रुश्चेव ने ८० मिनट के तीखे उद्घाटन-भाषण में सम्मेलन के समक्ष प्रश्न को स्पष्ट रूप से उपस्थित किया। मास्को पोलिट ब्यूरो में गोमुल्का का स्वागत करता। उसके अनेक घनिष्ठ सहकर्मी भी उसके साथ प्रविष्ट हो सकते थे, किन्तु नियंत्रण का परित्याग करने का क्रेमलिन का कोई इरादा नाहीं था; गोमुल्का किसी हालत में प्रथम सचिव नहीं हो सकता और रोकोसोवस्की पोलिट ब्यूरो में अवश्य रहेंगे।

विचार-विमर्श इस केन्द्रीय समस्या के चारों ओर केन्द्रित रहा। जब-तब पोल कमरे में आपस में ही विचार-विनिमय करते। उन्होंने सोवियत प्रतिनिधिमण्डल

के सदस्यों के सम्बन्ध में अनुमान लगाये। क्या ख्रुश्चेव अकेले मास्को की ओर से नहीं बोल सकते थे? चार क्यों आये? प्रभाव डालने के लिए? क्या मोलोतोव और कागानोविच टिटो के कथनानुसार "स्तालिनवादी" तथा ख्रुश्चेव और मिकोयान "प्रगतिशील" थे? किन्तु वे एक दूसरे को प्रतिध्वनित कर रहे थे, वे सभी एक ही वस्तु चाहते थे—पोलैण्ड में सत्ता की बागडोर को कायम रखना। किसी भी पोलैण्ड-निवासी को चारों सोवियत नेताओं की बातों में कोई अन्तर नहीं दिखायी दिया।

चारों रूसी नेताओं ने भी छोटे-छोटे गुप्त सम्मेलन, विशेषतः सोवियत राजदूत पोनोमारेंको के साथ, जो उपस्थित था, किये। राजदूतावास के सम्पर्क अधिकारी बेल्वेडियर प्रासाद से बाहर की घटनाओं के सम्बन्ध में समाचार लाते थे : अधिकांश नगरों में श्रमिक सैन्य दलों (Workers' militia) को सतर्क कर दिया गया था। फैक्टरियों पर सशस्त्र पोलिश सैनिकों का प्रचण्ड पहरा था। पोलिश सैनिक टुकड़ियों के सोवियत सेनापति इस विषय में सन्देह व्यक्त कर रहे थे कि पोलिश अफसर और सैनिक वारसा की दिशा में प्रयाण करने के आदेशों का पालन करेंगे अथवा नहीं।

इसके बावजूद ख्रुश्चेव ने 'ट्रम्प कार्ड' फेंका : यदि उसकी शर्तों को स्वीकार नहीं किया जायगा, तो रूस बल-प्रयोग करेगा। इस बात पर गोमुल्का खड़ा हुआ और उसने शांति के साथ घोषित किया कि मैं उत्तर देना चाहता हूँ, किन्तु वह इस सम्मेलन में ऐसा नहीं कर सकता था। वह वारसा रेडियो स्टेशन पर जाकर पोलिश जनता के नाम ब्राडकास्ट करने जा रहा था। वह जनता को बतायेगा कि प्रासाद में क्या हुआ।

रूसियों की स्थिति उनके पांव के नीचे चकनाचूर हो गयी। वे मुस्कराने लगे, स्पष्टीकरण करने लगे तथा पोलैण्ड के प्रति शाश्वत मैत्री की कसमें खाने लगे। उन्होंने कहा कि पोलैण्ड को संकट से पार होने के लिए आर्थिक सहायता की आवश्यकता है। उन्होंने शीघ्र ही मास्को में, गोमुल्का से मिलने की आशा व्यक्त की... मैत्रीपूर्वक हाथ मिलाये गये तथा निद्रा निमग्न वारसा से होते हुए वे द्रुत गति से ओकीनीसी हवाई अड्डे पर पहुँच गये।

उस दिन बाद में केन्द्रीय समिति के पूर्ण अधिवेशन का पुनः आयोजन हुआ और उसमें गोमुल्का ने एक लम्बा भाषण दिया। दूसरे दिन, २१ अक्तूबर को उसके ७५ सदस्यों ने ९ सदस्यों के एक नये पोलिट ब्यूरो का चुनाव किया। ओचाब को ७५ मत प्राप्त हुए; उसने स्वयं अपने लिए मत दिया। गोमुल्का को

७४ मत प्राप्त हुए; उसने अपने लिए मत नही दिया। साइरैंकिकिक्ज को ७३ मत प्राप्त हुए। आठवें और नवें स्थानों के लिए जाम्ब्रोवस्की और मोराव्स्की को ५६-५६ मत प्राप्त हुए। रोकोसोवस्की को केवल तेईस मत मिले और इसलिए वह पोलिट ब्यूरो में अपने स्थान को कायम रख सकने में विफल हो गया। उसी अधिवेशन में गोमुल्का पार्टी का प्रथम सचिव, पोलैण्ड का सर्वोच्च राजनीतिक नेता निर्वाचित किया गया।

गोमुल्का और पोलैण्ड ने एक निर्णायक संघर्ष में विजय प्राप्त की थी। एक सीमित अर्थ में २१ अक्तूबर, १९५६ पोलैण्ड का स्वतंत्रता-दिवस था, किन्तु रूस के साथ जारी संघर्ष में गोमुल्का को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इन कठिनाइयों में जनता की अशान्त मनःस्थिति-विषयक कठिनाई भी सम्मिलित थी, जो कोई छोटी-मोटी कठिनाई नहीं थी। जनता अपने विचारों को बलपूर्वक अनेक प्रकार से व्यक्त करती थी—उदाहरणार्थ पूर्ण अधिवेशन के दो दिन बाद गान्स्क में हुई एक सभा में वक्ता और श्रोताओ के मध्य हुए संवाद के रूप में उसने अपने विचारों को व्यक्त किया। भाषणकर्त्ता, केन्द्रीय समिति के सचिवों में से एक सचिव व्लाडिस्लाव मैटविन ने विशाल जन-समूह को बताया कि "हमारी पार्टी में......प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी शक्तियां...वे शक्तियां, जो पीछे जाना और निष्क्रिय रहना पसन्द करेंगी...है।"

"वे कौन है?—श्रोताओं ने मांग की।

मैटविन ने उत्तर दिया—"कामेरडो, आप जानते है कि पोलिट ब्यूरो के लिए कौन निर्वाचित हुआ है और कौन नहीं निर्वाचित हुआ है।"

"इस तरह मत बोलो", श्रोताओं ने चिल्ला कर कहा—"साहस से काम लो। स्पष्ट बताओ।"

मैटविन ने दलील दी—"प्यारे कामेरडो, ये सब अल्प महत्व की बातें हैं। महत्वपूर्ण बात तो हमारे देश के और अधिक विकास की है।"

"रोकोसोवस्की के विषय मे क्या कहते हैं"—श्रोताओं ने तुरन्त प्रश्न किया, मैटविन ने उत्तर देने से बचने का प्रयास किया, किन्तु श्रोताओं का प्रश्न जारी रहा। अन्त में उसने उनकी बात को स्वीकार कर लिया और कहा—"कामरेड रोकोसोवस्की के सम्बन्ध में मेरा मत यह है: मै उन्हें एक अच्छा सैनिक मानता हूँ, किन्तु मैं उनके राजनीतिक विचारों से सहमत नहीं हूं।"

इसके बाद मैटविन से संकटपूर्ण दिनों में सोवियत डिविजनों के कार्यों के सम्बन्ध मे पूछा गया। उसने मत व्यक्त किया—"मेरी समझ से आप सेना की

गतिविधियों के सम्बन्ध में जानना चाहते है । परसों केन्द्रीय समिति के पूर्ण अधिवेशन में इस विषय पर विचार-विमर्श किया गया । आदेश राष्ट्रीय प्रतिरक्षा मंत्री (रोकोसोवस्की) द्वारा जारी किये गये थे । मंत्री ने स्पष्टीकरण किया कि सेना की गतिविधियां नियमित सैनिक अभ्यासों से सम्बन्धित थीं । ”

गान्स्क के “ कोनट्रैस्टी ” के २५ अक्तूबर के अंक में प्रकाशित विवरण के अनुसार इस वक्तव्य पर जोरों की हँसी हुई । मैटविन ने कहना जारी रखा— “ केन्द्रीय समिति ने इस बात की ओर इंगित किया कि शिशिर-कालीन अभ्यासों का संचालन गोली-चालन-दूरियों (Shooting ranges) पर होता है और उनके लिए सड़कों पर टैंकों की आवश्यकता नहीं होती । ”

“ सोवियत युद्ध-पोतों के सम्बन्धमें आपका क्या कहना है ? ” –श्रोताओं ने चिल्ला कर प्रश्न किया । रूसी युद्ध-पोत गान्स्क से देखे गये थे ।

मैटविन ने घोषित किया कि केन्द्रीय समिति ने रोकोसोवस्की से बन्दरगाह में लंगर डाल कर पड़े हुए उन पोतों की उपस्थिति के सम्बन्ध में स्पष्टीकरण करने के लिए कहा है ।

पोल कठोर और वाचाल हो गये थे । पत्र उन्हें जानकारी प्रदान करते थे । गोमुल्का को दो अड़ियल घोड़ों — पोलिश जनता और रूसी सरकार — पर सवारी करनी पड़ती थी । पोलैण्ड क्रान्तिकारी मनःस्थित में था । मजदूर मैनेजरों और डाइरेक्टरों को, कभी-कभी बलपूर्वक, निकाल रहे थे । कृषक सामूहिक फार्मों से अलग हो रहे थे, मशीन ट्रैक्टर स्टेशनों को विघटित कर रहे थे और उनके औजारों को खरीद रहे थे और भूमि का क्रय-विक्रय कर रहे थे — जो बात पिछलग्गू साम्यवादके अन्तर्गत कभी नही सुनी गयी थीं । सैनिक टुकड़ियाँ और सेनापतियों को बर्खास्त करने के लिए मतदान कर रही थीं । अफसरों ने इसके लिए हठ किया कि रोकोसोवस्की प्रतिरक्षा-मंत्री के पद से त्यागपत्र दे दे और सोवियत संघ में चला जाय । रूसी असैनिक विशेषज्ञों के और अधिक उपयोग के विरुद्ध गोमुल्का पर विरोधों की वर्षा होने लगी । श्रोताओं ने माग की कि विदेशी रेडियो स्टेशनोंका अवरुद्ध किया जाना बन्द हो ।

२९ अक्तूबर को गोमुल्का ने लगभग एक सौ प्रमुख पोलिश पत्रकारों के समक्ष एक अप्रकाशनीय भाषण किया । यह शांति के लिए किया गया एक अनुरोध था । कुछ दिन पूर्व उन्हें खुश्चेव के पास से एक पत्र प्राप्त हुआ था, जिसमें ऐसे किसी भी सोवियत विशेषज्ञ को वापस भेज देने के लिए कहा गया था, जिसकी उन्हें आवश्यकता न हो, किन्तु पोलैण्ड की भौगोलिक स्थिति हंगरी

की स्थिति के समान नहीं थी। हंगरी तटस्थता की नीति अपना सकता था, वारसा-संधि का परित्याग कर सकता था और रूसी सेना से वापस जाने के लिए कह सकता था। पोलैण्ड ऐसा नहीं कर सकता था, उसे पश्चिमी जर्मनी के विरुद्ध ओडेर-नीसी-पंक्ति के लिए सोवियत सैनिक संरक्षण की आवश्यकता थी। राष्ट्र ने १९-२० अक्तूबर की रात में रूसी सैनिक गतिविधियों के महत्व के सम्बन्ध में अतिशयोक्ति से काम लिया था। यह बात सच है कि टैंकों ने कतिपय सड़कों को तोड़ दिया और उनके कारण कई 'दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटनाएँ हुईं ... जिनमें मृत्युएँ भी हुईं।' सड़क की क्षति के लिए सोवियत सदर मुकाम को बिल भेज दिया जाता, किन्तु सोवियत नेता वारसा में थे, तभी उन्होंने सोवियत सैनिक टुकड़ियों को अपनी बैरकों में लौट जाने का आदेश दे दिया था। उसने बेल्वेडियर-प्रासाद में बात-चीत जारी रखने के लिए इस बात को एक शर्त बना दिया था। गोमुल्का ने इस बात पर बल दिया कि पोलिश सेना पर सभाओं द्वारा शासन नहीं किया जा सकता, अफसरों का चुनाव प्रजातांत्रिक पद्धति से साधारण सैनिकों द्वारा नहीं होगा, न सेना को और अधिक उदारीकरण के लिए प्रस्ताव स्वीकृत करने चाहिए। न राष्ट्र को पूँजीवादी प्रजातंत्र की ही आशा करनी चाहिए। उसका इरादा एक कैथोलिक पार्टी, एक कृषक पार्टी अथवा किसी दूसरी पार्टी को वैध बनाने का नहीं था। प्रेस-सेन्सरशिप कायम रही। बी० बी० सी० को अवरुद्ध नहीं किया जायगा, बशर्ते वह भूतकाल की भाँति अपने को यथार्थवादी समाचारों के प्रसारण तक ही सीमित रखे। अन्य स्टेशन भी यदि इसी प्रकार का व्यवहार करें, तो उनको भी यही विशेषाधिकार प्राप्त होगा।

गोमुल्का का उद्देश्य आन्दोलित, उत्तेजित पोलिश मनःस्थिति के स्थान पर अनुशासन लाना था। हंगरी की क्रान्ति ने, जो सर्वोच्च पद पर उसके निर्वाचन के दो दिन बाद प्रारम्भ हुई, उसके कार्य को जटिल बना दिया। पोलों ने रक्त और धन देकर तत्काल हंगरी के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त की। हंगेरियन 'प्रतिक्रांतिवादियों' तथा 'फासिस्टों' के सम्बन्ध में सोवियत और पिछलग्गू देशों की निन्दाएँ पोलैण्ड में प्रतिध्वनित नहीं हुईं। हंगरी के सम्बन्ध में पोलिश दृष्टिकोण का निरूपण २३ नवम्बर के 'जायसी वारसावी' में रोमन ज्यूरिस द्वारा लिखित 'पोजनान-बुडापेस्ट' शीर्षक एक उल्लेखनीय लेख में किया गया। उसने लिखा — पोजनान और हंगरी में जनता का विद्रोह समान रूपसे महान था — श्रमिक जनता का विद्रोह ... आइये, हम एजेण्टों के सम्बन्ध में कही जाने वाली बातों को अस्वीकृत कर दें ... पोजनान और हंगरी में जो बात समान थी, वह थी स्तालिनवादी आतंक-प्रणाली

और उस आतंक को कार्यान्वित करने वाले यंत्र के प्रति घृणा की चरम सीमा... पोजनान में सुरक्षा-संगठन के कर्मचारियों को अपने खून से उन व्यक्तियों के अपराधों का मूल्य चुकाना पड़ा, जिन्होंने अत्यन्त ऊंचे कर वसूल किये थे तथा सामूहिक फार्मों का संगठन किया था, उन्हें उनके अपराधों का मूल्य भी अपने खून से चुकाना पड़ा, इन्होंने हमारे उद्योगों के कच्चा-माल-विषयक सम्भरण की योजना गलत ढंग से बनायी थी तथा वेतन में कटौती की थी...इस सम्बन्ध में पोजनान और हंगरी में कोई अन्तर नहीं है...मेरे मतानुसार पोज़नान और हंगरी के विद्रोहों के सम्बन्ध में एक दूसरी समान बात यह है कि...पार्टी शीघ्र ही राजनीतिक जीवन की सतह से विलुप्त हो गयी...हंगेरियन विद्रोह की तीसरी बात है सार्वभौमता के लिए संघर्ष का असाधारण उत्साह।" श्री ज्यूरिस को पोलैण्ड में भी यही दृश्य दिखाया दिया, जहाँ आपने कहा कि यह बिल्कुल ही संयोग की बात नहीं है कि सार्वभौमत्व के लिए संघर्ष जनतंत्रीकरण की अवधि के साथ ही प्रारम्भ हुआ, प्रजातंत्र से होकर पोलिश सार्वभौमता तक। हंगरी में भी ऐसा ही हुआ। (यह एक ऐसी बात है, जिसे टिटो ने नहीं समझा।) ज्यूरिस ने लिखा कि रूस द्वारा स्तालिनवाद का परित्याग पिछलग्गू देशों में उसके परित्याग की अपेक्षा बहुत अधिक कठिन और खतरनाक होगा। पोलैण्ड और हंगरी के प्रति मास्को की शत्रुता का कारण यह कमी ही थी। "मुझे मुख्य कारण...हमारे देश और सोवियत संघ मे जनतंत्रीकरण के विषम विकास में दिखायी देता है।"

हंगरी को हार्दिक सौमनस्य एवं रक्त प्रदान कर पोलैण्ड पिछलग्गू देशों की पंक्ति से बाहर निकल आया और उसने मास्को का पदानुसरण करना बन्द कर दिया। विदेशी स्तालिनवादियों ने क्रोधपूर्वक प्रतिक्रिया व्यक्त की। जब एडगर फौरे ने फांसीसी प्रतिनिधि-सभा में भाषण करते हुए पोलों की प्रसंसा की, तब कम्यूनिस्टों के अतिरिक्त समस्त सदन ने हर्षध्वनि की। रूमानिया, जेकोस्लोवाकिया तथा विशेषतः पूर्वी जर्मनी के कठपुतली पत्रों और रेडियो ने गोमुल्का-क्रान्ति के विवरण को तोड़-मरोड़ कर प्रसारित किया और पोलिश नीति में परिलक्षित होने वाली नयी प्रवृत्तियों की कटु आलोचना की। पूर्वी जर्मनी के अधिकारियों ने गोमुल्का के २० अक्तूबर के भाषण के उद्धरण प्रकाशित करने के कारण पूर्वी बर्लिन के "बी० जेड० आम आबेण्ड" के २२ अक्तूबर के अंक को जब्त कर लिया, किन्तु क्षेत्र के पत्रों ने उसके शब्दों को उद्धृत किये बिना ही उनकी प्रचण्ड निंदा की। वारसा ने यह अर्थ लगाया कि पिछलग्गू देशों के इस दुष्टतापूर्ण समवेत गान का निर्देशन क्रेमलिन के डण्डे

द्वारा किया गया था और इस विचार ने पोलिश नेताओं को, जिन्हें अभी तक मास्को की योजनाओं का कोई निश्चित ज्ञान नहीं था, परेशान कर दिया : क्या मास्को टैंकों के साथ प्रहार करेगा, जैसा कि उसने हंगरी मे किया था और क्या वह उन्हीं कारणों से प्रहार करेगा? हंगरी के ही समान पोलैण्ड रूस के विरुद्ध विद्रोह कर रहा था; फिर भी, दोनो में जनता प्रजातन्त्र चाहती थी, जब कि नेता कम्यूनिस्ट शासन की अपनी निजी, मास्को से पृथक् प्रणाली का विकास करने की आशा रखते थे।

परिणामतः गोमुल्का एक गहरे गर्त के ऊपर एक विकट रज्जु-मार्ग पर चल रहा था। यदि उसने जनता को उसे बहुत जोर से धक्का देने की अनुमति प्रदान की, तो रूसी क्रुद्ध हो जायेंगे और सम्भवतः सशस्त्र हस्तक्षेप भी करेंगे। यदि उसने जनता की रूस-विरोधी भावना को छूट नही दी, तो उसे समर्थन से हाथ धोना पड़ेगा तथा हंगरी के समान अराजकता एवं रूसी विभीषणों के समक्ष झुकने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

तने हुए रज्जु-मार्ग पर इस ओर और उस ओर झुक कर चलते हुए गोमुल्का ने शीघ्र ही एक कुशल राजनेता के रूप में अपने कौशल का प्रदर्शन किया। उसने रोकोसोवस्की के स्थान पर जनरल स्पिचालस्की को प्रतिरक्षा-मंत्री नियुक्त किया। रोकोसोवस्कीने तत्काल पुनः अपनी सोवियत नागरिकता ग्रहण कर ली और उसे झुकोव के अन्तर्गत उपप्रतिरक्षा-मत्री नियुक्त किया गया। स्पिचाल्स्की ने पोलैण्ड-स्थित रूसी सैनिक परामर्शदाताओं को घर भेज दिया...लेखक-कॉंग्रेस को स्थगित कर दिया गया : यह हगरी के प्रति मैत्री तथा रूस के प्रति विरोध की भावना के प्रदर्शन का अवसर प्रमाणित होता...गोमुल्का ने कार्डिनल विसजिन्स्की को कारागार से मुक्त कर दिया। जब रोमन कैथलिक पादरी वारसा-स्थित अपने प्रासाद में लौटे, तब विशाल जन-समूहों ने उनका अभिनन्दन किया। उन्होंने उन्हें आशीर्वाद दिया तथा पोलैण्ड के हित के लिए शांत बने रहने का अनुरोध किया। बाद में गोमुल्का कार्डिनल से मिलने गया, उसने उनसे और बिशपों के एक समुदाय के साथ, जिन्होंने शासन के साथ सहयोग नहीं किया था, विचार-विमर्श किया। अपने प्रथम धर्मोपदेश में पादरी ने सहिष्णुता एवं सावधानी के लिए अनुरोध किया। चर्च और राज्य ने, प्रत्येक ने अपने-अपने ढंग से और दोनों ने इस कारण जनता के दृष्टिकोण को अधिक सहिष्णुतापूर्ण एव कम भावनात्मक बनाने का प्रयास किया कि वे रूस और भ्रम की दोहरी विभीषिका से अवगत थे। कृतज्ञ गोमुल्का ने सरकारी स्कूलो में धार्मिक शिक्षा की अनुमति प्रदान कर

दी...गोमुल्का अभी तक सन्तुलन कायम रख रहा था और वह मास्को गया। वारसा स्टेशन पर उसे विदा करने के लिए उपस्थित जन-समूह ने चिल्ला कर कहा—"ब्लाडीस्लाव दृढ़ बनो, ब्लाडीस्लाव दृढ़ बनो।" वह १९५७ के लिए चौदह लाख टन रूसी अन्न ७० लाख रूबल के रूसी सामनों तथा पोलैण्ड पर समस्त सोवियत ऋणों के रद्द किये जाने का वचन ले कर लौटा—विगत ग्यारह वर्षों में मिट्टी के मोल विशाल परिमाण में पोलैण्ड से जो कोयला गया था, उसके लिए यह अपर्याप्त क्षतिपूर्ति थी और सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह पोलैण्ड की सार्वभौमता और पोलिश भूमि पर रखे जाने वाले सोवियत सैनिकों की संख्या, समय-समय पर विश्व-स्थिति में होने वाले परिवर्त्तनों के अनुसार, मास्को के साथ मिल कर संयुक्त रूप से, निर्धारित करने के उसके अधिकार की मान्यता थी। इस प्रकार मास्को ने अपने सैनिक सहयोग के सम्बन्ध में वारसा को कागजी निषेधाधिकार प्रदान करना स्वीकार कर लिया था।

निषेधाधिकार हो अथवा न हो, सोवियत सैनिक डिविजन पोलैण्ड में बने हुए हैं और उसका अर्थ है रूसी सत्ता एवं पोलिश व्यग्रता। क्या आर्थिक सहायता गोमुल्का के गले में पड़ी हुई एक दूसरी जंजीर है? टिटो की आलोचना करते हुए "प्रवदा' ने कहा कि, उन्होंने "साम्राज्यवादी पश्चिम" से जो सहायता स्वीकार की है, वह एक सोवियत-विरोधी उद्देश्य को सिद्ध करती है। टिटो पर किया गया यह प्रहार गोमुल्का के लिए एक चेतावनी थी। पोलिश नेता विकट रज्जु-मार्ग पर पुनः दो कदम मुड़ा। गोमुल्का के साथ मास्को जाने वाले, पोलिट ब्यूरो के एक सदस्य स्टीफन जेद्रीचोवस्की ने कहा, "मास्को में हमें जो सफलताएँ प्राप्त हुई, उनके कारण सैद्धन्तिक रूप से पश्चिम से ऋण लेने की आवश्यकता समाप्त हो गयी है।" पूर्व की ओर अत्यधिक अभिमुख होने के कारण कहीं गोमुल्का का संतुलन अस्त-व्यस्त न हो जाय, इसलिए वह दूसरी दिशा में मुड़ा; जेद्रीचोवस्की ने पुनः कहा—"इससे हमारे लिए अनुकूल शर्तों के साथ इस प्रकार का सौदा करने की सम्भावनाएँ समाप्त नहीं होतीं।" उसके थोड़े ही समय उपरान्त आशावादी पोलों ने भारी अमरीकी सरकारी ऋणों की खोज में एक मिशन वाशिंगटन भेजा।

पोलैण्ड में हाल में जो सामाजिक दृश्य (पोजनान, बुद्धिवादियों का विद्रोह, और गोमुल्का-क्रान्ति) दिखायी दिये है, उन सभी के पीछे यह सर्वव्यापक मान्यता है कि कम्यूनिज्म ने देश की अर्थ-व्यवस्था को रसातल में पहुँचा दिया। २० अक्तूबर को केन्द्रीय समिति के पूर्ण अधिवेशन में किये गये अपने कठोर,

निर्मम रूप से विवेचनात्मक भाषण में गोमुल्का ने स्वयं इस बात को प्रत्यक्ष कर दिया। उसने कहा—"१९४९ में समस्त उद्योग में प्रति कार्य-दिन, प्रति मजदूर कोयले का उत्पादन १३२८ किलोग्राम था। १९५५ में वह कम हो कर ११६३ किलोग्राम तक पहुँच गया अर्थात् उत्पादन में १२·४ प्रतिशत की कमी हुई ... खान-उद्योग में १९५५ में १९३८ की तुलना में प्रति कार्य-दिन, प्रति मजदूर उत्पादन में ३६ प्रतिशत की कमी हुई। खान-उद्योग के सम्बन्ध में आर्थिक नीति अक्षम्य विवेकहीनता की नीति थी। रविवार को काम करने की प्रणाली प्रचलित की गयी और इससे खनिकों का स्वास्थ्य एवं उनकी शक्ति नष्ट हो गयी तथा साथ-ही-साथ कोयला-खान-संस्थानों को समुचित कार्यकारी स्थिति में रखना कठिन हो गया। कोयला-खानों के एक भाग में सैनिकों और कैदियों को नियुक्त करने की प्रथा भी प्रचलित की गयी।" सारांशतः खान-उद्योग में विशाल पूँजी का विनियोजन करने के बावजूद व्यवस्थापकों की अक्षमता एव श्रमिकों की अरुचि के कारण कोयले का उत्पादन कम हो गया। (यदि कहीं सोवियत सरकार भी इसी प्रकार की स्वीकारोक्ति करती।)

तत्पश्चात् उसने कृषि का उल्लेख किया। गोमुल्का ने कहा—"प्रति हेक्टेयर कृषि-योग्य भूमि के समग्र उत्पादन के मूल्य का अनुमान लगाने पर हमारे समक्ष निम्नलिखित चित्र उपस्थित होता है: निजी फार्म ६२१·१ ज्लोटी; सहकारी फार्म ५१७·३ ज्लोटी और राजकीय फार्म ३९३·७ ज्लोटी। इस प्रकार निजी और सहकारी फार्मों के मध्य १६·७ प्रतिशत का अन्तर है, जब कि राजकीय फार्मों की तुलना में निजी फार्म का उत्पादन (१९५५) में ३२·२ प्रतिशत अधिक था।" और गोमुल्का ने पुनः कहा कि यह सब इस बात के बावजूद हुआ कि राज्य ने प्रत्यक्ष सहायता, करों में कमी, मशीनों के मुफ्त उपयोग तथा इसी प्रकार की बातों के रूप में सामूहिक फार्मों को अरबों की रकम दी। उसने मत व्यक्त किया—"यह एक दुखद चित्र है। अत्यधिक व्यय के बावजूद उनके परिणाम तुच्छतर एवं उत्पादन-व्यय अधिक थे। मैं समस्या के राजनितिक पहलू का उल्लेख नहीं करता।"

इतनी ही घातक स्पष्टवादिता के साथ उसने आवास-स्थिति में सुधार करने की विफलताका विश्लेषण किया।

अन्त में उसने पोजनान का उल्लेख किया। उसने मास्को के प्रचार को अस्वीकृत कर दिया। "पोजनान की पीड़ादायक दुखान्त घटना को साम्राज्यवादी एजेण्टों और उत्तेजना फैलाने वालों के कार्य के रूप में प्रस्तुत

करने का गन्दा प्रयास निश्चय ही अत्यन्त अज्ञानपूर्ण था... पोजनान की दुखान्त घटना तथा समस्त श्रमिक वर्ग के अत्यधिक असन्तोष के कारण स्वयं हम में निहित हैं, वे पार्टी के नेतृत्व और सरकार में निहित है। प्रज्ज्वलनशील सामग्रियाँ वर्षों से एकत्र हो रही थीं। ६ वर्षीय योजना ने, जिसे भूतकाल में जीवन-स्तर के उच्च विकास के एक नये चरण के रूप में अत्यन्त उत्साह के साथ विज्ञापित किया गया था, व्यापक श्रमिक वर्गों की आशा को निराशा के रूप में परिणत कर दिया। आंकड़ों के साथ की गयी जादूगीरी, जिसमें ६ वर्षीय योजना की अवधि में वास्तविक मजदूरी में २७ प्रतिशत की वृद्धि दिखायी गयी थी, एक विफलता प्रमाणित हुई। इससे जनता की परेशानियां और अधिक बढ़ गयीं तथा कच्चे सांख्यिकों ने जो स्थिति ग्रहण की थी, उससे हटना आवश्यक था।" और कच्चे राजनीतिज्ञों द्वारा ग्रहण की गयी स्थिति से भी। (क्या इस प्रकार की जादूगीरी मास्को में भी चल रही थी?)

यह बात पर्याप्त रूप से स्पष्ट प्रतीत होती है कि गोमुल्का रहे अथवा न रहे, पोलैण्ड भूत काल के गर्त्त से तब तक बाहर नहीं निकल सकता, जब तक उसे विदेशी सहायता नहीं उपलब्ध होगी। उसकी अर्थ-व्यवस्था की पुनः स्थापना के लिए रूसी साधन अत्यन्त अपर्याप्त है, रूसी पद्धतियाँ अत्यन्त कम्यूनिस्ट है। न मास्को पोलैण्ड को भौतिक दृष्टि से शक्तिशाली और इस कारण राजनीतिक दृष्टि से स्वतंत्र बनाने की ही इच्छा रखता है। परिणामस्वरूप गोमुल्का को अधिकाधिक विदेशी सहायता की आवश्यकता है। यह सहायता बिना बन्धन के भी (अथवा विशेषतः बिना बन्धन के) साम्राज्यवादी पूर्व को अवश्य क्षति पहुँचायेगी। यह एक विचित्र स्थिति है कि कम्यूनिस्ट पोलैण्ड को दिया गया समर्थन कम्यूनिस्ट रूस को क्षीण बनाता है और प्रजातंत्र के लिए पोलिश आकांक्षा को सुदृढ़ बनाता है। वारसा अभी एक दूसरी पार्टी के लिए अनुमति नहीं प्रदान कर सकता, किन्तु सेज्म (संसद)-स्थित गुट किसानों, कैथलिकों, बुद्धिवादियों, मजदूरों और कम्यूनिस्टों की ओर से बोलेंगे। हो सकता है कि धीरे-धीरे कम्यूनिस्टों की आवाज का विषम अनुपात समाप्त हो जाय।

फिर भी, महत्तर स्वतंत्रता की दिशा में पोलैण्ड का मार्ग रूस द्वारा अवरुद्ध है। अतः रूस-विरोधी भावना का विकास सुनिश्चित है। उदाहरणार्थ १० दिसम्बर १९५६ को स्जेसिन (स्टेट्टिन) में हुए एक छोटे-से संघर्ष की परिसमाप्ति सोवियत प्रदूतावास की खिड़कियों के ध्वंस के रूप में हुई, किन्तु सामान्यतः पोलिश देशभक्ति रूस के प्रति पोलिश घृणा की स्वतंत्र अभिव्यक्ति नहीं होने देती।

जनवरी १९५७ के संसदीय चुनावों के समय जब गोमुल्का ने कहा –"यदि आप कम्यूनिस्ट उम्मीदवारों के नामों को मिटायेंगे तो आप यूरोपीय राष्ट्रों की सूची से पोलैण्ड के नाम को ही मिटा देंगे" तब उसने अनुशासन की इसी भावना से अपील की। इस बात को इससे अधिक स्पष्ट से कोई भी व्यक्ति नहीं कह सकता था : गोमुल्का कह रहा था कि कम्यूनिस्ट पार्टी की पराजय रूसी टैंकों को लायेगी तथा एक पृथक राज्य के रूप में पोलैण्ड का अस्तित्व समाप्त हो जायगा; कम्यूनिस्टों को मत दीजिये अथवा रूस के उदरस्थ हो जाइये। (इतने पर भी कतिपय एशियाई पिछलग्गू देशों को स्वतन्त्र राष्ट्र समझने का हठ करते है।)

चुनावों में भारी विजय प्राप्त करने के लिए गोमुल्का ने सशस्त्र रूसी हस्तक्षेप के खतरे का उपयोग किया। पोलैण्ड मे हगरी के समान रक्त-स्नान न होने देने के लिए कम्यूनिस्ट-विरोधी पोलों ने कम्यूनिस्टों के पक्ष में मत दिये, किन्तु इससे पोलिश कम्यूनिस्ट शासन और रूस के लिए संकट में वृद्धि ही होती है। पोलिश जनता दोनों से मुक्ति पाने का स्वप्न देखती रहेगी।

मास्को गोमुल्का को निगल तो गया है, किन्तु उसे पचा नहीं पाया है। वह उसे प्रथम अवसर मिलते ही नष्ट कर देगा। चीनी प्रधान मंत्री चाऊ एन लाई जब ११ जनवरी से १६ जनवरी १९५७ तक वारसा की यात्रा पर थे, तब उन्होंने गोमुल्का को पराशर्म दिया कि "जो जी में आये करो, किन्तु उसके सम्बन्ध मे बात मत करो।" यह चीनी कम्यूनिस्ट सिद्धान्त है; क्रेमलिन विज्ञापित अवज्ञा को पसन्द नहीं करता, किन्तु मुँह का बन्द होना दासता का आरम्भ मात्र होता है। गोमुल्का ने मास्को की मिथ्या स्तुति करने की आवश्यकता का अनुभव पहले ही कर लिया है। इसीलिए उसने मार्च, १९५७ में घोषित किया कि हंगरी की क्रान्ति प्रतिक्रान्ति थी। शब्दों के बाद कार्य आते हैं। हाल के संसदीय चुनावों के बाद निर्मित नयी पोलिश सरकार में एक महत्वपूर्ण पोलिश स्तालिनवादी–नाटोलिनवादी जेनान नोवाक उपप्रधान मंत्री के पद पर है। इसमें सन्देह नहीं कि गोमुल्का ने उसे या तो सोवियत दबाव के कारण या इस बात के संकेत के रूप में सरकार में सम्मिलित किया कि वह अनुकूल व्यवहार करने के लिए तैयार है। गोमुल्का-विरोधी स्तालिनवादी पोलैण्ड में पुनः सिर उठा रहे है और उन्हें रूस से प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है। वे लोकप्रियता प्राप्त करने एवं गोमुल्का को क्षति पहुँचाने के लिए पोलिश प्रतिक्रियावादियों के परम्परागत अस्त्र यहूदी-विरोध का प्रयोग कर रहे हैं। पोलिश यहूदी – (युद्ध-पूर्व की तीस लाख की यहूदी जनसख्या में से) अस्सी हजार यहूदी, जो हिटलर के गैस-यातनागृहों से बचे रह गये–देश छोड़कर भाग

रहे है। वारसा में कम्यूनिस्ट पार्टी के अधिकृत मुखपत्र "ट्रिब्यूना लूडा" ने इस दुखद घटना पर मत व्यक्त करते हुए २० फरवरी १९५७ को कहा— "पोलिश यहूदियों द्वारा देश-त्याग के लिए दिये जाने वाले प्रार्थनापत्रों की संख्या तथा देश-त्याग की उनकी इच्छा में हाल में अत्यधिक वृद्धि हो गयी है । यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि यहूदियों ने बढ़ती हुई यहूदी-विरोधी भावना का अनुभव कितने दुख के साथ किया है।" तत्पश्चात् समाचार-पत्र ने यहूदियों को पुनः आश्वासन एवं वचन दिया कि जो लोग यहूदी-विरोधी ज्यादतियॉ करते है, उन्हें दण्ड दिया जा रहा है तथा दण्ड दिया जायगा और जातीय सिद्धान्तों का विरोध किया जायगा ...। इन वचनों को पूर्ण करना गोमुल्का के हित में है, किन्तु पोलैण्ड मे यहूदी-विरोधवाद की जड़ें गहराई तक पहुँची हुई है और पोलिश जनता को पराधीन बनाने के एक अतिरिक्त साधन के रूप मे इसका उपयोग करने मे मास्को विवेक से काम नही लेगा। पोलैण्ड स्वतंत्रता से बहुत दूर है और रूस को वारसा में सत्ता की जो क्षति उठानी पड़ी है उसे स्वीकार करने से रूस बहुत दूर है। आज्ञापालकता के लिए मास्को के हठ एवं स्वतंत्रता के लिए पोलैण्ड की आकांक्षा के मध्य गोमुल्का का संतुलनकारी कार्य एक चिरन्तन परेशानी का विषय है।

इस बात की भविष्यवाणी नही की जा सकती कि पोलैण्ड किस प्रकार राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त कर सकता है। राजनीति की रूपरेखा नहीं तैयार नहीं की जा सकती। सम्भवतः एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा, जब पिछलग्गू देश रूस के लिए पूँजी होने की अपेक्षा परेशानी के कारण अधिक हो जायेंगे। सम्भवतः रूस का कोई भावी शासक अनुभव करेगा कि औपनिवेशिक साम्राज्य सारा का सारा भार-स्वरूप है और वह कोई वरदान नहीं है, वह सोवियत जनसंख्या के जीवन-स्तर के मूल्य पर किया जाने वाला सारा का सारा व्यय है और उससे कोई आय नहीं होती। पिछलग्गू देशों की स्वतत्रता अधिक अच्छी जीवन-स्थिति की मांग करने की रूसियों की स्वतत्रता पर निर्भर है।

इस बीच पश्चिम को स्मरण रखना चाहिए कि यद्यपि पिछलग्गू देशों के ऊपर कम्यूनिजम सशस्त्र शक्ति द्वारा बलपूर्वक लादा गया, तथापि मूलतः उसमें एक आन्तरिक आकर्षण था, जो भूतकाल की अस्वीकृति एव एक सुन्दर भविष्य की आशा में सन्निहित था। बारह वर्षों के कुशासन, मिथ्या प्रतिनिधित्व और दुख के पश्चात् कोई भी व्यक्ति अब उस आशा को महत्त्व नही देता। फिर भी भूतकाल में वापस नहीं लौटा जा सकता। पूर्वी यूरोप के लिए १९३९ से पूर्व का जगत

स्मरणातीत रूप से मर चुका है। पिछलग्गू देशों की जनता अभी तक किसी नयी वस्तु की आशा कर रही है।

पोलैण्ड अथवा किसी भी वन्दी राज्य को एक वैकल्पिक कार्यक्रम अथवा आदर्श प्रदान करने के लिए स्वतंत्र जगत बाध्य नहीं है। वह उनकी संस्कृति का अपमान एवं उनकी स्वतंत्रता का उल्लंघन होगा। आदर्श प्रस्ताव बिना शर्त मित्रता एवं अपनी कल्पना के अनुसार सामाजिक पद्धति की सृष्टि करने के प्रत्येक राष्ट्र के अधिकार को मान्यता प्रदान करने का है।

अध्याय १८

१८४८, १९५४ नहीं

अक्तूबर–नवम्बर, १९५६ की हंगेरियन क्रान्ति मानव-प्राणियों में तथा वीरता, ईमानदारी, शिष्टता एवं स्वतंत्रता-प्रेम के सरल, सीधे-सादे गुणों में एक नये विश्वास के औचित्य को सिद्ध करती है। हंगरी में ग्यारह वर्षों तक कम्यूनिस्ट शासन मनुष्यों के हृदयों को स्पर्श नहीं कर सका; क्रेमलिन उन तक पहुँचने में विफल रहा। हृदय रूस की शब्दावली को नहीं सुन पाता। मास्को दिवालिया है; उसके पास टैंक और जेल है, किन्तु विचार अथवा आदर्श नहीं। पाशविक सत्ता शक्तिहीन होती है।

कुछ लोगों ने यह विश्वास किया था कि कम्यूनिज्म विश्व को विजित कर लेगा। यह किस प्रकार सम्भव हो सकता है, जब वह केवल हत्या कर सकता है और विश्वास नहीं उत्पन्न कर सकता? हंगेरियनों की हत्या कर रूस ने कम्यूनिज्म की हत्या कर दी। मृत्यु रहस्योद्घाटन के परिणामस्वरूप–उसके वास्तविक स्वरूप के रहस्योद्घाटन के परिणामस्वरूप — हुई।

निराशावादियों ने, निराशाजनक भविष्यवाणियां करने वाले उन व्यक्तियों ने, जिनकी बात सुनी नहीं जाती, जार्ज ओरवेल ने कहा कि तानाशाह मनुष्य को यंत्रीकृत कर देंगे; जाति दासों के रूप में बच जायगी। यह बात सत्य नहीं है। हंगरी इस बात को प्रमाणित करता है कि कम्यूनिज्म भविष्य नहीं है। यह युग तानाशाही का नहीं है। यह युग स्वतंत्रता और साम्राज्यवाद से मुक्ति का है। मानव जाति

तक यह सन्देश लाने के लिए हंगरी ने जीवन और कष्टों की दृष्टि से भारी मूल्य चुकाया है, किन्तु उसने आधुनिक सभ्यता की अमर कृतज्ञता अर्जित कर ली है।

हंगरी की दो प्रतिशत से अधिक जनसंख्या विदेशों में शरण लेने के लिए बाध्य कर दी गयी है। हजारों लोग टैंकों और तोपों द्वारा काल-कवलित हो गये और कई हजार जेल में हैं। असंख्य व्यक्तियों को साइबेरिया में निर्वासित कर दिया गया है। यह एक राष्ट्रीय दुखान्त घटना है। फिर भी, यह हमारे युग की सर्वाधिक प्रकाश-मान दुखान्त घटना है। यह मानव-आत्मा की अनश्वरता की घोषणा करती है।

ऐसे व्यक्ति थे, जिनका मत था कि कम्यूनिज्म प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है और उसकी पराजय का अर्थ होगा प्रतिक्रिया की विजय। हंगरी में नैतिकता, सत्य एवं प्रजातंत्र की विजय हुई है। हंगेरियनों ने बहुत अधिक प्रवंचना एवं निर्मतता देखी है, वे शुद्धता पर बल देते है।

हंगरी में किसने विद्रोह किया? प्रत्येक व्यक्ति ने। मास्को के विरुद्ध सभी ने। सभी में कम्यूनिस्ट भी सम्मिलित है। मास्को ने हंगरी को विदेशी अधिपत्य और घरेलू दमन के विरुद्ध सफलतापूर्वक एकताबद्ध कर दिया।

स्तालिन की निन्दा करते हुए ख्रुश्चेव ने बीसवीं पार्टी कॉग्रेस में अपने भाषण में कहा था—" स्तालिन तर्क, स्पष्टीकरण एवं जनता के साथ धैर्यपूर्ण सहयोग से काम नहीं करता था, प्रत्युत वह अपने विचारों को बलपूर्वक लाद देता था और अपने मतों के समक्ष पूर्ण आत्मसमर्पण की माँग करता था।" फिर ख्रुश्चेव स्तालिन से किस प्रकार भिन्न है?

'मारो, मारो तथा एक बार और मारो', ख्रुश्चेव ने स्तालिन को आदेश देते हुए उद्धृत किया। गोली मारो, गोली मारो तथा एक बार और गोली मारो— ख्रुश्चेव ने यही किया, किन्तु उसके सामने विकल्प क्या है? क्रेमलिन के पास दूसरा कोई अस्त्र नहीं है। उसने पोलैण्ड में उनका प्रयोग करना चाहा। उसने हंगरी में उनका प्रयोग किया।

अत्याचार के विरुद्ध होने वाले जन-विद्रोह संक्रामक होते है। पोलिश क्रान्ति की एक चिनगारी उड़ कर हंगरी पहुँच गयी। यह उसी प्रकार हुआ, जिस प्रकार १८४८ में हुआ था। एकतंत्रवाद और सामन्तशाही के विरुद्ध स्वतंत्रता एवं स्वाधीनता के लिए १८४८ की क्रांति फ्रांस से जर्मनी, इटली, आस्ट्रिया और हंगरी में फैल गयी। अप्रैल, १८४८ में आस्ट्रिया की सरकार ने सैनिक सहायता के लिए रूस के जार निकोलस प्रथम से प्रार्थना की। उस अत्याचारी ने प्रार्थना स्वीकृत कर ली। लेनिन ने १९०० में लिखा—"जारशाही सरकार न केवल

हमारे राष्ट्र को पराधीन बनाकर रखती है, प्रत्युत वह अपनी पराधीनता के विरुद्ध विद्रोह करने वाले अन्य राष्ट्रों का भी दमन करती है। १८४९ में ऐसा ही हुआ था, जब रूसी सेनाओं ने हंगरी की क्रान्ति को कुचल दिया था।" (वी० आई० लेनिन, संग्रहीत रचनाएँ, चतुर्थ रूसी संस्करण, भाग ४)

प्रत्येक वस्तु में परिवर्त्तन हो गया है, किन्तु रूस ने अब भी अपनी जनता को पराधीनता के पाश में जकड़ कर रखा है और वह रूसी सैनिकों को हंगरी में क्रान्ति का दमन करने के लिए भेजता है। प्रतिक्रान्तिवादी कौन है?

हंगरी की १९५६ की क्रान्ति का नायक सैण्डोर पेतोयेफी है, जिसकी मृत्यु १८४९ में एक रूसी खड्ग से हुई थी। १८४९ मे पेतोयेफी की आयु २६ वर्ष थी, किन्तु हंगेरियन राष्ट्र उससे परिचित था। वह उसका क्रान्तिकारी कवि था। जब क्रान्ति प्रारम्भ हुई, तब उसने "मेरे भीतर एक विचार है" शीर्षक कविता लिखी—

मेरे अन्तर मे एक विचार है।
अपने बिस्तर पर आराम से मरने का
एक ऐसे फूल की भाँति धीरे-धीरे मुरझा जाने का
जिसे किसी अदृश्य कीड़े ने खा डाला है
ऐसी मृत्यु मत दो। हे भगवान,
मुझे यह मृत्यु मत प्रदान करो।
यदि मै एक ऐसा वृक्ष होता, जिस पर बिजली गिरती है,
जिसे तूफान धराशायी बना देता है, जो भूमि से उन्मूलित हो गया है;
यदि मैं गिरि गह्वर तट पर स्थित एक चट्टान होता,
जिसे हवा ने खड्ड की दिशा मे लुढ़का दिया है;
जब मनुष्य अपनी दासता के जुए को उतार फेंकें,
और स्वतंत्रता के लिए अपने सिर उठायें
और हवा में फहराती हुई हरित ध्वजाएँ
समस्त विश्व के समक्ष इन पुनीत शब्दों की घोषणा करे
"स्वतंत्रता"
और जहाँ पूर्व से पश्चिम तक
नगाड़े बजते है,
और जनता अवरोधों को तोड़ देती है—
वहाँ मुझे गिरने दो, इस रणभूमि में

मेरे युवा रक्त को मेरे हृदय से प्रवाहित होने दो।

उसकी इच्छा पूर्ण हुई थी। अपनी कविता के अनुरूप ही सैण्डोर पेतोयेफी युद्ध करने के लिए सन्नद्ध हुआ था। एक कोसाक तलवार ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

डैन्यूब के तट पर पेतोयेफी का एक स्मारक है, जिसमे उसके हाथ ऊपर उठे हुए तथा बाल अस्त-व्यस्त है। बुडापेस्ट की सड़कों पर सोवियत टैंकों के प्रहार के बाद से ही महिलाएँ उसके चरणों पर छोटी-छोटी पुष्पमालाएँ अर्पित करने लगी है। उसके समान ही वे दासता मे जीवित रहने की अपेक्षा मृत्यु का आलिंगन करना अधिक पसन्द करेंगी।

महान आत्माएँ अमर होती है। एक शताब्दी से अधिक समय से हंगरी के बालक पेतोयेफी के उत्थानकारी गीत गाते आ रहे है। वह उनके रक्त में समा गया है। यद्यपि एक दूरस्थ राजा के रोयेंदार टोपी धारण किये हुए भाड़े के सैनिक ने सैडार पेतोयेफी के सिर के दो टुकड़े कर दिये, तथापि प्रहार का उत्तर देने के लिए वह बचा रहा। किसी हंगेरियन से पूछिये कि १९५६ की क्रांति का सूत्रपात कहाँ हुआ और वह उत्तर देगा—"पेतोयेफी क्लब" में। वहाँ कवियों, लेखकों और अन्य व्यक्तियों ने जनता के साथ स्वतंत्रता के गान का पूर्वाभ्यास किया।

किन्तु किसी एकदलीय पुलिस राज्य में विरोध की आवाज तभी सुनायी देती है, जब दल विश्रृंखलित हो जाता है और पुलिस का नैतिक ह्रास हो जाता है। पोलैण्ड में तूफान और पोजनान के पूर्व ऐसा ही हुआ था। हंगरी में भी ऐसा ही हुआ। वास्तव में हंगरी की कम्यूनिस्ट पार्टी तथा गुप्त पुलिस (ए० वी० एच०) का विघटन साथ-साथ हुआ क्योंकि आतंक उत्पन्न करने, दमन करने एवं स्तालिनीकरण करने का कार्य साथ-साथ करने के कारण वे पतन एवं ह्रास की दिशा में भी एक साथ ही बढ़ी।

युद्धोत्तरकालीन हंगरी का इतिहास उतनी ही अच्छी तरह से प्रारम्भ हुआ, जितनी कि आशा की जा सकती थी, क्योंकि १९४५ में रूसी अधिकार-सेना की उपस्थिति मे अधिकारियों ने स्वतंत्र राष्ट्रीय चुनावों की अनुमति प्रदान की। इन चुनावों में कम्यूनिस्टों को केवल १७ प्रतिशत मत प्राप्त हुए जब कि 'स्माल होल्डर्स' (कृषक) पार्टी को ५७ प्रतिशत मत प्राप्त हुए। फिर भी, नकाब शीघ्र ही हट गया, २८ फरवरी १९४७ को स्माल होल्डर्स पार्टी के महामंत्री बेला कोवाक्स को गिरफ्तार और लापता कर दिया गया; बाद में उनकी पार्टी को दबा दिया गया और यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आगामी चुनावों में कम्यूनिस्ट

भारी बहुमत से विजयी हुए। मास्को तथा उसके हंगेरियन सहायकों के लिए सभी कुछ ठीक रूप से होता हुआ प्रतीत हो रहा था।

फिर भी, कम्यूनिज्म के साथ सामान्य स्थिति का मेल नहीं बैठता। कम्यूनिज्म तूफान में जन्म लेता है और वह सदा ही प्रभंजन को जन्म देता है। जब १९४९ में टिटो के साथ रूस का झगड़ा प्रारम्भ हुआ, तब पड़ोसी हंगरी में सहानुभूति व्यक्त की गयी। तत्पश्चात् मास्को के आदेशानुसार राष्ट्रीय कम्यूनिस्टों का प्रपीड़न प्रारम्भ हुआ। इसके लिए किसी बड़े नाम की आवश्यकता थी। शेष व्यक्तियों को आतंकित करने के लिए जिनको बलिदान का बकरा बनाया गया, उनमें से एक था गुप्त पुलिस का प्रमुख, युद्धोत्तरकालीन हंगरी का प्रथम स्वराष्ट्र-मंत्री, कम्यूनिस्ट पोलिट ब्यूरो का एक सदस्य लास्लो राज्क। उसे ३० मई १९४९ को गिरफ्तार किया गया और उसी वर्ष के सितम्बर महीने में उस पर मुकदमा चलाया गया। उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया तथा सिखायी-पढ़ायी गयी अदालत ने उसे फाँसी द्वारा मृत्यु का दण्ड दिया।

राज्क के मुकदमे का रंगमंच-व्यवस्थापक गुप्त पुलिस का प्रधान जनरल गेबर पीटर था। उसने कार्डिनल मिण्ड्सजेण्टी, आर्क बिशप ग्रोयेज, अमरीकी व्यवसायी वोगलर, ब्रिटिश व्यवसायी सैण्डर्स तथा हजारों और व्यक्तियों की गिरफ्तारी एवं उनसे की जाने वाली पूछताछ का भी अधीक्षण किया। कारागार की कोठरी में बैठने की उसकी बारी जनवारी, १९५३ में आयी। जिस प्रकार के व्यवहार से वह भली भाँति परिचित था, उसी प्रकार का व्यवहार अपने साथ निरन्तर चौदह महीनों तक किये जाने के बाद उसने "राज्य और राष्ट्र के विरुद्ध" किये गये अपराधों को "स्वीकार" कर लिया और १२ मार्च १९५३ को उसे आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया। साथ-ही-साथ गुप्त पुलिस से निकट रूप से सम्बद्ध विभाग न्याय-मंत्रालय के भूतपूर्व प्रधान को नौ वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया तथा अन्य सैकड़ों सह-पीड़कों, जाँचकर्त्ताओं, "न्यायाधीशों" और पुलिस के सिपाहियों को निष्कासित एवं दण्डित किया गया। इससे गुप्त सुरक्षा-संगठन की नैतिक शक्ति में वृद्धि नहीं हो सकती थी। कम्यूनिस्ट राज्यों में इस बात के बढ़ते हुए प्रमाण ने कि जो हाथ "क्रान्ति की चमचमाती हुई तलवार" (गुप्त पुलिस के लिए स्वीकृत पर्यायवाची शब्द) को पकड़ता है, उसे शीघ्र ही या बाद में काट दिया जाता है, दमनकर्त्ताओं को हताश कर दिया एवं उनके कार्य को आकर्षण-विहीन बना दिया। बेरिया के भाग्य ने, जिसने १९५३ में अपने पूर्वाधिकारियों यगोडा और येझोव का पदानुसारण करते हुए मास्को की फांसी की

कोठरी में प्रवेश किया, इस बात का अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत कर दिया कि प्रतिशोधात्मक न्याय गुप्त पुलिस के प्रमुख अधिकारियों का पीछा करता ही रहता है।

हंगरी में असन्तुष्टों ने—पोलैण्ड में भी—साहस का प्रदर्शन किया, विशेषतः तब, जब ३ जुलाई १९५३ को मात्यास राकोसी के स्थान पर इमरे नाज प्रधान मंत्री बने।

राकोसी मास्को-प्रशिक्षित एक "कठोरतावादी" था; १८९६ में एक काल्विनिस्ट कृषक-परिवार मे उत्पन्न नाज एक "उदारतावादी" के रूप में प्रतिष्ठित थे। जिस दिन उन्होंने सर्वोच्च पद ग्रहण किया, उसके एक दिन बाद, उन्होंने एक "नये मार्ग" की घोषणा की, जिसमें भारी उद्योग के विकास एवं उसमें पूँजी-विनियोग की अपेक्षा कृषि तथा हल्के उद्योग के विकास एवं उनमें पूँजी-विनियोग पर अधिक बल दिया गया था।

९ मार्च १९५५ को नाज को प्रधान मंत्री के पद से बरखास्त करने की जो सरकारी घोषणा हुई, उसमें इस कार्यक्रम का उपयोग उनके विरुद्ध किया गया। नाज के प्रधान मंत्रित्व की अवधि प्रायः वही थी, जिस अवधि में जार्जी मालिन्कोव मास्को में प्रधानमंत्री के पद पर आरूढ़ थे और यद्यपि सोवियत प्रमुखों एवं पिछलग्गू देशों के प्रमुखों के मध्य ठीक-ठीक सम्बन्ध की स्थापना करने का प्रयास करना एक खतरनाक खेल है, तथापि ऐसा अवश्य प्रतीत होता है कि नाज ने हंगरी में रूस में मालिन्कोव को प्रतिध्वनित करते हुए आर्थिक उग्रतावाद और गुप्त पुलिस की अतिशयतापूर्ण कार्रवाई का विरोध किया। इसके अतिरिक्त मालिन्कोव ए० झडानोव के, जो ३१ अगस्त १९४८ को अपनी रहस्यपूर्ण मृत्यु के समय तक स्तालिन के प्रत्यक्ष उत्तराधिकारी थे, शत्रु और उत्तराधिकारी थे; और झडानोव प्रत्यक्षतः सोवियत कला में 'समाजवादी यथार्थवाद' के नाम पर किये गये दमन के १९४६ से १९४८ तक के युग के जनक थे।

मार्च १९५३ में गेबर पीटर के दण्डित किये जाने और जुलाई, १९५३ में इमरे नाज के प्रधान मंत्री के पद पर आसीन किये जाने से हंगरी के लेखकों के प्रति कुछ उदारतापूर्ण व्यवहार किया जाने लगा। नाज विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक तथा विज्ञान अकादमी के एक सदस्य थे और इसलिए वे बुद्धिवादियों की प्रतिष्ठा करते थे। मार्च, १९५५ में नाज की बर्खास्तगी तथा उनके स्थान पर एण्डरास हेजेड्यूज की, जिनके पारदर्शी मिथ्या चेहरे के पीछे पार्टी के प्रथम सचिव मात्यास राकोसी का भयानक, मंगोल सदृश चेहरा था, नियुक्ति से एक दूसरी 'कठोर' अवधि का सूत्रपात हो सकता था, किन्तु गुप्त पुलिस की

भयोत्पादक सत्ता समाप्त हो चुकी थी और सत्ता में बारम्बार परिवर्त्तन होने के परिणामस्वरूप पार्टी पहले ही राजनीतिक एवं सैद्धान्तिक संकट में फँस गयी थी। परिणामतः कठोरता के नये राकोसी-युग में पहलो जैसी भयंकरता का अभाव था। मालिन्कोव के समान ही नाज को गिरफ्तार नहीं किया गया और उन्होंने पृष्ठभूमि में रहकर सम्भवतः समय-समय पर बुद्धिवादियों को प्रोत्साहन प्रदान किया तथा बुद्धिवादियों ने तूफान एवं अविश्वास की बातें सोचना और शीघ्र ही उन्हें कहना प्रारम्भ कर दिया। टिटो के साथ मास्को के मेल-जोल के पुष्पित होने से, जिसके कारण मई, १९५५ में ख्रुश्चेव और बुल्गानिन बेलग्रेड आये, इस प्रवृत्ति को बल मिला। यह समझौता हंगरी-वासियों के लिए विशेष रूप से परेशान करनेवाला सिद्ध हुआ क्योंकि लास्लो राज्कको एक टिटोवादी के रूप में फासी पर लटका दिया गया था। फिर भी, अब मास्को टिटो के साथ प्रेमालाप कर रहा था। जनता को मूलभूत धारणाओ की पुनः परीक्षा करने की आवश्यकता थी।

लेखकों और सरकार के मध्य जो गृह-युद्ध प्रारम्भ हुआ, वह हगेरियन क्रान्ति का थम संघर्ष अथवा वास्तव में बीज-तत्व था। उस क्रान्ति में साहित्य के महत्व प्रको मुश्किल से अतिशयोक्तिपूर्ण कहा जा सकता है। दिसम्बर, १९५६ में 'मैन-चेस्टर गार्जियन' ने बिल्कुल ठीक कहा था कि 'हंगरी-वासी उन्नीसवीं शताब्दी के कवि पेतोयेफी के झण्डे के नीचे युद्ध करते रहे है।' १९५५ में लेखकों ने जो विद्रोह किया, उसीके परिणामस्वरूप १९५६ की वसन्तु ऋतु की पेतोयेफी-क्लब-वाली स्थिति उत्पन्न हुई और उस स्थिति ने उस वर्ष के अक्तूबर महीने में हुई ऐतिहासिक क्रान्ति के लिए प्रेरणा प्रदान की। पोलैण्ड की भांति ही हंगरी में भी लेखनी ने क्षेत्र तैयार किया और बीज-वपन किया।

साहित्य और राज्य के मध्य हुए युद्ध तथा प्रारम्भिक शाब्दिक संघर्षों में जो लोग पक्ष और विपक्ष में थे, उन पर ध्यान देने से स्थिति उल्लेखनीय रूप से स्पष्ट हो जाती है। नाज को प्रधान मंत्री के पद से बर्खास्त करते समय पार्टी ने घोषित किया कि, "किसी भी प्रकार का धैर्य... विज्ञान में आदर्शवादी (एक कम्यू-निस्ट गाली का शब्द) प्रवृत्तियों के पुनरुद्धार को उचित नहीं सिद्ध कर सकता अथवा कला में ह्रास, नैराश्य एवं अराजकता को स्वतंत्रतापूर्वक प्रवेश नहीं करने दे सकता अथवा किसी व्यक्ति को साहित्य एवं प्रेस में "आलोचना करने की स्वतंत्रता" के बहाने के अन्तर्गत हमारी जन-प्रजातांत्रिक प्रणाली की निन्दा करने का अधिकार नहीं प्रदान कर सकता।"

यह सिद्ध करने के लिए कि इस घोषणा के पीछे सत्ता का बल था, संस्कृति-मंत्री तथा कलाओं के कम्यूनिस्ट पहरेदार जोसेफ रेवाई को, जिसे नाज ने बर्खास्त कर दिया था, पुनः पदारूढ़ कर दिया गया तथा उसे "महत्त्वपूर्ण कार्य" के लिए "आर्डर आफ मेरिट" पदक प्रदान किया गया। उसी महीने तूफान का समर्थन करनेवाला एक प्रमुख व्यक्ति आइवान बोल्डिजार "मग्यार नेमजेत" (हंगेरियन राष्ट्र) के प्रधान सम्पादक के अपने पद से हाथ धो बैठा।

सामान्य कम्यूनिस्ट परिस्थितियों में—अर्थात् यदि पार्टी और पुलिस की शक्ति क्षीण नहीं हो गयी होती, तो—ये कार्य लेखकों का मुँह बन्द करने के लिए पर्याप्त हो सकते थे। वे पर्याप्त नहीं सिद्ध हुए। अशांति कायम रही और वह १० सितम्बर १९५५ के "इरोडाल्मी उजसाग" (लिटरेरी गजट) में प्रकाशित एक अत्यन्त प्रमुख लेखक ग्यूला हे के एक लेख में प्रकट हुई। उक्त लेख में उसने, जो १९१९ से पार्टी का सदस्य था, शासन के प्रति निष्ठा व्यक्त करने के पश्चात् अच्छे नाटकों के अभाव तथा थोड़े-से नवनिर्मित नाटकों की "भीषण एकरसता" पर खेद प्रकट किया था और अन्त में उसने साधारण, किन्तु असन्दिग्ध शब्दों में युद्ध की घोषणा की थी। उसने कहा कि "नौकरशाही का नाश हो" अर्थात् सरकारी हस्तक्षेप का अंत हो। उसने पुनः कहा—"यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि नौकरशाही दिनचर्या के समर्थक इस प्रकार के परिवर्त्तन का विरोध किये बिना नहीं रह सकते। मुझे इस बात मे सन्देह नहीं है कि इस संघर्ष की समाप्ति प्रगति की विजय के रूप में होगी।"

ग्यूला हे का लेख, जिसका शीर्षक था 'स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व', दो विचार-धाराओं में हंगरी के राजनीतिक विभाजन को प्रतिबिम्बित करने वाला था क्योंकि उसका रूप कम्यूनिस्ट था और विषय-वस्तु कम्यूनिस्ट-विरोधी थी। उसने लिखा—"हमारे वर्तमान कालीन साहित्य की सम्भवतः सर्वाधिक उल्लेखनीय बात हंगेरियन लेखकों के बहुमत द्वारा ग्रहण किया गया सामान्य दृष्टिकोण है ... इस एकता का प्रत्यक्ष लक्ष्य एक आकर्षक लक्ष्य है: साहित्य में स्वतंत्रता।" तत्पश्चात् कम्यूनिस्ट सिद्धान्त के समक्ष मस्तक झुकाया गया है। "समाजवादी समाज इस सम्बन्ध में ऐसी सम्भावनाएँ प्रदान करता है, जिनका स्वप्न भी भूतपूर्व सामाजिक प्रणालियों में नहीं देखा जा सकता था। फिर भी प्रश्न यह है: साहित्य में इस स्वतंत्रता की आवश्यकता किस उद्देश्य के लिए और किसके लिए है?... कम से कम वर्तमान समय में, कुछ ऐसे व्यक्ति है, जो साहित्य में फलहीन, निन्दात्मक रोदन, दुर्बल आत्माओं के नैराश्य, विश्व के मिथ्या, विकृत चित्र तथा प्राचीन,

अन्धकारमय समय की हानिकारक विचार-धारा के अवशेषों को निर्विघ्न रूप से प्रविष्ट करने के लिए यह स्वतंत्रता चाहते हैं।" फिर भी, वह इस प्रकार के लेखन को प्रतिबन्धित नहीं करता, वह केवल उसके साथ प्रतिद्वन्द्विता करता क्योंकि "समाजवादी साहित्य का अस्तित्व अथवा अनस्तित्व इस बात पर निर्भर करता है कि साहित्य में स्वतंत्रता के लिए किये जाने वाले सामान्य प्रयास — जिसका अर्थ है पार्टी और जनता के प्रजातंत्र की भावना (एक दूसरा शीश-नमन) के विपरीत उपस्थित की जाने वाली नौकरशाही — प्रशासनिक बाधाओं की समाप्ति — सफल होते है अथवा नहीं । साहित्य का विकास, जो हमारा मुख्य उद्देश्य है, केवल तभी हो सकता है, जब इस विकास के मार्ग की बाधाएं समाप्त कर दी जायें । इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बुरे, हानिकारक साहित्य का एक मात्र प्रतिरोधक अच्छा, प्रगतिशील साहित्य तभी विजयी हो सकता है, जब वह बन्धनहीन एवं बाधामुक्त होकर उसके साथ सामना कर सके।" श्री हे गैर-कम्यूनिस्ट और कम्यूनिस्ट कला के सह-अस्तित्व, अनेकता और सहिष्णुता के लिए अनुरोध कर रहे थे । उन्हें कम्यूनिस्ट हस्तक्षेपकर्ताओं, सेंसरों और संस्कृति के पहरेदारों की अपेक्षा गैर-कम्यूनिस्ट कला अधिक पसन्द थी ।

"इरोडाल्मी उसजाग" के दूसरे ही अंक में लास्लो बेंजामिन नामक एक कम्यूनिस्ट की "एक लेखक-मंत्री" शीर्षक कविता प्रकाशित हुई, जिसमें जन-संस्कृति-मंत्री जोसेफ डारवास पर छोटा, तीव्र प्रहार किया गया था । अंक को तत्काल वापस ले लिया गया और उक्त कविता को निकालकर उसे पुनः मुद्रित किया गया । कविता इस प्रकार थीः—

मै अपनी आत्मा को खोलता हूँ, और मैं अपनी आत्मा देता हूँ,
अपनी कला के लिए नये विचारों की खोज में ।
फिर भी, कोई भी वस्तु सफल होने में मेरी सहायता नहीं करती ! मैं किस प्रकार सफल हो सकता हूँ ?
अनेक बार बातचीत करने के बाद भी मैं अभी तक किसी सन्तोषजनक स्पष्टीकरण की प्रतीक्षा कर रहा हूँ,
एक ऐसे व्यक्ति से जो लेखक और मंत्री, दोनों, होने की महत्वाकांक्षा रखता है और जो कला का पदेन जनक है ।
फिर मुझे उस साकार प्रेरणा को देखने दो,
मुझे एक नयी कृति देखने दो, भले ही वह छोटी हो...
मुझे मूर्ख मत बनाते जाओ, मेरे मित्र;

मैं तभी विश्वास करूंगा, जब मैं देख लूंगा।

हंगेरियन लेखक-यूनियन के मुखपत्र में लिखनेवाले कम्यूनिस्ट कम्यूनिस्ट सरकार और उसकी नीतियों की खुलकर आलोचना कर रहे थे। आसन्न क्रांति में अनेक असाहित्यिक कम्यूनिस्टों ने भी ऐसा ही किया।

शासन पर किये गये इन साहित्यिक प्रहारों का कला-जगत में स्वागत एव समर्थन किया गया। साहस पाकर लेखक-यूनियन के कम्यूनिस्ट १० नवम्बर १९५५ को एक बैठक के रूप में एकत्र हुए और उन्होंने एक घोषणा-पत्र तैयार कर सांस्कृतिक मामलों में सरकार के "आक्रामक हस्तक्षेप" से स्वतंत्रता की मांग की। घोषणा-पत्र में उदाहरण दिये गये थे : 'इरोडाल्मी उसजाग' के दो मैनेजिंग डायरेक्टरों को बर्खास्त कर दिया गया; पुस्तकों और कविताओं का, जिनके नाम बताये गये, प्रकाशन रोक दिया गया; राजनीतिक कारणों से एक नाटक पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया; कम्यूनिस्ट संगीतकारों को परेशान किया गया; प्रसिद्ध कम्यूनिस्ट संवाद-दाताओं को अपने मत व्यक्त करने के कारण प्रेस से और पार्टी से निकाल दिया गया। सबसे बुरी बात यह थी कि 'इरोडाल्मी उसजाग' के एक अंक को जब्त कर लिया गया; 'यह निश्चित है कि इसके पूर्व किसी भी जन-प्रजातंत्र में कम्यूनिस्ट सरकार द्वारा कम्यूनिस्ट भावना से सम्पादित किसी पत्र को जब्त नहीं किया गया था।' अन्य कार्यों की निन्दा 'नेतृ-वर्ग की निरंकुश, अप्रजातांत्रिक पद्धति' कह कर की गयी।

जब इस घोषणा-पत्र को लेखक-यूनियन में पार्टी के सदस्यों के मध्य प्रचारित किया गया, तब उस पर ६३ सदस्यों ने हस्ताक्षर किये। यह संख्या काफी प्रभावोत्पादक थी। यद्यपि इस घोषणा-पत्र को प्रकाशित नहीं किया गया (यह क्रान्ति के एक दिन पूर्व १० अक्तूबर १९५६ को प्रथम बार मुद्रित रूप में प्रकट हुआ) तथापि पार्टी के नेताओं को खतरे की गन्ध मिल गयी और उन्होंने लेखकों को अपने हस्ताक्षर वापस लेने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया। केवल चार ने अपने हस्ताक्षर वापस लिये।

इस विफलता के पश्चात् हंगेरियन कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने साहित्य के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव का प्रारूप तैयार किया, लेखक-यूनियन के कम्यूनिस्ट सदस्यों की बैठक आयोजित की और उनसे प्रस्ताव का समर्थन करने की मांग की। उनमें से अधिकांश ने अस्वीकार कर दिया और दस प्रमुखतम लेखकों ने लेखक-यूनियन में अपने पदों से त्यागपत्र दे दिया। उन्हें पार्टी की ओर से

कठोर डांट-फटकार मिली तथा चेतावनी दी गयी कि दूसरे अपराध का अर्थ होगा पार्टी से निष्कासन।

कम्यूनिस्ट लेखकों द्वारा इस प्रकार अस्वीकृत कर दिया गया। प्रस्ताव १० दिसम्बर को प्रकाशित किया गया। इसके द्वारा उन्हें इस बात के लिए डांट बतायी गयी कि उन्होंने "समाजवादी पृष्ठभूमि का परित्याग कर दिया है...... श्रमिक वर्ग में उनका विश्वास डिग गया है तथा वे निराशावाद एवं उत्साहहीनता के शिकार हो गये हैं...... वे ह्रासशील वर्गों एवं अत्यन्त पिछड़े हुए स्तर के वकील बन गये है।"

प्रस्ताव में घोषित किया गया कि ये बातें साहित्यिक पथभ्रष्टता मात्र नहीं थीं: "... उस प्रकार की साहित्यिक प्रवृत्तियों के पीछे जन-प्रजातन्त्र के विरुद्ध किया जानेवाला एक प्रहार छिपा हुआ है, जिसका स्वरूप साहित्यिक नही, प्रत्युत प्रमुखतः राजनीतिक है।"

कतिपय लेखको ने—और प्रस्ताव में उनका नाम भी दिया गया था—१० नवम्बर की लेखक-यूनियन की बैठक का उपयोग 'सामान्य स्थिति एवं श्रमिक वर्ग तथा श्रमजीवी कृषकों के जीवन-स्तर के सम्बन्ध में पूँजीवादियों द्वारा फैलायी गयी निन्दात्मक बातो को प्रतिध्वनित करने के लिए किया। आलोचना की नकाब के अन्तर्गत उन्होने साहित्य का निर्देशन करने की अवश्यकता एवं इस सम्बन्ध में पार्टी के अधिकार को अस्वीकार किया," किन्तु, प्रस्तावमें कहा गया कि "पार्टी और राज्य के उपयुक्त संघटनों का यह कर्तव्य है—और भविष्य में भी उनका यह कर्तव्य रहेगा—कि वे हानिकारक रचनाओं के प्रकाशन को रोक दें।"

इस प्रकार पार्टी ने लेखकों के विद्रोह का सामना खुले युद्ध की घोषणा द्वारा किया। यदि फरवरी १९५६ में मास्को में बीसवी पार्टी कांग्रेस न हुई होती और ख्रुश्चेव का गुप्त भाषण, जिसकी व्याख्या असन्तुष्ट हंगेरियनों ने अपनी स्वतंत्रता के घोषणापत्र के रूप में की, न हुआ होता, तो राकोसी-शासन लेखकों के मुँह को बन्द कर दे सकता था अथवा उनकी गर्दन पर बूट रख सकता था। राकोसी शासन इतना अधिक मास्को-अभिमुख, इतना अधिक लोक-अप्रिय तथा इतनी अधिक घृणा का पात्र था कि, वह इस मत का खण्डन नहीं कर सकता था। असहाय हो कर, विचाराभिव्यक्ति की व्यवस्था करने के प्रयास में, उसने रूढ़िवादी विचार-विमर्श के लिए मार्च १९५६ में एक पेतोयेफी क्लब का संगठन किया। यह प्रथम अवसर नहीं था, जब कम्यूनिस्टों ने एक ऐसे प्रिय नाम को अपनाया था, जिस पर उनका कोई अधिकार नहीं था, किन्तु इस प्रकार के किसी दुरुपयोग ने उनके

चेहरे पर उलट कर इतना भीषण प्रहार कभी नहीं किया था। बुडापेस्ट का अल्पजीवी पेतोयेफी क्लब एक संसद, एक स्वतंत्र वाद-विवाद-संस्था, एक प्रजातांत्रिक मंत्र बन गया। इसके तथा इसकी प्रान्तीय शाखाओं के माध्यम से साहित्यिक तूफान ने विस्तृत हो कर जनता के एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया।

३० मई को सरकारी अर्थशास्त्रियों के एक सम्मेलन के साथ साधारण ढग से सूत्रपात हुआ। दो संध्याओं के बाद भूतकालीन भूलों को स्वीकार करने एवं सुधार करने का वचन देने के लिए पेतोयेफी क्लब के तत्वावधान में साहित्यिक इतिहास सस्था की बैठक हुई। ४ जून को हगेरियन विज्ञान अकादमी का एक अशातिपूर्ण अधिवेशन हुआ। फेरेन्स मुक्सी ने शिकायत की कि कम्यूनिस्ट पार्टी इतिहास-संस्था द्वारा आलोचना का दमन किया जाता है। लाजोस लूकाक्स ने कहा कि अब समय आ गया है, जब पार्टी के इतिहासकारों को केवल 'पार्टी के कतिपय नेताओं की घोषणाओं का बारम्बार स्पष्टीकरण करने' से अधिक कुछ करना चाहिए। इसके अतिरिक्त पार्टी इतिहास-संस्था मास्को की बीसवी पार्टी काग्रेस की सही-सही व्याख्या के मार्ग में बाधाए डाल रही थी। बुडापेस्ट की लेनिन इन्स्टीट्यूट के आर्पाड काल्मार ने घोषित किया कि विश्वविद्यालयों के छात्रों की विचार-सरणि "प्राथमिक शाला के स्तर की है"। श्रोताओंने हर्ष-ध्वनि की। इतिहास को झूठा बनाया जा रहा है; "मै ये कठोर शब्द कह रहा हूँ, चाहे वे पसन्द आये अथवा न आयें।" द्वितीय विश्व-युद्ध के इतिहास को तोड़-मरोड़ दिया गया था; "मेरा विश्वास है कि यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण है कि सुदूर पूर्वीय युद्ध में सोवियत संघ का प्रवेश जापान की पराजय का मुख्य कारण था।"

अब फेरेन्स सान्था नामक एक नवयुवक लेखक मच पर आया, और साराश रूप से उसने टिटोवादी राष्ट्रीय कम्यूनिज्म के लिए आग्रह किया। उसने कहा—"मेरे मतानुसार हम कम्यूनिज्म को उसी समय स्वीकार कर सकते है, जब उसका उद्भव हमारी इच्छाओं, हमारी परम्पराओं और हमारे रक्त से हो और जब वह हमारे इतिहास के साथ संयुक्त हो।" श्रोताओं ने उसकी बात को पसन्द किया। उसने पुनः कहा—"हमारे देश में कम्यूनिज्म की स्थापना तभी हो सकती है, जब विदेशी तत्वों को समाप्त कर दिया जाय ...."

विश्वविद्यालय में इतिहास-विभाग के अध्यक्ष जानोस वार्गा ने घोषित किया कि इतिहास की मार्क्सवादी व्याख्या के प्रति इसलिए विश्वास नहीं उत्पन्न हो पाया है कि "यह बहुधा सच्ची बात नही बताती है। मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है कि

इस व्याख्या में जान-बूझ कर झूठ बोला गया है। मेरे कहने का अर्थ यह है कि अधिकांश मामलों में इस व्याख्या में पूर्ण सत्य के स्थान पर अर्द्धसत्यों का आश्रय ग्रहण किया जाता है।" उसने 'तथ्यों को किसी सिद्धान्त के साथ जोड़ने', स्रोतों के एकपक्षीय उपयोग और 'उद्धरणों के अनुचित प्रयोग' की निन्दा की।

इर्विन साबो पुस्तकालय की श्रीमती एर्जेबेसेट कोव्स ने कहा कि द्वितीय विश्व-युद्ध के इतिहास के अध्यापन में कतिपय पुस्तकों से ऐसा प्रकट होता है कि ग्रेट ब्रिटेन और सयुक्त राज्य अमरीका सोवियत सघ के नहीं, अपितु नाजी जर्मनी के मित्र राष्ट्र थे। उनके कथन से असहमति नही प्रकट की गयी। उन्होंने कहा कि अमरीका में साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियाँ साम्राज्यवादी प्रवृत्तियो की अपेक्षा प्रबलतर है; स्तालिनवादी ऐतिहासिक रचनाओं में इन तथ्यों की उपेक्षा की गयी है। मास्को पहले से ही इन मिथ्या बातो को ठीक कर रहा है, अतः "इस समस्या के लिए अब हमारे इतिहासकारों में साहस की आवश्यकता नही रह गयी है, उन्हें केवल पुनः सत्य बात पर वापस आ जाने की आवश्यकता है। पार्टी द्वारा इतिहास का विकृत किया जाना जनता की स्मरण-शक्ति के विरुद्ध रहा है।" श्रोताओं ने इस वक्तव्य का अभिनन्दन सराहनात्मक हँसी द्वारा किया। उन्होंने पुन. कहा कि सयोगतः कम्यूनिस्टों ने सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की निन्दा की थी! फिर भी, "हम जानते हैं कि हगरी में फासिस्ट-विरोधी संघर्ष न केवल भूमिगत रूप से, प्रस्तुत संसद में भी जारी था।" यद्यपि कम्यूनिस्टों ने इस बात का खण्डन किया, तथापि जनता अधिक अच्छी तरह से जानती थी।

ग्योर्गी लिटवान ने इस बात का विरोध किया कि प्रत्येक वर्ष शिक्षकों को अपनी बातों का स्वय खडन करना पड़ता है तथा पहले वर्ष में उन्होंने जो कुछ पढ़ाया था, उसके विपरीत पढ़ाना पड़ता है। उसने कहा, "जब कि हम निरन्तर उन्माद के विरुद्ध उपदेश देते रहते है, तब ये समस्त अन्तर्विरोध युवकों के मध्य उन्माद की सृष्टि करते है।" "सोवियत संघ के प्रमुख एवं आदर्श कार्य पर निरन्तर बल देते रहने से भी" उन्माद की सृष्टि होती है। उसने अन्त में कहा कि पश्चिम की शाश्वत आलोचना करते रहने से पश्चिम के प्रति सहानुभूति ही उत्पन्न होती है।

मिकलोस ज्रिनयी सैनिक विद्यालय के प्राध्यापक गर्गली डोमोटोर ने हंगरी के सैनिक भूतकाल के अध्यापन में तथ्यों के प्रति उदासीनता पर ध्यान केन्द्रित किया। डोमोकोस कोसैरी ने भी वही बात कही और हंगरी के इतिहास की व्याख्या "स्तालिन की रचनाओं के प्रकाश में" करने की आवश्यकता पर खेद व्यक्त किया।

अभी तक किसी भी वक्ता के भाषण में शोर-गुल नहीं किया गया था। फिर भी, अब बुडापेस्ट विश्वविद्यालय में इतिहास की प्राध्यापिका और शांति-अभियान की अध्यक्षा मैडम एर्जेवेसेट भाषण करने के लिए खड़ी हुईं। उनके भाषण ने बैठक को भग कर दिया। उन्होंने कहा कि पहले की अनेक पीढ़ियों मे ऐतिहासिक सत्य का स्पष्टीकरण करने के लिए जितना किया गया था, उससे अधिक विगत कुछ वर्षों में किया गया था।

जन-समूह, जिसमे मुख्यतः विश्वविद्यालय के छात्र सम्मिलित थे, हो-हल्ला करने लगा। प्राध्यापक मुस्कराने लगे।

उन्होंने पुनः कहा—"यदि कोई व्यक्ति यह सिद्ध करने का प्रयास करता है कि मार्क्सवादी इतिहास ने गलतियाँ की है......"

"क्या आप ऐसा नही सोचती है?" के नारों ने उनके भाषण में व्याघात उत्पन्न किया।

"और मार्क्सवादी इतिहास-लेखन सत्य के लिए हमारे नवयुवकों की इच्छा की हत्या कर देता है......"

"यह ऐसा करता है, यह ऐसा करता है"—छात्रो ने चिल्ला कर कहा।

"तो वह बीसवी पार्टी कांग्रेस की कार्रवाइयों के विवरण का अध्ययन करे," उन्होंने आगे कहा—"उस पर विश्वास मत कीजिये ..."

"हमें किस पर विश्वास करना चाहिए?"—श्रोताओने प्रश्न किया।

"हम अपनी भूतकालीन गलतियों को स्वीकार करते है"—उन्होंने कहा।

"आप नही करती"—श्रोताओ ने तर्क किया।

"किन्तु आलोचना का अर्थ यह नहीं है कि हम अपनी सफलताओं का उपहास करें। यह सत्य नही है, यह द्वंद्वात्मक नही है।"

श्रोता इतनी देर तक हँसते रहे कि वे अपना भाषण समाप्त नही कर सकीं।

प्रत्यक्षत. इस शत्रुतापूर्ण प्रदर्शन से अभिभूत होकर पेतोयेफी क्लब के अफसरों ने दस दिनों तक एक दूसरी बैठक का आयोजन नहीं किया। १४ जून को दार्शनिकों के सम्मेलन में मुख्य भाषण हगरी के सर्वश्रेष्ठ मार्क्सवादी दार्शनिक और साहित्य-समालोचक प्रोफेसर ग्यार्गी लुकाक्स द्वारा किया गया, जिन्होंने फैक्टरियों के समान संस्कृति एव ज्ञान-विहीन दार्शनिकों के उत्पादन पर खेद प्रकट किया। दूसरे दिन बुडापेस्ट के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों ने अपनी बढ़ती हुई समस्याओं पर विचार-विमर्श किया। दो दिन बाद जन-महाविद्यालयों (People's colleges) के शिक्षक, जिन्हे राकोसी के दमन की

निकृष्टतम अवधि में बरखास्त कर दिया गया था, अपने अभाव-अभियोगों को व्यक्त करने के लिए पेतोयेफी क्लब की छत के नीचे एकत्र हुए।

अब पेतोयेफी क्लब के संगठनकर्त्ताओं को इस बात का पता चला कि उन्होंने लेखकों के तूफान को नियन्त्रित करने के स्थान पर उसे संस्कृति के समस्त पड़ोसी क्षेत्रों में प्रवाहित होने की अनुमति प्रदान कर दी है अथवा इसमें सहायता पहुंचायी है और इससे उन्हें अत्यधिक विस्मय हुआ। सारांशतः पेतोयेफी क्लबों ने एक खुले राजनीतिक मंच का रूप धारण कर लिया था। समस्त हंगरी में इसी उद्देश्य से पेतोयेफी क्लबों की स्थापना होने लगी। कम्यूनिस्ट पार्टी इस घटना-क्रम की ओर संशय के साथ देखने लगी, किन्तु वह आन्तरिक मतभेदों से ग्रस्त थी, राकोसी की बर्खास्तगी की अफवाहें समस्त देश में फैल रही थी और अभी तक कोई भी व्यक्ति पेतोयेफी क्लबों पर प्रहार करने के लिए तैयार नहीं प्रतीत होता था।

बुडापेस्ट के पेतोयेफी क्लब की गतिविधि १९ जून १९५६ को शिखर पर पहुँच गयी। इस बार उसकी बैठक एक नाट्य-गृह में हुई, जिसमे आठ सौ व्यक्तियो के बैठने के लिए स्थान था और संध्या समय ७ बजे के लिए इतनी संख्या मे निमंत्रण-पत्र भेजे गये थे। साढ़े चार बजे तक प्रत्येक स्थान भर चुका था। साढे ६ बजे जब कार्रवाई प्रारम्भ हुई, तब खड़े रहने वाले व्यक्तियों ने गलियारों में, खिड़कियों पर, मंच पर तथा अन्य प्रत्येक घन इंच उपलब्ध स्थान पर अधिकार जमा लिया था। नाट्य-गृह में कम से कम पन्द्रह सौ व्यक्ति थे और उनमें से अनुमानतः तृतीयांश वर्दीधारी सैनिक अधिकारी थे। यह एक उष्ण, आर्द्र संध्या थी। सर्वसम्मति से कोई भी व्यक्ति धूम्रपान नही करता था। खाने और पीने का कोई प्रश्न ही नहीं था। फिर भी, श्रोताओं में से प्रत्येक व्यक्ति प्रातःकाल साढे-तीन बजे तक हाल में उपस्थित रहा।

उन पूरे नौ घण्टों में क्रुद्ध लहरें तानाशाही के बाँध पर प्रहार करती रहीं। कोई योजना नहीं थी, कोई आकल्पन नहीं था, केवल एक प्राकृतिक शक्ति थी, जो अपने को संयमित करने वाली बाधा के विरुद्ध युद्ध कर रही थी। एक गैरसरकारी संसद का अधिवेशन हो रहा था, जो तानाशाही हंगरी में एक विचित्र वस्तु थी।

बैठक का आयोजन युद्धकालीन नाजी-विरोधी भूमिगत आन्दोलन में काम करने वाले कम्यूनिस्टों तथा होर्थी-शासन में गैरकानूनी रूप से काम करने वाले कम्यूनिस्टों को, जिनका हगरी की युद्धोत्तरकालीन पिछलग्गू सरकार ने शुद्धीकरण कर दिया था,

आत्माभिव्यक्ति का सुअवसर प्रदान करने के लिए किया गया था। (उनका कम्यूनिज्म सम्भवतः राकोसी के लिए अत्यधिक आदर्शवादी था।)

कार्यक्रम के अनुसार प्रथम वक्ता, पार्टी के दैनिक पत्र "साबाद नेप" का सम्पादक मार्टन होरवाथ था। उसने एक संक्षिप्त, व्यग्रतापूर्ण, परिचयात्मक वक्तव्य दिया : मै आत्मालोचना करूँगा, दूसरों को भी ऐसा ही करना चाहिए, अनेक गलतियां की गयी थीं, मास्को की बीसवीं पार्टी कांग्रेस द्वारा घोषित नयी नीति के पहलू के अन्तर्गत उनकी पुनः परीक्षा की जानी चाहिए।

टिबोर डेरी उत्तर देने के लिए उत्तेजित हो गया। प्रख्यात कम्यूनिस्ट लेखक, होर्थी की तानाशाही में भूमिगत रहकर संघर्ष करने वाले कम्यूनिस्ट डेरी ने एक उपन्यास लिखा था, जिसकी निन्दा पार्टी ने इसलिए की कि उसमें एक पूँजीवादी प्राध्यापक का अत्यन्त सहानुभूतिपूर्ण चरित्र-चित्रण किया गया था। डेरी ने कहा कि हाल में सेसरशिप की बुराइयों के सम्बन्ध में बहुत कुछ सुना गया है, किन्तु "आइये, हम विशेष बातों पर विचार करें। विशेषतः यहां मार्टन होरवाथ है। वह स्वयं अपने लिए नहीं बोलता है, फिर भी, कभी-कभी यह जानना मुश्किल होता है कि वह पार्टी के लिए बोलता है। एक दिन वह अत्यन्त दक्षिणपन्थी रहता है, तो दूसरे दिन उग्र वामपन्थी हो जाता है; हम कैसे जानें कि वह किस का प्रतिनिधित्व करता है?" (स्पष्ट है कि होरवाथ बीसवी पार्टी कांग्रेस द्वारा अनजाने में ही अपने सिर पर किये गये प्रहारों से चकरायी हुई कम्यूनिस्ट पार्टी की निरुद्देश्य गतिविधियों को प्रतिबिम्बत करता था।) तत्पश्चात् डेरी भूतपूर्व संस्कृति-मंत्री (और संस्कृति पर प्रहार करने वाले) जोसेफ रिवाई की ओर मुड़ा और कहा कि "वह जानता है कि वह झूठ बोल रहा है, किंतु झूठ बोलना जारी रखता है।" वर्तमान संस्कृति-मंत्री जोजेफ डारवास के सम्बन्ध में उसने कहा, "वह स्वयं अपने से भयभीत है। उसके संबंध में मुझे कुल इतना ही कहने की आवश्यकता है।"

डेरी ने प्रश्न किया—"हमारे समस्त संकटों का कारण क्या है? कोई स्वतंत्रता नहीं है। मैं आशा करता हूं कि अब पुलिस का आतंक नहीं रह जायगा। मै आशावादी हूं; मैं आशा करता हूं कि हम शीघ्र ही अपने वर्तमान नेताओं से मुक्ति पा जायंगे। हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि ऊपर से आज्ञा मिलने पर ही हमें इन बातों पर विचार-विमर्श करने की अनुमति प्राप्त हुई है। उनका विश्वास है कि अत्यन्त गर्म हो गये 'बायलर' से थोड़ी-सी भाप को निकल जाने देना उत्तम है। हम कार्य चाहते है तथा और अधिक भाषण करने का सुअवसर

चाहते है । मैं साहित्य के भविष्य को मार्टन होरवाथ के हाथों में नहीं सौपूंगा । वह अन्य बातों के साथ-साथ कला में विकृतियां लाने के लिए उत्तरदायी है ”

डेरी अपनी वक्तृता के अन्त पर पहुँच गया था । उसने कहा था, “ हम अनेक बातों के लिए संघर्ष करते रहे है, किन्तु हमने मुख्य बात मानवतावाद का विस्मरण कर दिया है । ”

दूसरे वक्ता, एक कम्यूनिस्ट पत्रकार टिबोर मिराई ने उपसंस्कृति-मत्री मिहाली की आलोचना करते हुए कहा—“ उसे विश्वविद्यालय में पत्रकारिता का प्राध्यापक किस प्रकार नियुक्त कर दिया गया है ? उसके पास पहले से ही दस काम है । ” एक दूसरे कम्यूनिस्ट पत्रकार अलेक्जेण्डर फेकेटी ने, जो उसी दिन मास्को से लौटा था, बताया कि वहां रूसी और युगोस्लाव कामरेडों ने उससे क्या कहा था । उन्होंने कहा था कि यदि तुम हंगरी में एक सास्कृतिक क्रान्ति चाहते हो, “ तो तुम पत्रकारों को ही उसका सूत्रपात करना होगा । ”

एक नवयुवक भौतिक विज्ञानवेत्ता ने, जिसने आपना नाम जानोसी बताया और जो डबलिन के ट्रिनिटी कालेजमें अणु-विज्ञान का भूतपूर्व अनुसंधानकर्त्ता छात्र था, पश्चिमी ब्राडकास्टों को अवरुद्ध करने के लिए शासन की निन्दा की । उसने कहा कि हम केवल पश्चिमी स्टेशनों से ख्रुश्चेव के गुप्त भाषण को सुन सकने में सफल हुए थे । “ हंगरी में पश्चिमी समाचार-पत्रों के प्रवेश की अनुमति प्रदान की जानी चाहिए...... कारागारों में पड़े हुए व्यक्तियों को पुनर्वासित किया जाना चाहिए । ये वास्तविक प्रजातंत्र के कार्य है । ”

होरवाथ की ओर, जिसने आलोचना के लिए कहा था, इंगित करते हुए ग्योर्गी नेमेज ने कहा कि मैं उसे आलोचना प्रदान करूंगा : १९५१ में “ साबाद नेप ” मे काम करनेवाले बावन पत्रकारों में से केवल छै अभी तक वहां काम कर रहे है । शेष में से अनेक जेलों में पड़े हुए है ।

बाहर एक बड़ा जनसमूह एकत्र हो गया था । हजारों व्यक्तियों ने नाट्य-गृह के चारों ओर की गलियों को अवरुद्ध कर दिया था । एक अज्ञात व्यक्ति ने दीवार के बाहर लाउड स्पीकर लगाने का आदेश दे दिया ।

अब पीटर कुक्जका नामक एक नवयुवक कवि ने पार्टी के प्रथम सचिव, हंगरी के सर्वेसर्वा, राकोसी पर प्रचण्ड प्रहार किया । उसने कहना प्रारम्भ किया—“एक अच्छे पत्रकार की विशेषता होती है एक कार, एक शोफर और एक विशेष दूकान”, जहाँ वह साधारण जनता के लिए अनुपलब्ध वस्तुओं को खरीद सके । “उसके लिए सत्य लिखना आवश्यक होता है । फिर भी, हमारे देश में सत्य का पार्टी की

परिवर्त्तनशील नीति के अनुरूप होना आवश्यक है। १९४९ में राकोसी ने कहा था कि लास्लो राज्क एक देशद्रोही था। १९५५ में उसने कहा कि राज्क एक प्रासाद-षड्यंत्रकारी था। इस वर्ष वह राज्क को कामेरड कहकर सम्बोधित करता है। पार्टी पर से नहीं, किन्तु उसके नेताओं पर से जनता का विश्वास उठ गया है... सत्य का अस्तित्व केवल वहीं रह सकता है, जहाँ स्वतंत्रता का अस्तित्व हो। हम स्वतंत्र प्रेस की मांग करते है...वह किस प्रकार का प्रेस है, जो "साबाद नेप" में इमरे नाज की आलोचना करता है, किन्तु अपना बचाव करने के लिए उसे कोई स्थान नही प्रदान करता।... हंगेरियन प्रेस के ह्रास और निम्न स्तर का कारण राष्ट्रीय-करण था। हम कहते हैं कि ख्रुश्चेव के भाषण को पूर्ण रूप से प्रकाशित किया जाय।" यह स्पष्ट रूप से विघातक कार्य था।

अब फाँसी पर लटका दिये गये लास्लो राज्क की विधवा पत्नी श्रीमती राज्क बोलने के लिए खड़ी हुईं। जिस समय वे बोलने के लिए खड़ी हुईं, उस समय प्रबल एवं दीर्घकालीन हर्ष-ध्वनि की गयी। उन्होंने कहा कि मैं नहीं चाहती कि मेरे पति के साथ जो कुछ किया गया, उसके कारण मुझे एक वीरांगना बना दिया जाय। उन्होंने केवल इतना कहा कि जिन लोगों ने उनके पति की हत्या की थी, उन्हें पदच्युत कर दिया जाय। वे स्वयं वर्षों तक जेल में रह चुकी थी; हंगेरियन जेल जन-प्रजातंत्र के लिए कलंक-तुल्य थे। जब उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया, तब श्रोताओं ने देर तक हर्षध्वनि की।

एक नवयुवती महिला ने, जिसने अपना नाम नही बताया और केवल इतना कहा कि मैं विश्वविद्यालय में दर्शन शास्त्र की प्राध्यपिका हूँ, भाषण करने की अनुमति मांगी और प्रमुख कम्यूनिस्टों की गैर-कम्यूनिस्ट जीवन-पद्धति की ओर ध्यान आकृष्ट किया। उसने कहा कि वे पांच कमरों वाले भवनों में रहते हैं और इस बात को भूल जाते है कि अनेक परिवारों को एक ही कमरे में भेड़िया-धँसान करनी पड़ती है; वे अपने कपड़े और खाद्य-सामग्रियाँ विशेष बन्द दूकानों में खरीदते है, जब कि औसत नागरिकों को पर्याप्त भोजन नहीं मिलता। पार्टी के नेताओं का साधारण सदस्यों और जनता के साथ सम्पर्क नहीं रह गया है। "पार्टी के नेतृत्व में परिवर्त्तन आवश्यक है।"

"शासन का नाश हो!" श्रोताओंने चिल्लाकर नारा लगाया—"इमरे नाज चिरायु हों।"

"साबाद नेप" के सम्पादक मार्टन होरवाथ को शासन का बचाव करने की अनुमति प्राप्त हुई। तीन अवसरों पर उसकी आवाज शोर-गुल में विलीन हो गयी। "पार्टी का अपमान मत कीजिये"—उसने अनुरोध किया।

"हम ही पार्टी है"—आर्केस्ट्रा मे से एक व्यक्ति ने उत्तर दिया। "आइये हम लास्लो राज्क के शव को खाई में से निकाल कर उसे समुचित रीति से दफन करें"—एक दूसरे व्यक्ति ने चिल्ला कर कहा।

"हम इसे सैण्डोर पेतोयेफी क्लब क्यो कहते है?" एक तीसरे श्रोता ने प्रश्न किया—"पेतोयेफी ने तो प्रेस की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया था।"

"जो हमे प्राप्त नही है"—एक पडोसी ने इतना जोड़ दिया।

"आप ठीक कहते है"—होरवाथ ने अप्रत्याशित रूप से स्वीकार किया।

"आप यह बात हमे बता रहे है!"—एक श्रोता ने जोर से कहा। श्रोता जोर से हँस पडे; होरवाथ ने कन्धे हिलाये और पुन: अपने स्थान पर बैठ गया।

पेतोयेफी क्लब की इस बैठक की शाब्दिक रिपोर्टें बुडापेस्ट में फैल गयीं; यह घटना प्रत्येक व्यक्ति की जबान पर थी। यह एक राष्ट्रीय गर्व की बात बन गयी। जब २७ जून को तीसरे पहर एक और बैठक का आयोजन किया गया, तब छै हजार व्यक्ति एकत्र हुए। यह बैठक आधी रात तक चलती रही और इसका स्वर अधिक आन्दोलित था, इसमें किये गये भाषण पहले की बैठक में किये गये भाषणों की अपेक्षा अधिक विरोधपूर्ण थे।

बैठक के अध्यक्ष ने जब उसकी कार्रवाई को समाप्त किया, उसके सात घण्टे बाद पोजनान के श्रमिकों ने आम हड़ताल कर दी। ये दोनों घटनाएं किसी भी प्रकार सम्बद्ध नही थीं, किन्तु २८—२९ जून के पोजनान-विद्रोह को एक बहाना बना कर राकोसी ने ३० जून को हंगरी में समस्त पेतोयेफी क्लबों को बन्द कर दिया।

फिर भी, राकोसी को उसके थोडे ही समय बाद मास्को बुला लिया गया और १८ जुलाई को उसने हंगरी में अपने समस्त पदों से त्यागपत्र दे दिया तथा अपनी मंगोलियन पत्नी के साथ बाह्य मंगोलिया में रहने के लिए चला गया।

प्रथम सचिव के रूप में राकोसी के उत्तराधिकारी एर्नो गेरो में उसके पूर्वाधिकारी के कौशल एवं कौटिल्य के अधिकांश भाग का अभाव था, किन्तु उसकी कठोरता एवं निरंकुशता का तनिक भी अभाव नहीं था, किन्तु उसे भिन्न एवं कठिन समय में काम करना पड़ा, जिससे उसकी निर्दयता पर अंकुश लग गया।

पेतोयेफी क्लबों को पुनः वैधनिक घोषित कर दिया गया। लेखकों का विद्रोह नयी ऊंचाइयों पर पहुंच गया। जनता कष्टों एवं प्रतिबन्धों के सम्बंध में बातें करने

लगी । शासन कम्यूनिस्टों का था, किन्तु सर्वत्र भ्रान्ति का बोलबाला था । १९५६ की पूरी ग्रीष्म ऋतु में हंगरी तूफान में बिना सहारे के डोलता-हिलता रहा । अक्तूबर के प्रारम्भिक दिनों में गेरो ख्रुश्चेव से सत्ता एव टिटो से प्रतिष्ठा प्राप्त करने के प्रयास में याल्टा पहुंचा । स्पष्टतः हंगेरियन कम्यूनिज्म की पकड़ समाप्त हो चुकी थी । फिर भी, कोई भी व्यक्ति सशस्त्र क्रान्ति का उपदेश नहीं देता था और न अधिकारियों को, न राष्ट्र को ही उसकी आशंका थी । सामान्य धारणा के अनुसार शक्ति-प्रयोग द्वारा किसी तानाशाही को समाप्त नही किया जा सकता ।

क्रान्ति के पूर्व के उन महीनों में जो मनः स्थिति थी, उसका सम्भवत· सर्वोत्तम वर्णन नवयुवक कम्यूनिस्ट लास्लो बेंजामिन की लेखनी से निस्सृत एक प्रकाशित कविता में किया गया है । वह क्लान्त, पूर्णतः निराश, फिर भी देशभक्त और प्रकटत· अप्राप्य स्वतंत्रता का स्वप्न देखने वाला था और उसने लिखा—

मेरा कोई भाग्य नहीं, कोई धर्म नहीं, कोई ईश्वर नही ।
चमत्कार के स्वप्न अब मुझे घेरे हुए नहीं रहते ;
न स्वनिर्मित देवताओं की चाले ही ।
यदि—संघर्षरत और संकटग्रस्त—
मैं अब भी कुछ करने का प्रयत्न करता हूँ तथा कार्य करता हूँ
—यथा सम्भव अच्छी से अच्छी तरह से—
तो वह इसलिए कि किसी भी व्यक्ति को
अपना कार्य स्वतंत्रतापूर्वक करने दिया जायगा
तथा उसे क्षति नही पहुंचायी जायगी
अथवा हिंसा का शिकार नहीं बनाया जायगा,
न उसके विरुद्ध मिथ्या आरोप लगाये जायेगे
और यह छोटा-सा हंगरी
एक दिन वास्तविक स्वदेश बन जायगा
अपने राष्ट्र का देश ।

अध्याय १९

एक भीषण नाटक

मास्को के समस्त पथ-प्रदर्शन और स्वय उनके मार्क्सवादी दिशा-सूचक यंत्रों के बावजूद हगरी के कम्यूनिस्ट नेताओं को इस बात का ज्ञान नही था कि वे किस दिशा में जा रहे थे। यह बात सन्देहास्पद ही है कि सरकार में सम्मिलित किसी व्यक्ति ने अथवा सरकार-विरोधी किसी व्यक्ति ने सोचा था कि राजनितिक ज्वालामुखी का विस्फोट होगा। फिर भी, प्रत्येक आर्थिक और राजनीतिक स्थिति स्पष्टतः अस्त-व्यस्त हो गयी थी और प्रकटत. बुडापेस्ट के बौनो ने निराश हो कर एक तिनके का सहारा लिया: उन्होने लास्लो राज्क के अवशेषों को बाहर निकालने तथा उन्हें हगरी के राष्ट्रीय वीरों के मकबरे कोस्सुथ मकबरे में, जिसका यह नामकरण १८४८ की क्रान्ति के जनक लुईस कोस्सुथ के नाम पर किया गया है, दफनाने का आदेश दिया।

६ अक्तूबर १९५६ को बुडापेस्ट की फैक्टरियाँ, कार्यालय और स्टोर बन्द रहे और कई लाख व्यक्ति १९४९ में "टिटोवाद" के आरोप में फाँसी पर लटकाये गये कम्यूनिस्टों—राज्क, एण्डरास सालाई, डा. टिबोर सोन्यी और मेजर जनरल ग्योर्गी पाल्फी—की धातु-निर्मित शव-मंजूषाओं की बगल में चल रहे थे।

हंगेरियन सरकार और कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रमुख सदस्य मृतकों के सम्मान में दी जाने वाली सलामी में सम्मिलित थे। मास्को-स्थित भूतपूर्व हंगेरियन राजदूत फेरेन्स म्युएन्निख ने भाषण किया और फांसियों के लिए उत्तरदायी व्यक्तियों के सम्बन्ध में कहा कि वे "निरकुश अपराधी थे, फिर भी, जिनके विरुद्ध हम शव-क्रिया के दिन मुकदमा चलाना नहीं चाहते।" उनमें से एक (स्तालिन) तो इस संसार से ही विदा हो चुका था और उसके विरुद्ध मुकदमा चलाया ही नहीं जा सकता था। राज्क के जीवित सह-अभियुक्त श्री बेला सास ने कहा—"हम न केवल मृतकों को दफनाना चाहते हैं, प्रत्युत साथ ही साथ उस अवधि को भी दफना देना चाहते हैं, जिसमें हिंसा का शासन था।" उपप्रधान मंत्री ऐन्ताल ऐप्रो ने घोषित किया कि हम जिन व्यक्तियों को पुन: दफना रहे है, वे "मिथ्या एवं उत्तेजनात्मक अभियोगों" के शिकार थे।

श्रीमती राज्क नंगे सिर और अपने कन्धों पर एक बरसाती कोट डाले हुए दर्शकों के बीच में खड़ी थीं। कोट के भीतर उन्होंने एक सात वर्षीय बालक को

अपने से चिपका रखा था। उसकी आंखों में अबोधगम्यता की दृष्टि थी। श्रीमती राज्क की बगल में उस न्यायिक हत्या के परिणामस्वरूप विधवा हो गयी दूसरी महिला श्रीमती सालाई खड़ी थी। उनका हाथ उनकी छोटी पुत्री के, जो मैदान की ओर देख रही थी, कन्धे पर था। दोनों बालकों में से कोई भी अपने पिता को नहीं जानता था।

जिस समय, राज्क को फांसी पर लटकाया गया, उस समय उनकी आयु चालीस वर्ष की थी। उन्होंने स्पेन में अन्तरराष्ट्रीय ब्रिगेड में रहकर युद्ध किया था और द्वितीय विश्व-युद्ध के समय उन्हें गैरकानूनी हंगेरियन कम्यूनिस्ट पार्टी का मन्त्री नियुक्त किया गया। युद्धोत्तरकालीन हंगेरियन सरकार में वे पहले स्वराष्ट्र-मंत्री और तत्पश्चात् विदेश-मंत्री रहे।

३० मई १९४९ को पुलिस की एक कार आयी और उनको तथा उनकी पत्नी जूलिया को उठा ले गयी। उसी दिन उन्होंने जूलिया को राज्क से अलग कर दिया और एक ही जेल में रहते हुए भी उसने उसको पुनः कभी नहीं देखा। जिस समय वे राज्क को यातनाएं दे रहे थे और उस पर मुकदमा चला रहे थे, उस समय वह निकट ही थी, किन्तु वहाँ पहुँच नहीं सकती थी। वह इतनी निकट थी कि उसकी फांसी के आदेश को सुन सकती थी। एक अफसर ने जल्लाद का नाम लेकर कहा—"गेजा, फांसी का काम सम्पन्न किया जा सकता है।" श्रीमती राज्क कहती है—"इन शब्दों को मैंने सुना तथा उसके पैरों के नीचे से कुर्सी के हटाये जाने की आवाज को भी मैंने सुना...और प्रातःकाल की निस्तब्धता में मैं समझ गयी कि एक चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया था।" वे फांसी देने के स्थान के ठीक पास एक कोठरी में बन्द थीं और कारावास की अपनी अवधि में उन्होंने इक्यावन अन्य फांसियों के आदेश भी सुने।

"उन्होंने लास्लो जैसे व्यक्ति के साथ जो कुछ किया, वह भयंकर था"— उन्होंने एक युगोस्लाव पत्रकार से कहा, जिसने सरकारी शव-संस्कार के बाद उनसे मुलाकात की थी और जिसके समक्ष उन्होंने इन हृदय-विदारक अनुभवों का वर्णन किया।

जिस समय उन्होंने राज्क और उसकी पत्नी को गिरफ्तार किया, उसी समय उन्होंने उनके चार महीने के पुत्र लास्लो जूनियर को भी गिरफ्तार कर लिया। यद्यपि बुडापेस्ट में उनके सम्बन्धी थे, तथापि लड़के को उन्हें नहीं दिया गया। उसका नाम बदल कर इस्तवान कोवाक्स कर दिया गया और उसका पालन-पोषण

ऐसे व्यक्तियों द्वारा किया गया, जिन्हें इस बात का पता नहीं था कि वह कहाँ से आया था। ढाई वर्ष बाद गुप्त पुलिस का एक अधिकारी जूलिया राज्क की बहन के घर आया और उससे पूछा कि क्या वह लड़के को रखेगी, किन्तु वे लड़के को उसके निवास-स्थान पर नही लाये और न उसको उसे लेने के लिए आने की अनुमति दी। निर्धारित समय पर वारी स्ट्रीट के कोने पर "पर्दे से ढकी हुई एक कार प्रकट हुई। वह रुकी और दरवाजा खुला, बालक को सड़क पर छोड़ दिया गया और दूसरे ही मिनट कार लापता हो गयी।"

जूलिया राज्क पांच वर्षों तक जेल में रही और इस अवधि में उसे अपने पुत्र के सम्बन्ध में कोई समाचार नहीं प्राप्त हुआ। उसे यातनाएं दी गयी, जब वह यातनाओं को और अधिक नहीं सहन कर सकी, तब उसने विधिवत् अपराध स्वीकार कर लिया और उन्होंने उसे दण्डित कर दिया। १९५४ में उसे रिहा किया गया, किन्तु जूलिया राज्क अथवा श्रीमती लास्लो राज्क के रूप में नहीं। अधिकारियों ने उसे एक कागज दिया, जिस पर उसका नाम श्रीमती लास्लो ग्योर्की लिखा गया था। उसे अपने नाम का प्रयोग करने के अधिकार से वंचित कर दिया गया, हंगरी मे "राज्क" एक अनुल्लेखनीय शब्द था।

जुलाई १९५६ में जोजेफ काटोना स्ट्रीट पर स्थित जूलिया राज्क के मकान के सामने, जिसमें वह अपनी माँ और पुत्र के साथ रहती थी, एक बड़ी कार आ कर रुकी। उसमें से हंगरी के महा अभियोक्ता बाहर निकले। वे अपने साथ दो कागज लेकर आये थे। एक के द्वारा उसकी सजा रद्द की गयी थी। दूसरे के द्वारा लास्लो राज्क की सजा रद्द की गयी थी और घोषित किया गया था कि उसके विरुद्ध लगाये गये समस्त आरोप कपोल-कल्पित थे। अब वह पुनः श्रीमती लास्लो राज्क बन सकती थी। उसके पति को दोष-मुक्त कर दिया गया था। "मै सोचती हूँ", उसने जगरेब, युगोस्लाविया के 'वेसनिक' नामक पत्र के संवाददाता डा० जेल्मानोविच से कहा—"कि अब समस्त हंगेरियन राष्ट्र को दोष-मुक्त कर दिया जाना चाहिए। मैं इसके लिए प्रयास करूंगी।"

लास्लो राज्क के पुन. शव-संस्कार का दृश्य यद्यपि एक हृदय-विदारक दृश्य था, तथापि उससे पाप-प्रक्षालन हो गया। किन्तु वह आत्मा की पीड़ा अथवा शिष्टता की आकस्मिक प्रेरणा से प्रेरित नहीं हो सकता था। नये प्रथम सचिव एर्नो गेरो ने सोचा कि इससे उसे जनता का कुछ समर्थन प्राप्त हो जायगा। अनिवार्यतः इसका विपरीत प्रभाव पड़ा, क्योंकि अब समस्त हगरी-वासी सरकार के

ही मुँह से अपने ऊपर शासन करने वाली सरकार के अपराधों और अमानवीयता की प्रचण्डता को जान गये थे।

मृत्यु के समुपस्थित होने पर मनुष्य निस्सार बातों का परित्याग कर देते है और मूलभूत बातों को ग्रहण कर लेते हैं। राज्क की कहानी की समीक्षा करते समय हंगरी-वासियों ने दो प्रकार के सत्य के सम्बन्ध मे कम्यूनिस्ट सिद्धान्त को अस्वीकृत कर दिया। उस समय एक पत्र ने लिखा, "धीरे-धीरे, कम से कम अपने आधे मस्तिष्क से, हम यह विश्वास करने लगे कि ...... पार्टी-सत्य यथार्थ सत्य की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है और सत्य एवं क्षणिक राजनीतिक लाभ समान होते है।" अतः उनसे आशा की जाती थी कि वे राज्क को १९४९ में अपराधी एवं १९५६ में निर्दोष माने, किन्तु "यह एक भयंकर विचार है...... यदि क्षणिक राजनीतिक लाभ सत्य की कसौटी हैं, तो एक 'झूठ' सत्य हो सकता है क्योंकि वह क्षणिक रूप से लाभदायक होता है। ......एक झूठा राजनीतिक मुकदमा एक सच्चा मुकदमा बन सकता है...... जिन लोगों ने झूठे मुकदमों का आविष्कार किया, उनका यही दूषित दृष्टिकोण था ...... इसने हमारे सार्वजनिक जीवन के वातावरण को विषाक्त बना दिया...... हमारी दृष्टि को धुँधली बना दिया, हमारी आलोचनात्मक प्रतिभा को कुण्ठित बना दिया और अन्ततः हमारे लिए सरल सत्य को देख सकना असम्भव बना दिया।" शव-संस्कार के समय उन्होंने सत्य को पहचाना तथा कम्यूनिस्ट पद्धति के दर्शन उसकी समस्त अनावृत्त बेईमानी के साथ किये।

कोई भी व्यक्ति भली भाँति नहीं जानता कि क्रान्तियों का विस्फोट क्यों और कैसे होता है, किन्तु निश्चय ही राज्क के मुकदमे के मिथ्यात्व ने, जिसे पुनः शव-संस्कार से बल मिल गया, राष्ट्र की प्रचण्ड क्रोधाग्नि में घृत का काम किया। शव-संस्कार के सत्रह दिन बाद हंगरी ने विद्रोह कर दिया।

अध्याय २०

हंगरी का ‘ अक्तूबर ’

रूस की बोल्शेविक क्रान्ति ७ नवम्बर १९१७ को हुई, किन्तु पुराने जूलियन कैलेण्डर के अनुसार, जिसे बाद में सोवियतों ने समाप्त कर दिया, तारीख २५ अक्तूबर थी और इसीलिए बोल्शेविक अपनी क्रान्ति को अक्तूबर क्रान्ति अथवा मात्र ‘ अक्तूबर ’ कहते है। गोमुल्का-क्रान्ति २१ अक्तूबर, १९५६ को हुई; हंगरी की क्रान्ति २३ अक्तूबर को हुई। अक्तूबर क्रान्तियों का महीना है।

गैर–हगेरियनों ने कहा, कितने दुख की बात है कि हंगरी की क्रान्ति ने ६ नवम्बर को हुए अमरीकी राष्ट्रपति के निर्वाचन तक प्रतीक्षा नही की। संयुक्त राज्य अमरीका में उस पर अधिक ध्यान दिया गया होता। अन्य व्यक्तियो ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि वह स्वेज-संकट के समय हुई। इसका उत्तर यह है कि कोई भी व्यक्ति किसी क्रान्ति के लिए नियम नहीं निर्धारित का सकता। वह अपने ही रहस्यमय कानूनों का अनुगमन करती है। जब जनता के दुख का प्याला लबालब भर जाता है और उसका धैर्य समाप्त हो जाता है, तब एक महत्वहीन घटना अथवा बुद्धिहीन कार्य शीघ्र ही तूफान उत्पन्न कर सकता है। अतः, वास्तव में, क्रान्तिवादी क्रान्ति के केवल प्रथम कार्य के जनक होते हैं, समस्त तैयारियाँ सत्तारूढ़ सरकार द्वारा की जाती है। जार और अस्थायी सरकार ने बोल्शेविक क्रान्ति को जन्म दिया; मास्को ने गोमुल्का क्रान्ति को जन्म दिया; क्रेमलिन और उसकी हंगेरियन कम्यूनिस्ट कठपुतलियाँ रूस-विरोधी, कम्युनिस्ट-विरोधी हगेरियन क्रान्ति के लिए उत्तरदायी है। मास्को ने आरोप लगाया कि विदेशी एजेण्टों ने हंगेरियन क्रान्ति को भड़काया। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। वे मास्को के एजेण्ट थे। उनके कुकृत्यों, त्रुटियों और खामखयालियों ने हंगरी की क्रान्ति को जन्म दिया तथा उनके निरन्तर दुर्व्यवहार ने उसका पोषण किया।

लेनिन के शत्रु उसके विरुद्ध जर्मन एजेण्ट होने का आरोप लगाते थे। इतिहास का कोई ज्ञान न रखने वाले प्रतिक्रियावादी प्रतिक्रान्तिवादियों को सदा यह बहाना मिल जाता है। जब तक कोई देश तैयार न हो, तब तक एक एजेण्ट अथवा दस हजार एजेण्ट उसे विद्रोह करने के लिए किस प्रकार भड़का सकते हैं? क्या विदेशी एजेण्ट अथवा विदेशी रेडियो ब्राडकास्ट ग्रेट ब्रिटेन अथवा पश्चिमी जर्मनी अथवा स्वीडेन अथवा भारत में क्रान्ति उत्पन्न कर सकते है?

कम्यूनिस्टों के लिए विदेशी एजण्टो की कपोलकल्पना को बनाये रखना आवश्यक है–यद्यपि वे कोई प्रमाण नहीं उपस्थित कर सकते–क्योंकि घरेलू विरोध के अस्तित्व को स्वीकार करने से उनके आदर्श का ताश का घर पूर्णतया धराशायी हो जायगा। यदि मजदूर किसी कम्यूनिस्ट शासन के विरुद्ध है, तो "सर्वहारा वर्ग की तानाशाही" कहाँ रह जाती है? यदि कृषक विद्रोह करते है, तो "मजदूरों और किसानों का राज्य" कहाँ है? यदि बुद्धिवादी असन्तुष्ट है, तो कम्यूमिज्म विफल है। इसके अतिरिक्त कम्यूनिस्ट विगत निर्वाचन में अपने पक्ष में प्राप्त हुए ९९·७ प्रतिशत मतों के साथ अपने विरोध का मेल किस प्रकार बैठा सकते है।

मैने कम्यूनिस्टों के साथ बहुधा प्रजातत्र और बहुदलीय पद्धति के सम्बन्ध में तर्क-वितर्क किया है। वे यह दलील देते है कि विरोधी वर्गों एवं विरोध का अभाव होने पर किसी दूसरे दल की आवश्यकता नही है; "देश नब्बे प्रतिशत से अधिक हमारे साथ है"—जेकोस्लोवाकिया के प्रधान मंत्री ने कहा। जब तथ्यों से इस मिथ्या दावे का खण्डन हो जाता है, तब केवल एक विकल्प रह जाता है: या तो एक से अधिक दलों के लिए अनुमति प्रदान करो या "विदेशी एजेण्टों" का नारा लगाओ।

एक अन्य मिथ्या तर्क की परीक्षा करने की आवश्यकता है: यह आरोप लगाया गया है कि यदि आंग्ल-फ्रांसीसी सेनाए स्वेज नहर पर न उतरी होतीं, तो रूस ने हंगेरियन क्रान्ति का दमन करने के लिए अपनी टैंक-सेना का उपयोग नहीं किया होता। इस अप्रमाणित कथन में तारीखों और सारभूत बात की उपेक्षा कर दी जाती है। मास्को ने हंगरी में टैको का उपयोग २३ अक्तूबर को प्रारम्भ किया। इसरालियों ने मिस्री क्षेत्र में २९ अक्तूबर से पहले प्रवेश नहीं किया; मिस्र को आंग्ल-फ्रांसीसी अल्टिमेटम ३१ अक्तूबर को दिया गया; पश्चिमी सेनाएं पोर्ट सईद में ५ नवम्बर को उतरीं। किन्तु तारीखों की बात जाने दीजिये, मास्को को टैको का प्रयोग करना ही था, अन्यथा वह हंगरी से हाथ धो बैठता। जब हगरी ने अपने-आपको एक बहुदलीय जनतंत्र के रूप में परिणत करने की धमकी दी, तब मास्को ने अतिरिक्त टैकों का प्रयोग किया। सोवियत सीमा पर तथा अन्य पिछलग्गू देशों के अत्यन्त निकट स्थित एक देश में प्रजातंत्र की अनुमति प्रदान करना विनाशकारी सिद्ध हुआ होता। यहाँ तक कि टिटो ने भी इसका स्वागत नही किया और इसलिए रूस के सैनिक हस्तक्षेप का समर्थन किया। प्रजातात्रिक हंगरी कम्यूनिज्म की कनपटी की दिशा मे ताने गये एक रिवाल्वर के तुल्य होता। रूस को इस खतरे को प्रारम्भिक अवस्था मे ही समाप्त कर देना था और यदि विश्व में पूर्णतः

शांति होती, तो भी वह ऐसा करने से रुकता नहीं। स्वेज-काण्ड होता या न होता, क्रेमलिन जानता था कि पश्चिमी राष्ट्र हंगरी की रक्षा करने के लिए तृतीय विश्व-युद्ध नहीं प्रारम्भ करेंगे। स्वेज-काण्ड होता या न होता, रूस को संयुक्त-राष्ट्र-संघ अथवा अन्तरराष्ट्रीय जनमत द्वारा नहीं दबाया जा सकता था। तब मास्को को भय किस बात का था? हंगरी में रूस की विफलता से एक नयी नीति की आवश्यकता हो सकती थी, किन्तु जब विस्फोट हो गया, तब मास्को अपने समस्त साधनों से लड़ने के लिए बाध्य था।

हंगरी की परिस्थितियों ने रूस को प्रतिक्रान्तिवादी बनने के लिए विवश कर दिया। परिस्थितियों ने हंगरी-वासियों को क्रान्तिवादी बनने के लिए विवश कर दिया, फिर भी, क्रान्ति के प्रारम्भ होने से एक घण्टा पहले कोई भी नही जानता था कि क्रान्ति प्रारम्भ होगी। निश्चय ही हंगरी की कम्यूनिस्ट पार्टी के सचिव एर्नो गेरो को किसी प्रकार के संकट की आशंका नही थी क्योंकि वह १५ अक्तूबर से २३ अक्तूबर तक युगोस्लाविया में था और टिटो के साथ भोजन कर रहा था तथा नाटक देख रहा था। प्रधान मंत्री हेगेडूयज तथा पार्टी एवं सरकार के अधिकांश नेता वहाँ उसके साथ थे। जब वे लौटे, तब बुडापेस्ट में अशांति का बोलबाला था।

उनकी अनुपस्थिति में पत्रों में राकोसी के विरुद्ध की जानेवाली आलोचनाएं बढ़ गयीं; मास्को ने उसे बहुत अधिक समय तक सत्तारूढ़ बनाये रखा था। निष्कर्ष रूप से इन आलोचनाओं का लक्ष्य छोटा राकोसी गेरो था। उसी अवधि में कम्यूनिस्ट पार्टी ने इमरे नाज को पुन: सदस्यता प्रदान कर दी और वह पुनः सार्वजनिक रूप से प्रकट हुआ। साथ ही साथ फैक्टरियों और विश्वविद्यालयों ने प्रस्ताव स्वीकृत कर नाज को पुनः पदारूढ़ करने की माँग की। मजदूरों ने वेतन वृद्धि की भी माँग की, कृषकों ने माँग की कि कृषि-उत्पादनों को अनिवार्यतः कम मूल्य पर राज्य को देने की प्रथा समाप्त कर दी जाय।

२०, २१ और २२ अक्तूबर को हंगरी रेडियो सुनता रहा; हंगेरियन भाषा में ब्राडकास्ट करते हुए पश्चिमी स्टेशन, पोलिश स्टेशन तथा हंगेरियन स्टेशन भी पोलैण्ड में रूस के प्राय: हस्तक्षेप एवं गोमुल्का की विजयिनी रक्तहीन क्रान्ति की कहानी बता रहे थे। स्तालिन-विरोधी (गेरो-विरोधी) तत्वों ने प्रकटतः पार्टी के दैनिक मुखपत्र "साबाद नेप" और रेडियो बुडापेस्ट पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया था। वे पोलिश घटनाओं पर उत्साहपूर्वक मत व्यक्त कर रहे थे।

२३ अक्तूबर को प्रातः काल ९ बजे और पुनः १० बजे रेडियो बुडापेस्ट ने उस दिन अपराह्न में ३ बजे पोलिश राजदूतावास तक जानेवाले एक सहानुभूति-सूचक मौन प्रयाण की घोषणा की... १२ बजकर ४३ मिनट पर रेडियो बुडापेस्ट ने घोषित किया कि स्वराष्ट्र-मंत्री लास्लो पिरोज ने जुलूस पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। अपराह्न में १ बजे रेडियो बुडापेस्ट ने घोषित किया कि पेतोयेफी क्लब की एक बैठक हुई, जिसमें एक प्रस्ताव पारित कर माँग की गयी कि सरकार का पुनर्गठन करने एव उसमें नाज को सम्मिलित करने, राकोसी जिन पदों पर अभी तक बना हुआ था, उनसे उसे हटाने, कला के सम्बन्ध में पार्टी के दृष्टिकोण में संशोधन करने तथा हंगेरियन यूरेनियम के उपयोग पर रूस के एकाधिपत्य को समाप्त करने के उद्देश्य से सोवियत सघ के साथ "पूर्ण समानता" के लिए पार्टी की केन्द्रीय समिति का अधिवेशन तत्काल आयोजित किया जाय।.. १ बजकर २३ मिनट पर रेडियो बुडापेस्ट ने घोषित किया कि पिरोज ने पोलिश-समर्थक प्रदर्शन पर से प्रतिबन्ध उठा लिया है तथा हंगेरियन कम्यूनिस्ट लीग उसमें भाग लेगी...बाद में तीसरे पहर मजदूरों, छात्रों, युवक कम्यूनिस्टों का एक विशाल समूह तथा हंगेरियन सेना के सैकड़ों अफसर पोलैण्ड और हगरी के झण्डे लिये हुए कोस्सुथ क्रान्ति में रूसियों और आस्ट्रियनों के विरुद्ध युद्ध करने वाले पोलिश जनरल बेम की प्रतिमा के पार्श्व से होकर गुजरे और जब वे पोलिश राजदूतावास पर पहुँचे, तब हर्ष-ध्वनि की। ४ बजे वे पुष्पों से आच्छादित सैण्डोर पेतोयेफी की प्रतिमा के सामने रुके और इमरे सिंकोवित्स नामक एक अभिनेता द्वारा पेतोयेफी की कविता "उठो, हंगरीवासियो" का गाया जाना सुनने लगे। हगेरियन लेखक-संघ के अध्यक्ष पीटर वेरेस ने अपने चारो ओर एक विशाल वृत्त में एकत्र प्रयाणकर्त्ताओं के समक्ष भाषण करते हुए एक राष्ट्रीय कार्यक्रम का प्रतिपादन किया: राष्ट्रीय समानता और स्वाधीनता (दूसरे शब्दों में रूसी आधिपत्य से मुक्ति); मजदूरों और विशेषज्ञो द्वारा फैक्टरियों का प्रबन्ध, वेतन-पद्धति में संशोधन और उत्पादन की निर्धारित मात्रा की पद्धति (Norm) की समाप्ति, सामूहिक फार्मों का परित्याग करने के लिए कृषकों को स्वतंत्रता तथा राज्य को अनिवार्य रूप से अन्न देने की प्रथा की समाप्ति; राकोसी गुट का अन्त (गेरो के लिए चले जाने का संकेत); नाज की वापसी; संसद के लिऐ स्वतत्र और गुप्त निर्वाचन। वेरेस के शब्द रेडियो बुडापेस्ट द्वारा प्रसारित किये गये...... ६ बज कर ३० मिनट पर रेडियो बुडापेस्ट ने घोषित किया कि पोलिट ब्यूरो की बैठक हुई तथा उसने पार्टी एव सरकार का पुनर्गठन करने के लिए ३१ अक्तूबर को केन्द्रीय समिति की बैठक का आयोजन

किया है...... संध्या समय ७ बजे गेरो ने, जो उसी दिन युगोस्लाविया से लौटा था, रेडियो बुडापेस्ट पर भाषण किया।

उसका भाषण पूर्णतः घातक था। वह सूचना-रहित, भावना-रहित अथवा अनमनीय अथवा तीनों, अथवा रूसियों द्वारा आदिष्ट था और उसने एक कठोर, स्तालिनवादी वक्तव्य दिया—"......हम पूँजीवादी प्रजातंत्र नहीं, अपितु समाजवादी प्रजातंत्र चाहते है...... हमारा श्रमिक वर्ग तथा हमारी जनता हमारे जन-प्रजातंत्र की सफलताओं की रक्षा ईर्ष्यापूर्वक करती है और किसी को भी उनका स्पर्श करने की अनुमति नहीं प्रदान करेगी...... आज हमारी जनता के शत्रुओं का मुख्य उद्देश्य श्रमिक वर्ग की सत्ता को नष्ट करना ...... पार्टी में उनके विश्वास को डिगाना......हमारे देश तथा समाजवाद का निर्माण करने वाले अन्य देशों, विशेषतः हमारे तथा समाजवादी सोवियत संघ के मध्य घनिष्ठ एवं मैत्रीपूर्ण सम्बेन्धों को शिथिल बनाने का प्रयास करना है. .वे सोवियत संघ के विरुद्ध निन्दनीय प्रचार का अम्बार लगाते है। वे घोषित करते है कि सोवियत संघ के साथ हमारा व्यापार एकपक्षीय है तथा कहा जाता है कि हमारी स्वतंत्रता की रक्षा साम्राज्यवादियों से नहीं अपितु सोवियत संघ से करनी है। यह एक निर्लज्जतापूर्ण झूठ है . ...." और इसी स्वर में उसने अन्य बाते भी कहीं।

जिस समय वह भाषण कर रहा था, उसी समय एक लाख व्यक्तियों का एक दूसरा जुलूस बुडापेस्ट की गलियों में से होकर गुजर रहा था। गेरो की घोषणाओं से क्रुद्ध होकर छात्रों ने रेडियो स्टेशन पर धावा बोल दिया। ए. वी. एच. (गुप्त पुलिस) के पहरेदारों ने पराभूत कर दिये जाने के प्रकट भय से कुछ अश्रु गैस छोड़ी और भीड़ में गोलियाँ चलायीं। पुरुष और स्त्रियाँ मारी गयीं। प्रदर्शनकारियों ने पुनः स्टेशन पर धावा बोला और पुनः उन्हें पीछे हटा दिया गया तथा उनमें से कुछ हताहत हुए। वे मुड़े और उन्होंने कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रधान कार्यालय, रेडियो कोस्सुथ, रेलवे स्टेशनों, टेलिफोन एक्सचेंज, केन्द्रीय तारघर और सैनिक विद्यालयों तथा बैरकों पर आक्रमण कर दिया। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने सैनिक अकादमी पर अधिकार कर लिया था (अथवा उसने उनके समक्ष आत्म-समर्पण कर दिया था) क्योंकि उसके बाद वे मशीनगनों और राइफलों से भली भाँति लैस हो गये थे। उन्होंने पार्टी के दैनिक पत्र 'साबाद नेप' के भवन पर निश्चित रूप से अधिकार कर लिया था, बाद में रेडियो बुडापेस्ट ने इसको स्वीकार किया था।

गेरो ने उसी दिन संध्या समय सोवियत टैंकों को बुला लिया। युवक और मजदूर खिड़कियों और छतो से, दरवाजों के पीछे से और वृक्षों पर से विशाल-काय टी-५४ स्तालिन नामक टैंकों पर गैसोलीन से भरी हुई बोतलें फेंकने लगे। टैंकों ने उत्तर दिया। युद्ध रात भर चलता रहा।

इस प्रकार हंगरी की अक्तूबर क्रान्ति प्रारम्भ हुई। यह पोलैण्ड की अक्तूबर क्रान्ति से भिन्न थी, क्योंकि प्रथम घण्टे से ही राष्ट्रीय भावना की अग्नि में रक्त डाला जाने लगा था। उसके कारण इसे नियन्त्रित करना दुष्कर अथवा निश्चय ही असम्भव हो गया। अतः वह शीघ्र ही एक राष्ट्रीय कम्यूनिस्ट क्रान्ति से एक प्रजातान्त्रिक क्रान्ति के रूप मे परिणत हो गयी।

अध्याय २१

एक क्रान्ति का दैनिक विवरण

२४ अक्तूबर १९५६। "ध्यानपूर्वक सुनिये ! ध्यानपूर्वक सुनिये ! हम घोषणा को दोहराते है। इमरे नाज नये प्रधान मत्री बन गये हैं..." यह प्रातःकाल ७ बज कर १३ मिनट पर सरकारी रेडियो बुडापेस्ट द्वारा किया गया प्रसारण था।

जैसा कि स्वीकृत हुआ था, कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की बैठक ३१ अक्तूबर के बदले क्रान्ति के प्रथम दिन, २३ अक्तूबर की संध्या को ही हुई और उसमें नाज को प्रधान मंत्री एवं पोलिट ब्यूरो का सदस्य निर्वाचित किया गया। उसमें राकोसी के कई समर्थकों को नेतृत्व से भी पृथक् कर दिया गया तथा बड़ी संख्या में नाज के समर्थकों को उसमें सम्मिलित किया गया। नाज के जिन समर्थकों को नेतृत्व में सम्मिलित किया गया, उनमें जानोस कादार भी थे, जिन्हें १९५१ में गिरफ्तार किया गया था, यातनाएं दी गयी थीं (दांत तोड़ डाले गये थे तथा उगलियों के नाखून उखाड़ डाले गये थे) तथा जिन्हें १९५३ में नाज द्वारा रिहा किया गया था।

किन्तु गेरो पार्टी के प्रथम सचिव के पद पर बना रहा।

"ध्यानपूर्वक सुनिये ! ध्यानपूर्वक सुनिये !" यह रेडियो बुडापेस्ट है, प्रातः-काल ८ बजे है। "रात में प्रतिक्रान्तिवादी गिरोहों द्वारा किये गये कायरतापूर्ण आक्रमणों ने एक गम्भीर स्थिति उत्पन्न कर दी है। लुटेरे फैक्टरियों और सार्व-

जनिक भवनों में घुस गये है और उन्होंने अनेक असैनिकों, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा सेना के सदस्यों तथा राज्य सुरक्षा-संगठन के योद्धाओं की हत्या कर दी है। सरकार इन रक्तिम कायरतापूर्ण आक्रमणों के लिए तैयार नहीं थी और इसलिए उसने वारसा-सन्धि की शर्तो के अनुसार, सहायता के लिए हंगरी-स्थित सोवियत सेनाओं से प्रार्थना की है। सरकार के अनुरोध को मान कर सोवियत सेनाएं व्यवस्था की पुनः स्थापना के कार्य में भाग ले रही है।"

बीस मिनट बाद स्वराष्ट्र-मन्त्री ने उस दिन तीसरे पहर १ बजे तक के लिए संचारबन्दी का आदेश जारी किया। उद्योग, यातायात एवं संवाद-वहन की व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी थी। सोवियत टैंक और हंगेरियन ए. वी एच. के पुलिस-सिपाही बुडापेस्ट की सड़कों पर सशस्त्र विद्रोहियों से संघर्ष कर रहे थे और दोनों पक्षों के व्यक्ति भारी संख्या में हताहत हुए।

प्रातःकाल ११ बजे प्रधान मन्त्री नाज ने राष्ट्र के नाम भाषण किया तथा अपराह्न में १ बजे तक अपने शस्त्रों का समर्पण कर देने वाले विद्रोहियो को क्षमा कर देने का वचन प्रदान किया। उन्होंने "हमारी राष्ट्रीय विशेषताओं के अनुरूप समाजवाद" तथा "मजदूरों की जीवन-स्थितियों में क्रान्तिकारी सुधार" के लिए प्रयास करने का वचन किया।

१ बजने के सात मिनट बाद शस्त्र-समर्पण का अन्तिम समय १ बजे से बढा कर ५ बजे तक कर दिया गया। "महिलाओ", सरकारी रेडियो घोषक ने चिल्ला कर कहा—"अपने पतियों को भीषण संकट में मत पड़ने दीजिये ... माताओ, अपने पुत्रों को सड़कों पर मत जाने दीजिये, जहाँ वे तोपों के भयानक मुँहों का सामना करते हैं।"

संध्या समय ५ बजकर ४८ मिनट पर रेडियो बुडापेस्ट ने एक सत्रह वर्षीय नवयुवक का नामोल्लेख किया, जिसकी माँ यह सुन कर बेहोश हो गयी थी कि वह युद्ध कर रहा है। "यदि वह अपनी माँ को जीवित देखना चाहता है, तो उसे तत्काल घर चले जाना चाहिए।" क्रान्ति के दूसरे दिन सारे दिन और सारी रात सड़कों पर युद्ध होता रहा।

२५ अक्तूबर। सरकारी रेडियो ने दावा किया कि विद्रोहियों का दमन कर दिया गया है तथा सोवियत सेनाएँ प्रतिरोध के अन्तिम क्षेत्रों की "सफाई" कर रही हैं। फिर भी, उस दिन प्रतिरक्षा-मंत्री कर्नल जनरल इस्तवान बाटा ने "सेना के उन सदस्यों के नाम, जो एक अथवा दूसरे कारण से अपनी टुकड़ियों से पृथक् हो गये हैं" बैरकों में लौट आने के लिए कई अपीलें प्रसारित कीं। बाद में यह

बात विदित हुई कि हंगेरियन सैनिक विद्रोहियों के साथ मिल गये थे। उनमें से कुछ अपने टैंकों, सोवियत-निर्मित टैंकों के साथ विद्रोहियों से मिल गये थे, जिससे अब युद्ध ने हंगेरियनों द्वारा चालित रूसी टैंको और रूसियों द्वारा चलित रूसी टैंको के युद्ध का रूप धारण कर लिया था। कभी-कभी सोवियत कर्मचारी अपने टैंकों को विद्रोहियों को समर्पित कर देते थे।

प्रातःकाल ११ बज कर ३३ मिनट पर पोलिट ब्यूरो द्वारा प्रकाशित एक विज्ञप्ति में घोषित किया गया कि गेरो को प्रथम सचिव के पद से हटा दिया गया है तथा उसका उत्तराधिकारी कादार को नियुक्त किया गया है।

तत्पश्चात् कादार माइक्रोफोन पर आया। उसने रूस के साथ " एक समानतापूर्ण एव न्यायपूर्ण समझौते " के लिए सरकार की इच्छा तथा उस " गम्भीर स्थिति का, जिसमें हम फँस गये है " उल्लेख किया।

उसके बाद नाज का भाषण हुआ। उन्होंने कहा—" प्रधान मंत्री की हैसियत से मै यह घोषित करना चाहता हूँ कि हंगरी की सरकार...हंगरी-स्थित सोवियत सेनाओं की वापसी के सम्बन्ध में सोवियत संघ के साथ वार्तालाप प्रारम्भ करेगी। ये वार्ताएँ समानता एवं राष्ट्रीय स्वतंत्रता के आधार पर होंगी..."

किन्तु क्या यहाँ एक अन्तर्विरोध नहीं है? यदि हगरी समान और स्वतंत्र था, तो वार्तालाप अनावश्यक था। नाज सीधे रूप से सोवियत सेनाओं से चले जाने के लिए कह सकते थे।

साढ़े सत्रह लाख की जनसंख्या वाला बुडापेस्ट नगर (हंगरी के नब्बे लाख निवासियों का लगभग पंचमाश) निरन्तर युद्ध से प्रकम्पित हो रहा था। अपराह्न में २ बजे से प्रात काल ९ बजे तक की संचारबन्दी के बावजूद लोग गोलियों की परवाह न करते हुए, घर पर रहने के लिए रेडियो द्वारा बारम्बार की जाने वाली अपीलों पर ध्यान न देते हुए सड़कों पर एकत्र हो रहे थे। टैंक आतक नही उत्पन्न कर रहे थे, सरकार की सत्ता विलुप्त हो गयी थी।

२६ अक्तूबर। अब विद्रोह प्रान्तों में फैल गया। आधी रात के दस मिनट बाद स्वतंत्र मिस्कोल्क रेडियो चालू हुआ। चेकोस्लोवाक सीमा के निकट उत्तर पूर्वी हंगरी में स्थित एक लाख से अधिक निवासियों के नगर बृहत्तर मिस्कोल्क की नव-निर्मित क्रान्तिकारी मजदूर परिषद की ओर से बोलते हुए उसने माँग की कि सोवियत सेना तत्काल प्रस्थान कर जाय, एक नयी सरकार का निर्माण हो तथा हड़ताल करने का अधिकार प्रदान किया जाय।

रात में १ बज कर २० मिनट पर बारान्या काउण्टी (युगोस्लाव सीमा के निकट दक्षिण-पश्चिमी हंगरी में) में स्वराष्ट्र मंत्रालय के एक प्रतिनिधि ने रेडियो पेक्स पर भाषण करते हुए कहा—" क्रान्तिकारी समिति जैसी कोई वस्तु नहीं है। जो कुछ हुआ, वह यह है । अपने को क्रान्तिकारी समिति का सदस्य बताने वाले एक या दो अनुत्तरदायी तत्व संध्या-समय स्टुडियो में बलात प्रविष्ट हो गये और उन्होंने एक घोषणा पढ़वायी ", किन्तु प्रातःकाल १० बजकर ४५ मिनट पर विद्रोही रेडियो पेक्स से ब्राडकास्ट कर रहे थे।

विद्रोहियों ने रूमानियन और सोवियत सीमाओं के निकट न्यिरेगिहाजा रेडियो पर भी अधिकार कर लिया और संध्या समय ५ बज कर ३० मिनट पर बुडापेस्ट सरकार से कहा कि वह " बिना धोखेबाजी के, मानवता की भावना से तथा जनता के हित की दृष्टि से ईमानदारी के साथ कार्य करे ... "

२७ अक्तूबर । स्थिति निराशाजनक रूप से अनिश्चित थी । रेडियो स्टेशनों के अधिकारियों में बारम्बार परिवर्तन हो रहा था; वे प्रातःकाल सरकार की आलोचना करते थे, तीसरे पहर उसका समर्थन करते थे और संध्या समय उसकी आलोचना करते थे । ऐसा प्रतीत होता था कि अधिकांश पश्चिमी हंगरी पर विद्रोहियों का नियंत्रण स्थापित हो गया है। सोवियत सेनाएँ उस क्षेत्र पर आक्रमण कर रही थीं । फिर भी, एक आम हड़ताल ने उनकी गतिविधि को अवरुद्ध कर दिया । नियमित हंगेरियन सेना या तो निष्क्रिय थी या क्रान्तिकारियों के प्रति सहानुभूति रखती थी । केवल ए० वी० एच० (गुप्त पुलिस) की सुरक्षा-सेनाएँ सहायक सोवियत सेनाओं के रूप में काम कर रही थीं ।

क्रान्ति के प्रथम दिन से ही विद्रोहियों ने ए० वी० एच० के गुप्त पुलिस-सिपाहियों को अपने क्रोध एवं बन्दूकों का विशेष लक्ष्य बनाया था । "लाइफ" नामक पत्रिका के छाया-चित्रकारों (फोटोग्राफरों) ने ए० वी० एच० के निरस्त्रीकृत अफसरों के उल्लेखनीय और भयंकर चित्र लिये थे। इन चित्रों में वे विद्रोहियों द्वारा अत्यन्त निकट से, उनके रूसी किस्म के बिल्लों के खींच लिये जाने तथा महिलाओं द्वारा उनके चेहरों पर थूके जाने के पश्चात्, गोली से उड़ाये जाते हुए दिखायी दे रहे थे तथा उनकी आँखों में मृत्यु समायी हुई थी । सुरक्षा-पुलिस के अन्य सिपाहियों का सिर नीचे कर के उन्हें लटका दिया गया था । यदि क्षमा-याचना के रूप में नहीं, तो स्पष्टीकरण के रूप में कहने की एक मात्र बात यह है कि जो व्यक्ति अबोधगम्य निर्लिप्तता के साथ मृत्यु का आलिंगन करते हैं, जैसा कि भीमकाय टैंकों और मँजे हुए सैनिकों का सामना करने वाले विद्रोही कर रहे थे, वे

अपने शत्रुओं के जीवन का तनिक भी मूल्य नहीं समझते । एक घृणित, बाहर से लायी गयी सरकार के प्रतीक एवं समर्थन के रूप में गुप्त पुलिस से प्रचण्ड घृणा की जाती थी और प्रथम अवसर के उपलब्ध होते ही जनता ने भयंकर रीति से उनसे उस अभिकरण द्वारा, जिसके वे सदस्य थे, निर्दोष नागरिको की हत्याओं तथा उनको दी गयी यातनाओ का मूल्य चुकाया ।

इसी प्रकार हंगेरियन विद्रोहियों द्वारा कम्यूनिस्ट पुस्तके जला दी गयीं । यह बात अनुदारतापूर्ण प्रतीत होती है । वास्तव में, यदि यह कार्य तनिक भी बुद्धिसंगत था, तो इसके द्वारा असहिष्णुता की अभिव्यक्ति आवश्यक नही थी । विद्रोही पढ़ने की स्वतन्त्रता का उल्लघन नहीं कर रहे थे । वे उस साहित्य को विनष्ट कर रहे थे, जिससे एक राजकीय एकाधिपत्य ने देश को पाट दिया था । निजी संगठन अथवा अन्य दलो के साथ प्रतियोगियता करने वाली कम्यूनिस्ट पार्टी बिना किसी बाधा के अपने साहित्य का प्रकाशन कर सकती थी ।

उत्तेजित हंगेरियनों में परिहास-भावना बनी हुई थो ; जब रेडियो बुड़ापेस्ट ने कहा कि चार अथवा अधिक व्यक्तियों के किसी भी समूह पर सेना गोली चला देगी तब उन्होंने मत व्यक्त किया " विश्व के मजदूरो, एक हो जाओ, किन्तु तीन से अधिक के समूहों में नहीं ।"

प्रातःकाल ६ बजे रेडियो बुडापेस्ट ने शांति के लिए अपील की, " रक्तपात पर्याप्त हो चुका है । सड़कों पर पर्याप्त हो मार-काट चुकी है । हम यह जानना पसन्द करेंगे कि हमारे बालक, हमारे सम्बन्धी अभी तक जीवित हैं अथवा नहीं ।" चौदह, पन्द्रह, सोलह वर्ष की आयु के तथा इससे अधिक आयु के बालक रात भर बुडापेस्ट की सड़कों पर सोवियत टैकों को घेर रहे थे । 'मैनचेस्टर गार्जियन' के सोवियत मामलो के विशेषज्ञ श्री विक्टर जोर्जा ने, जो उस समय हंगरी में थे, इन सत्रह-वर्षीय छात्र विद्रोहियों में से एक की माता से बात की । उसने कहा—" युद्ध के थोड़ा-सा रुकने पर वह तीन दिनों में प्रथम बार गर्म खाना खाने के लिए घर आया । मैने उससे कहा—'मेरे बच्चे, वापस मत जाओ । मै तुम्हें रोकती नहीं, वास्तव में नही रोकती; यदि इस बात की तनिक भी आशा होती कि हम विजयी हो सकते है ; किन्तु हमारे लिए कोई आशा नहीं है, मेरे बच्चे, यदि तुम गये, तो केवल मृत्यु ही तुम्हारे पल्ले पड़ेगी ।'

"'मृत्यु में आशा है, मेरी प्यारी माँ', उसने उत्तर दिया ।

" उस रात वह गोली लगने से मर गया ।"

बुडापेस्ट की सड़कें मृतकों से भरी पड़ी थीं, जिनमें जले हुए ३६ टन वाले दानवाकार सोवियत टैंकों की बगल में पड़े हुए उनके कर्मचारियों के शव भी सम्मिलित थे। साधनों और प्रशिक्षण की दृष्टि से हीन, किन्तु देशभक्तिपूर्ण उत्साह से सुसज्जित किशोर वय के हंगेरियन अपने-आपका अथवा दया का ध्यान किये बिना युद्ध कर रहे थे और अब अनेक दुखिया रूसी माताएँ स्वय अपने हृदय की पुकार के विरुद्ध तानाशाहों की आज्ञाओं का पालन करने वाले अपने पुत्रों की मृत्यु पर शोक प्रकट करती है। यद्यपि टैक दैत्याकार थे, तथापि अनेक भीतर बैठे हुए व्यक्ति भयाक्रान्त थे और वे सामान्यत· एक दूसरे की रक्षा करने के लिए 'बम्पर' से 'बम्पर' सटा कर जत्थों में चलते थे। जब कभी हगेरियन किसी घर में से उन पर गोलियाँ चलाते थे, तब रूसी उस घर में गोलो की वर्षा कर देते थे, जिससे लोगों की मृत्यु होती थी तथा घृणा की अग्नि प्रज्ज्वलित होती थी। यह हिंसा का एक कुटिल चक्र था।

उन उत्तेजनापूर्ण एवं दुखद दिनो में योद्धाओं के नवयुवक समूह बहुधा परामर्श के लिए लेखक-सघ के पास सन्देशवाहक भेजते थे। लेखकों ने व्यक्तिगत प्रति-शोध की निन्दा की। लेखक-संघ एक ऐसे प्रकार का कार्यालय बन गया, जहाँ प्रति रोधक टुकड़ियों को इस बात का पता चलता था कि कहाँ क्या हो रहा है। प्रधान मंत्री इमरे नाज टेलिफोन द्वारा लेखक-सघ से, विशेषत· पीटर वेरेज और ग्यूला हे से परामर्श करते थे।

किंकर्त्तव्यविमूढ़ सरकार ने अपने सदस्यों मे परिवर्त्तनों की घोषणा की। पुनर्गठित मंत्रिमंडल में इक्कीस कम्यूनिस्ट तथा विघटित 'स्माल होल्डर्स पार्टी' के छः सदस्य सम्मिलित थे। ६ में से कई ने कम्यूनिस्टों के साथ सहयोग किया था; केवल दो स्वतंत्र थे और वे थे, रिपब्लिक जोल्टान टिल्डी के भूतपूर्व अध्यक्ष तथा 'स्माल होल्डर्स पार्टी' के महामंत्री बेला कोवाक्स, जिन्हें २६ फरवरी १९४७ को गिरफ्तार कर साइबेरिया में निर्वासित कर दिया गया था, जहाँ वे शारीरिक दृष्टि से ध्वस्त होकर १९५४ में हंगरी लौटने के समय तक रहे। वास्तव में सरकार नयी नहीं थी।

जिस दिन यह सरकार अस्तित्व में आयी, जिस दिन रेडियो बुडापेस्ट ने कहा —"पर्याप्त रक्तपात हो चुका है", उसी दिन ए. वी. एच. के सैनिकों ने आस्ट्रिया की सीमा के निकट स्थित मगयारोवर नामक कस्बे में विद्रोही छात्रों और मजदूरों द्वारा अधिकृत एक भवन में प्रवेश किया और उनमें से ८६ को मशीनगनों से

भून डाला। फर्श पर एकत्र की गयी लाशों के एक हृदय-विदारक चित्र को समस्त हंगरी मे प्रचारित किया गया।

अपराह्न में २ बज कर ३५ मिनट पर स्वतंत्र मिस्कोल्क रेडियो ने बताया कि शांतिमय कस्बे पर अड़तालीस घण्टों से मजदूरों की परिषद और छात्रों की संसद का नियंत्रण है। सेना तथा पुलिस मजदूरो का समर्थन कर रही थी।

उस दिन अपराहन में बाद में स्वतत्र पेक्स रेडियो ने घोषित किया कि सेना विद्रोहियों का साथ दे रही है और सैनिक कह रहे है—"हम भी मजदूरों, खनकों किसानों और बुद्धिजीवियों के पुत्र है।" पश्चिमी हंगरी विद्रोहियों के हाथों में बना रहा।

रात में १०-बजकर ४५ मिनट पर स्वतंत्र्य मिस्कोल्क रेडियो ने कहा—"इमरे नाज की सरकार में हंगेरियन जनता का विश्वास नही रह गया है...... सोवियत सेनाओं को यथासम्भव शीघ्र युद्ध बन्द कर देना चाहिए और हंगरी से चले जाना चाहिए ... रक्त की नदिया बह गयी हैं तथा जनता की कटुता क्रान्तिकारी क्रोध के रूप में परिणत हो गयी है। क्या रूस को हंगरी की स्वतत्रता को पुनः कीचड़ में फेक देना चाहिए, जैसा कि उसने १९४८ में किया था?"

२७ अक्तूबर को बुडापेस्ट में कोई भी समाचार-पत्र नहीं प्रकाशित हुआ।

२८ अक्तूबर। रेडियो बुडापेस्ट ने रात में सोवियत हताहतों की संख्या का विवरण दिया। अधिकांश युद्ध किलियत बैरकों के आसपास केन्द्रित था, जहाँ हंगेरियन सेना के जनरल पाल मालेटर क्रान्तिवादियों का सेनापतित्व कर रहे थे। प्रातःकाल १० बजे रेडियो बुडापेस्ट ने कहा—"ध्यानपूर्वक सुनिये! ध्यानपूर्वक सुनिये! किलियन बैरकों में तथा (पड़ोस के) कोर्विन जिले में प्रतिरोधकर्त्ताओं के नाम एक सन्देश। यह सन्देश दो मध्यस्थों द्वारा भेजा गया है: 'हमने आप का उत्तर सोवियत और हंगेरियन सेनाओं के सेनापतियों के पास पहुँचा दिया है। वे आपकी शर्तों को अस्वीकार्य समझते हैं। उनके मतानुसार नयी हंगेरियन सरकार...हंगरी की जनता के हितों का प्रतिनिधित्व करती है...'"

किलियन बैरकों में प्रतिरोध जारी रहा

सोवियत सैनिकों के विद्रोहियों के साथ मिल जाने के समाचार प्राप्त हुए। बुडापेस्ट में लिये गये फोटोग्राफों में रूसी टैक सड़कों पर जलते हुए दिखायी देते है।

बहुत-कुछ इस बात पर निर्भर करता था कि माइक्रोफोन पर कौन बोलता था। अपराह्न में १ बजकर २५ मिनट पर रेडियो बुडापेस्ट पर एक विवेचक ने कहा: "हाल की घटनाओं का वास्तविक कारण आठ वर्षों तक स्तालिनवाद का प्रचलन

निरंकुशता का निर्बाध साम्राज्य है...अत: यह प्रश्न किया जा सकता है कि बुडापेस्ट में विगत दिनों में हुए युद्ध का वास्तविक कारण क्या था ? विलम्ब, समय प्राप्त करने का प्रयास। वास्तविक, ठोस स्थिति को, जैसी वह थी, समझने की विफलता, जनता की इच्छा का असम्मान..."

आस्ट्रिया की सीमा के निकट स्वतंत्र ग्योर रेडियो ने संवाद दिया कि स्थानीय पेतोयेफी क्लब, खनक तथा लेखक-सघ माँग कर रहे हैं कि "इमरे नाज रूसी सेनाओं से कहें कि वे सफेद झण्डे फहराते हुए हगरी से अपनी वापसी प्रारम्भ कर दें...खान-मजदूर भविष्य को कैसा समझते है? हंगरी की भावी सामाजिक प्रणाली स्वतंत्र निर्वाचनों द्वारा निश्चित की जायगी। हमें अन्य पार्टियों के साथ कम्यूनिस्ट पार्टी के खड़ी होने पर आपत्ति नहीं है ..जब तक इन माँगों की पूर्ति नहीं हो जाती, तब तक सेलिका और उसके जिले के खनक फावड़े भर कोयले का उत्पादन करने के लिए भी तैयार नहीं है।"

बाद में उसी स्टेशन ने ग्योर की सैनिक टुकड़ी का एक सन्देश प्रसारित किया · ग्योर के मजदूरो ! हम, ग्योर की टुकड़ी के सैनिक, आप की उचित माँगों का समर्थन करते है...हमारे साथ मिल कर स्वतत्र हगरी के लिए संघर्ष कीजिये।" राष्ट्र की अधिकांश सेना विद्रोहियों के साथ मिल गयी थी।

प्रान्तीय श्रमिक परिषदें टेलिफोन तथा बेतार के तार द्वारा एक दूसरे से वार्तालाप कर रही थीं। उदाहरणार्थ : "कोमारोम की राष्ट्रीय परिषद हेगयेशालोम को (आस्ट्रिया की सीमा के निकट स्थित) सूचित करती है कि ईस्टरगोम तक सड़क साफ है .."

उस दिन तीसरे प्रहर प्रधान मंत्री नाज जनता के तूफान के सामने नतमस्तक हो गये और उन्होंने वचनों से पूर्ण एक समझौतामूलक भाषण किया, विद्रोहियों के स्वतंत्र मिस्कोल्क रेडियो ने उसे विस्तृत रूप से उद्धृत किया, किन्तु उसने इतना और जोड़ दिया—"हम केवल आंशिक रूप से संतुष्ट है।" क्यों ? "बोरसोद काउण्टी की जनता चाहती है कि सोवियत सेनाएँ न केवल बुडापेस्ट मे हट जायं, अपितु वे हंगेरियन क्षेत्र से पूर्णतया हट जायं और घर चली जायं।"

बुडापेस्ट में नागरिकों के एक विशाल समूह ने रस्सों का प्रयोग कर स्तालिन की एक दैत्याकार प्रतिमा को नीचे गिरा दिया और जब वह गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गयी, तब नागरिकों ने प्रचण्ड हर्ष-ध्वनि की। प्रतिमा का विशाल सिर ज्यों का त्यों पूरा बना रहा।

अक्तूबर १९५६ के अन्तिम तीन दिन सोमवार, मगलवार और बुधवार हंगरी की क्रान्ति की एक महान, सम्भवतः महानतम चरम परिणति के प्रतीक है, क्योंकि उन तीन दिनों में क्रान्ति की वास्तविक शक्ति प्रकट हुई; वह समर्थन एव राजनीतिक तर्कशास्त्र, दोनों दृष्टियों से इतनी अधिक शक्तिशालिनी हो गयी कि उसने नाज-सरकार को अपनी ओर मिला लिया। कम्यूनिस्ट नाज क्रान्ति में सम्मिलित हो गये। इससे रूस के साथ हंगरी के सम्बन्धों में एक सकट उत्पन्न हो गया, इसने रूस को भयंकर प्रतिशोधों के लिए उत्तेजित कर दिया तथा भावी कार्य-प्रणाली निश्चित कर दी।

२९ अक्तूबर। हगेरियन कम्यूनिस्ट पार्टी के अधिकृत दैनिक पत्र "साबाद नेप" में प्रकाशित फेरेन्स मोलनार का एक लेख नये वातावरण का संकेत-चिह्न था। इसमें "हंगरी की जनता के विरुद्ध निर्देशित दुस्साहस का अन्त" शीर्षक मास्को के 'प्रवदा' के एक अग्रलेख का उत्तर दिया गया था तथा उसकी निन्दा की गयी थी। श्री मोलनार ने यह मत व्यक्त किया था कि विगत सप्ताह की घटनाएँ न तो दुस्साहसिक थीं, न यह प्रयास ही विफल हुआ था। श्री मोलनार ने कहा– "प्रतिक्रिया और प्रतिक्रान्ति के नारे नहीं, प्रत्युत समाजवादी प्रजातंत्र के नारे सबसे जोर से लगाये गये। पेस्ट और बुडा के विद्रोही जन स्वतत्रता तथा भय एव आतक से रहित जीवन चाहते हैं। वे और अधिक रोटियाँ तथा राष्ट्रीय स्वतत्रता चाहते है। क्या 'प्रवदा' इसी को दुस्साहसपूर्ण कार्य कहता है?...किसी वस्तु का वास्तव में अन्त हो गया और वह वस्तु थी राकोसी-गेरो गुट का शासन।" मोलनार के लिए 'प्रवदा' को यह बताना आवश्यक नहीं था कि राकोसी और गेरो मास्को के आदमी थे।

कम्यूनिस्ट शासन ने लाल-सफेद-हरे राष्ट्रीय झण्डे के मध्य में जो लाल तारा अंकित कर दिया था, उसे जनता फाड़ रही थी। वह लाल तारे तथा सेना और पुलिस की वर्दियो में कन्धों पर लगाये जाने वाले रूसी किस्म के बिल्लों से क्रुद्ध थी। अब सरकार ने सैनिक टोपियों पर राष्ट्रीय तिरंगे के साथ फीते लगाने का आदेश दिया। स्वराष्ट्र मंत्री ने ए० वी० एच० की सुरक्षा-सेना के विघटित किये जाने की घोषणा की।

स्वतंत्र ग्योर रेडियो ने प्रातःकाल ८ बज कर २५ मिनट पर सुरक्षा-पुलिस को समाप्त कर देने के लिए सेना को धन्यवाद दिया।

प्रातःकाल ११ बजे स्वतंत्र मिस्कोल्क रेडियो ने कहा – "ध्यानपूर्वक सुनिये! ध्यानपूर्वक सुनिये! यह डेब्रेसेन अस्पताल की अपील है: हमें..... लोहे के फेंफड़ों की आवश्यकता है, क्योंकि हमारे पास जो है, वह काम नही कर रहा है।"

तीसरे पहर २ बजे रेडियो बुडापेस्ट ने कहा—"बुडापेस्ट नगर परिषद् की कार्य-कारिणी समिति ने स्तालिन मार्ग का पुनः नामकरण हंगेरियन युवक मार्ग करने का निश्चय किया है; अब से स्तालिन पुल को आरपाद पुल तथा स्तालिन स्क्वेयर को ज्योर्जी डोसा स्क्वेयर कहा जायगा।"

३ बज कर ५७ मिनट पर उसी स्टेशन ने ए० वी० एच० तथा "विशेष अधिकारों वाली" समस्त पुलिस टुकड़ियों को समाप्त कर देने के सरकारी निश्चय को दोहराया।

दोपहर में १२ बज कर १५ मिनट पर स्वतंत्र ग्योर रेडियो ने कहा—"आज हमें सूचना दी गयी है...... कि सोवियत टुकड़ियों ने राजधानी से प्रस्थान करना प्रारम्भ कर दिया है और वे अपने सैनिक अड्डे......लेक बैलाटोन की ओर जा रही है।" फिर भी, ४ बज कर १७ मिनट पर रेडियो बुडापेस्ट ने इसके विपरीत समाचार सुनाया—"बुडापेस्ट के प्रतिरोधक दलों के नेताओं के साथ सम्पन्न हुए एक समझौते के अनुसार विद्रोही सोवियत टुकड़ियों का स्थान ग्रहण करने वाले हंगेरियन सैनिकों को अपने हथियार सौंपना प्रारम्भ कर रहे हैं। उनके शस्त्रास्त्र-समर्पण के बाद २४ घण्टों के भीतर बुडापेस्ट से सोवियत सैनिकों की वापसी प्रारम्भ होगी।" तो, सशर्त वापसी अभी तक प्रारम्भ नहीं हुई थी। यदि रेडियो बुडापेस्ट को सही-सही सूचना प्राप्त हुई थी, तो सोवियत सेना पहरे की अपनी ड्यूटी को हंगेरियन सैनिकों को सुपुर्द कर रही थी, किन्तु वह तब तक राजधानी से विदा होने का इरादा नहीं रखती थी, जब तक विद्रोही अपने-आपको निरस्त्र न कर दें। यह बात विदित है कि विद्रोही हिचकिचा रहे थे; उन्हें किसी जाल का संशय था।

तीसरे पहर १ बजे स्वतंत्र मिस्कोल्क रेडियो ने कहा—"हम आप को यह सूचित करना चाहते हैं कि आज के शव-संस्कार प्रातःकाल ११ बजे से ३ बजे तक हो रहे है......कल शव-संस्कार २ बजे प्रारम्भ होंगे।" १ बज कर १५ मिनट पर—"रक्तमय युद्ध जारी है।" बोरसोद काउण्टी की श्रमिक परिषद् नयी नाज-सरकार की रचना को पसन्द नहीं करती और माँग करती है कि सोवियत सेनाएं "न केवल बुडापेस्ट से और उनके अड्डों पर नहीं, प्रत्युत हमारे देश से" तत्काल हटा ली जायें। १ बज कर ४० मिनट पर—"डेब्रेसेन अस्पताल, ध्यान-पूर्वक सुनो! ध्यानपूर्वक सुनो! म्युनिख ने लोहे के फेंफड़ों से सम्बन्धित प्रसारण को सुना है। म्युनिख......जर्मनी से फेंफड़े भेजने के लिए......अधिक से अधिक प्रयत्न कर रहा है।"

३० अक्तूबर। खून के दलदल तथा भूमि पर एवं वायु की लहरों में व्याप्त भ्रांति से सीधा-सादा तथ्य प्रकट हुआ: हँगरी रूस से तथा तानाशाही से स्वतंत्रता चाहता था। प्रधान मंत्री नाज ने निष्कर्ष निकाला तथा एक महत्वपूर्ण घोषणा की। तीसरे पहर १ बज कर २८ मिनट से प्रारम्भ कर रेडियो बुडापेस्ट पर भाषण करते हुए उन्होंने कहा—"हंगरी के मजदूरो, किसानो और बुद्धिवादियो! क्रान्ति के...... तथा प्रजातांत्रिक शक्तियों के प्रचण्ड प्रमाण के परिणामस्वरूप हमारा राष्ट्र चौराहे पर पहुँच गया है। हंगरी की मजदूर पार्टी की पूर्ण सहमति से कार्य करती हुई राष्ट्रीय सरकार एक ऐसे निर्णय पर पहुँची है, जो राष्ट्र के जीवन के लिए महत्वपूर्ण है......और अधिक जनतंत्रीकरण के हित में......मंत्रिमंडल ने एक दलीय पद्धति को समाप्त कर दिया है......"

क्रान्ति के इतिहास में यह परिवर्तन-बिन्दु था। नाज ने बताया कि कम्यूनिस्ट पार्टी के एकाधिपत्य के स्थान पर "संयुक्त दलों का जनतांत्रिक सहयोग" होगा। तत्पश्चात् उन्होंने एक नयी राष्ट्रीय सरकार की घोषणा की, जिसमें वे स्वयं, जोल्टान टिल्डी, बेला कोवाक्स, जानोस कादार, गेजा लोसोंक्जी, 'मगयार नेमजेत' के सम्पादक, फेरेन्स एरडी तथा सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी द्वारा नियुक्त किये जाने वाले व्यक्ति सम्मिलित थे।

"राष्ट्रीय सरकार", नाज ने कहना जारी रखा—"सोवियत कमान के सदर मुकाम से अनुरोध करती है कि वह बुडापेस्ट से सोवियत सेनाओं का हटाया जाना तत्काल प्रारम्भ कर दे। साथ ही साथ हम हंगरी की जनता को यह सूचित करना चाहते हैं कि हम सोवियत संघ से अनुरोध करने जा रहे हैं कि वह हंगरी से समस्त सोवियत सेनाओं को हटा ले।"

(इससे अर्थ यह निकलता है कि सोवियत सेनाओं की वापसी अभी तक प्रारम्भ नहीं हुई थी। इससे यह अर्थ भी निकलता है कि २५ अक्तूबर को नाज ने रूस के साथ जो वार्ता प्रारम्भ करने का वचन दिया था, वह या तो प्रारम्भ ही नहीं हुई थी अथवा उसके परिणामस्वरूप सोवियत सेना की वापसी नहीं हो पायी थी।)

नाज ने पुनः कहा—"राष्ट्रीय सरकार के नाम पर मैं यह घोषित करना चाहता हूँ कि हम क्रान्ति के समय निर्मित स्वायत्त शासन-सत्ता वाली समस्त प्रजातांत्रिक स्थानीय संस्थाओं को मान्य करते हैं तथा हम समर्थन के लिए उन पर भरोसा रखते हैं।" यह जिला श्रमिक परिषदों तथा छात्र-संसदों का उल्लेख था। नाज उन्हें प्रतिक्रान्तिवादी अथवा डाकू नहीं समझते थे।

५ बज कर ३० मिनट पर प्रतिरक्षा-मन्त्री ने घोषित किया कि "सोवियत सेनाओं के सेनापति ने स्वीकार कर लिया है कि बुडापेस्ट मे स्थित समस्त सोवियत सेनाएँ ३० अक्तूबर को ३ बजे वापस जाना प्रारम्भ करेंगी तथा योजना के अनुसार उनकी वापसी ३१ अक्तूबर, १९५६ को प्रातःकाल तक पूर्ण हो जायगी।"

किन्तु ठीक पन्द्रह मिनट पूर्व स्वतन्त्र मिस्कोल्क रेडियो ने, जो सोवियत सीमा से दूर नही था, कहा—" अभी-अभी किस्वार्डा से घोषित किया गया है कि ... कई हजार टैंक हमारे देश में प्रवेश कर रहे है ... मोटरवाही पदाति सेना न्यिरेगिहाजा की दिशा में अग्रसर हो रही है। नयी रूसी सैनिक टुकड़िया! मार्शल झुकोव, क्या आप को इसका पता है? आप को पता होना ही चाहिए ..."

३० अक्तूबर को कुछ सोवियत सैनिक बुडापेस्ट से अवश्य रवाना हुए। स्पष्ट है कि वे राजधानी के चारों ओर एक वृत्त के रूप में पुनः एकत्र हो रहे थे।

३१ अक्तूबर। रात में १ बज कर १५ मिनट पर हंगरी की वायुसेना ने सार्वजनिक रूप से धमकी दी कि यदि सोवियत सेना ने देश से प्रस्थान नहीं किया, तो वह उस पर बम-वर्षा करेगी।

बाद में उस दिन प्रात.काल प्रधान मंत्री नाज ने घोषित किया कि १९४८ में गिरफ्तार किये गये कैथोलिक पादरी मिण्ड्सजेण्टी को रिहा कर दिया गया है; "उनके विरुद्ध लगाये गये आरोप... अनुचित थे।"

प्रातःकाल ८ बज कर ८ मिनट पर रेडियो बुडापेस्ट ने अपने पहले के इस वक्तव्य मे सशोधन किया कि, सोवियत सेनाए बुडापेस्ट से चली गयी हैं। उसने कहा कि सोवियत टैंक अभी तक प्रतिरक्षा-मंत्रालय, स्वराष्ट्र मन्त्रालय और सोवियत राजदूतावास के सामने स्थित हैं। (अफवाह के अनुसार मास्को के अध्यक्षमंडल (पोलिट ब्यूरो) के सदस्य मिकोयान और सुसलोव कुछ दिनों से बुडापेस्ट में, सम्भवतः राजदूतावास में ही, थे।) १० बज कर १० मिनट पर उसने कहा कि सोवियत टैंक संसद-भवन, सरकार के आसन, के सामने ही स्थित हैं।

प्रातःकाल ११ बजे स्टेशन ने मास्को के ३१ अक्तूबर के प्रातःकालीन पत्रों में प्रकाशित सोवियत सरकार की एक घोषणा को उद्धृत किया—" सोवियत सरकार ने अपनी सैनिक कमान को आदेश दिया है कि हगरी की सरकार ज्यों ही अपरिहार्य समझे, त्यों ही वह बुडापेस्ट से सैनिक टुकड़ियों को हटा ले।" यह अशुभ-सूचक प्रतीत होता था। केवल बुडापेस्ट से ही सेनाएं हटें? हंगरी की सरकार ने पहले ही समस्त देश से सेनाएं हटाने का अनुरोध किया था। घोषणा में पुनः कहा गया था—" साथ ही साथ सोवियत सरकार हगरी में सोवियत सेनाओं के रहने के

सम्बन्ध में हंगेरियन जन-गणराज्य की सरकार तथा वारसा-संधि में सम्मिलित अन्य सरकारों के साथ समझौता-वार्ता करने के लिए तैयार है . . ." इससे हंगरी से सेनाओं का प्रस्थान इस बात पर नहीं कि हंगरी की सरकार उसे "अनिवार्य समझती है" अथवा नहीं, प्रत्युत रूस और रूस के पिछलग्गू देशों के विचारों पर आश्रित हो गया तथा दीर्घकालीन और सम्भवतः निरर्थक समझौता-वार्ताओं का मार्ग प्रशस्त हो गया। सोवियत सरकार की घोषणा में, जिसका प्रारूप अधिक से अधिक ३० अक्तूबर को तैयार किया गया था, हंगरी से सेनाएं हटाने के इरादे का कोई संकेत नहीं था और उससे इस बात का भी इंगित नही मिलता था कि मास्को का कभी ऐसा इरादा रहा था।

उस दिन तीसरे पहर प्रधान मंत्री नाज ने कोस्सुथ स्मारक में एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए कहा कि सोवियत सेना से सहायता के लिए अपील करने वाले वे नही थे। उन्होंने अपराधी के रूप में गेरो की ओर सकेत किया।

१ नवम्बर। प्रातःकाल ७ बज कर ५५ मिनट पर रेडियो बुडापेस्ट ने, जिसका पुनः नामकरण अब स्वतंत्र कोस्सुथ रेडियो कर दिया गया था, इस आशय का एक समाचार प्रसारित किया कि गेरो, भूतपूर्व प्रधान मंत्री हेगेड्यूज और भूतपूर्व स्वराष्ट्र-मंत्री लास्लो पिरो भागकर रूस चले गये हैं।

नये समाचारपत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया। स्वतंत्र ट्रेड यूनियनें अस्तित्व में आयी। नये राजनीतिक दलों का संगठन किया जा रहा था। "वर्षों के अत्याचार के प्रति अपनी शत्रुता व्यक्त करने के लिए" राष्ट्रीय कृषक दल ने अपना नाम बदल कर पेतोयेफी पार्टी कर दिया।

अब दूसरा मोड़ आया : तीसरे पहर प्रधान मंत्री नाज सोवियत राजदूत एण्ड्रोपोव के पास उन्हें यह बताने के लिए गये कि "हंगरी की सरकार को हंगरी में नयी सोवियत सैनिक टुकड़ियों के प्रवेश के सम्बन्ध में अधिकृत सूचना प्राप्त हुई है।" उन्होंने विरोध किया और उन्हें अविलम्ब हटाने की मॉग की। उन्होंने राजदूत से यह भी कहा कि "हंगरी की सरकार वारसा-संधि की समाप्ति की तत्काल सूचना दे रही है तथा हंगरी की तटस्थता की घोषणा कर रही है।"

इस निर्णायक, ऐतिहासिक पग के उठाये जाने के बाद नाज ने बुडापेस्ट-स्थित समस्त कूटनीतिक मिशनों को सोवियत राजदूत के साथ हुई अपनी बातचीत के विवरण की सूचना दी। तत्पश्चात् उन्होंने वही विवरण तार द्वारा संयुक्त राष्ट्र सघ के महासचिव के पास भेजा और अनुरोध किया कि इस प्रश्न को कार्य-सूची मे सम्मिलित किया जाय।

बहुत भोग चुकने के पश्चात् हंगरी सोवियत साम्राज्य से पृथक् होना तथा तटस्थ रहना चाहता था। छोटे-से पड़ोसी देश आस्ट्रिया ने, जिस पर चार महाशक्तियों का अधिकार बहुत दिनों तक इस कारण बना रहा कि रूस ने हटने से इनकार कर दिया था, अन्ततोगत्वा उस अस्वीकृति को स्वीकृति में परिणत कर दिया था तथा अपनी तटस्थता में वह समृद्धि प्राप्त कर रहा था। इस उदाहरण ने इसी प्रकार के व्यवहार के लिए हंगरी की क्षुधा को तीव्र बना दिया।

किन्तु आस्ट्रिया कभी सोवियत उपनिवेश नहीं था और उसकी तटस्थता से रूस को कतिपय लाभ प्राप्त हुए। हंगरी की तटस्थता से मास्को की पूर्ण क्षति होती, उससे रूसी सत्ता को हानि होती तथा उससे यह बात प्रमाणित हो जाती कि एक राष्ट्र ने, जिसने कम्यूनिज्म का प्रयोग किया था, उसका परित्याग कर दिया। प्रजातान्त्रिक और स्वतंत्र हंगरी, यदि उसके पृथक्करण के लिए उसे दण्डित नहीं किया जाता, स्वतन्त्रता का एक ऐसा प्रतीक होता, जो क्रेमलिन की तानाशाही के शिकार अन्य देशों को भी स्वतंत्रता की प्रेरणा प्रदान करता।

परिस्थितियाँ हंगरी की स्वतंत्रता के विपरीत थीं। कादार ने इस बात को देखा और संध्या समय उसने एक अस्पष्ट भाषण किया, किन्तु नाज ने देखा कि तटस्थता और प्रजातंत्र के लिए प्राणपण से, सर्वस्व की बाजी लगा कर प्रयास करने का विकल्प मास्को का विभीषण, हंगरी-वासियों की घृणा का पात्र तथा हंगरी के प्रति देशद्रोही बन जाना था।

हंगरी में कम्यूनिस्टों और गैर-कम्यूनिस्टों के मध्य चुनाव करने का प्रश्न कभी नहीं रहा। (संघर्ष भी उनके मध्य नहीं था।) अपने-आपको कम्यूनिस्ट कहने वाले व्यक्ति दोनों पक्षों में सम्मिलित थे। पक्ष रूस और हंगरी के थे। थोड़े से कम्यूनिस्टों ने, जो इस बात को समझते थे कि सोवियत शस्त्रों से समर्थित तानाशाही के बिना हंगरी में कोई भी कम्यूनिस्ट शासन अधिक दिनों तक नहीं चल सकता, अपनी प्रथम वफादारी—सदा की भांति—मास्को को समर्पित की; पार्टी के अधिकांश सदस्य, जो यह अनुभव करते थे कि रूस ने उनके पहले के आदर्शों को विकृत बना दिया है तथा युद्ध के उत्साह से ओतप्रोत छात्र और मजदूर—जिनमें उन्होंने प्रथम बार वास्तविक क्रान्तिकारी भावना के दर्शन किये—अपने विशेषाधिकारपूर्ण राजनीतिक एकाधिपत्य को समाप्त कर देना, किन्तु जनतान्त्रिक लाटरी में किस्मत आजमाना अधिक पसन्द करते थे।

रूस के लिए निर्णय करने का कार्य अपेक्षाकृत बहुत अधिक सरल था: हंगरी में रहा जाय अथवा न रहा जाय।

रात को साढ़े दस बजे सोवियत दूतावास ने घोषित किया कि 'हंगरी-स्थित सोवियत सैनिकों के परिवारों को विमानों द्वारा सुरक्षित रूप से ले जाने के लिए' हंगेरियन वायुसेना के विमान-स्थल सोवियत सेनाओं द्वारा घेर लिये गये हैं। हंगरी की वायुसेना ने उत्तर दिया कि वह 'अपार कठिनाइयों के विरुद्ध अपनी रक्षा के लिए पूर्ण रूप से तैयार है', किन्तु नाज-सरकार ने गोली चलाने से मना कर दिया।

२ नवम्बर। हंगरी की स्वतंत्र ट्रेड यूनियनों के नये दैनिकपत्र 'नेप्स काराट' ने लिखा कि 'आज से हम समाजवाद के छद्म वेश में उपनिवेशवाद के साधन नहीं रह गये हैं, न हम किसी विजेता के हाथ के मोहरे ही रह गये हैं।' शिक्षा-मंत्रालय ने निम्नलिखित आदेश जारी किया: 'सम्प्रति सामान्य एवं माध्यमिक शालाओं में प्रयुक्त होने वाली समस्त इतिहास-पुस्तकें वापस ली जाती हैं। अब सोवियत साहित्य की शिक्षा नहीं प्रदान की जायगी। रूसी भाषा का अनिवार्य अध्ययन बन्द हो जायगा...रूसी-हंगेरियन मैक्सिम गोर्की विद्यालय बन्द हो जायगा...जो लोग धार्मिक शिक्षा के लिए कहेंगे, उन्हें वह प्राप्त होगी।'

हंगरी का विनाश निश्चित था। रूसी उसकी इस प्रकार की स्वतंत्रता को कदापि नहीं सहन करते।

३ नवम्बर। हंगरी के ऊपर एक अशुभ राजनीतिक मौन का साम्राज्य छाया हुआ था। सोवियत बख्तरबन्द सैनिकों की अतिरिक्त टुकड़ियां, जो १९४१ में रूस पर आक्रमण करने वाले हिटलर के बख्तरबन्द सैनिक डिविजनों के बराबर बतायी गयी थीं, सड़कों पर तथा मैदानों में इधर-उधर आ-जा रही थीं। उन्होंने आक्रमणात्मक स्थिति ग्रहण की। रूसी पदाति सेना ने कोवागोस जोल्लोस यूरेनियम खान को विद्रोहियों से छीन कर पुनः अपने अधिकार में कर लिया।

४ नवम्बर। प्रातःकाल ५ बजकर २० मिनट पर स्वतंत्र कोस्सुथ रेडियो ने कहा—"ध्यानपूर्वक सुनिये! ध्यानपूर्वक सुनिये! प्रधान मंत्री इमरे नाज हंगेरियन राष्ट्र के नाम भाषण करेंगे।"

"मैं इमरे नाज बोल रहा हूँ। आज, सूर्योदय के समय, सोवियत सेनाओं ने हमारी राजधानी पर आक्रमण किया। उनका स्पष्ट उद्देश्य हंगरी की कानूनी प्रजातांत्रिक सरकार को उलट देना था। हमारी सेनाएं युद्ध कर रही हैं। सरकार अपने स्थान पर है। मै अपने देश की जनता को तथा समस्त संसार को इस तथ्य से अवगत कर रहा हूँ।"

इमरे नाज के शब्दों को अंग्रेजी, रूसी और फ्रांसीसी भाषाओं के अनुवादों में दोहराया गया।

मास्को हंगरी के प्रजातन्त्र और स्वतंत्रता को दिये गये मृत्यु-दण्ड को कार्यरूप में परिणत कर रहा था।

अध्याय २२

विफल टैंक

हंगरी का शरीर कुचल डाला गया था; उसकी आत्मा उत्तलित हो रही थी।

४ नवम्बर के बाद के सप्ताह मे विद्रोहियों के प्रान्तीय रेडियो स्टेशनों की ध्वनि घण्टे प्रति घण्टे क्षीण होती गयी और वे एक-एक कर के समाप्त हो गये। "सहायता करो, सहायता करो, सहायता करो," उन्होंने पश्चिम से अनुरोध किया—"सहायता करो, सहायता करो, सहायता करो, औषधियाँ भेजो, शास्त्रास्त्र भेजो"। तत्पश्चात् सभी कुछ शांत हो गया।

प्रधान मंत्री नाज भाग कर युगोस्लाव राजदूतावास में चले गये, जहाँ से रूसियों ने धोखे से उनका अपहरण कर लिया और उन्हें रूमानिया पहुँचा दिया। कादार क्रेमलिन की ओर से हंगरी का छोटा 'बन्दी राजा' बन गया।

अगम्य बाधाओं के बावजूद छिटफुट संघर्ष सप्ताहों तक जारी रहा। उदाहरणार्थ, हंगेरियन कम्यूनिस्ट पार्टी के दैनिक पत्र ने, जिसका नाम अब बदल कर "नेप्स जाबाद सैग" कर दिया गया था, इस आशय का संवाद प्रकाशित किया कि १३ दिसम्बर को मिस्कोल्क में "प्रतिक्रान्तिवादियों ने लाल सेना के सैनिकों पर गोलियाँ चलायीं और सोवियत सैनिकों ने उनका उत्तर दिया।" लेख में 'फासिस्ट पर्चों" के वितरण का भी उल्लेख किया गया था। उसी दिन रेडियो कोस्सुथ ने कहा कि बेक्स काउण्टी में कई गांव "अचानक अधिक अशान्त हो गये।" बुडापेस्ट के अधिकृत सूत्रों के कथनानुसार डेब्रेसेन में प्रदर्शनकारियों ने स्थानीय समाचारपत्र के एक अंक को जला दिया। गुरिल्ला लड़ाके पहाड़ियों और जंगलों से आकर हमले करते थे और भाग जाते थे।

किन्तु संगठित, निरन्तर सशस्त्र संघर्ष का अन्त एक प्रारम्भ मात्र था। तत्पश्चात् एक शानदार स्थिति प्रारम्भ हुई, जिसमें हंगरी की जनता ने सैनिक विजेता के साथ

सहयोग करने से इनकार कर दिया। यह एक सक्रिय नकार था, यह निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं, प्रत्युत निश्चयात्मक अवज्ञा थी।

जब युद्ध समाप्त हो गया, तब सरकारी फौजों ने फैक्टरियों पर अधिकार कर लिया। मजदूरों ने कहा कि हम बन्दूकों की छाया में काम नहीं कर सकते। जब कादार ने श्रमिक परिषदो का दमन करने का प्रयास किया, तब उन्होंने ४८ घण्टों की आम हड़ताल कर दी, जिसके परिणामस्वरूप उद्योग का काम ठप हो गया। फैक्टरी-श्रमिक-परिषदों को मिला कर जिला-परिषदों का निर्माण किया गया तथा जिलों का एक गुप्त राष्ट्रीय संगठन था। सरकार ने उसके नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। मजदूरों ने पुन. हड़ताल कर दी और घोषित किया कि जब तक नेताओं को रिहा नही किया जायगा, तब तक हम काम पर नही लौटेंगे। श्रमिक जनता सदा हड़ताल नहीं कर सकती, किन्तु श्रमिक जब चाहें, तब हड़ताल कर सकते है और सरकार उन्हें रोक सकने में असमर्थ है।

कृषकों ने सामूहिक फार्मों का, जिनमें वे अनिच्छापूर्वक सम्मिलित हुए थे, परित्याग कर दिया है और इसी प्रकार की क्रांतिकारी परिषदों का निर्माण किया है।

मजदूरों और कृषकों की ये परिषदें सोवियतें है। 'सोवियत' परिषद का अर्थ-बोध कराने वाला साधारण रूसी शब्द है। १९१७ के आरम्भ में रूस में उनका प्रादुर्भाव हुआ था, जब वे प्रजातांत्रिक संस्थाएं थी। बाद में कम्यूनिस्टों ने उन्हें अपने नियंत्रण के अन्तर्गत कर लिया। परिणामस्वरूप जो सरकार, सिद्धान्ततः, उन सोवियतों पर आधारित थी, उसने अन्ततोगत्वा कम्यूनिस्ट पार्टी की तानाशाही का रूप धारण कर लिया और नाम मात्र के लिए सोवियत सरकार रह गयी।

चालीस वर्ष बाद रूस की इस तथाकथित सोवियत सरकार ने हंगरी में वास्तविक सोवियतों का दमन कर लिया।

मास्को आतंक एव सुविधाओं द्वारा हंगरी पर शासन करने का प्रयास करेगा। सुविधाएं वह पहले ही प्रदान कर चुका है तथा और अधिक सुविधाएं प्रदान करेगा, किन्तु सुविधाओं से समर्थक नहीं प्राप्त होते, क्योंकि जनता विजेता से उपहार नहीं प्राप्त करना चाहती, वह चाहती है कि विजेता अपने हंगेरियन एजेण्टों के साथ शीघ्र प्रस्थान कर जाय।

हंगरी में रूस की समस्या असाध्य है। देशद्रोही कादार उन्मादपूर्वक इमरे नाज, लेखक ग्यूला हे तथा अन्य प्रमुख हंगेरियन क्रान्तिकारियों को देशद्रोही कह कर निन्दा करता है। ३० जनवरी १९५७ को उसने कहा कि राष्ट्रीय साम्यवाद राष्ट्रीय

समाजवाद अथवा नाजीवाद का, जिसका आविष्कार, उसने घोषित किया कि, साम्राज्य-वादियों ने १९३० में किया था, "सहोदर भाई" है। कादार जो कुछ कहता है, उस पर कोई व्यक्ति तनिक भी ध्यान नहीं देता। बुडापेस्ट के सरकारी दैनिक पत्र "नेक्षजाबाद सैग" ने २ फरवरी १९५७ को इस्तवान पिण्तर का एक लेख प्रकाशित किया। इस लेख में वह एक सत्रह वर्षीय बालक के साथ हुए अपने वाद-विवाद का विवरण प्रस्तुत करता है। "स्वभावतः आप मुझे मार्क्सवादी तर्कों से भरने जा रहे है", बालक ने अवहेलनापूर्वक कहा—"......प्रयास करने से कोई लाभ नहीं होगा। आप मुझे विश्वास नहीं दिला पायेंगे।" हंगरी के विश्वविद्यालय, जो क्रान्ति के प्रथम दिन—२३ अक्तूबर १९५६ को—बन्द हो गये थे, फरवरी, १९५७ के दूसरे पखवाड़े से पहले नहीं खुले। जिस क्षण कक्षाएँ पुनः खुलीं, उसी क्षण गुप्त पुलिस ने छात्रों पर अत्याचार करना पुन. प्रारंभ कर दिया। २३ फरवरी को रेडियो बुडापेस्ट ने घोषित किया कि पुलिस ने मिस्कोल्क के टेक्निकल विश्व-विद्यालय की तलाशी ली, उसे शस्त्रास्त्र, गोला-बारूद तथा सरकार-विरोधी पर्चे मिले तथा उसने कई छात्रों को गिरफ्तार किया। छात्रों, मजदूरों, बुद्धिवादियों और कृषकों के विरुद्ध बढते हुए आतंक के बावजूद भयभीत अधिकारी ही हैं। वे एक जीवित ज्वालामुखी के मुख पर बैठे हुए है।

हंगरी में मास्को की कमजोरी यह है कि उसके पास केवल शक्ति है। रूसी टैंक तोप लेकर चलता है, किन्तु विचार, आदर्श अथवा आदर्शवाद लेकर नहीं। जिन दूरस्थ शासकों ने उसे भेजा था, उनकी भांति ही वह निर्भय सत्ता का एक माध्यम है। वह दमन कर सकता है, कुचल सकता है, किन्तु शासन नहीं कर सकता क्योंकि हंगरी की जनता के मस्तिष्कों अथवा हृदयों तक उसकी पहुँच नहीं है।

टैंक विफल हो गये है। हंगरी ने क्रेमलिन को शक्ति की सीमाओं की शिक्षा प्रदान की। कम्यूनिज्म विफल हो गया है। स्तालिन ने उसे खाली कर दिया तथा एक टैंक के समान ही खोखला बना दिया। वह न तो युवकों को और न वृद्धों को आकृष्ट करता है। हंगरी पर रूस का आधिपत्य अनिश्चित है तथा हंगरी की स्थिति क्रान्तिकारी बनी हुई है।

अध्याय २३

रूस का पलायन

मास्को का एकता-स्तम्भ खण्डित हो गया है। तथाकथित कम्यूनिस्ट जगत (क्योंकि उसमें कम्यूनिज्म नहीं है) निश्चय ही उस समय पहले के समान एकता-बद्ध नहीं रह जाता, जब पोलैण्ड क्रान्तिवादी कह कर उन व्यक्तियों की प्रशंसा करता है, जिन्हे रूसी टैंक हंगेरियन "फासिस्ट" कह कर गोली से उड़ा देते हैं और जब लाल चीन तथा टिटो से, जिनकी बल्गेरियन, चेकोस्लोवाक और अल्बानियन कम्यूनिस्टों द्वारा तथा – कभी नम्रतापूर्वक और कभी दक्षतापूर्वक – मास्को द्वारा भर्त्सना की जाती है, सहानुभूति की स्वागत योग्य अभिव्यक्तियाँ प्राप्त करने के पश्चात् स्वयं पोलैण्ड पर पूर्व जर्मन तथा फ्रांसीसी कम्यूनिस्ट नेताओं द्वारा प्रहार किया जाता है।

लौहावरण का भेदन पश्चिम द्वारा नही, प्रत्युत दूसरी ओर के रूस-विरोधी विद्रोहियो द्वारा किया गया है। पोलिश समाचारपत्र पोलैण्ड और हंगरी के सम्बन्ध में सत्य बात बताते है और रूसी नगरों में सोवियत नागरिक उन तथ्यों के निमित्त, जिन्हे उनके तोड़-मोड़ करने वाले पत्र दबा देते हैं, उन्हे पढ़ने के लिए पंक्ति-बद्ध होकर खड़े रहते हैं। सोवियत विश्वविद्यालयों से पोलिश और हंगेरियन छात्रों को स्वदेश भेज दिया जाता है क्योंकि वे जानते है कि उनके देशों में क्या हुआ तथा वे यह सूचना रूसी मित्रों को प्रदान करते है। जेकोस्लोवाकिया ने पोलैण्ड के समाचारपत्रों का वितरण बन्द कर दिया है, फ्रांसीसी कम्यूनिस्ट शिकायत करते हैं कि पोलैण्ड की घटनाएं फ्रांसीसी मजदूरों को "विघटित" कर रही हैं तथा पूर्वी जर्मनी की सरकार ने पहले की प्रथा को रद्द कर अब ऐसा नियम बना दिया है, जिसके अनुसार उसके क्षेत्र में प्रवेश करने वाले पोलिश नागरिकों के लिए प्रवेश-पत्र लेना तथा जिन व्यक्तियों से वे मिलना चाहते है, उनके नाम एक फार्म में भरना आवश्यक होता है।

वास्तविक विध्वंसक तत्व अन्तर्निहित हैं, हंगरी में प्रयुक्त स्तालिनवादी तरीके भी उनका उन्मूलन नहीं कर सकते। कम्यूनिज्म स्वयं अपने लिए संकट उपस्थित करने वालों तथा अपनी कब्र खोदने वालों को जन्म देता है; अत्यंत साहसी विदेशी एजेण्ट भी इस कार्य को प्रायः इतनी अच्छी तरह से सम्पन्न नहीं कर सकते।

पश्चिम के स्वतंत्रता-विषयक विचारों को दूर रखने के लिए बुद्धिवादी 'प्रहरी पंक्ति' के रूप में काम करने के स्थान पर विद्रोही पिछलग्गू देश अपने पड़ोसियों तथा उनके पीछे स्थित विशाल पूर्वीय पृष्ठ प्रदेश में अवज्ञा के विचारों, प्रजातंत्र की आशाओं, मार्क्सवाद के प्रति अविश्वास तथा अन्ततोगत्वा विश्व पर कम्यूनिज्म की विजय के सम्बन्ध में सन्देहों का प्रसार कर रहे हैं। लौहावरण के दोनों ओर अपेक्षाकृत कम व्यक्ति कम्यूनिज्म को भविष्य की लहर के रूप में समझते हैं; बहुत अधिक व्यक्ति इसे आतंक के सागर के रूप में पहचानते हैं। द्वितीय विश्व-युद्ध मे रूस की साम्राज्यीय विजयों ने वास्तव मे कम्यूनिस्ट शिक्षाओं के प्रति आकर्षण को कम कर दिया। दायें हाथ की तलवार ने बायें हाथ की पुस्तक को नष्ट कर दिया।

अब तलवार की धार कुण्ठित हो गयी है। रूस ने अपने पिछलग्गू उपनिवेशों पर राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के उद्देश्यों से अधिकार नहीं किया। सोवियत साम्राज्यवाद बल्कि इन बातों का परिणाम था—(१) १९३९ में हिटलर के साथ हुए समझौते तथा उसके परिणामस्वरूप हुए युद्धों द्वारा प्रदत्त सुअवसर, (२) कम्यू-निज्म की हल्की तरल औषधि के स्थान पर रूसी राष्ट्रवाद का कड़ा मादक द्रव्य देने की आवश्यकता। किन्तु एक बार अधिकृत कर लिये जाने के पश्चात् पिछलग्गू देशों को मास्को की पुस्तकों में सैनिक सम्पत्ति के रूप में लिख दिया गया। क्रेम-लिन के "शांति" अभियानों से भयभीत होकर तथा उसके आदेशों के अनुसार कार्य करते हुए पिछलग्गू देशों ने अपनी सेनाओं को प्रबल बनाने के लिए अपनी अर्थ-व्यवस्थाओं को नष्ट कर डाला। तत्पश्चात् यूरोप और अमरीका के प्रतिरक्षा-मंत्रालयों ने इस बात की गणना करने के लिए यांत्रिक मस्तिष्कों को नियुक्त किया कि रूस उनके विरुद्ध कितने पिछलग्गू सैनिकों एवं शस्त्रास्त्रों को रणक्षेत्र में भेज सकता है। आज, मुख्यतः पोलैण्ड और हंगरी की घटनाओं तथा विदेशों में उनकी प्रतिक्रियाओं के परिणामस्वरूप पिछलग्गू सेनाओं को अविश्वसनीय माना जा सकता है। निश्चय ही युद्ध प्रारम्भ होने पर रूस को स्वयं अपनी सेनाओं के एक बड़े भाग को पिछलग्गू देशों में रखना पड़ेगा, जिससे वे भारी, लाल जुए को उतार कर फेंक न दें।

न मास्को के मार्शल और जनरल अपनी सेनाओं के पोलैण्ड में घृणा के सागर के मध्य रखे जाने अथवा हंगरी के नागरिकों की हत्या करने के लिए उनके उपयोग से ही प्रसन्न हो सकते है। सैनिक का काम सैनिकों से युद्ध करना होता है और उससे अन्य कोई भी काम लेने से उसका नैतिक पतन होता है। प्रधान मंत्री

जवाहरलाल नेहरू ने, जिन्होंने अपने मास्को-स्थित राजदूत श्री. के. पी. एस. मेनन तथा अपने प्राग स्थित राजदूत डा. जे. एन. खोसला को हंगरी की स्थिति की जॉच करने के लिए भेजा था, १३ दिसम्बर १९५६ को भारतीय संसद की राज्यसभा में बताया कि विद्रोह काल में पचीस हजार हंगरी-वासी तथा सात हजार रूसी मारे गये । न मार्शल झुकोव को सावधानीपूर्वक लगाये गये अनुमान से ही सन्तोष प्राप्त हो सकता है। यदि क्रेमलिन को इस बात का भय नहीं होता कि और अधिक हंगेरियनों पर आत्मघाती उन्माद छा जायगा तथा उसके और अधिक सैनिक क्रान्ति के शिविर में चले जायेगे, तो दोनों पक्षों के हताहतों की सूची और भी अधिक लम्बी हो जाती । 'महान सोवियत विश्वकोश' (The Great Soviet Ency-clopedia) में हंगरी-विषयक लेख में बताया गया है कि १८४९ में अनेक रूसी सैनिक हंगरी के पक्ष में मिल गये । वे सैनिक अधिकांशतः हत्याकारी कजाक और अशिक्षित रूसी किसान थे जबकि आज के सोवियत सैनिक, विशेषतः प्राविधिक दृष्टि से प्रशिक्षित टैंक-सैनिक विद्यालयों में पढ़े हुए है तथा इतिहास का ज्ञान रखते हैं और जानते हैं कि उन्होंने हंगरी में जो कुछ देखा, वह एक ऐसी वास्तविक क्रान्ति थी, जिसके विषय में उन्होंने स्वदेश में अपनी बोल्शेविक पाठ्यपुस्तकों में पढ़ा था, केवल इस बार यह क्रान्ति उनके देश के विरुद्ध हुई थी । उसको कुचलना अवश्य ही एक घृणित एवं निराशाजनक कर्त्तव्य सिद्ध हुआ होगा । मजदूरों एवं किशोर वय के छात्रों एवं छात्राओं के आमने-सामने होने पर रूसी सैनिक विदेशी जासूसों एवं फासिस्टों के सम्बध में सोवियत प्रचार पर विश्वास नहीं कर सके होंगे और यदि कुछ सैनिक क्रान्ति के प्रति अपनी निष्ठा प्रमाणित करने के लिए क्रान्तिवादियों के पक्ष में सम्मिलित हो जाते, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होती । कम से कम एक ऐसा प्रलिखित उदाहरण विद्यमान है, जिसके अनुसार सात टी-३४ टैंकों तथा तेरह अन्य वाहनों के लड़ाकू सैनिक हंगेरियन विद्रोहियो के साथ मिल गये थे । इस प्रलेख को २४ फरवरी १९५७ को 'न्यूयार्क टाइम्स' को वियना से प्रेषित एक सवाद में उद्धृत किया गया था ।

अपने पूर्ववर्ती अनेक प्राचीन साम्राज्यों की भांति रूसी साम्राज्य भी एक आर्थिक एवं सैनिक बोझ बन गया है । द्वितीय विश्व-युद्ध के तत्काल बाद सोवियत-सरकार पिछलग्गू देशों का अत्यन्त निर्ममतापूर्वक शोषण करने लगी । १९४८ में युगोस्लाविया के पृथक् होने के कारणों में एक कारण यह भी था । रूस द्वारा पोलिश कोयले की लूट, जिससे सम्बन्धित आंकड़े अब पोलिश अधिकारियों द्वारा प्रकाशित कर दिये गये है, एक दूसरा प्रलिखित उदाहरण है । न केवल मास्को ने

पिछलग्गू देशों के साथ अपने व्यापार में उनको लूटा, प्रत्युत उसने तृतीय पक्षों के साथ उनके बिचवई के रूप में—लाभ के साथ—कार्य करने का भी हठ किया। यूरेनियम साम्राज्यवाद रूसी शोषण का एक अतिरिक्त दूषित पहलू था। पूर्वी जर्मनी, जेकोस्लोवाकिया, रूमानिया और हंगरी में मास्को ने यूरेनियम की खानों पर अधिकार कर लिया, एक गुप्त एकाधिपत्य के रूप में उन को चलाया तथा उत्पादन को सोवियत संघ में उठा ले गया।

जहाँ कहीं सम्भव है, वहाँ अब भी जन्म-देश की समृद्धि के लिए पिछलग्गू देशों का शोषण जारी है, किन्तु अधिकांश स्थानों पर यह शोषण-कार्य पहले ही इतने अधिक समय तक जारी रह चुका है कि लाभ में कमी के नियम का प्रभावी होना प्रारम्भ हो गया है। पराधीन जनता भीषण निर्धनता के पंजे में फँस गयी है तथा इसके परिणामस्वरूप पोलैण्ड और हंगरी में क्रांति हो चुकी है। न्यून लाभ भी समाप्त हो चुके हैं तथा रूस को प्रभाव की दिशा को मोड़ने तथा उसने जितना शोषण किया था, उसका कुछ अंश पिछलग्गू देशों को लौटाने के लिए बाध्य हो जाना पड़ा। मास्को ने पोलैण्ड और पूर्वी जर्मनी को ऋण दिये हैं तथा पोलैण्ड, हंगरी और रूमानिया को, जो कम्यूनिस्ट शासन की स्थापना से पहले तथा सामूहिकीकरण द्वारा फार्मों के क्षतिग्रस्त होने से पूर्व, खाद्यान्न के मामलों में आत्मभरित थे तथा कभी-कभी उसका निर्यात करते थे, खाद्यान्न भेजा है। इसके अतिरिक्त पोलैण्ड की राजनीतिक स्वतंत्रता में वृद्धि ने वारसा-सरकार को व्यावसायिक मध्यस्थ के स्थान से मास्को को हटा देने की क्षमता प्रदान की है। इस प्रकार १९५६ में पोलैण्ड ने फिनलैण्ड को ९० लाख डालर के मूल्य का कोयला दिया, किन्तु भुगतान रूसी सामग्रियों के रूप में हुआ, जो पराधीनता के लक्षण के रूप में तथा रूसी सामग्रियों के अत्यधिक मूल्य एवं खराब किस्म के कारण, पोलैण्ड के लिए समान रूप से आपत्तिजनक था। १९५७ में पोलैण्ड ने फिनलैण्ड के साथ सीधे व्यापार किया।

पोलैण्ड की बढ़ी हुई आर्थिक स्वतंत्रता ने, सीमित होते हुए भी, रूसी साम्राज्य पर भीषण प्रहार किया है। दिसम्बर १९५६ में पोलैण्ड ने रूस, पूर्वी जर्मनी और जेकोस्लोवाकिया को अपने कोयले के निर्यात में इस आधार पर अत्यधिक कटौती कर दी कि वह सामग्रियों के बदले उसे कम्यूनिस्ट देशों को बेचने के स्थान पर दुर्लभ मुद्रा प्राप्त करने के लिए पश्चिमी देशों को बेचना चाहता था। फलस्वरूप सोवियत संघ ने स्वयं अपने कोयले में से कुछ को पूर्वी जर्मनी और जेकोस्लोवाकिया को भेजने का वचन दिया, किन्तु इन दोनों राष्ट्रों ने यह अनुभव कर के कि सम्भरण

अपर्याप्त होगा, अपने औद्योगिक लक्ष्यों में कमी कर दी। पूर्वी जर्मनी की सरकार ने जनवरी १९५७ में बताया कि "हमें कोयले की समस्या का समाधान स्वयं अपने साधन-स्रोतों से करना है", किन्तु वह जानती थी कि ऐसा करना असम्भव होगा, अतः उसने क्षेत्र-व्यापी छंटनी का आदेश दिया। उसने आदेश दिया कि "कम इस्पात और कम सीमेण्ट" में उतनी ही संख्या में निवास-स्थानों का निर्माण अवश्य किया जाना चाहिए। इन परिस्थितियों में निश्चय ही उतनी ही सख्या में निवास-स्थानों का निर्माण नहीं किया जायगा—और जिन निवास-स्थानों का निर्माण किया जायगा, उनकी किस्म खराब होगी। सोवियत साम्राज्य में प्रत्येक स्थान पर आर्थिक अभाव क्रेमलिन के लिए एक नियमित भयानक स्वप्न का रूप धारण करता जा रहा है और ज्यों-ज्यों जनता अधिक अच्छी जीवन-स्थिति के लिए मॉग करेगी, त्यों-त्यों संकट भी आवश्यक रूप से बढ़ता जायगा।

पोलैण्ड और हंगरी रूस के लिए विशेष आर्थिक समस्याएँ हैं। जब तक पोलिश सरकार को विदेशी सहायता के रूप में करोड़ों डालर नही प्राप्त होंगे, तब तक वह देश में व्यवस्था कायम रखने अथवा स्वयं को सत्तारूढ बनाये रखने में समर्थ नहीं हो सकती। फिर भी, इतनी बड़ी धन-राशि सोवियत जनसख्या के जीवन-स्तर को नीचे गिरा देगी तथा रूस की अर्थ-व्यवस्था को पंगु बना देगी। दूसरी ओर क्रेमलिन पोलैण्ड को पश्चिम द्वारा सहायता दी जाने पर आपत्ति करता है क्योंकि इससे वह मास्को और मार्क्सवाद से और दूर हट सकता है, किन्तु रूस द्वारा 'खेलेंगे न खेलने देंगे, खेल ही बिगाड़ेंगे' का दृष्टिकोण (अर्थात् न तो स्वयं पर्याप्त सहायता देने, न दूसरों को सहायता करने देने का दृष्टिकोण) अपनाये जाने से पोलैण्ड में विरोध का तूफान आ जायगा।

हंगरी में क्रेमलिन का संकट और भी अधिक विकट है और प्रतीत होता है कि उसने सोवियत संघ के सामूहिक निर्देशनालय में मतभेद उत्पन्न कर दिया है। इस बात की सम्भावना नहीं है कि निकट भविष्य में हंगेरियन अपनी राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था को पुनरुज्जीवित करने के लिए अथवा उसे जीवन-क्षम बनाने के लिए कठोर परिश्रम करेंगे। फलस्वरूप रूस को या तो लाखों हंगेरियनों का भरण-पोषण करना होगा या उन्हें निर्वासित कर देना होगा। वह ये दोनों कार्य कर सकता है, किन्तु वह जो कुछ भी करेगा, चाहे वह लाभदायक हो अथवा हानिकारक हो, उसका विरोध किया जायगा और उसके प्रति राष्ट्रवादी शत्रुता व्यक्त की जायगी।

अन्य साम्राज्यवादों को पहले इसी प्रकार के अन्तर्विरोधों का सामना करना पड़ा है। कम्यूनिज्म उन अन्तर्विरोधों की वृद्धि करता है। वह अबौद्धिक

आर्थिक प्रणाली तथा स्वतंत्रता की पूर्ण क्षति की विभीषिका द्वारा विदेशी आधिपत्य के प्रति आक्रोश की भावना मे वृद्धि करता है । अतः समस्त पिछलग्गू देशों में, विशेषतः पोलैण्ड और हंगरी में मास्को को कम्यूनिज्म-विरोध के साथ-साथ रूस-विरोध का भी सामना करना पड़ता है । इस बात की तनिक भी सम्भावना नहीं है कि क्रेमलिन के निर्बल प्रशासक अनेक औपनिवेशिक कठिनाइयों का सामना करने का ढंग सीख जायेंगे ।

क्या रूस अपनी क्षतियों को कम और पिछलग्गू देशों को स्वतंत्र कर सकता है? सोवियत अर्थशास्त्रियों को अब तक अवश्य ही इस बात का पता चल गया होगा कि उन्होंने जिस साम्राज्यीय समृद्धि का स्वप्न देखा था, वह एक खाली थैला सिद्ध हो गया है । फिर भी, यूरेनियम रूस के लिए उतना ही अपरिहार्य है जितना अपरिहार्य पश्चिमी यूरोप के लिये तेल है और किसी विचित्र कारणवश, जो किसी समय मालिक थे, अब विशेषाधिकार-विहीन ग्राहक मात्र नहीं बनना चाहते; किन्तु मास्को जितने ही अधिक समय तक पिछलग्गू देशों को अपने अधिकार के अन्तर्गत रखेगा, इतनी ही अधिक घृणा वह उत्पन्न करेगा तथा स्वतंत्र पूर्वी यूरोप के साथ उसके व्यापारिक सम्बन्धों की शर्तें उतनी ही अधिक बुरी होंगी ।

रूसी सेना भी अर्थशास्त्रियों के समान ही निराश है । दस करोड़ की जनसंख्या वाले पिछलग्गू देशों से (रूस की बीस करोड़ की जनसंख्या के अतिरिक्त) जिस विशाल जनशक्ति की प्राप्ति की आशा की गयी थी, वह एक मजाक है, किन्तु जनरल सम्भवतः उस क्षेत्र का परित्याग करने के लिये उत्सुक नहीं है, जिसे उनके सैनिकों से रक्त एवं अस्थियों के मूल्य पर खरीदा गया था । अथवा क्या उनके विचार इतने पुराने हैं कि, वे सोचते हैं कि पिछलग्गू घेरे का विस्तार राकेटों और वायु-युद्ध के युग में निर्णायक सिद्ध होगा ?

अर्थशास्त्रियों एवं सेना की भावनाएं चाहे कुछ भी हों, निर्णय राजनितिज्ञों एवं थोड़े-से मार्शलों के, विशेषतः झुकोव के, जिसने एक विशिष्ट राजनीतिक स्थिति प्राप्त कर ली है, हाथ में है – अन्य बातों के साथ १९५७ के जनवरी महीने के अन्तिम भाग में की गयी उसकी सरकारी भारत-यात्रा पर दृष्टिपात कीजिये ।

क्रेमलिन-विज्ञान, वह अन्धकारमय एवं सन्दिग्ध विज्ञान, जो यह निश्चित करने का प्रयास करता है कि क्रेमलिन का नेता आज संध्या समय जो कुछ सोचता है अथवा संध्या समय जो कुछ सोचेगा वह किस प्रकार सोचता है, सोवियत साम्राज्यवाद के भविष्य के सम्बन्ध में मुश्किल से उतना अच्छा पथ-प्रदर्शन करता है, जितना

अच्छा पथ-प्रदर्शन तर्कशास्त्र और एतिहासिक उदाहरण करते है। रूस निम्नलिखित बातें कर सकता है – (१) पिछलग्गू देशों को मौन दासता में रखने के लिए, चाहे इसके लिए कोई भी मूल्य चुकाना पडे, अपनी सेना, गुप्त पुलिस और कठपुतलियों की शक्ति का उपयोग करने का प्रयास; (२) आर्थिक सुविधाएँ प्रदान कर, सैनिक अधिपत्य को यथासम्भव अदृश्य एवं दुखहीन बना कर तथा पिछलग्गू देशों की पुनर्गठित सरकारों को घरेलू एवं विदेशी नीतियों के निर्माण में स्वतंत्रता का आभास प्रदान कर जनता की सहमति प्राप्त करने प्रयास; (३) यूरोप से अमरीकी सैनिक टुकड़ियों के तथा जर्मनी से पश्चिमी सैनिक टुकड़ियों के प्रस्थान के बदले में पोलैण्ड, हंगरी, पूर्वी जर्मनी, रूमानिया, बल्गेरिया और अल्बानिया से अथवा इनमें से एक या दो या तीन देशो से अपनी सशस्त्र सेनाओं को हटाने का प्रस्ताव और तत्पश्चात् पश्चिम और पूर्व के मध्य एक तटस्थ क्षेत्र की स्थापना।

प्रथम और द्वितीय विकल्पो का अधिक से अधिक पॉच से दस वर्षों तक की अवधि में, सम्भवतः कम अवधि में ही विफल होना निश्चित है। अफ्रीका और एशिया में साम्राज्य का दिन समाप्त हो गया है; यूरोप में उसकी शीघ्र समाप्ति निश्चित है। किसी उपनिवेश में नग्न शक्ति अपने को ही पराजित कर देती है और समय आने पर सोवियत जनता पर उसकी बुरी प्रतिक्रिया होगी। प्रकट स्वशासन तथा आर्थिक उपहार प्रस्थान के दिन के आगमन में विलम्ब कर सकते हैं, किन्तु अन्य स्थानों के व्यापक अनुभव को दृष्टिगत रखते हुए पूर्ण राष्ट्रीय स्वतंत्रता का स्थान ग्रहण करने वाली कोई वस्तु नहीं है। पराधीन जनता धोखेबाजी को देखने के लिए बहुत अच्छी दृष्टि रखती है।

तृतीय विकल्प मास्को को आकृष्ट करता है। किसी वस्तु के लिए कुछ भी न देना अच्छा व्यवसाय और अच्छी राजनीति है। यदि मास्को देखता है कि उसे अपनी सेनाओं को पिछलग्गू देशों से हटाना ही पड़ेगा, तो वह मध्य यूरोप से पश्चिमी सशस्त्र सेनाओं के प्रस्थान तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाले उत्तर अतलान्तक संधि संघठन (NATO) के विघटन के बदले में ऐसा क्यों न करे? रूस के लिए यह एक अत्यन्त उत्तम सौदा होगा। क्या यह पश्चिम के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण व्यूहरचना अथवा नीति होगी?

तटस्थ जर्मनी में कोई भी अमरीकी अथवा पश्चिमी सेनाएँ नहीं रखी जा सकतीं। इससे यूरोप के लिए रूसी आक्रमण अथवा दबावों का खतरा उपस्थित हो जायगा। सम्प्रति जर्मनी में अमरीकी सशस्त्र सेनाओं की उपस्थिति, जो रूसी सेना के जर्मन क्षेत्र में प्रवेश करते ही युद्ध प्रारम्भ कर देंगी, सोवियत आक्रमण के

लिए अवरोधक है और इस कारण विश्वशांति की गारण्टी है। कोई भी अमरीकी सेनापति जर्मनी को छोड़ कर बेल्जियम और हालैण्ड में सेनाऐं रखना स्वीकार नहीं करेगा, क्योंकि वे देश प्रतिरक्षा एवं व्यूहरचना की दृष्टि से अत्यन्त छोटे है। फ्रांस और ब्रिटेन में अमरीकी सेना को सम्भवतः पसन्द नहीं किया जायगा। (जर्मनी में उसका स्वागत किया जाता है, जहाँ पर्याप्त जर्मन प्रतिरक्षा प्रतिष्ठानों के अभाव में जनता उसे अपनी रक्षिका मानती है।) यदि अमरीकी सेना यूरोप में किसी स्थान पर बनी रहे, तो भी तटस्थ जर्मनी से उसके प्रस्थान के फलस्वरूप एक आकर्षक शक्ति-रिक्तता उत्पन्न हो जायगी। ऐतिहासिक दृष्टि से रूस शक्ति-रिक्तता की पूर्ति करने में सिद्धहस्त है।

ब्रिटेन अथवा यूरोपीय महाद्वीप में अमरीकी सैनिक हवाई अड्डों की विद्यमानता जर्मनी में अमरीकी सैनिकों की उपस्थिति के समान ही नहीं है, क्योंकि मुख्य बात आक्रमण का प्रतिकार करने की क्षमता नही, अपितु उसको रोकने की क्षमता की है और जर्मनी में अमरीकी सेना की उपस्थिति भावी आक्रमणकारी के लिए इस बात की चेतावनी है कि जर्मनी पर आक्रमण होने पर संयुक्त राज्य अमरीका स्वतः युद्ध प्रारम्भ कर देगा।

अमरीकी सेना को यूरोपीय महाद्वीप के छोरों पर अथवा बहुत सम्भव है, अमरीका में (जर्मनी के तटस्थीकरण की स्थिति में) हटा देने से यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या अमरीका—अथवा कोई भी राष्ट्र, जो वास्तविक आक्रमण का शिकार नहीं है—इस आण्विक-उदजन युग में युद्ध में फँसेगा और इस प्रकार अपने सिर के ऊपर बड़े-बड़े बमों को आमंत्रित करेगा? ऐसा हो सकता है, निश्चय ही इस बात की सम्भावना है कि, ऐसी स्थिति आत्म-रक्षा के लिए म्युनिख-सदृश तुष्टीकरण की समस्त भावनाओं को प्रोत्साहित करेगी तथा निष्क्रियता एवं पृथकतावाद को जन्म देगी। जर्मनी की तटस्थता की अन्तरराष्ट्रीय गारण्टी और समस्त यूरोप को एक तटस्थ क्षेत्र बनाने की योजना के सम्बन्ध में भी यही बात कही जा सकती है। यदि रूमानिया से सेनाएँ हटा लेने के बाद रूमानियन सरकार के निमंत्रण पर रूस ने पुनः वहाँ सेनाएँ भेजीं तब क्या अमरीका अथवा ब्रिटेन अथवा फ्रांस विश्वयुद्ध प्रारम्भ कर देंगे? उस समय प्रवृत्ति यह प्रश्न पूछने की होगी: रूमानिया कहाँ है? अथवा: एक अज्ञात एवं अगम्य देश के लिए सभ्यता का विनाश क्यों किया जाय?

जर्मनी के तटस्थीकरण एवं जर्मन भूमि से उत्तर अतलान्तक संधि संगठन (NATO) के हटने से उत्तर अतलान्तक संधि संगठन नष्ट हो जायगा तथा

यूरोपीय महाद्वीप के लिए संकट उत्पन्न हो जायगा। इससे रूस के वर्तमान पिछलग्गू देशों की कोई सेवा नहीं होगी। वे तब भी वास्तविक स्वतंत्रता के बिना मास्को की छाया के अन्तर्गत कांपते रहेंगे। यदि रूस यूरोप में एकमात्र महान सैनिक शक्ति होता, तो समस्त महाद्वीप उससे भयभीत रहता तथा उसके समक्ष नतमस्तक होता। जर्मनी विशेष रूप से सोवियत धुरी में चले जाने के खतरे में रहता।

पश्चिमी शक्तियों पर पिछलग्गू देशों से सोवियत सेनाओं के प्रस्थान का मूल्य चुकाने का कोई नैतिक दायित्व नहीं है, जिससे केवल उनकी पीड़ा की अवधि में वृद्धि होती है तथा यूरोप में रूसी साम्राज्यवाद की विभीषिका स्थायी हो जाती है। दुष्कर्म करने वाले को और अधिक दुष्कर्म करने में सहायता पहुँचाना न तो ईसाई धर्म का और न गांधीवादी सिद्धान्त है। शांति और सुरक्षा रूसी साम्राज्यवाद (और अन्य समस्त साम्राज्यवादों) के अन्त पर निर्भर हैं। यह अधिक अच्छा होगा कि यह प्रक्रिया जनता के असन्तोष की उष्णता के परिणामस्वरूप भीतर से ही परिपक्व हो। कूटनीतिक सौदाबाजी राष्ट्रीय स्वतंत्रता के अनिवार्य, स्वाभाविक विकास का स्थान नहीं ग्रहण कर सकती।

साम्राज्य से पलायन कर जाने से रूस का आर्थिक भार कम हो जायगा, शस्त्रास्त्रों पर किये जाने वाले उसके भारी व्यय में कमी हो जायगी, शेष विश्व के साथ उसके सम्बन्धों में सुधार हो जायगा तथा उसकी विदेश नीति के वर्तमान भारी व्यय में कमी हो जायगी। परिणामस्वरूप जीवन-स्तर में जो सुधार होगा, उसके लिए सोवियत जनसंख्या कृतज्ञ होगी।

साम्राज्य की क्षति से सोवियत संघ को अधिक स्वतंत्रता भी प्राप्त हो सकती है। वर्तमान सम्भावना यह है कि विद्रोही पिछलग्गू देशों का दमन रूस में विरोध के स्वरों को प्रोत्साहित करेगा और उसके फलस्वरूप देश में दमन-चक्र प्रारम्भ होगा। बाहर अपनायी जाने वाली कठोर नीति स्वदेश में भी कठोर नीति को जन्म देती है, जब कि पिछलग्गू देशों की स्वतंत्रता का अर्थ होगा मातृभूमि के लिए अधिक स्वतंत्रता। निश्चय ही यह साम्राज्य से पृथक् होने के विरुद्ध कतिपय सोवियत नेताओं का मुख्य तर्क हो सकता है। वे यह दलील पेश कर सकते हैं कि इससे तानाशाही की समाप्ति की दीर्घकालीन प्रक्रिया प्रारम्भ हो सकती है। साम्राज्यवाद-विरोध का उद्देश्य सदा दोहरा लाभ होता है: उपनिवेशों के लिए और साम्राज्यवादी राष्ट्र के लिए। सोवियत सीमा के ठीक पार दस करोड़ व्यक्तियों को प्रदान की गयी स्वतंत्रता का स्वदेशवासियों के नागरिक अधिकारों पर निश्चित रूप से स्वस्थ प्रभाव पड़ेगा।

रूस के पिछलग्गू देश चाहे जिस प्रकार भी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता प्राप्त करें, इस बात में तनिक भी सन्देह नही है कि वे उसे प्राप्त कर के रहेंगे। रूस यूरोप में विजयी नहीं हो सकता। रूस यूरोप में आगे नहीं बढ़ सकता। वह केवल मध्य पूर्व के निरकुश शासकों को अथवा उस क्षेत्र के उन अन्य व्यक्तियों को आकर्षक लगता है, जो घृणा से उन्मत्त हो कर व्यक्तिगत स्वतंत्रता का परित्याग करने के लिए प्रस्तुत है। वे भी जान जायेंगे कि कम्यूनिज्म के लाल नकाब के पीछे रूस की साम्राज्य-पिपासा छिपी हुई है।

फ्रांस में, इटली में तथा अन्य स्थानों पर कम्यूनिस्टों के पक्ष में मतदान करने वाले लाखों व्यक्ति सामान्यतः कम्यूनिस्ट अथवा गैर-वफादारी के साथ रूस-समर्थक नही है। वे अपनी दुखद परिस्थितियों के विरुद्ध मत देते हैं (१) उन्हें विरोध-प्रदर्शन का अधिक प्रभावशाली एव अधिक शालीनतापूर्ण मार्ग ढूँढ निकालना चाहिए। (२) उनकी स्थिति मे सुधार किया जाना चाहिए। हंगरी ने उन्हें तथा यूरोप और अमरीका के अनेक बुद्धिवादियों को कम्यूनिस्ट आदर्श का खोखलापन दिखा दिया। निश्चय ही हंगरी और पोलैण्ड की घटनाओं ने एशिया और अफ्रीका के अनेक निवासियों की रंग विषयक अन्धता को दूर कर दिया है, जो श्वेत साम्राज्यवाद में ही तल्लीन होने के कारण अत्यन्त विषमय लाल साम्राज्यवाद को नहीं देख पाते थे। रूसी साम्राज्यवाद की समाप्ति के पूर्व त्रुटिपूर्ण राजनीतिक दृष्टि वाले अधिकाधिक व्यक्ति अधिक अच्छी तरह से देखने लगेंगे।

एक बार सत्य का ज्ञान हो जाने पर रूस को उसके वास्तविक रूप में अर्थात् दूसरों के मूल्य पर अपने लिए शक्ति प्राप्त करने का प्रयास करने वाले एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में, देखा जाने लगेगा। दूसरे, मिलकर, उसे परास्त करेंगे। स्वतंत्रता की विजय हो कर रहेगी। प्रश्न केवल समय का है और समय का मूल्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम उसका—और स्वयं अपना—उपयोग किस प्रकार करते है।